

विचार चंद्रोदय

श्री

विचारचन्द्रोदय

ब्रह्मनिष्ठपण्डित श्रीपीताम्बरजीकृत

उनके जीननचरित्र और सटीक

श्रुतिषड् लिङ्गसंग्रहसहित



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन
बम्बई

संस्करण : जनवरी २०२०, संवत् २०७६

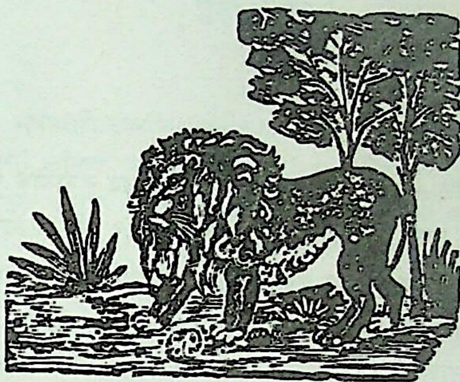
मूल्य : २३० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013



तावद्गर्जन्ति शास्त्राणि जम्बुका विपिने यथा ।
न गर्जति महाशक्तिर्यावद्वेदान्तकेसरी ॥ १ ॥

नोट—यह पुस्तक शरीफ साले महंमद नूरानीके पुत्र दाउद भाई और अलादीन भाईके पाससे सब प्रकारके रजिस्टरी हकसहित प्रकाशकने ले लिया है और इसके सब हक नये कायदेके अनुसार स्वाधीन रक्खे हैं।

ॐ तत्सद्ब्रह्मणे नमः

प्रस्तावना



सर्वमतशिरोमणि श्रीवेदांतसिद्धांत है। ताके जानने-वास्ते कनिष्ठ और मध्यम आदिक अधिकारिनके अर्थ अनेक संस्कृत औ प्राकृत ग्रंथ हैं। परंतु जाकी बुद्धि में विशेष शंका होवे नहीं ऐसा मंदमतिमान्, परमआ-स्तिक, शुद्धचित्तवाला जो उत्तम अधिकारी, ताके अर्थ सरल, श्रेष्ठ, अल्प और विख्यात वेदांतप्रक्रियाका ग्रंथ कोउ नहीं है, यातैं मैंने यह विचारचंद्रोदयनामक वेदांतप्रक्रियाका प्रश्नोत्तररूप ग्रंथ किया है। यामैं षोडश प्रकरण हैं। तिनका "कला" ऐसा नाम धन्या है। एक एक कलाविषै एक एक विलक्षण प्रक्रिया धरी है। मुमु-क्षूकूं ब्रह्मसाक्षात्कारविषै अवश्य उपयोगी जे प्रक्रिया हैं वे सर्व संक्षेपतैं यामैं हैं। अंतकी षोडशवीं कला-विषै अनेकवेदांतपदार्थनके नाम रखे हैं। वे धारनसे अन्य महद्ग्रंथनके श्रवणविषै उपयोगी होवैंगे ॥

या ग्रंथकूं ब्रह्मनिष्ठ गुरुके मुखसैं जो मुमुक्षु श्रवण करेगा वा याके अर्थकूं बुद्धिमैं धारण करेगा, वाके चित्तरूप आकाशमें अवश्य ज्ञानरूप युवा अवस्थाकूं धारनेवाला विचाररूप चंद्रमा उदय होवैगा और संशय अरु भ्रांति-सहित अज्ञानरूप अंधकारकूं दूरी करैगा, याही तैं याक नाम विचार चंद्रोदय है । याका विषय नीचे धरी अनुक्रमणिकाविषै स्पष्ट लिख्या है । तहां देख लेना । (या ग्रंथके विशेषज्ञानविषै उपयोगी श्रीसटीकबालबोध हमने किया है । ताकी २१० टिप्पण अरु मूलटीकागत वृद्धिसहित द्वितीय आवृत्ति अबी छपी है । जाकूं इच्छा होवै सो देखे) विशेष विज्ञप्ति यह है कि :— यह ग्रंथ ब्रह्मनिष्ठ गुरुके मुखसैं ही श्रद्धापूर्वक पढ़ना । स्वतंत्र नहीं । काहे तैं गुरु विना सिद्धांतके रहस्यका ज्ञान होता नहीं और गुरुमुखसैं सकल अभिप्राय जान्या जावैं हैं । यातैं गुरुके मुखसैंही पढ़ना चाहिये ।

लि० पंडितपीतांबरजी

श्रीविचारचन्द्रोदय

नूतनावृत्तिकी प्रस्तावना



'विचारचन्द्रोदय' की पूर्व सात आवृत्तियां शरीफ सालेमुहम्मद नूरानी द्वारा सम्वत् १९०७ (सन् १९१४) तक प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके बाद अष्टम, नवम तथा दशमावृत्तिका प्रकाशन श्री० वृज-वल्लभ हरिप्रसादजी, (फर्म हरिप्रसाद भगीरथजी प्राचीन पुस्तकालय, कालवादेवी रोड, बंबई) द्वारा शरीफ साहबके उत्तराधिकारी पुत्रद्वय दाऊदभाई एवं अलादीन भाईकी कानूनी अनुमति (रजिष्ट्री-हक) लेकर सम्वत् १९९३ (सन् १९३६) में हुआ।

प्रस्तुत आवृत्ति (जिसे नवमावृत्तिके रूपमें हम प्रकाशित कर रहे हैं) के सर्वाधिकार (रजिष्ट्री, कापी-राइट आदि) के सम्पूर्ण कानूनी हक जो हमें

मेसर्स हरिप्रसाद भगीरथ द्वारा प्राप्त हैं, उन अधिकारोंके अन्तर्गत हम 'विचारचन्द्रोदय' का नूतन एवं नवम-संस्करण पूर्व प्रकाशित समस्त संस्करणोंकी भांति यथावत् छापकर वेदान्तानुरागी मुमुक्षजनोंके सम्मुख प्रस्तुत करते हैं । आशा है, सर्वदाकी भांति विद्वत्समाजमें इसका आदर होगा एवं 'विचार चन्द्रोदय' एक आवश्यक और प्रामाणिक ग्रन्थ माना जायगा।

खेमराज श्रीकृष्णदास
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस
बम्बई.

ता०
१९६९

श्रीविचारचन्द्रोदय

अष्टमावृत्तिकी प्रस्तावना



संवत् १९७०–सन् १९१४ में शरीफ साले महम्मद नूरानीकी प्रकाशित की हुई सप्तमावृत्तिकी प्रतिकी प्रतिसे यह अष्टमावृत्तिका संस्करण हमने यथाप्रति ज्योंका त्यों प्रकाशित किया है। किसी प्रकारका परिवर्तन अथवा न्यूनाधिक भाव नहीं किया है। क्योंकि शरीफ सालेमहंमद नूरानी के सुयोग्य पुत्र दाऊदभाई और अलादीनभाई इन बन्धुद्वयके पाससे सब प्रकारके रजिस्टरी हक सहित इसे हमने ले लिया है। अतः वेदान्तानुरागी मुमुक्षु जनोंसे सविनय प्रार्थना है कि इसका सदाकी भांति सादर संग्रह करनेमें अग्रसर हों।

ब्रजवल्लभ हरिप्रसाद

ॐ गुरुदेवाय नमः

श्रीविचारचन्द्रोदय



अथ सप्तमावृत्तिकी प्रस्तावना

यह ग्रन्थ वेदांतविद्याकी प्रथमपोथीरूप होनैतैं मुमुक्षुजनोंकूं अत्यंत उपयोगी भया है। तातैं यह सप्तमावृत्ति सहित इस ग्रंथकी आजपर्यंत अनुमान १५००० प्रति छापी गई है ॥

इस ग्रंथके कर्त्ता ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांबरजी महाराजका पूर्वावस्थाका फोटो-ग्राफ पूर्वआवृत्तियोंमैं रखा है औ इस आवृत्तिमैं

तिनोंका उत्तरावस्थाका फोटोग्राफ तिनोंके जीवन चरित्रके आरंभमैं रक्खा है ॥

और यह आवृत्तिविषै श्रीश्रुति षड्लिंगसंग्रह नामके लघुग्रंथकूं प्रविष्ट करिके षष्टावृत्तितैं नवीनता करी है । तातैं इस आवृत्तिमैं ८५ पृष्ठकी अधिकता भई है ॥

श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह । हमारे परमपूज्य गुरु पंडित श्रीपीतांबरजी महाराजनैं श्रीवृहदारण्यक-उपनिषद् छाप्या है । तिसपरसैं लिया है । तथापि हमनैं मुद्रणशैलिविषै भिन्नप्रकारकी रचना करीके प्रत्येकस्थलमें ६ लिंगोंकूं प्रत्यक्ष दृश्यमान किये हैं । तातैं मुमुक्षुजनोंकूं अभ्यासविषै अत्यंत सुलभता होवेगी ॥ यह श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह इस ग्रंथविषै मुद्रांकित करनैमें ऐसा हेतु रखा है कि:—आजकल वेदांतविद्याविषै मुमुक्षुजनोंकी

ॐ गुरुदेवाय नमः

श्रीविचारचन्द्रोदय



अथ सप्तमावृत्तिकी प्रस्तावना

यह ग्रन्थ वेदांतविद्याकी प्रथमपोथीरूप होनेतैं मुमुक्षुजनोंकूं अत्यंत उपयोगी भया है। तातैं यह सप्तमावृत्ति सहित इस ग्रंथकी आजपर्यंत अनुमान १५००० प्रति छापी गई है।।

इस ग्रंथके कर्त्ता ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांबरजी महाराजका पूर्वावस्थाका फोटो-ग्राफ पूर्वआवृत्तियोंमैं रखा है औ इस आवृत्तिमैं

तिनोंका उत्तरावस्थाका फोटोग्राफ तिनोंके जीवन चरित्रके आरंभमैं रक्खा है ।।

और यह आवृत्तिविषैं श्रीश्रुति षड्लिंगसंग्रह नामके लघुग्रंथकूं प्रविष्ट करिके षष्ठावृत्तितैं नवीनता करी है । तातैं इस आवृत्तिमैं ८५ पृष्ठकी अधिकता भई है ।।

श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह । हमारे परमपूज्य गुरु पंडित श्रीपीतांबरजी महाराजनैं श्रीबृहदारण्यक-उपनिषद् छाप्या है । तिसपरसैं लिया है । तथापि हमनैं मुद्रणशैलिविषैं भिन्नप्रकारकी रचना क-रीके प्रत्येकस्थलमें ६ लिंगोंकूं प्रत्यक्ष दृश्यमान किये हैं । तातैं मुमुक्षुजनोंकूं अभ्यासविषैं अत्यंत सुलभता होवेगी ।। यह श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह इस ग्रंथविषैं मुद्रांकित करनैमैं ऐसा हेतु रखा है कि:—आजकल वेदांतविद्याविषैं मुमुक्षुजनोंकी

प्रवृत्ति अधिकाधिक होती जाती हैं तातें श्रीविचार-चंद्रोदयके अभ्यास किये पीछे। वेदांतके मूल-रूप कितनेक उपनिषद् हैं। ताके तात्पर्यसें ज्ञात होना आवश्यक है ।। वे उपनिषदोंके ऊपर रामा-नुजआदिक द्वैतवादिओंने जे भाष्य किये हैं। तिनमें "वेदका अभिप्राय द्वैतविषैंहीं है" ऐसें प्रतिपादन करनैका परिश्रम किया है। परंतु वे परिश्रम निष्फलहीं हैं। कारण कि जगत्विषै द्वैत तो विचारसें विना सिद्धहीं पड़ा है। यातें ऐसें विषयकूं सिद्ध करनैविषै वेदका अभिप्राय संभ-वित नहीं है ।। "एक परमात्मतत्वविना अन्य जो कछु प्रतीत होवै है। सो सर्व मायाकृत भ्रांतिकरिहीं प्रतीत होवै हैं।" ऐसें प्रतिपादन करनैका वेदका अभिप्राय जगद्गुरु श्रीमच्छंकरा-चार्यनैं उपनिषदोंके भाष्यसें सिद्ध किया है ।। कोइभी ग्रंथके तात्पर्य शोधनअर्थ ताके षड्लिंग-

नकूं अवलोकन किये चाहिये ।। इस कारण तैं प्रत्येक उपनिषद्के ६ लिंग श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह-विषैं दिखाये हैं ।। यह लिंगोंका श्रवण कोई महात्माके मुखद्वाराहीं करना उचित है । काहे तैं कि तैसैं करनेतैं वेदांतविद्याकी महात्ताका भान होवैंगा औ तदनंतर वे उपनिषदोंका भाष्य-सहित अभ्यास करनैकी जिज्ञासा बी उत्पन्न होवैंगी ।।

इस ग्रंथका वा कोईबी अन्यशास्त्रका अभ्यास करनैंकी रीतिविषैं हमारा आधीन अभिप्राय एक दृष्टांतसैं प्रथम स्फुट करैं हैं:–

दृष्टांत:—एक जौहरीका पुत्र अपनै मृतपिताके मित्रसमीप एक छोटीसी मुद्रांकितमंजूष लेके गया औ कहने लगा कि :– मेरे पितानैं अपनैं अंतकालसमय यह मंजूष मेरे स्वाधीन करी है और कहा है कि तिसमैं एक अमूल्य हीरा है । सो

मेरे मित्रके पास तूं ले जाना तौ वे मित्र बड़ी कीमतसैं बेच देवैंगा ।। वे जौहरीकी आज्ञासैं तिसने मंजूष खोलके देखी तौ एक बड़ा प्रकाशित हीरा देखनेमें आया ।। हीरेसहित वह मंजूष पुनः बंध कीन्ही औ तिसकूं प्रथम की न्यांई मुद्रितकरीके वे मित्रनैं कहा कि यह हीरा बहुत-मूल्यका है । जब कोई योग्य दाम देनेवाला ग्राहक मिलैगा तब बेचेंगे । यातें अब इस मंजूषकूं रख छोडो ।। जौहरीने उस पुत्रकूं अपनी दुकानपर बिठाया औ हीरेमाणिक्य आदिककी परीक्षा करनैंकूं सिखाया ।। जब प्रवीण भया तब वे मित्रने तिसकूं कहा कि हे पुत्र ! वह हीरेकी मंजूष ले आवे । तब वह उक्त मंजूषकूं ले आया औ खोलके हस्तमैं लेके परीक्षा करी तब ज्ञात हुआ कि वह हीरा नहीं परंतु काचका तुकडा है ।।

सिद्धांतः—जैसैं उक्त जौहरीका पुत्र काचकूं हीरा मानिके तिसद्वारा धनाढ्य होनैंकी मिथ्या-आशाकूं रखता भया। तैसैं मनुष्य बी बालपन-सैंहि जगत्के पदार्थोंकूं क्षणिक औ नाशवान देखते हुये बी यथार्थज्ञानके अभावतैं तिनविषै सत्यताकी बुद्धिकूं धारणकरिके सुखकी मिथ्या आशा रखते हैं औ अनेक तौ "यह जगत्से पदार्थोंसैं विना अन्य कछुबी सत्य नहीं हैं" एसैं बी मानते हैं॥

उपरि कहा तैसैं मनुष्यमात्र मायाकरि भ्रांति विषै भ्रमण करी रहे हैं तिनमैंसैं क्वचित् कोईकूंही "मैं कौन हूं।" "जगत् क्या हैं।" ।" मेरा औ जगत्का अवसान क्या है" इत्यादि अनेका-नेक प्रश्न उद्भवैं हैं॥ जैसैं कोई कंटकके जंगल-विषै फसाहुवा दुःखकूं पावता है। तैसैं संशय औ शंकारूप कंटकसमूहसैं जे पीडित हैं। वे मात्र

ता दुःखसैं मुक्त होनेकी इच्छा करते हैं ॥ परीक्षित राजाकूं जन्मेजयने जो उपदेश किया-सो सहस्रनमनुष्योंने श्रवण किया परंतु मोक्ष-प्राप्ति मात्र परीक्षित राजाकूं भई। कारण कि तिसका मृत्यु सप्तम दिन निश्चित भया था औ अन्य श्रोताओंकूं तैसा कोई भय नहीं था ॥ आज बी वही श्रीमद्भागवतकी सप्ताह परायण असंख्य जन श्रवन करते हैं ॥

आधुनिक समयसैं कोई कोई अंग्रेजीभाषाज्ञानविषै कुशल पुरुष गुरुगम्य उपनिषद् आदिक महत्ग्रंथोंका स्वतंत्र अवलोकन करैं हैं और तद-नंतर आपकूं वेदांतसिद्धांतके वेत्ता मानिके अन्य-जनोंकूं वेदांतका बोध देनेवास्ते इंग्रेजीमें ग्रंथ लिखते हैं वा मासिक अंकविषै लेख प्रकट करते हैं। परंतु वे लेखमैं मुख्य करिके द्वैतप्रपंच प्रतिपादनमात्र देखने मैं आता है ॥ तैसें थीयोसाधि

नामक मंडलके नेता बी वेदांतसिद्धांतकूं कछुक स्वतंत्र देखिके मुख्य द्वैतकाही वर्णन करे हैं औ अदृश्य महात्माओंकी सहायतासैं असंख्यवर्षोंके पीछे मुक्त होनेकी आशा रखते हैं ॥ ऐसैं होनेका प्रधानकारण वेदांतविद्याका स्वतंत्रअभ्यास है ॥ ईसविषै श्रीविचारसागरमैं सम्यक् कहा है कि:—

दोहा

वेद अब्धि विनगुरु लखै लागै लौन समान ।
वादरगुरुमुखद्वार है अमृततैं अधिकान ॥

पुरातनकालमें प्रचलित हुई रूढि अनुसार अनेक स्थलविषै जो वेदांतकी कथा होती है। तामैं कोइ एके शास्त्रका पठनकरिके तिसपर कोइ महात्मा पुरुष विवेचन करे हैं। तातें यद्यपि श्रोताजनोंकूं लाभ होवे है तथापि शास्त्राभ्यासकी पद्धति तौ विलक्षणही है ॥

जैसें दृष्टांतगत जौहरीका पुत्र जौहरीकी सहायतासैं हीरेकी परीक्षा करनैमें कुशल भया। तैसें ब्रह्मविद्याका अभ्यास बी कोइ ब्रह्मश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुद्वाराकरनैमें आवे। तबीहीं तामें कुशलता प्राप्त होवै।

अब वेदांतशास्त्रका अभ्यास कोइ महात्माके समीप किस रीतिसैं करना आवश्यक है सो नीचे वर्णन करे हैं:-

श्रीविचारचंद्रोदय ग्रंथ वेदांतकी प्रथमपोथीरूप है ।। यह ग्रंथ प्रश्नोत्तररूप होने तें प्रथम मुमुक्षुताका व्याख्यासहित प्रतिदिन श्रवण करै औ ताके पीछे जहांपर्यंत अभ्यास किया होवै। तहांपर्यंत क्रमसें बिना पूछनैमें आवे तिनके उत्तर मुमुक्षु देवें ।। इस रीतिसैं ग्रंथ पूर्ण करिके पीछे श्रुतिषड्‌लिंगसंग्रहका मात्र श्रवण करै । तदनंतर —

मुमुक्षु श्रीविचारसागरका श्रवण करैं औ जितनै भागका अभ्यास पक्व हुवा होवै । तितनै भागगत मुख्य पारिभाषिक शब्द । प्रक्रिया । व प्रसंगके प्रश्न महात्मा उत्पन्नकरिके पूछे ताके ताके उत्तर वह मुमुक्षु देवैं ।। यह ग्रंथकी समाप्ती पीछे श्रीपंचदशीग्रंथका बी तिसीही रीतिसैं दृढ़ अभ्यास करैं औ श्रीविचारसागरके छंदनमैंसैं तथा श्रीपंचदशीके श्लोकनसैं जितनै कंठ करनेकी अभ्यासकी वारंवार पुनरावृत्ति करनी बी अत्यंत आवश्यक है ।।

उपरोक्तरीतिसैं उक्त ग्रंथनका अथवा अन्य-वेदांत ग्रंथनका खंत औ श्रद्धापूर्वक मुमुक्षु अभ्यास करैं तौ ब्रह्मविद्याविषै कुशल होवै तामैं शंका नहीं । तथापि ब्रह्मनिष्ठ होना तौ अत्यंत बिकट है । काहे तैं कि जगत विषै सत्यताकी बुद्धिकूं

दूरीकरिके असत्यताकी बुद्धि दृढ करनी होवे है औ अपनेविषैं शुद्ध निर्विकार ब्रह्मस्वरूपकी बुद्धिकूं स्थापित करनी होवै है ।। इस प्रकारका बुद्धि हुई है वा नहीं सो आपहीं अपनै आंतरमैं पूछनैसैं उत्तर मिलता है ।। यह ज्ञान स्वयंवेद्यही है ।।

ब्रह्मनीष्ठपनैंकी दुर्लभताविषैं श्रीमद्भगवद्गीतामैं कह्या है कि :—

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये । यतता मपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ।।७ । ३ ।।

ऊपर कहे अनुक्रमसैं अभ्यासकी पूर्णता हुवे पीछे कोई महात्माद्वारा श्रीमच्छंकराचार्यकृत उप-निषद् भाष्य । सूत्र भाष्य । औ गीता भाष्यका अवलोकन करनेसे आनंदसहित ब्रह्मनिष्ठाकी

दृढ़तामैं अधिकता होवेगी ॥ तदनंतर इच्छा होवै तौ श्रीयोगवासिष्ठादिक अनेक वेदांतके ग्रन्थ हैं सो बी देखना ॥ संक्षेप मैं इतनाही कहना है कि जगत् व्यवहारोपयोगी अनेक विषयनका जैसैं आदर औ दृढ़तापूर्वक आधुनिक शालाओंविषै विद्यार्थीजन अभ्यास करते हैं। तैसं दीर्घ अभ्यासविना वास्तविक लाभ होनैका नहीं ॥ बहुत ग्रन्थनके पठनसैंहीं ब्रह्मज्ञान होवै ऐसा नियम नहीं ॥ उत्तम अधिकारी मात्र एक श्रीविचारसागर अथवा श्रीपंचदशी श्रद्धापूर्वक गुरुद्वारा बिचारिके नियमित विचारपूर्वक अभ्यास करै तौ ब्रह्मज्ञानकी प्राप्ति अवश्य होवै ॥

जिसकूं आधुनिककालसम्बन्धि अनेक शंकाउद्भव होती होवैं। सो शास्त्रअभ्यासके पीछे इंग्रेजीमें फिलसुफीसे औ सायन्स के अनेक ग्रन्थ हैं वे देखैं तौ तातैं बुद्धिका क्षेत्र अत्यंत विस्तृत

होवेगा औ जगत्की मायिकता आदिक अत्यंत स्पष्ट होवैंगी ऐसा स्वानुभव है ।।

थोड़े समयसैं हमनै कुलनाम "नूरानी" का हमारी संज्ञाके अन्तमैं प्रवेश किया है ।। इति ।।

श. सा. नू.

ॐ गुरुदेवाय नमः

श्रीविचारचन्दोदय

अथ षष्ठावृत्तिकी प्रस्तावना



इस ग्रन्थकी पंचमावृत्ति मैं पूर्वकी आवृत्तिनसैं नवीनता करीथी तैसें इस आवृत्तिविषै बी जो नवीनता औ अधिकता करी है । सो नीचे दिखावे हैं :–

१ इस ग्रन्थके कर्त्ता ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांबरजी महाराजने मुमुक्षुनके उपरि अत्यंत अनुग्रह करीके इस आवृत्तिके लिये ग्रन्थभाग औ टिप्पण भागका पुनः संशोधन किया है । तथा टिप्पणोंविषै कहिं कहिं अधिकता करीके गहन अर्थकी विस्पष्टता करी है ।।

२ पूर्वमीमांसा । उत्तरमीमांसा (वेदांत) । न्याय आदिक षट्दर्शनोंविषै जीव । जगत् । बंध ।

मोक्ष आदिक मुख्यपदार्थोंका कैसे भिन्न भिन्न लक्षण किये हैं । औ वे लक्षणविषै उत्तरोत्तर कैसी समानताअसमानता है । सो दृष्टिपात मात्र सैं ज्ञात होवै ऐसा "षट्दर्शनसारदर्शकपत्रक" श्रीपंचदशी सटीका सभाषाकी द्वितीयावृत्ति और श्रीविचार-सागरकी चतुर्थावृत्तिविषै हमनै दिया है । तैसाहीं पत्रक इस ग्रंथके अभ्यासीनके अवलोकनअर्थ इस आवृत्तिमैं अन्तविषै छाप्या है ।।

३ इस आवृत्तिमैं ग्रन्थारंभविषै बहुतखर्चके योगसैं चार चित्र दिये गये हैं । तिनविषै ।।

(१) प्रथमचित्र पूजाविषैस्थित हुये द्विजका है ।।
(२) दूसरा चित्र राजाका है ।
(३) तीसरा व्यापारीका है । औ
(४) चतुर्थ चित्र घट बनानैविषै प्रवृत्त भये कुलालका है ।।

इसरीतिसैं यद्यपि ब्राह्मण । क्षत्रिय । वैश्य औ शूद्र । यह चारिजाति दृश्यमान होवै हैं । तथापि

तिन च्यारिचित्रनविषैंस्थित जो पुरुष है । तिसकी मुखाकृति लक्षपूर्वक अवलोकन करनैंसैं ज्ञात होवैगा कि वे च्यारिचित्र एकहीं पुरुषके हैं । मात्र तिनोंकी भिन्नभिन्न वस्त्र औ सामग्रीरूप उपाधिके भेदसैं एकहीं पुरुष भिन्नभिन्नच्यारिवर्णका प्रतीक होवै है ! अर्थात् तिनोंकी उपाधिके बाध किये तैं वे च्यारिपुरुषनका परस्पर केवल अभेद है ।

जीव ब्रह्मका भेद सत्य नहीं किंतु मात्र उपाधिकृतहीं है । ऐसा सर्वतमशिरोमणि वेदांतमतका जो महान् औ अबाधित सिद्धांत है और जो इस ग्रन्थकी " तत्वंपदार्थैक्यनिरूपण " नामक ११ वीं कलाविषै अनेक दृष्टांतसैं निरूपण किया है । तिसकूं यथास्थित समजनैंमैं औ तदनुसार दृढनिश्चय करनैंमैं मुमुक्षुनकूं सहायतभूत होवैंगे । इतनाहीं नहीं परन्तु दृष्टिगोचर होते हीं वे महान् सिद्धांतकास्मरण करावैंगे । ऐसैं मानिके उक्त चित्रनकूं छापे हैं ।।

इस ग्रन्थके कर्त्ता ब्रह्मनिष्ठपंडित श्रीपीतांबरजी महाराज । जिनोंका जीवनचरित्र इस आवृत्तिविषै बी छाप्या है औ जिनोंनैं मुमुक्षुनके कल्याण-

अर्थहीं जन्मधारण किया था ऐसें कहिये तौ तामें किंचित् बी अतिशयोक्ति नहीं है । औ जिनोंनें अत्यंतदयातें अनेक ग्रंथनकूं रचिके तथा श्रीपंचदशी । श्रीमद्भगवद्गीता औ वेदांतके मुख्यदशोपनिषद्आदिकमहद्ग्रन्थोंका भाषाटीका करीके मुमुक्षु जनोंकूं ज्ञानमार्ग सुलभ औ सुगम किया हैं । वे महात्मा श्रीकच्छदेशगतगढ़सीसा ग्रामविषैं संवत् १९६१ के वैशाख कृष्णपक्ष ७ गुरुवारके दिन इस क्षणभंगुर जगत्का त्याग करीके विदेहमुक्त भये हैं ।। तिनोंमें तिसी वर्षके चैत्र कृष्णपक्ष १३ भौम वारके रोज संन्यास ग्रहण करीके परमानंदसरस्वती नाम धारण किया था ।।

शरीफ सालेमहंमद

ॐ गुरुदेवाय नमः

श्रीविचारचन्द्रोदय

अथ पंचमावृत्तिकी प्रस्तावना



यह ग्रंथ ब्रह्मनिष्ठपंडित श्रीपीतांबरजी महाराजकरि स्वतंत्र रचित है ।। यामैं षोशप्रकारणरूप षोडशकला है । औ तिन प्रत्येक कलाविषैं एकाएक विलक्षणप्रक्रिया धरी है। यद्यपि ये सर्व प्रक्रिया संक्षिप्ताकारसैं धरी हैं तथापि मुमुक्षुनकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्ति करनैमैं सहायकारिणी होवैं हैं । यह ग्रन्थ आदिसैं अंतपर्यंत प्रश्नोत्तररूप हो नैंतें औ श्रेष्ठ अल्प औविख्यात वेदांत प्रक्रियाकरि युक्त होनैंतें औ सर्व शास्त्रशिरोमणि वेदांतशास्त्रके अध्यासके आरंभ कालमैं जो जो अवश्यज्ञातव्य है सो सर्व इस लघुग्रंथविषैं समाविष्ट किया

हो नैतै । वेदांत अभ्यासविषै नवीनजनोंकूं तौ यह ग्रंथ वेदांतकी प्रथम पोथीरूप है ।।

ग्रन्थकारमहात्मानै इसका सारभूत पद्यात्मक 'वेदांतपदावळी" नामक लघुग्रन्थ किया है । सो "वेदांतविनोद" के प्रथमअंकरूपसैं प्रसिद्ध है ।। काव्य । कंठ करनेमैं सुगम औ व्याख्यान किये विस्तृतअर्थकास्मारक होवै है । इस वास्ते मुमुक्षुनकूं उपयोगी जानिके वेदांतपदावलीगत वे छंद इस ग्रन्थविषै प्रत्येक कलाके आरम्भमैं छापे हैं ।।

अंतकी षोडशवीं कलाविषै ३०० से अधिक वेदांतपारिभाषिकशब्दनके अर्थ धरे हैं । वे बी ग्रन्थकर्त्ता महाराजश्री की करुणाकाही फळ है ।। यह लघुवेदांत कोश अन्यमहद्ग्रंथनके श्रवणविषै अत्यंत सहायभूत होवे हैं ।।

याके आरम्भमैं बड़ी अकारादि अनुक्रमणिका धरी है । तिसकरि वांछितविषयका पृष्ठांक विनाश्रम प्राप्त होवै है ।। इस अनुक्रमणिकाविषै लघुवेदांतकोशगत शब्दनकूं बी प्रविष्ट किये हैं ।।

अंकयुक्त पारेग्राफनकी जो नवीनमुद्रणशैली हमारे छापे हुवे श्रीपंचदशी सटीकासभाषा द्वितीयावृत्ति औ श्रीविचारसागरचतुर्थावृत्तिके ग्रंथोंमें प्रविष्ट करी है। तैसीही रूढिसें इस ग्रन्थकी यह पंचमावृत्ति छापी है ॥ इस रूढिसें अभ्यासीनकूं अत्यंत सुलभता होवै है। कारण कि ग्रन्थके भिन्न भिन्न विषयोंका समानासमानपना। उत्तरोत्तरक्रम। तद्गत शंकासमाधान। दृष्टांत सिद्धांत औ विकल्प। दृष्टिपातमात्रसैंही ज्ञात होवै हैं॥ इस रूढिसैं ग्रन्थकूं छाप नै आदिकतें इस आवृत्तिका विस्तार गतआवृत्तिसैं अनुमान १०० पृष्ठोंका अधिक हुवा है औ कागज भी उत्तम डाले हैं॥

ग्रन्थकारमहात्मा ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांबरजी महाराज। जिनोंने अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ रचिके। श्री पंचदशी औ दशोपनिषद आदिक सद्ग्रन्थयोंके भाषांतर करीके। औ विचारसागरादिक अनेक ग्रंथपर टिप्पण करके। अखिल मुमुक्षुसमुदायउपरि महान् अनुग्रह

किया है । तिनोंके जीवनचरित्रके लिये अनेक मुमुक्षुनकी तीव्रआकांक्षाकूं देखिके । सोजीवनचरित्र इस आवृत्ति विषैं विस्तारसैं छाप्या है । तदुपरि दर्शनकरनैं योग्य पूज्य महाराजश्रीकी कल्याणकारी यथास्थितचित्रितमूर्ति तिनोंके हस्ताक्षरसहित ग्रन्थारम्भ में स्थापित करी है ।।

ग्रन्थविषैं मुमुक्षुनकी प्रवृत्तिमें मनोरंजक ग्रन्थकी सुन्दरता बी सहायक है । ऐसैं मानिके इस ग्रन्थके पूंठे सुंदर किये हैं । परन्तु सुंदरताके साथिसिद्धांतका स्मरण-रूप लाभ होवे इस हेतुसैं इस पंचमावृत्तिके पूंठे अति-खर्च करीके विलायतसैं मंगवाये हैं औ रूपेरी आदिक रंकसैं चित्ताकर्षक किये हैं ।। पूंठे ऊपर जे भ्रांति-आदिक चित्र छापे गये हैं तिनके अर्थकाविवेचन नीचे करे हैं :-

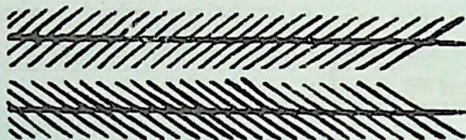
निर्गुणउपासनाचक्रः- हमारे छपाये श्रीविचार सागरविषैं निर्गुणउपासनाचक्र धर्या है । तिसका एक

संक्षिप्तचित्र या पूंठेके मुखभागपर रखा है ।। इसमें प्रत्येक पदार्थनके आदिके अक्षरमात्र तिन पदार्थनकी स्मृतिके लिये रखे हैं ।। सुगमताका अर्थ स्पष्टता करिये हैं :–

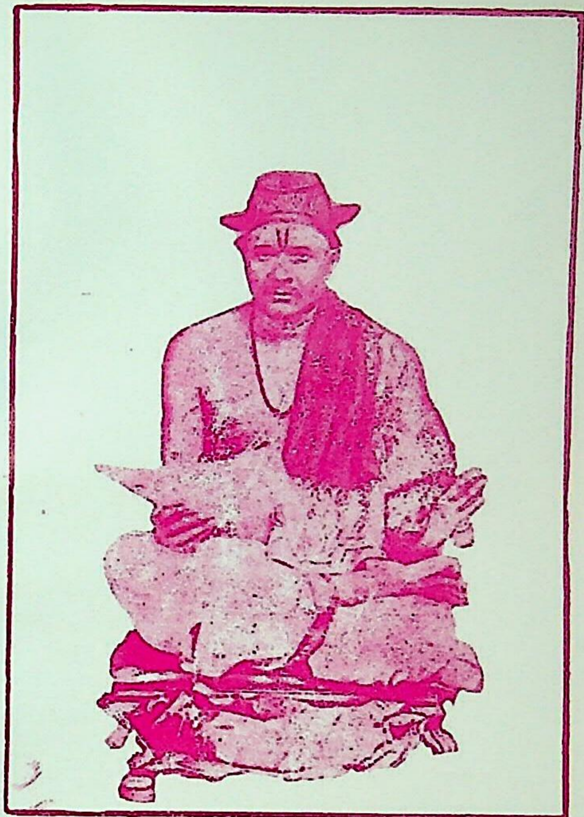
अ–आकार वि–विराट् वि–विश्व	।। १ ।। इन तीनउपाधिवान्की एकता चिंतनीय है ।।
उ–उकार हि–हिरण्यगर्भ त–तैजस	।। २ ।। इन तीन उपाधिवान्की एकता चिंतनीय है ।।
म–मकार ई–ईश्वर प्रा–प्राज्ञ	।। ३ ।। इन तीनउपाधिवान्की एकता चिंतनीय है ।।
अ–अमात्र ब–ब्रह्म तु–तुरीय	।। ४ ।। इन तीनशुद्धनकी एकता चिंतनीय है ।।

प्रथमत्रिपुटीकी द्वितीयके साथि औ तिसकी तृतीयके साथि औ तिसकी चतुर्थके साथि एकता चिंतनीय है ।। उक्तअर्थ श्रीविचारसागरकी चतुर्थआवृत्तिके २८१ में ३०२ अंकपर्यंत ग्रन्थकर्त्तानें विस्तार सें दिखाया है ।।

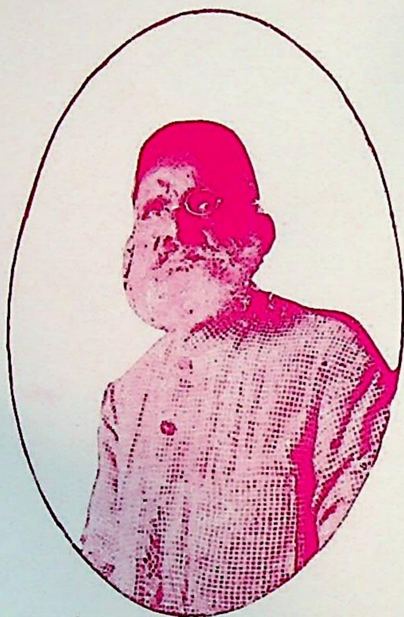
दो सीधीरेशोयुक्त आकृति :— जिल्दके मुख-भाग उपरि चंद्राकारविष ग्रथंका नाम छाप्या है । ताके नीचे दो सीधी रेषावाली एक आकृति है ।। ये दोनूं



रेषा दक्षिणदिशा तरफ संकोचित औ वामदिशातरफ विकासित हुई भासती हैं । परंतु वास्तविक तैरों नहीं है किंतु सर्व स्थलमैं वे समान अन्तरवालीही हैं । यह वार्ता दोनूंरेषाओंके आदिभागकूं अंतभागके साथि लक्ष्यकरिके देखन सैं निर्विवाद सिद्ध होवै है ।।

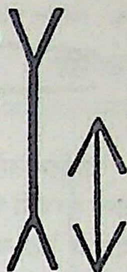


पं. पीतांबर पुरुषोत्तमजी।।



शरीफ सालेमहंमद

परिमाणभ्रांतिदर्शक दो आकृतिः— जिल्दकी पीठविषै वर्तुलाकारमैं "शरीफ' नाम है। ताके ऊपर उक्त दोआकृतियां छापी हैं। सो नीचे दिखावे हैं :—



उभयचित्रोंकी दोनूं सीधीमध्यरेषा यद्यपि समान परिमाणकी हैं। तथापि तिसके अग्रभागविषै धरी हुई तिर्यक्‌रेषारूप उपाधि के बलसे भ्रांतिद्वारा वामचित्रकी मध्यरेषा दक्षिण चित्रकी मध्यरेषा सैं बड़ी प्रतीत होवै है

दीर्घरेषायुक्त दो आकृति :— पूंठेके पृष्ठभागपर। मध्यमैं षट्‌चक्राकार औ उपरि तथा नीचे दीर्घरेषायुक्त। ऐसैं सर्व तीन आकृति रखी हैं। तिनमैं सैं दीर्घरेषा-युक्त आकृतिनका वर्णन करे हैं :—

पूंठेके पृष्टभागके उपरिकी दो दीर्घरेषा। नीचे

प्रथमआ:तिसमान दृष्ट आवती है :–

१ प्रथम आकृतिः

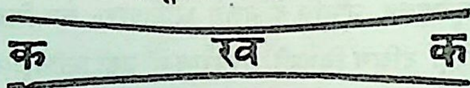


उपरिकी दो रेषा

आदिअन्तमें दोनूं दीर्घरेषाका क क भाग संकोचित तथा मध्यका ख भाग विकासित दृष्ट आवता है। याते वे रेशा वक्राकार है। ऐसें प्रतीत होवे है ।।

पूंठेके पृष्ठ भागके नीचेकी दो दीर्घरेषा । नीचेकी दूसरी आकृति सदृश भासती है :–

२ दूसरी आकृतिः



नीचेकी दो रेषा

आदिअन्तमें दोनूं दीर्घरेषाका क क भाग विकासित तथा मध्यका ख भाग संकोचित देखनेमें आवता है। अर्थात् प्रथम आकृति सैं विपरीत वक्र-आकार प्रतीत होवै है ।।

तथापि पूंठेके पृष्ठभागके उपरिकी औ नीचेकी दो दीर्घरेखा । प्रथम औ दूसरी आकृतिके समान वक्र हैं नहीं । सीधी ही हैं । मात्र भ्रांतिसैं वक्ररेखाकार प्रतीत होवे हैं । यह वार्ता प्रत्यक्ष रूप चाक्षुषप्रमाणसैं जैसैं सिद्ध होवै है तैसैं स्पष्ट करे हैं :-

जैसैं कोई बाणकूं छोड़नेके समय पर बाणकूं लक्ष्यके साथि दृष्टिसैं साधता है । तैसैं उक्त नीचे ऊपरकी दोनूं रेषाओं आदिके साथि अंतकूं लक्ष्य करिके देखनैसैं वे दोनूं रेषा । बाजूकी तीसरी आकृति समान सीधी हीं दृष्ट आवैगी ।।

यातैं पूंठेके पृष्ठभागपर उक्त प्रथमाकृति सदृश ख भाग विस्तृत । तथा दूसरो आकृतिसदृश ख भाग संकोचित दृष्ट आवते हैं सो भ्रांतिकरिकेहीं भासते हैं । यह सहजहीं सिद्ध होवै है ।।

३ तीसरी आकृति.

भ्रांतिका कारण :– प्रत्येक दीर्घरेखाके ऊपर तथा नीचेसे अनुमान १८ वा २० छोटी टेढीरेखा हैं वे इहां उपाधिरूप हैं औ वे उपाधिरूप रेखाहीं इस चित्रित दृष्टांतविषै भ्रांतिकी कारण है ॥

जैसैं मरुभूमिविषै मृगजलका भान भ्रांतिरूप है। तैसैं इहां चित्रितदृष्टांतविषै (१) प्रथम तथा (२) दूसरी आकृतिगत ख भागके विकासित औ संकोचितपनैका भान बी भ्रांतिरूप है ॥

जैसैं मरुभूमिविषै "व्यावहारिक जल नहीं है। प्रातिभासिकही है" ऐसैं निश्चित भये पीछे बी ऊपर भूमिके साथि सूर्यकिरणके संबंधरूप उपाधिके बलसैं जलकी प्रतीत दूरि नहीं होवे है। तैसैं इहां दोरेखारूप चित्रितदृष्टांतविषै बी प्रथम तथा दूसरीआकृतिगत "ख भाग विकासित औ संकोचित नहीं है किन्तु आदिअंत-पर्यंत समानहीं है" ऐसैं निश्चित भये पीछे बी छोटी टेढीरेखाके संबंधरूप उपाधिके बलसैं (१) प्रथम तथा (२) दूसरी आकृतिकी न्यांई ख भागके विकास औ संकोच की प्रतीति दूरी नहीं होवै है ॥

सिद्धान्तः— ति—" परांचि खानि व्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्ग पश्यति नांतरात्मन्" अर्थः— स्वयंभू (परमात्मा) इन्द्रियनकूं बहिर्मुख रचताभया । तातैं देवतिर्यंगमनुष्यादिक । बाह्यवस्तुनकूं देखते हैं । अंतर-आत्माकूं नहीं ।।" टीकाः— यद्यपि इस सृष्टिविषै सर्व-प्राणी बहिर्मुखहीं वर्तते हैं । काहे तैं जातैं तिनोंकी इन्द्रियनकी रचना स्वयंभूनैं तिस प्रकारकीहीं करी । तातैं इंद्रियनकी तृप्ति करनैविषैहीं सर्वजीवोंकी प्रवृत्ति होवैं है औ याही तैं मनुष्य न सैंविना अन्यप्राणी तौ ताप्रवाहके रोकनविषै सर्वथा बहिर्मुखप्रबलप्रवृत्तिप्रवाहके बलसैंहत भये असमर्थ हैं । वे अन्तरआत्माकूं देखी शकते नहीं । कहिये अपने आपकूं अपरोक्ष निश्चय करी शकते नहीं । यह स्पष्टहीं है ।। काहे तैं तिन शरीरोविषै अंतर्मुखतारूप विरोधी प्रवाह करनैवास्ते समर्थ बुद्धिरूप साधन है नहीं । तथापि केवल मनुष्य शरीर विषैंही यह सर्वोत्तमसाधन बी स्वयंभूपरमात्मानैं रखा है । यातैं स्वस्वरूप ज्ञानके अधिकारी मनुष्योंविषै केइक कदाचित् गुरुकृपासैं बाहिर्मुखप्रवृत्तिप्रवाहके विरोध अंतर्मुखप्रवाहके साधन

विचारादिकक़ूं संपादन करैहैं औ अंतरआत्माकं ब्रह्मस्वरूप अपना आपकरिके निश्चय करै हैं। ऐसैं मुक्तमनुष्य जे पूर्व स्वयंभूरचित इंद्रियनसैं प्रथम अज्ञानदशाविषै केवल रूपरसआदिकक़ूंहीं देखते थे। वे गुरुकृपासैं ज्ञान भये पीछे जीवन्मोक्षदशाविषै दोदीर्घरेषारूप चित्रितभ्रांतिके दृष्टांतकी न्यांई। सर्वरूपरसआदिकक़ूं देखते हुये बी अंतर्मुखप्रवाहके बलसैं " सर्वरूपरस आदिक मिथ्याही है।" ऐसैं भ्रांतिकूं बाधकरिके तिस भ्रांतिके अधिष्ठान ब्रह्मस्वरूप आत्माकूं अपरोक्ष निश्चय करै हैं।।

षट्चक्रयुक्तआकृतिः— पूंठेके पृष्ठभागपर मध्यविषै षट्चक्रनकरिके युक्त जो आकृति है। तिसका उपयोग अब दिखावै हैं :— ग्रंथनकूं दक्षिणहस्तविषै सन्मुख धरिके। वामसैं दक्षिणकी तरफ त्वरास लघुचक्राकार फेरनेकरि षट्चक्र हैं वे दक्षिणकी फिरते दृष्ट पडैंगे औ उसी आकृतिके मध्यविषै दंतयुक्तचक्र है सो षट्चक्रनसैं विपरीत कहिये वामकी तरफ फिरता देखने मैं आवैगा।। यह बी भ्रांतिविषै चित्रितदृष्टांत है।

रंगितपट औ स्याहीका दृष्टांतः-- इस ग्रंथके पूंठेके मुख औ पृष्ठभाग विषै जितनी आकृति दृष्ट आवती हैं तिन सर्व विषै रंगित अक्षर रेखा आदिक देखने मैं आवते हैं वे भ्रांतिकरिहीं भासते हैं । कारण कि :- स्याहीरूप उपाधिसै रंगितपटविषै रंगित अक्षर आदिककी कल्पना होवै है ।। स्याहीरूप उपाधिके बाध किये वास्तविक कोइ अक्षररेषादि है नहीं परन्तु सर्व रंगितपटही है ।।" तैसैं सिद्धांतमैं । परमात्मतत्त्वविषै यह जो जगत् भासता है सो केवल भ्रांतिकरिहीं भासता है । कारण किः- मायारूप अज्ञानउपाधि से परमतत्त्वविषै जगत्की कल्पना होवै है ' तातैं तिस मायारूप अज्ञानउपाधिकूं गुरुमुखद्वारा बाध करिके "वास्तविक जगत् कछुबी है नहीं किंतु सर्व आत्माहीं है " ऐसा निश्चयरूप मोक्षका साधन जो तत्त्वज्ञान सो उक्तचित्रितदृष्टान्तनके दर्शनस्मरण करि मुमुक्षुनकूं ही है ।।

शरीफ शालेमहंमद

ॐ

मंगलाचरणम्.

ब्रह्मनिष्ठपंडित श्रीपीतांबरजी कृतम्

☆

नाराचवृत्तम्

कलं कलंक कज्जलं तमो निवारि सज्जलं ।
गतातिचंचलाचलं सुशांतिशीलमुज्ज्वलम् ।
सदा सुखादिकंदलं त्रितापपापशामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सवापुरामनामकम् ॥ १ ॥
समानदानदायकं भवाववाक्यसायकं ।
सुशुद्ध धीविधायकं मुनींद्रमौलिनायकम् ।
स्वसंगगीतगायकं व्यक्तं त्रिलोकरामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सषापुरामनामकम् ॥ २ ॥
शमक्षमादिलक्षणं प्रतिक्षणं स्वशिक्षणं ।
मुमुक्षुरक्षणे क्षमं क्षमेषु वै विलक्षणम् ॥

सुलक्ष्य लक्ष्य संशयं हरं गुरुं हि मामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥ ३ ॥
कलेशलेशवेशशून्यदेशके प्रवेशकं ।
गताविशेषशेषकं ह्यशेपवेषदेशकम् ॥
परेशकं भवेशकं समस्तभूमभामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामन मकम् ॥ ४ ॥
सकालकालिजालभालभेदिभानभल्लकं ।
प्रभिन्नखिन्ननुन्नभाविजन्ममत्तमल्लकम् ॥
सभेदखेदछेदवेद वाक्ययूथयामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥ ५ ॥
भवाष्टकष्टपाशदासभावभासनाशकं ।
सुशुद्धसत्त्वबुद्धतत्त्वब्रह्मतत्त्वभासकम् ॥
स्वलोकशोकशोषकं वितोसदोषवामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामगम् ॥६॥
सबन्धुजन्मसिंधुपारकारिकर्णधारकं ।
सलोभशोभकोपगोपरूपमारमारकम् ।

खबालकालवारकं समाप्तसर्वकामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥ ७ ॥
स्वलक्ष्यदक्षचक्षुषं स्वरूपसौख्यसंजुषं ।
कृतार्थचेतनायुषं गतार्थगामितस्थुषम् ।
विभोग्यजातदुर्विषं मुषं गुणालिदामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥ ८ ॥
भवाटवीविहारकारि जीवपांथपारदं ।
सुयुक्तिमुक्तिहारसारदं सुबुद्धिशारदम् ।
सपीतपादकांबरो ब्रवीति तं स्वरामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥ ९ ॥

श्रीमन्मंगलमूर्तिपूर्तिसुयशःस्वानंदवार्धुल्लसत् ॥
सौभाग्यैकसरित्पतिं प्रतिहतप्रोद्भूततापत्रयम् ॥
संसारसृतिलग्नमग्नमनसामुद्धारकं स्वागतं ।
प्रत्यक्तत्त्वसुचित्स्वरूपसुगुरुं रामं भजेऽहं मुदा ॥१॥
(श्रीपदार्थमंजूषागत)

श्रीसद्गुरुभ्यो नमः

अथ ब्रह्मनिष्ठपंडित श्रीपीतांबर-जीका जीवनचरित्र



उपोद्घात

श्लोकः

पीतांबराह्वविदुषश्चरितं विचित्रम् ॥
यद्वै वरिष्ठनरसद्गुणरत्नयुक्तम् ॥
ज्ञानादिसद्गुणगणैर्ग्रथितं स्वकीय-
ज्ञानान्मुमुक्षुमतिशुद्धिकरं च वक्ष्ये॥१॥

टीकाः-

पीतांबर है नाम जिनका ऐसैं जे पंडितजी

तिनका चरित्र कहिये जीवनचरित्र। अर्थ यह जोः—जन्मसैं आरंभकरिके अद्यपर्यंत जीवित-अवस्थाविषै तिनोंका आचरण। ताकूं मैं कहूँगा।

१ सो चरित्र कैसा है ? विचित्रहै कहिये अद्भुत (आश्चर्यरूप) है ॥

२ फेर कैसा है ? जो प्रसिद्ध अत्यन्तश्रेष्ठपुरुषोंके सद्गुणरूप रत्नोंकरि युक्त है ॥

३ फेर कैसा है ? ज्ञानादिसद्गुणोंकेगणों (समूहों) करि गुन्थित हैं ॥

अर्थ यह जोः—जिस चरितविषै पंडितजीके औ तिनसैं सम्बन्धवाले सत्पुरुषनके नामोंसैं स्मारित ज्ञान भक्ति वैराग्य उपरति आदिकगुणोंका वर्णन किया है ॥

४ फेर कैसा है ? जो चरित्र पने अज्ञानतैं स्वअन्तर्गत पुण्योत्पादक औ स्वजातीय

गुणोत्पादक महात्माओंके गुणोंके विज्ञापन-
द्वारा याके विचारनैवाले मुमुक्षुनकी बुद्धिकी
शुद्धिका करनैवाला है ॥

इस श्लोकविषै आरम्भ मैं।

१ 'पीतांबर" शब्दकरिके ब्रह्मनिष्ठसद्गुरु श्रीपीतांबरजीका औ।

२ पीत है अंबर नाम वस्त्र जिसका। ऐसैं विष्णुरूप सगुणब्रह्मका। औ

३ पीत कहिये स्वसत्तासैं कवलित किया है अम्बर कहिये आकाशादिप्रपंचरूप गर्भसहित अव्याकृत (माया) रूप आकाश जिसनै ऐसे सर्वाधिष्ठान निर्गुणपरब्रह्मका स्मरणरूप

तीनमंगलोंके आचरणपूर्वक इस जीवनचरित्ररूप ग्रन्थके आरंभ प्रतिज्ञा करी ॥ १ ॥

अब द्वितीयश्लोकविषै इस वर्णन करनैयोग्य महात्माके विशेषणभूत "पंडित" शब्दके अर्थकूं हेतुसहित कहे हैं:—

श्लोक

वंशावटंकनिगमागमशालिबुद्धि
विज्ञानशालिमतियुक्ततया हि लोके ॥
यः पंडितात्मकविशेषणयुक्तनाम्ना
पीतांबरेति प्रथितः पुरुपुण्यपुंजः ॥ २ ॥

टीकाः—

१ स्वकुलके "पंडित" ऐसे अवटंककरि । अरु
२ वेदशास्त्रकी बुद्धिरूप ज्ञानकरि । अरु
३ ब्रह्मात्मैक्यनिष्ठारूप विज्ञानकरि
विशिष्टमतियुक्त होनैकरि जो लोकविषै "पंडित"

रूप विशेषणयुक्त "नामसैं पीतांबर" ऐसैं प्रसिद्ध बहुपुण्यके पुंजरूप हैं ॥

इहां "पंडित" पदके उक्तत्रिविधअर्थनके मध्य प्रथम अरु द्वितीय अर्थ गौण है औ तृतीय अर्थ मुख्य है । काहेतैं

"यस्य सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः ॥
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पंडितं बुधाः" ॥१॥

अस्यार्थः—जिसके लौकिक वैदिकसमारंभ-कामना अरु संकल्पसैं वर्जित हैं । याहीतैं ज्ञान-रूप अग्निकरि दग्ध भयेहैं संचित अरु क्रियमाण रूप कर्म जिसके । ऐसा जो पुरुष है ताकूं बुधजन "पंडित" कहते हैं ॥ इस गीतास्मृतितैं ज्ञाननिष्ठपुरुषबिषैहीं "पंडित" पदकी वाच्यताके निश्चयतैं ॥ २ ॥

॥ कुलपरंपरा ॥

कच्छदेशविषै अञ्जारनामा नगर है। तामैं राजपूज्य महाज्योतिषी पंडित "नरेड्य" भयेथे जिसकी विद्वत्ताके माहात्म्यसैं अद्यापि ताका सारा वंश "पंडित" इस अवटंककरि युक्त भया-है। तिनके च्यारिपुत्र थे। तिनमैंसैं

१ एक भुजनगरमैं रहिके श्रीमहाराजाओंका दानाध्यक्ष भया ॥

२ द्वितीयपुत्र नारायणसरोवरतीर्थका पुरोहित भया ॥

३ तृतीयपुत्र अंजारनगरमैंही ज्योतिषीपंडित पदकूं पाया। औ

४ ताका चतुर्थ अवरजपुत्र चागला भया। सो आसंबीया नामक ग्राममैं ग्रामाधीशके अतिआदरसैं निवास करता भया ॥

एक समयमैं गढसीसाग्रामनिवासी सारस्वत गंगाधरशर्मा था। सो कोडायग्राममैं पाठशाला पढावताहुया रात्रिकूं अश्वारूढ होयके चार-कोशपर आसंबियाग्राममैं पंडितजीकेपास ज्योतिषशास्त्रके पढने निमित्त प्रतिदिन जाता था। सो गुरुचरणोकूं गोदमैं लेके मुखसैं पढता था। एक दिन पंडितजोकूं निद्राआगई औ गंगाधरजी गुरु-आज्ञाबिना चरणोकूं न छोडिके बैठा रहा॥ सवेर मैं सो देखिके ताकूं वर दिया किः—तेरेकूं सरस्वती मुहूर्तप्रश्न कर्णमैं कहेगी'' ऐसैं प्रसादित सरस्वती वाले वे चागला नामक पंडित थे ॥ तिनके पुत्र दामोदरजी परमज्योतिषी भये। तिनके १ लीलाधर २ प्रेमजी औ ३ गोवर्धन येतीन पुत्र थे। तिनमैं लीलाधरजी परमज्योतिषी औ भगवद्भक्त थे। वे आसंबियाग्रामसैं कदाचित् मज्जलग्राममैं पर्यटन करने जाते थे। तहां ग्रामाधीशोंको मुहूर्त

प्रश्नोंके प्रसंगसैं बडी भविष्यत् चमत्कृति दिखाई थी। तिस करिके तीनोंमैं सत्कारपूर्वक गृह अरु जमीन देके तिनकूं मज्जलग्राममैं स्थापित किये। वे वार्धक्यमैं तीर्थयात्रा करनेकूं गये। सो पीछे लौटे नहीं॥

लीलाधरजीके पुत्र १ गोपालजी तथा २ अमरसिंहजी थे। तिनमैं गोपालजीके पुत्र पंडित १ लछाराम २ पुरुषोत्तमजी तथा ३ पारपैया। ये तीन थे। तिनमैं पुरुषोत्तमजी जितेन्द्रिय निष्कपट जपतपसंयुक्त अरु मुहूर्त प्रश्नमैं वाक्-सिद्धिवान्के तुल्य थे॥

जन्मवृत्तान्त

पंडित श्रीपुरुषोत्तमजीके पुत्र पंडित १ मूलराज तथा २ पीतांबरजी तथा ३ लालजी। ये तीन भये॥ तिनकी माताका नाम वीरबाई (वीरवती) था।

सो बी वेदांतशास्त्रतैं जानत विवेकवती थी ॥ मूलराजके जन्मके अनंतर । सप्तभगिनियां । ८ भइयां । अनंतर पंडितपीताम्बरजीका जन्म विक्रम संवत् १९०३ ज्येष्ठशुद्ध १० रूपगंगा जयंतीके दिन भया है ॥ तिनके जन्मदिनमैं माता पिताकूं औ भगिनीयोंकूं औ सुहृदलोकनकूं "भगवत्का जन्म भया" ऐसा उत्साह भया था ॥ यथा शास्त्र जातकर्म पुण्यदानादि किया गया ॥ वे गर्भवासमैं थे तब माताकूं नारायण सर आदिक तीर्थयात्रा भई थी औ वेदान्तश्रवण अरु अनवच्छिन्नसत्संग भया था तिस हेतुसैं वे बाल्यावस्थासैंहि वेदान्तशास्त्रमैं रुचिवाले भये ॥ वृद्ध कहते हैं किः—षट्मासके गर्भके हुये जो माताकूं सत्शास्त्रका श्रवण होता रहे तो पुत्र बी शास्त्रसंस्कारवान् होता है ॥ यह वार्ता प्रह्लाद अष्टावक्रादिकमैं प्रसिद्ध है ॥

कौमार औ पौगण्डसें लेके किशोरवयका वृत्तांत

पंडितपीताम्बरजीकेजन्मअनंतरतिनकेपिताकी दिनदिन भाग्यवृद्धि होती गई ॥ ऐसैं तिनके लालनपालन पोषण करते हुये तिनविषै माता पिताकी प्रीति बढती गई ॥ पांच वर्षके अनंतर लघुवयविषै तिनके पिता सुभाषित प्रकीर्णश्लोकादि मुखपाठ पढाते थे सो धारण करते रहे। तद-नंतर पिताद्वाराही देवनागरी लिपिका ज्ञान भया। तदनंतर मंदिरादिकमैं जातेआते संन्यासी साधु ब्राह्मणोंके पास बी स्तोत्रपाठादिकी शिक्षा लेते भये औ तिनोंसैं तीर्थादिककी वार्ता औ प्राचीन इतिहास प्रेमसैं सुनते रहे॥ अनंतर अष्टवर्षकी वयमैं इनोंका विधिपूर्वक उपवीत भयाथा ।

फेर श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठसद्गुरु श्रीबापुमहाराज ब्रह्मचारी जे दशवर्षसैं रामगुरुकी आज्ञाकरि सत्-संगीजनोंकी भक्तिपूर्वक प्रार्थनासैं मज्जलग्राममैं रहते थे। तिनोंके पास अक्षरवाचनकी परिपक्तता अरु संध्यावंत उपनिषद्पाठ गीतापाठ अरु रुद्रा-ध्यायादि वेदके प्रकरणोंका पठन दोवर्षतक करते भये ॥ तिनके साथि अन्य बी सहाध्यायी थे। परंतु इनके सदृश किसीकी धारणशक्ति नहीं थी ॥ सो देखिके तिनके उपरि गुरुकी पूर्ण कृपा रहती थी। याहितैं तिनकी बुद्धिमैं ब्रह्मविद्याके संस्कार डालते रहतेथे। तबहीं "मैं देहेन्द्रियादि-संघातसैं भिन्न साक्षीरूप हौं"। यह निश्चय दृढ हो रहा था अरु तिन महात्माविषैं तिनकी गुरुनिष्ठा दृढतर हो रही थी। तब कोपीन धारण गुरुसमीपवास गुरुसुश्रूषा इत्यादि। ब्रह्म-चारीके धर्म सम्पूर्ण पालनकरिके रहते थे।

आधुनिकरूढिसैं तिनका उद्वाह १० वर्षके अनंतर भयाथा। तदनंतर श्रीसद्गुरुका वटपत्तनमैं निर्गमन भया॥ तिनके वियोगके समयमैं प्रेमपूर्वक गद्-गदकंठादि प्रेमके चिह्न बी होते रहे औ श्रीगुरुके साथिहीं अध्ययनके निमित्त जानेका बहुत आग्रह भया था। परंतु मातापिताने बहुत हठ-लेके निवारण किया॥

यज्ञोपवीतके अनंतर सोमप्रदोष एकादशी-आदि शास्त्रोक्तव्रत अनवच्छिन्न करते रहे औ व्रतके दिन मैं योग्यदेवका पूजन और प्रतिदिन स्वपिताके पंचायतनपूजाका स्वीकार आपहीं किया था॥ तिस तिस स्तोत्रादिकके पठन रूप भजन मैं काल व्यतीत करते थे॥ प्रासादिक लघुस्तवस्तोत्रका पाठ प्रतिदिन नियमसैं करते थे औ महाराजश्रीके निर्गमन भये पीछे श्रीरामगुरु-की चरणपादुका मज्जलग्राममैं महाराजकेहीं

स्थानमैं स्थापित थी उपकी पूजाअर्चादि वहीं करते रहे ॥ तिस वयमैं स्वमित्रोंके पास "चलो हम स्वगृह छोडिके तीर्थयात्रादिक करैं वा विद्याध्ययन करैं वा सत्समागम करैं"। ऐसी शुभ वासना तिनोंके चित्तमें उदय होती रही। परंतु वे मित्र सलाह देते नहीं थे ॥ महाराजके गमनानंतर तिनोंकेहीं स्थानमैं कोई देशांतरवासी रामचरण नामक वेदांतसंस्कारयुक्त विरक्तसाधु रहते थे ॥ जिनके साथि बहुत परिचय रखतेही रहे ॥ पीछे सो साधु रामगुरुकी पादुकाका पूजन वी करते थे औ प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्तमैं स्नानादि क्रिया तथा संपूर्णगीतापाठ औ अनुक्षण रामनामका भजन करतेथे औ रामायण भागवत वेदांतके प्रकरणग्रंथोंकी कथा करते थे ॥

पंडितजीनैं कितनेककाल गढसीग्रामके स्वस्वसापति देवचंद्र नामक ज्योतिर्विद्के पास मुहूर्त ज्योतिष आदिकका कछुक अभ्यास किया-था ॥ तिस प्रसंगमैं तहांसैं सन्निकृष्ट एकप्रति-ष्ठित बिल्वेश्वर नामक महादेवका बिल्ववनविषै प्राचीन धाम है तहां पूजनकूं गये थे औ श्रावण मासमैं बहुतदेशभरके विद्वान्ब्राह्मण पूजननिमित्त आते हैं। तिन्होंसैं अनेकशास्त्रप्रसंग औ वार्तालाप किया था ॥

तदनंतर मजलग्राममैं एक व्याकरणआदिक विद्याविषै कुशल लब्धिविजय नामक यतिवर थे तिनके पास पिताकी आज्ञासैं व्याकरणाभ्यास करते रहे ॥ कदाचित् तहां देशांतरपर्यटनशील परमविरक्त क्षमा दया धैर्य मौन तितिक्षा आदिक

अनेकसद्गुणरत्नाकर पद्मविजयजी नामक अति वरिष्ठ आये थे। तिन के पास व्याकरणाभ्यासनिमित्त जाते आते रहे ॥ इनोंकी सुशीलतादिकशुभगुण देखिके तिनोंकी बी परमप्रीति भयी थी ॥ परस्पर-चित्त बहुत मिलता रहा ॥ फेर कितनेककालपर्यंत वह पिताकी आज्ञासैं तिनके साथि विचरते रहे औ व्याकरणाभ्यास करते रहे ॥ अंतमैं कितनेक काल भुजनगरमैं तिनके साथि रहते थे ॥ जितना कछु प्रतिदिन पाठ लेते थे तितना कंठहुं करलेते थे ॥ बहुतसा व्याकरणाभ्यास तहां पूर्ण भया ॥ फेर तिस महात्माकी देशांतरविषै तीर्थयात्राके निमित्त जिगमिषा भई। तिनके साथिहीं पिताकी आज्ञासैं पंडितजी निर्गमन करते भये। परंतु माताके अतिस्नेहसैं दूतद्वार मध्यसे बुलाये गये।

मध्यवयोवृत्तांतः

फेर साधु श्रीरामचरणदासजीके साथि रामायणादिग्रंथनका विचार करते रहे ॥ कदाचित् काकतालीयन्यायकरि कोइक ब्रह्मनिष्ठपरमहंस स्वगृहमैं आयके रहेथे तिनोंनैं वेदांतके संस्कारका उज्जीवन किया । फेर पिताजी साथि नौकाद्वारा श्रीमुंबईनगरविषै गमन किया ॥ तहां नासिक-नगरनिवासी संसारोपरत श्रीनारायणशास्त्रीके विद्यार्थी श्रीसूर्यरामशास्त्रीके पास काव्यकोश व्याकरण भागवतादि शास्त्रनका अध्ययनकरिके संस्कृतवाणीविषै व्युत्पन्न मतिवाले भये फेर वेदांतार्थकी जिज्ञासाकरिके स्वामीश्रीरामगिरीजीके पास पंचदशीका अभ्यास करते रहे ॥

तावत् पूर्वपुण्यपुंजपरिपाकके वशतैं सद्गुरु श्रीबापुमहाराजजी अकस्मात् मुंबईमें पधारे तिनोंके पास विधिपूर्वक गमनकरिके पंचदशी आदिकग्रंथनका अध्ययन तथा श्रवण करते हुए श्रीगुरुके साथि नासिकक्षेत्रमैं जायआयके नौकाद्वारा श्रीकच्छदेशविषै आयके स्वकीयश्री-मज्जलग्राममैं पधारे॥ तहां स्वतंत्र वेदांतग्रंथनका अध्ययन तथा अनेक मुमुक्षुनके साथि अध्ययन औ श्रवण करतेरहे ॥ तब श्रीसद्गुरु जहां जहां सत्संगीजनोंके ग्रामोंमैं विचरते थे। तहां तहां सहचारी होयके अध्ययन औ श्रवण करते रहे॥ दोवर्षपर्यंत श्रीगुरु कच्छदेशमें विचरिके फेर जब वटपत्तन (बडोदरानगर) के प्रति पधारे तब श्रीभुजनगरपर्यंत बहुतसत्संगीजनसहित श्रीगुरुके साथि आयके फेर तिनोंकी आज्ञाके अनुसार मज्जलग्राममैं आवते भये ॥

तहां कछुक्काल स्वगुरुभ्राता रामचैतन्यशर्मा ब्रह्मचारी औ बुद्धिशालि यदुवंशी बापुजीवर्मा-क्षत्रिय आदिसत्संगीजनोंकूं पंचदशी उपदेशसहस्री नैष्कर्म्यसिद्धि तत्त्वानुसंधान विचारसागर-आदिक प्रकरणग्रंथोंका श्रवण करावतेथे ॥

फेर संवत् १९२४ की शालमैं तिनोंके गृहमैं देवकृष्णशर्मापुत्रका जन्म भया ॥ तदनन्तर मासत्रय पीछे तिनोंके पिता परमपदकूं पाये । पीछे त्वरितहीं आप मुंबईमेंपधारे । तब परमपुण्यके वशतैं श्रीविष्णुदासजीउदासीन परमहंसके शिष्य औ पंडितश्रीनिश्चलदासजीके विद्यार्थी औ कविराज परमअवधूत महात्मा श्रीगिरिधरकविजीके साधक सकलसाधुगुणसंपन्न स्वामीश्रीत्रिलोकरामजी स्वमंडलीसहित श्रीमुंबईमें पधारे ॥ तहांसंतनके दास साह नारायणजी त्रिविक्रमजीआदिक सत्संगीजनोंकी प्रार्थनासैं एकोनविंशति (२९)

मासपर्यंत श्रीमुंबईमें निवास करते भये ॥ तब श्रीवृत्तिप्रभाकर तथा श्रीविचारसागर इन दोग्रंथनका सम्यक्‌श्रवण होतारहा औ अहर्निश तिनमहात्माके पास एकांतवासविषै रहिके तत्कृपापूर्वक अनेकवेदांतके पदार्थनका शंकासमाधानपूर्वक निर्णय करते रहे औ तिन महात्माके मुखसैं सुनिके अरु देखिके अनेककल्याणकारी सद्‌गुणोंका स्वचित्तमें आधान करते भये । बीचमैं अवकाश देखिके पंडितश्रीजयकृष्णजीमहात्माके पास श्रीआत्मपुराणआदिके ग्रंथनका बी श्रवण करतेरहे॥ औ भट्टाचार्य श्रीभिकुशास्त्रीके विद्यार्थी श्रीभीमाचार्यशर्मनैयायिककेपास न्यायग्रंथनका अभ्यास बी करतेरहे औ तहां आनके प्राप्त भये निर्मलसाधु श्रीगंगासंगजीके पासवेदांतके प्रकरण देखते रहे ॥

किसी दिन स्वामीराघवानंदजीने पंडितनकी

सभा करवाई थी तहां पंडितजीनै वेदांतविषयक पूर्वपक्ष किया था ताका समाधान आशुकवि श्री गुट्टूलालोपनामक गोवर्धनेशजीनै किया था औ श्रेष्ठबुद्धि देखिके प्रसन्न होनके कहा किः—हमारे वहां कछु अध्ययन करनैकूं आते रहो ॥ तब तिनोंके पास शांकरउपनिषद्भाष्यका अध्ययन करते रहे ॥

फेर संवत् १९२६ के वर्षमैं कर्मदी मंडली-सहित स्वामीश्रीत्रिलोकरामजीके साथि श्री-प्रयागराजके कुंभपर जायके कल्पवास किया। तहां पंडितश्रीकाकारामजीके विद्यार्थी प्रयागवासी महोपराम संतोषरूप खड्गधारी महात्माश्रीब्रह्म विज्ञानजी तथा तिनके शिष्य उत्तमपरहंस श्रीकाशीवाले अमरदासजी। कनखलवाले अमर-दासजी। बडे आत्मस्वरूपजी। महापंडितज्योतिः

स्वरूपजी। तथा मंडलेश्वर आदित्यगिरिजी। आदित्यपुरीजी। फणीन्द्रयति। ब्रह्मानंदजी। महंतहरिप्रसादजी। सुमेरगिरिजी। बलदेवानंदजीआदिक अनेकमहात्माओंका समागम भया॥ तहाँ किसी प्रसंगसैं महात्मा काशीवाले अमरदासजीके पास पंडितजीने प्रश्न कियाः—

१ (१) प्रश्नः—किं विदुषो लक्षणं ?
(२) उत्तरः—रागादिदोषराहित्यम्॥

२ (१) प्रश्नः—रागाद्यभावे सति इष्टानिष्टयोः प्रवृत्तिनिवृत्त्यनुपपत्तेर्विदुषः प्रारब्ध भोगो न स्यात्!
(२) उत्तरः—अदृढरागादित्वं विदुषो लक्षणम्॥

३ (१) प्रश्नः—अदृढरागादेः किं लक्षणम्?

(उत्तर:-नैरंतर्येण रागाद्यभावत्वं
(विचारनिवर्त्यरागादित्वं) अदृढ-
रागादित्वं ॥

४ (१) प्रश्न:-सुषुप्तौ सर्वप्राणिनां रागा-
द्यभावेन नैरंतर्येण रागाद्यभावात
अज्ञेष्वपि तज्ज्ञलक्षणस्यातिऽयाप्तिः
सेत्स्यति ?

(२) उत्तर:-यद्यपि सुषुप्तौ अंतःकरणा-
भावात्त्वेवमस्तु तथापि जाग्रदा-
दावंतःकरणसंबधे सति नैरंतर्येण
रागाद्यमावत्वमदृढरादित्वं इति तु
नातिऽयाप्तिः ॥

५ (१) प्रश्न:-सुषुप्तौ संस्काररूपेणांतःकरणः
सद्भावेनातःकरणसंबंघसत्वादुक्तलक्षण
स्याज्ञेष्वतिव्याप्तिः !।

(२) उत्तरः—स्थूलांतःकरणसंबंधे सति इति स्थूलपदस्य निवेशे कृते नातिव्याप्तिः ॥

६ (१)प्रश्नः—कृष्यादि कर्मणि संलग्नस्याज्ञस्यापि स्थूलांतःकरणसबंधे सत्यपि रागाद्यभावादुक्तलक्षणस्याज्ञेष्वतिव्याप्तिः !

(२) उत्तरः—स्त्रीशत्रुप्रभृत्यनुकूलप्रतिकूलपदार्थसन्निध्ये स्थूलांतःकरणसंबंधे च सति नैरतर्येण रागाद्यभावत्वं अदृढरागादित्वं तदेव विदुषो लक्षणम् ॥

७ (१) प्रश्नः—षष्ठसप्तमभूम्योस्तु सर्वथा रागाद्यभावेनादृढरागाद्यभावादुक्त लक्षणस्य तत्राव्याप्तिः ॥

(२) उत्तरः—दृढरागादिराहित्यं विदुषां लक्षणं सिद्धिमिति वाच्यम् ॥

इस रीतिसैं प्रयागमैं प्रश्नोत्तर भया था ॥

वर्षरीजकी तीर्थयात्राके मिषकरि आगेसैं निर्गत औ तहांहीं प्राप्त भये श्रीगुरुका दर्शन करिके तीनोंकी आज्ञासैं श्रीकाशीपुरीमैं पधारे । तहां गौघाटपर स्थित अपूर्व परमोपरत स्त्रीदर्शनादिरहित एकांतवासी समाहित प्राकृतालापरहित किंचित्संस्कृतालापी श्रीरामनिरंजनोपनामक पदवाक्यप्रमाणज्ञ स्वामीश्रीमहादेवाश्रमजीके पास जाते आते रहें ॥ तिन्होंके पास जो कुछ प्रश्नोत्तर भया सो पंडितजीकृत प्रश्नोत्तरकदंब नामक ग्रंथमैं प्रसिद्ध है ॥

तहां दर्शनस्पर्शन करिके श्रीगयाश्राद्धकरि आये तब श्रीकाशीराजके मंत्रीनै मिलनैकी इच्छा विज्ञापन करीथी। अनवकाशतैं मिलाप न भया। फेर तहांसैं गोकुलमथुराआदिक व्रजमंडलकी यात्रा करिके पुनः मुंबई पधारे ॥ तहां पुनः श्री गुरुका कछुकदिन समागम भया ॥

फेर तदाज्ञापूर्वक कच्छदेशमैं आयके स्वानुज लालजीका विवाह किया ॥ पीछे रामाबाई नामक स्वकन्याका जन्म भयाहीथा ॥ तदनंतर गार्हस्थ्यसुखभोगविषै उदासीन हुए पादोनद्विवर्ष-पर्यंत कर्णपुरनामक ग्राममैं ग्रामाधीशोंके गृहमैं पूज्य होयके स्थित एकांतभजनशीलताआदिक अनेकसद्गुणालंकृत देशप्रतिष्ठित महात्मासाधु श्रीमान्ईश्वरदासजीकूं श्रीवृत्तिप्रभाकररूप भाषा ग्रंथ औ श्रीपंचदशीआदिक संस्कृतग्रंथनका अध्ययन करातेहुये रहेथे। वे महात्मा पंडितजीविषैं देहां-तपर्यंत कृतघ्नतानाशक गुरुबुद्धि धारतेथे ॥ ताके मध्य कोटडी महादेवपुरीविषै स्थित श्रीमान्अर्जुन-श्रेष्ठ नामक महात्माकूं मिलने गयेथे । तहां तिनोंकी इच्छासैं सार्धद्विमास पर्यंत रहिके सानं-दगिरि श्रीगीताभाष्यका परस्पर विचार करतेभये॥

फेर तहां कच्छदेशमैं द्वितीयवार श्रीगुरुका आगमन भया। तब तिनोंके साथि विचरते हुए श्रवणाध्ययन करते रहे। तब तिनोंके साथहीं शंखोद्धार (बेट) औ द्वारिकाक्षेत्रमैं जायके स्वदेशमैं आये॥ फेर गुरुआज्ञापूर्वक मुंबई पधारे तब उत्तमसंस्कारवान् उत्तमाधिकारी रा. रा. श्रेष्ठशरीफभाई सालेमहंद तथा परमविद्वान् सुसुहृत् उत्तमाधिकारी रा.रा. नमःसुखराम सूर्यरामभाई त्रिपाठी इन दोअधिकारिनकूं श्रवणाध्ययन करावतेरहे॥ तब प्रसंगप्राप्त तैलंगदेशीय पदवाक्यप्रमाणज्ञ याज्ञिकसुब्राह्मण्यमखींद्रशर्माशास्त्रीजी तहां विराजे थे तिनोंके पास शरीरभाष्यसहित ब्रह्मसूत्रनका शांतिपूर्वक पाठ श्रवण करते रहे। तब श्रीस्वामीस्वरूपानंदजी सहाध्यायी थे॥

अनंतर शरीफभाईआदिककीप्रार्थनासैं श्रीपंचदशीकी भाषाटीका तथा श्रीविचारसागरकेमंगलके पंचदोहाकी टीकापूर्वक टिप्पणिका तथा श्रीसुंदर विलासके विंशतितमैं विपर्ययनामकअंगकी टीका सहित टिप्पणि का तथा श्रीविचारचंद्रोदयवृत्ति रत्नावलि। सटीक बालबोध। संस्कृत श्रुति। षड्लिंग संग्रह। श्रीवेदस्तुतिकी टीका। स्वामीत्रिलोकराम जीकृत मनोहरमालकी टिप्पणिकासहितसर्वात्माभावप्रदीप आदिग्रंथनकूं रचतेभये॥ उक्त सब ग्रंथ छपे हैं औ श्रीवेदान्तकोश। बोधरत्नाकर प्रमादमुद्गर। प्रश्नोत्तरकदंब। षट्दर्शनसारावलि मोहजित्कथा। सदाचारदर्पण। ज्ञनागस्ति भूमिभाग्योदय रूपकादर्श और संशयसुदर्शन आदिकग्रंथ किंचित अपूर्ण होनैंतैं छपे नहीं हैं पूर्ण होयके छपेगे॥

संवत् १९३० की शालमैं आप बड़ोदामैं पधारेथे। सार्धमासपर्यंत रहे ॥ वहांसैं मुंबईपधारे पीछे श्रीगुरु परब्रह्मसमरसभावकूं प्राप्त भये ॥ जब पंडितजी महोत्सवपर पधारेथे श्री संवत् १९३२ की शालमैं भावनगरके महाराजा तख्तसिंहजीतथा महामंत्री गौरीशंकर उदयशंकर तथा उपमंत्री श्यामलदासभाई परमानंददास मुंबई विषैं मिले औ तिसीवर्षमैं स्वज्येष्ठभ्राता मूलराज अरु धर्मपत्नीका देहान्त भया औ जूनागढके महामंत्री ब्रह्मनिष्ठ श्रीगोलकजी झाला मुंबईगत चीनाबागमें मिले। तहां प्रथम अज्ञात हुए पीछे किसीस्वामीके वाक्यसैं विदित भये। यातैं वीतरागताकरि उपमित भये।

त्रिपाठी रा. रा. मनुःसुखराम सूर्यराम शर्माकी श्रीकच्छमहाराजाओंकी आज्ञापूर्वक राओबहादुर दिवान बहादुर महामंत्री श्रीमणिभाई यशभाईद्वारा पूर्णसहायताप्रदानपूर्वक प्रार्थनासैं तथा श्रीभावनगरके महाराजा तथा श्रीवढवाणके महाराजा तथा श्रेष्ठ हरसुखराय खेतसीदास तथा श्रेष्ठ प्रयागजी मूलजीआदिक सद्गृहस्थनकी सहायताप्रदानपूर्वक इच्छासैं ईशा केन कठवल्ली प्रश्न मुंडक मांडूक्य तैत्तिरीय औ ऐतरेय इन अष्टउपनिषदका सटीक श्रीशंकरभाष्यके व्याख्यानसहित व्याख्यानकारिके छपवाया है ।

तदनंतर संवत् १९३९ की शालमैं भावनगर जायके तहां राज्यादिकसैं योग्यसत्कारकूं पायके श्रीप्रयागके कुंभपरद्वितीयवार पधारे ॥ तहांमहात्मास्वामी श्रीत्रिलोकरामजी तथा श्रीमदमरदासजी तथा खेरपुरके महंत जन्मतैं वाक्सिद्धिवान् साधुश्रीगुरुपतिजी ताके शिष्य संगतिदासजी तथा साधबेलाके महंत श्रीहरिप्रसादजी तथा श्रीत्रिलोकरामजीके शिष्य पंडितअनंतानंदजी तथा पंडितकेशवानंदजी तथा पंडितभोलारामजी तथा पंडितस्वरूपदासजी तथा परमविरक्त मंडलेश्वर साधुश्रीब्रह्मानंदजी तथा साधुश्रीदयालदासजी तथा श्रीमयारामजीआदिक अवधूतमंडल इत्यादि अनेक महात्माओंका दर्शनसंभाषण किया ॥

फेर श्रीकाशीजीमैं आये ॥ तहांस्वामीत्रिलोकरामजीकीमंडलीकेसाथिही पंचक्रोशीकीयात्राकरी औ ब्रह्मनिष्ठ महात्मा पंडित अमरदासजी तथा-श्रीद्वितीयतुलसीदासजीके शिष्यवरणानदीपर विराजित साधुश्रीलालदासजीका दर्शन भाषण किया । तथा अवधूत दंडीस्वामी श्रीभा-स्करानंदजीका तथा दंडी स्वामी पंडित श्रीविशुद्धानंदजीका तथा स्वामीश्रीतारकाश्र-मजीका तथा ध्रुवेश्वरमठाधीश स्वामी श्रीरामगि-रिजीका तथा तिनके शिष्य योगिराज श्रीरुद्रानंद-जीका तथा त्रिशूलयतिके मठमैं स्थितस्वामीश्रीवीर गिरिजीका औ भरूचवासी स्वामी अद्वैतानंदजी आदिकका दर्शन संभाषणकिया॥पीछे स्वामीश्री-त्रिलोकरामजीकी आज्ञासैंश्री अयोध्याकेप्रतिपधारे

सर्वदा स्वकन्या रामाबाई तथा भ्रातृपुत्रीलीलाबाई साथि रही ॥ तहांभगवन्मंदिरोंके दर्शनपूर्वकसिद्ध श्रीरघुनाथजी तथा सिद्ध श्रीमाधवदासजीके दर्शन तथा सरयूस्नान करिके श्रीनैमिषारण्यविषै पर्यटनकरिके व्रजमंडलमैंविचारिके श्रीपुष्करराज तथा सिद्धपुरके सन्निद्ध सरस्वतीका स्नानादि-करिके श्रीडाकोरनाथका तथा बड़ोदानगरगतज्ञान मठमैंश्रीरामगुरुकीतथा श्रीसद्गुरुबापुसरस्वतीकी समाधिके तथा चरणपादुकाके दर्शनपूर्वक मंत्रीवर श्रीमणिभाई यशभाईका मिलाप करिके फेरमुंबईमैं पधारे॥तहासैं श्रीकच्छदेशविषै आये। तहां मणि-भाई मंत्रीसहित श्रीकच्छमहाराओंका मिलापभया

फेर संवत् १९४० की शालमैंमहाराजाधिरा जश्री ५ मत्हथुआधीशकृष्णप्रतापसाहिबहादुरश

र्मका प्रेमपत्र आया सो वांचिके बड़ा हर्ष भया ॥ फेर श्रीहथुवासैंकाश्मीरी पंडितजनार्दनजीकूंदर्शनके निमित्त मज्जलग्राममैं भेजा था। अनंतर मुमुक्षु जनोंकीजिज्ञासापूर्वकप्रार्थनासैं यजुर्वेदीयश्री बृहद्‌रण्यकोपनिषद्‌केहिंदीभाषामैंपूयाख्यानके लिखाने कास्वपुत्रके हस्तसैं ही प्रारंभ करिके पांच वर्षोंसैं ताकी समाप्ति करी। बीचमें श्रीकच्छमहाराजा-ओंकी आज्ञासैं श्रीसिंहशोशागढ ग्राममें मकान बनायके निवास किया। अवांतरकालमैंही श्रीह-थुआमहाराजकी तीव्र जिज्ञासासैं आकर्षित हुए स्वानुज लालजीसहितश्रीकाशीपुरीके प्रतिजिगमिषा करिके मुंबईमैं आये। वहां तीनदिनके अनंतर महाराजके भेजेपंडितजनार्दनजीसामने लेनेकूं आये। श्रीपुरीमें पहुँचे तब श्रीहथुआमहाराज सन्मुख

पधारे और दंडवत प्रणाम किया औ दुर्गाघाटपर महाराजा श्रीडुमरांवोंके श्रेष्ठसत्कारपूर्वक निवास करवाया था। तहां प्रतिदिवस आप मुखचर्चाश्रवणअर्थ पधारते थे। फेर पंडितजीके साथिहो स्वसद्गुरु दंडीस्वामी श्रीमाधवाश्रयजीकी सन्निधिमैं चैतन्यमठविषै राजा पधारते थे। तहां बी परमानंदकारी प्रश्नोत्तररूप वचनविलास होता रहा। जिस प्रसंगमें अनेक महात्माओंका दर्शन अर्थ महाराजके सहचारी ब्राह्मणोंके सहितप्रतिदिन पंडितजी पधारते थे॥ फेर महाराजकी आज्ञासैं मुंबईपर्यंत पंडितजनार्दनजीरूप सार्थवाहकसहित पधारे। मध्यमें जाके हस्तसैं निवेदित अन्नकूं साक्षात् हरि भोगते हैं ऐसी सुभक्ता शिष्या हीरबाई ब्राह्मणीकूं दर्शन देने अर्थ सेंभरी ग्राममैं ७ दिन वसिके मुंबईद्वारा फेर श्रीकच्छदेशमैं स्वानुजसहित आयके उक्त व्याख्यान समाप्त किया॥

कछुक काल स्वदेशगत सतसंगी जनोंके ग्रामोंमैं विचरते रहे। फेर संवत् १९४७ की शालमैं श्रीहरिद्वारके कुंभपर गमनअर्थ साधु श्रीईश्वरदास-जीके शिष्य प्रेमदास सहित आकराचीनगरमैं पधारे ॥ तहां पंडित स्थाणुरामके तनुज पंडित श्रीजयकृष्णजीआदिक अनेक सत्संगीजन वाहनोंसैं सन्मुख आयके लेगये॥ तहां दश दिन कथाश्रवण भया तब हैदराबादके केइक सत्संगी लेनेकूं आये तिसकरिके तहां पधारे। तब पंडित जयकृष्णजी साथिही रहे॥ फेर कोटडीमैं आयके ताकी सन्निधिमैं स्थित गीधुमलके टंडेमैं पंडित स्थाणु-रामजीके गृहमैं एक रात्रि रहे॥ सवेरमैं सिंधदफ-तरदारसाहबका अवलकारकुन मिस्टर तनुमल चोइथराम, विष्णुराम, केवलराम औ छत्तूमल ये गृहस्थ अश्वशकटिकासैं लेनेकूं आये तब तदा-रूढ होयके शहर हैदराबादकी शोभा देखते हुए नगरसैं वाहिर छ मोलके शिवालयमैं चार

दिवस निवास किया । तहां अहर्निश ईश्वरभजन-परायण मोनी दुग्धहारी एक अपूर्व ब्रह्मचारीका-दर्शन भया ओ नगरमें एक परमोपरत ज्ञानादि गुणसंपन्न कलाचंदनामक भक्तका दर्शन भया ओ केइक उत्तम भजनवानोंके स्थान देखे। स्वनिवासस्थानमैं सत्संगीजन प्रतिदिन श्रवण-अर्थ आते थे अरु दर्शननिमित्त नरनारीका प्रवाह प्रचलित भया था ॥ वहांसैं चलनैके दिनमैं पंडित युक्तिरामनामक संतनै स्वस्थानमैं आग्रहपूर्वक बुलायके पूजा सत्कार किया ॥ वहांसैं लेआनैवाले गृहस्थ ही रेलतलक छोड़नेकूं आये। फेर तहांसें शिखर सहरमैं आयके एक रात्रि रहे ॥ साधबेला नामक संतनके स्थानका दर्शन किया औ रोडीग्राममैं जायके उदासीनपरमहंस पंडित केशवानंदजी जो अमूलकदासजी महात्माके शिष्य थे उनकूं मिले औ परमार्थी वसणभक्तकूं बी मिले ॥

फेर वहांसैं मुलतान तथा लाहोरके मार्गसैं अमृतसरमैं आये। तहां शेठ ताराचंद चेलारामकी दुकानपर एक रात्रि रहे॥ वहां महाराजा श्रीकृष्ण प्रतापसाहिबबहादुर शर्माका प्रेमपत्रक आयाथा सो वांचिके प्रसन्न भये। प्रातःकालमें श्रीगुरुनानकजी के दरबारका सरोवरके मध्य दर्शन भया॥ फेर वहांसैं श्रीहरिद्वारपुरीमैं पधारे। तहां नील धारापर महात्मा श्रीत्रिलोकरामजी मंडलीका-निवास था। वहां वसति करी॥ ब्रह्मकुंडका स्नान महज्जनोंका दर्शन संभाषण भया॥ फेर वहांसैं उक्त मंडलीके साथि ही हृषीकेश पधारे॥ वहां परोपकारक कमलीवाले महात्मा श्रीशुद्धानंदजी मिले औ गंगातीरनिवासी तपस्वीजी श्रीगुरुमुख-दासजी मायारामजी अवधूतआदिक अनेक उत्तम संतोंका दर्शन भया॥ वहांसैं लौटिके श्रीअयोध्या-पुरीमें आये॥ वहांसैं रेलमें बैठिके श्रीहथुवा-

नगरमैं जानैअर्थ अलीगंजमैं आये। तहां अश्व-
शकटिकासहित महाराजका पंडित समाने लेनेकूं
आया था सो श्रीहथुवानगरमैं लेगया ॥ उसी
दिनमैं महाराजकी मुलाकात भई॥प्रतिदिन महा-
राजका समागम होतारहा।बीचमैं श्रीसालिग्रामी
नारायणी गंडकीनामक महानदीपर स्वारीआदिक
सामग्रीसहित स्नान करिआये औ स्थावापुर-
वासिनी देवीका दर्शन भी किया ॥ फेर वहांसैं
महाराजकी आज्ञासैं गयाजी गये । तहां श्राद्ध
करिके गंगातीरवर्ति दिगाघाटपर महाराके स्था-
नमैं पधारे ॥ उसी दिनमैं संकेतसैं महाराजा-
धिराज श्रीकृष्णप्रतापसाहिबहादुर शर्मा बी
तहां पधारे ॥ अक्षयतृतीया तहां भई औ तीन
दिन महाराजका समागम होता रहा॥फेर वहांसैं
धानोपुर आयके धूम्रशकटिकामैं महाराजके साथि
ही बैठिके श्रीवाराणसीमैं आये । तहां पिशाच-

मोचनपर स्थित हथुआधीशके बगीचेमें तीन दिन निवास भया ॥ गंगास्नान और महात्माओंका दर्शन संभाषण भया ॥

फेर वहांसैं महाराजकी तरफसैं मिलित भेटऔ पोशाक स्वीकार करिके तदाज्ञापूर्वक श्रीप्रयाग चित्रकूट पुंडरीकपूर औ पुन्यनगरके मार्गसैं श्री मुंबईमैं आयके शेठ श्रीयादवजी जयरामके स्थानमैं चातुर्मास्यपर्यंत वसिके ब्रह्मसत्रकी सामग्री सपादन करिके रेलके रस्ते स्वदेशविषै आयके संवत् १९४८केआश्विन शुद्ध१० सैं आरंभिके भगवन्महोत्सव नामक ब्रह्मसत्र किया । तहां केइक संन्यासी साधु ब्राह्मण औ सत्समागमीजनोंका अपूर्व समाज एकत्र भया था सभा संभाषणादि अद्भुत आल्हाद भया था।सो समाप्तक-करि श्रीमु-

बईमैं आयके भाषाटीकायुक्त श्रीबृहदारण्यक तथा छांदोग्य ये दो उपनिषद् सार्ध द्विवर्षमैं छपवाये॥

फेर श्रीप्रयागराजके कुंभपर जायके स्वामिश्री-त्रिलोकराजजीकी गंगापार स्थित मंडलीमैं कल्प वास किया ॥ वहां हथुवाधीशके मनुष्य आये थे तिनके साथि राजाने पत्रसहित रौप्यशतक भेज्या था सो स्वामीजीके समक्ष तिनोंकी आज्ञासैं गंगा-तीरस्थ पंडितनके अर्थ यथायोग्य विभक्त किया गया।

फेर वहांसैं वे मंडलीसहित श्रीकाशीपुरमैंपधारे॥ स्वामीजी दुर्गाघाटपर रहे। पंडितजी पिशाचमो चनपर स्थित महाराजके बगीचेमैं २५ दिन रहे। प्रतिदिन महाराजका समागम होतारहा॥चार बजे बाद नित्य अश्वशकटिकासैं महाराजके सहचारियों करिसहित भिन्नभिन्न स्थानमैं महात्माओंके दर्शनकूं

जाते थे। स्वामी श्रीमाधवाश्रमजी। स्वामी श्रीविशुद्धानंदजी। स्वामी श्री भास्करानंदजी। स्वामी श्रीपूर्णानंदजी। महात्मा श्रीअमरदासजी। पंडित श्रीरामदत्तजी। महांत श्रीपवारिजी। साधु श्रीविक्रमदासजी आदिक अनेक उपरतिशील महात्माओंका दर्शन भाषणभया। महाराजकी यज्ञशालाका भी इष्टसहित दर्शन भया॥ फेर चलनैके पहिले दिन सायंकालमैं पंडित शिवकुमारजी। राखालदासन्यायरत्नभट्टाचार्य। कैलासचन्द्रभट्टाचार्य आदिक उत्तमपंडितनको सभा करवाई थी। तिन विद्वद्वरोंका दर्शन संभाषण भया॥ पंडितनके बिदा हुए पीछे स्वकृत आशीर्वचनरूप श्लोक महाराजके समक्ष अर्थसहित उचार्‍या।

श्लोकः

श्रीमत्कृष्णप्रतापतुल्यनृपति-
लोंकेऽधुना दुर्लभः
श्रीमद्रामसमोऽस्त्यसौ शुभगुणैः
सद्धर्मसत्सेतुकृत् ।
स्वाज्ञानैककुरावणस्य कहरो
मुक्त्येकलंकासुजित्
शांतिश्रीजनकात्मजाप्तिसहितो
भूपात्स्वधामैकराट् ॥ १ ॥

सो चतुर्धा अर्थसहितसुनिके पंडितसभाहित नृपति परम प्रसन्न भये ॥ उत्थान करिके अभिवंदन किया । आनंदसैं आलिंगित होयके मिले भेटे औ पोशाक समर्पिके बिदा करी । प्रातःकालमें वहांसैं प्रयाण करिके पंडितजी श्रीमुंबईमैं पधारे ॥ पीछे श्रीकच्छदेशमैं पधारे ॥ फेर संवत्

१९५१ के वर्षमैं प्रभासादियात्राकी जिगमिषा करिके गृहसैं निर्गत हुए अगनबोट (धूमनौका) सैं वेरावल पधारे। तहांरावबहादुर जूनागड़के दीवान-जीसाहेब श्रीहरिदासबिहारीदासजालीबोटमैंबि-ठायके बंदरपर लेगये ॥ वहां शेठ शरीफ सालेमहं-मदादि सद्गृहस्थोंका मिलाप भया ॥ तिनकी भावनासैं २५ रोज तक श्रीजूनागढसरकारके मकानसैं निवास भया ॥ मध्यमैं प्रभास औ प्राची नामक तीर्थकी यात्रा करि आये ॥ फेर धूम्र शकटिकाद्वाराश्रीजूनागढ पधारे। तहां श्रीदिवान साहेबकी आज्ञासैं शकटिकासैं छापखाने मेनेजर महादेवभाई सामने आयके लेगया ॥ औ नायब दिवानसाहेब श्रीपुरुषोत्तमरायके नवीन् गृहमैं निवास करवाया ॥ तहां एक मासभर रहे ॥ वह

श्रीनरसिंहमेहेता दामोदरकुंड मुचुकुंदगुफा और शहरके सुन्दर स्थानोंका प्रदर्शन भया और रैवताचल (गिरिनार पर्वत) की यात्राभई ॥ एकत्र भई सभाके मध्य श्रीदीवानसाहेबके गृहमैं पंडितजीका वेदांतविषयका संभाषण भया। फेर वहांसैं बिदा होयके वेरावल आये। तहां वैवटदारसाहेब और व्यापाराधिकारी शेठ शरीफभाई रेलपर सामाने आयके निवासस्थानमैं लेगये ॥

फेरवहांसे धूम्रनौकाद्वारा श्रीमुंबईमें आगमन भया। तहां महाराज श्रीजयकृष्णजी तथा साधु श्रीसंगतिदासजी और परमसुहृत् श्रीमन सुखराम सूर्यरामजीआदिकसज्जनोंका समागम भया॥ और स्वकीय दो पौत्रनके मौजीबंधनके प्रसंगसैं चारि

यज्ञकी चिकीर्षाके लिये सर्वसामग्री संपादन करिके स्वदेशमें पधारे ॥

संवत् १९५२ के वैशाख कृष्णद्वितीया द्वादशीपर्यंत श्रीगायत्रीपुरश्चरण ॥ श्रीमहारुद्रयज्ञ । विष्णुयज्ञ जो शतचंडी ये चारि यज्ञ किये ॥ तहां स्वामी श्रीआत्मानदजी और केइक संत अरु सत्समागमियोंका की आगमन भया था ॥ अनंतर संवत् ॥१९५४ सालसैं आरंभकरिके गढसीसासैं सार्द्धैककोशपर पूर्वदिशामैं प्राचीन बिल्ववनविषै प्राचीनकालमैं आविर्भूत देशप्रतिष्ठित स्वयंभू श्रीबिल्वेश्वर नामक महादेवका मंदिर स्वल्पहोनेतैं श्रावणमासमें बहुत पूजक ब्राह्मणोंके समावेशके अयोग्य जानिके और तहां जन्माष्टमीके दिन होते मेलाहैं विष्णुदर्शनका अलाभ अरु दर्शनार्थीजनोंकूं मार्गका कष्ट जानिके कच्छदेशमें पर्यटन करिके राज्यादिकसैं प्राप्त द्रव्यसैं विस्तीर्ण सुंदरशिवालय

तथा विष्णुमंदिर तथा वहांसे गढसीसा तोडी सड़क करावते भये ॥

अबी संवत् १९५६ के वर्षमैं आप स्वदेशमैं ही जीवन्मुक्तिके विलक्षणआनंदअर्थ अल्पायास, युक्त हुए स्थित भये हैं ॥

उक्तप्रकारके सत्कर्मोंके करने इच्छा इनकूं सर्वदा रहती है ॥ये महात्मा राग, द्वेष, मत्सर, वैर, विषमता, निंदा, असूया–आदिक दुर्गुणोंते रहित हैं। और अमानित्व, अदंभित्व, अहिंसा, क्षमा, सौशील्य, सौजन्य, अक्रोध, शांति, धैर्य, मोहशोकराहित्य, आस्तिक्य, भक्ति, वैराग्य, ज्ञान अरु उपरति आदिक अनेक सद्गुणोंकरि अलंकृत हैं।

॥ इति ॥

ॐ

श्रीविचारचंद्रोदय

नवमआवृत्तिकी अनुक्रमणिका

आरंभ-पृष्ठांक

षोडशकला प्रथमविभागः

श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रहकी अनुक्रमणिका

ॐ

श्रीविचारचन्द्रोदय



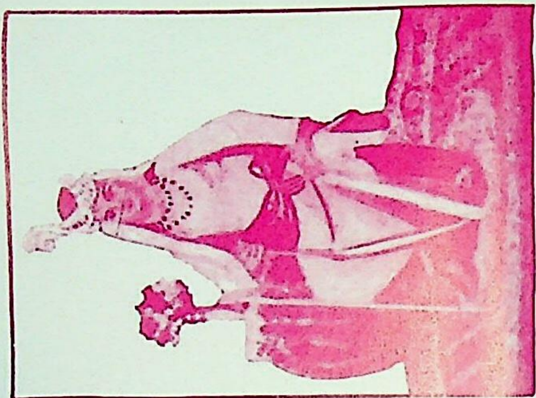
नवमआवृत्तिकी अकारादिअनुक्रमणिका

टिः– टिप्पणांकनकूं सूचन करै है

अन्य सर्व अंक पृष्ठांकनकूं सूचन करे है









ॐ गुरुपरमात्मने नमः

श्रीविचारचंद्रोदय

अथ प्रथमकलाप्रारंभः ॥ १ ॥

उपोद्घातवर्णन

मनहर छंद

पुरुषइच्छाविषय पुरुषार्थ जोई सोई ।
दुःखनाश सुखप्राप्तिरूप मोक्ष मानहु ॥
हेतु ताको ब्रह्मज्ञान सो परोक्ष अपरोक्ष ।
तामैं अपरोक्ष दृढ अदृढ दो गानहु ॥
मोक्षको साक्षात्हेतु दृढ अपरोक्षज्ञान ।
हेतु ता विचार जीवब्रह्मजग जानहु ॥
तीनवस्तुरूप जड चेतनदो जड मिथ्या-
माया ब्रह्मचित् "सो मैं" पीतांबर स्यानहु १

* १प्रश्नः—पुरुषार्थ सो क्या है ?

उत्तरः--सर्वपुरुषनकी इच्छाका जो विषय। सो पुरुषार्थ है

* २ प्रश्नः—सर्वपुरुषनकू किसकी इच्छा होवै है

उत्तरः--सर्वपुरुषनकूं सर्वदुःखनकी निवृत्ति औ परमानंदनकी प्राप्तिकी इच्छा होवैहै ॥

* ३ प्रश्न—सर्व दुःखनकी निवृत्ति औ परमानंदकी प्राप्ति सो क्या है ?

उत्तरः--सर्वदुःखनकी निवृति औ परमानंद-की प्राप्ति। यह मोक्षका स्वरूप है

।।१।। प्रतिपादन करनेयोग्य अर्थकूं मनमें राखिके तिसके अर्थ अन्यअर्थका प्रतिपादन उपोद्घात है ।। जैसें किसीकूं दूसरेके गृहसें छांछ लेनैंकी होवै। तब वह बात मनमें राखिके तिसके अर्थ "तुम्हारी गौ दुग्ध देती है वा नहीं ?" इत्यादिरूप अन्यवार्ताका कथन उपोद्घात है ।। तैसें इहां प्रतिपादन करनैयोग्य

जो विचार । ताकूं मनमैं राखिके तिसके आरंभअर्थ अन्य मोक्ष आदिकपदार्थनका कथन उपोद्घात है

॥२॥कोईबी रागके ध्रुवपदमैं गाया जावै है ॥

॥३॥अन्वयः ता (दृढअपरोक्षज्ञानका) हेतु विचार है ॥

॥४॥ ऐसा निश्चय करो ॥

॥५॥धर्म अर्थ काम मोक्ष । इन च्यारीका नाम पुरुषार्थ ॥ तिनमैं प्रथमके तीन गौण हैं । तिनकूं छोडिके इहां अंतके मुख्य पुरुषार्थका ग्रहण है ॥

॥६॥अज्ञानसहित जन्ममरणादिक दुःख कहिये हैं

॥७॥मिथ्यापनैका निश्चयरूप बाध निवृत्ति है ॥

॥८॥ परमप्रेमका विषय परमानंद है ॥

॥९॥इहां कंठभूषणकी न्याई नित्यप्राप्तकी प्राप्ति मानी है ॥

॥१०॥कर्त्ताभोक्तापनैंआदिकअन्यथा भावकूं छोडि के स्वस्वरूपसैं स्थितिही मोक्ष है ॥ कितनेंक लोक तौ स्वर्ग वैकुंठ गोलोक ब्रह्मलोक आदिककी प्राप्तिकूं मोक्ष

४ प्रश्न :– मोक्ष किससैं होवै है ?

उत्तर:–मोक्ष ब्रह्मज्ञान[११]सैं होवै ॥

* ५ प्रश्न:– ब्रह्म[१२]ज्ञान सो क्या ?

उत्तर:–ब्रह्मज्ञान । सो ब्रह्मस्वरूपकूं यथार्थ जनना ॥

* ६ प्रश्न:– ब्रह्मज्ञान कितनै प्रकारका है ?

उत्तर:–ब्रह्मज्ञान । परोक्ष औ अपरोक्ष भेदतैं दो प्रकारका है ॥

* ७ प्रश्न:– परोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है ?

उत्तर:–(१ परोक्षब्रह्मज्ञानका स्वरूप)

जानते हैं । सो वेदसैं विरुद्ध है ।। ऊपर कह्या मोक्षक स्वरूप वेदअनुसारी है ।।

।।११।।कर्म औ उपासनासैं चित्तकी शुद्धि औ एकाग्रतारूप ज्ञानके साधन होवैं हैं । मोक्ष नहीं ।।

।।१२।।ब्रह्मसैं अभिन्न आत्माका ज्ञान । मोक्षका हेतु है ।।

सच्चिदानंदरूप ब्रह्म है, ऐसा जो जानना सो परोक्ष[13] ब्रह्मज्ञान है ॥

* ८ प्रश्न :–परोक्षब्रह्मज्ञानका किससे होवै है ?

उत्तर:–(२ परोक्षब्रह्मज्ञानका हेतु)

सद्गुरु और सत्शास्त्रके वचनमैं विश्वासके रखनेसैं परोक्षब्रह्मज्ञान होवै है ॥

* ९ प्रश्न:– परोक्षब्रह्मज्ञानसैं क्या होवै है ?

उत्तर:–(३ परोक्षब्रह्मज्ञानका फल)

[14]असत्त्वापादकआवरणकी निवृत्ति होवै है ॥

* १० प्रश्न:– परोक्षब्रह्मज्ञान कब पूर्ण होवै है ?

॥१३॥परोक्षज्ञान । "तत्त्वमसि" महावाक्यगत "तत्" पदके अर्थकूं जनावंता है । यातैं सौ अपरोक्ष अद्वैतज्ञानविषै उपयोगी है ॥

॥१४॥ "ब्रह्म नहीं है" इसरीतिसैं ब्रह्मके असद्भावका आपादक कहिये संदादक आवरण । असत्त्वापादकआवरण है ॥

उत्तरः-(४ परोक्षब्रह्मज्ञानकी अवधि)

परोक्षब्रह्मज्ञान। ब्रह्मनिष्ठगुरु औ वेदांत शास्त्रके अनुसार ब्रह्मस्वरूपके निर्धार किये पूर्ण होवै है ॥

११ प्रश्नः– अपरोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है ?

उत्तरः–“ सच्चिदानंदरूप ब्रह्म मैं हूं ऐसा ” जो जानना । अपरोक्षब्रह्मज्ञान है ॥

१२ प्रश्नः– अपरोक्षब्रह्मज्ञान किससैं होवै है ?

उत्तरः–गुरुके मुखसैं “तत्त्वमसि” आदिक-महावाक्यके श्रवणसैं अपरोक्षब्रह्मज्ञान होवै है ॥

१३ प्रश्नः– अपरोक्षब्रह्मज्ञान कितनै प्रकारका है ?

उत्तरः–अपरोक्षब्रह्मज्ञान अदृढ औ दृढ इस-भेदतैं दोप्रकारका है ।

१४ प्रश्नः– अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है ?

उत्तरः-(१ अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका स्वरूप)

[15]असंभावना और विपरीतभावना[16]सहित जो ब्रह्मआत्माकी एकताका निश्चय होवै । सो अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान है ॥

१५ प्रश्नः– अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान किससैं होवै है

उत्तरः–(२ अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका हेतु)

॥१५॥

१ "वेदांतविषै जीवब्रह्मका भेद प्रतिपादन किया है किंवा अभेद ?" यह प्रमाणगतसंशय है ॥ औ

२ "जीवब्रह्मका भेद सत्य है वा अभेद सत्य है ?" यह प्रमेयगतसंशय है ॥

यह दोनूं प्रकारका संशय असंभावना कहिये है ।

॥१६॥" जीवब्रह्मका भेद सत्य है औ देहादिप्रपंच सत्य है " ऐसा जो विपरीतनिश्चय । सो विपरीतभावना है ॥

१ कछुक मलविक्षेपदोषके श्रुतिनानात्वका ज्ञान । औ

२ ब्रह्मकी अद्वैतताके असंभवका ज्ञान औ

३ भेदवादी अरु पामरपुरुषनके संगके संस्कार ।

इनकरि सहित पुरुषकूं गुरुमुखद्वारा महावाक्यके श्रवणसैं अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान होवै है ॥

* १६ प्रश्न :- अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानसैं क्या होवै है ?

उत्तर: -(३अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका फल)

अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानसैं

१ उत्तमलोककी प्राप्ति होवै हैं । औ

२ पवित्रश्रीमान्‌कुलविषै जन्म होवै है अथवा निष्कामताके हुये ज्ञानीपुरुषके कुलविषै जन्म होवै है ॥

* ७ प्रश्न :- अदृढ़अपरोक्षब्रह्मज्ञान कब पूर्ण होवै है ?

उत्तरः-(१ अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानकी अवधि)

सत्-चित् आनन्द आदिक ब्रह्मके विशेषणनके अपरोक्षभान हुये बी संशय[17] औ विपरीत[18] भावनाका सद्भाव होवै! तब अदृढ अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान पूर्ण होवैहै ॥

* १८ प्रश्न :– दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है ?

उत्तरः-(१ दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका स्वरूप)

असंभावना औ विपरीतभावनासैं रहित जो ब्रह्मआत्माकी एकताका निश्चय होवै। सो दृढ-अपरोक्षब्रह्मज्ञान है ॥

* ९१ प्रश्नः– दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान किससैं होवै है ?

॥१७॥दोकोटिवाला ज्ञान संशय कहिये है ॥

॥१८॥विपरीतनिश्चयकूं विपरीत भावना कहै हैं।

उत्तरः–(२ दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका हेतु) गुरुमुखसैं [१९]महावाक्यके अर्थके श्रवण मनन औ निदिध्यासनरूप विचारके कियेसैं दृढअपरोक्षब्रह्म ज्ञान होवै है ॥

* २० प्रश्नः– दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानसैं क्या होवै है ?

उत्तरः–(३ दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका फल) [२०]अभानापादक आवरण औ विक्षेप[२१]रूप कार्य

॥१९॥जीवब्रह्मकी एकताके बोधक वाक्य । महावाक्य कहिये हैं ॥

॥२०॥ "ब्रह्मभासता नहीं" इसरीतिसैं अभान जो ब्रह्मकी अप्रतीति । ताका आपादक कहिये संपादन करनैं वाला आवरण ॥ अभानापादकआवरण है ॥

॥२१॥स्थूलसूक्ष्मशरीरसहित चिदाभास औ ताके धर्म कर्त्तापना भोक्तापना जन्ममरणआदिका विक्षेप है ।

सहित अविद्याकी कहिये अज्ञानकी निवृत्ति होयके ब्रह्मकी प्राप्तिरूप मोक्ष होवै है ॥

* २१ प्रश्न :– दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान कब पूर्ण होवै है

उत्तर:–(४ दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानकी अवधि)

देहविषै अहंपनैके ज्ञानकी न्यांई । इस ज्ञानका बाधकरिके ब्रह्मसै अभिन्न आत्माविषै जब ज्ञान होवै । तब दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान पूर्ण होवै है ॥

* २२ प्रश्न:– विचार सो क्या है ?

उत्तर:–(१ विचारका स्वरूप)

आत्मा ओ अनात्माकूं भिन्नकरिके जानना । सो विचार है ।

* २३ प्रश्न:– यह विचार किससैं होवै है ?

उत्तर:- (२ विचारका हेतु)

यह विचार ईश्वर । वेद । गुरु औ अपना अन्तःकरण । इन चर्यारी[22]की कृपासैं होवै हैं ॥

* २४ प्रश्नः– इस विचारसें क्या होवै है ?

उत्तरः- (३ विचारका फल)

इस विचारसैं दृढ अपरोक्षब्रह्मज्ञान होवै है ॥

* २५ प्रश्नः– यह विचार कब पूर्ण होवै है ?

उत्तरः--(४ विचारकी अवधि)

॥२२॥

१ सद्गुरुआदिकज्ञानसामग्रीकी प्राप्ति ईश्वरकृपा है ॥
२ शास्त्रअर्थके धारणकी शक्ति वेदकृपा है ।
३ शास्त्र औ स्वअनुभवके अनुसार यथार्थ उपदेशका करना गुरुकृपा है ॥ औ

शास्त्रगुरुके वचनअनुसार साधनोंका संपादन करना अपनै अंतःकरणकी कृपा है ।

यह विचार दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानके भये पूर्ण होवै है ॥

* २६ प्रश्नः– विचार किसका करना ?

उत्तरः- (५ विचारका विषय)

१ मैं कौन हूं ? २ ब्रह्म कौन है ? औ ३ प्रपंच क्या है ? इन तीनवस्तुका विचार करना ॥

* २७ प्रश्न :– इन तीन वस्तुका साधारण रूप क्या?

उत्तरः--१-२ 'मैं औ ब्रह्म" सो चैतन्य है ॥ अरु ३ प्रपंच[२३] सो जड है ॥

* २८ प्रश्नः– चैतन्य सो क्या है ?

उत्तरः--(१) जो ज्ञानरूप है । औ

॥ २३ ॥ समष्टिव्यष्टिस्थूलसूक्ष्मकारणदेह औ तिनकी अवस्था अरु धर्म । प्रपंच कहिये है ॥

(२ सर्वघटादिकप्रपंचकूं जानता है औ

(३) जिसकूं अन्य मनइंद्रियआदिक कोई जानि सकते नहीं।

सो चैतन्य है ॥

* २९ प्रश्नः— जड सो क्या है ?

उत्तरः—(१) जो आपकूं न जानै। औ

(२) दूसरेकूं बी न जानै

ऐसे जो अज्ञान[24] औ तिनके कार्य भूत[25] भौतिकपदार्थ[26]। सो जड हैं।

॥२४॥ " नहीं जानताहूं " ऐसे व्यवहारका हेतु आवरणविक्षेपशक्तिवाला अनादिभावरूप अज्ञान पदार्थ है ॥

॥२५॥आकाशादिकपांचभूत॥

॥२६॥भूतनके कार्य पिंडब्रह्मांडादिक सो भौतिक हैं ॥

* ३० प्रश्न :– ऊपर कहें तीनवस्तुके विचारका किसरीतिसें उपयोग है ?

उत्तर:–(६ विचारका उपयोग)

१ "तत्त्वमसि" महावाक्यमें स्थित "त्वं"पद औ "तत" पदका वाच्यअर्थ जीव[27] औ ईश्वर[28] तिनकी उपाधिरूप जो प्रपंच[29]। तिनकूं जेवरीमैं सर्पकी न्याईं औ ठौंठमैं पुरुषकी न्याईं औ मरुभूमिमैं मृगजलकी न्याईं। विचारकरि मिथ्या जानिके त्याग करना ! यह प्रपंचके विचारका उपयोग है ॥

॥२७॥चिदाभासयुक्त अंतःकरणसहित कूटस्थ चैतन्य सो जीव है ॥

॥२८॥चिदाभासयुक्त मायासहित ब्रह्मचैतन्य। सो ईश्वर है ॥

॥२९॥समष्टि औ व्यष्टिरूप तीनशरीर । पंच-कोश । तीन अवस्थाआदिकनामरूप प्रपंच कहिये है ।

२ "मैं जो ('त्वं' पदका लक्ष्यार्थ) आत्मा। सो ('तत्' पदका लक्ष्यार्थ) ब्रह्म हूं।" इस रीतिसैं ब्रह्मआत्माकी एकताकूं विचारकरि सत्य जानिके अवशेष रखना। यह 'मैं कौन हूं "औ 'ब्रह्म कौन है' इस विचारका उपयोग (फल है)

* ३१ प्रश्नः– इस विचारका अधिकारी कौन औ सो क्या करै ?

उत्तरः–(७ विचारका अधिकारी)

१ इस विचारका अधिकारी [30]उत्तमजिज्ञासु है ॥

२ सो अधिकारी सद्गुरुकी कृपासैं उपोद्घात्

॥३०॥ विवेक वैराग्य षड्संपत्ति औ मुमुक्षुता इन च्यारीसाधनकरि सहित होवै औ ब्रह्मवितगुरु अरु वेदांतशास्त्रके वचनविषै परमविश्वासी होवै, कुतर्क कदाचित् करै नहीं। ऐसा जो स्वरूपके जानैंकी तीव्र इच्छावाला अधिकारी सो उत्तमजिज्ञासु है।

आदिककी प्रक्रियाँकूं[31] विचारके " मैंहीं आप ब्रह्म हूं" इसरीतिसैं ब्रह्मआत्माकूं अपरोक्ष जानै ॥

* ३२ प्रश्न :– तिन प्रक्रियाके नाम कौन है ?

उत्तरः–(१) उपोद्घात ॥
(२) प्रपंचका आरोप और अपवाद॥
(३) देह तीनका मैं द्रष्टा हूं ॥
(४) मैं पंचकोशातीत हूं ॥
(५) तीनअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥
(६) प्रपंचका मिथ्यापना ॥
(७) आत्माके विशेषण ॥
(८) सच्चिदानंदविशेषवर्णन ॥
(९) अवाच्यसिद्धांतवर्णन ॥

॥३१॥अद्वैतके बोध करनैका कोइ बी प्रकार सो प्रक्रिया है ॥

(१०) सामान्यचैतन्य औ विशेषचैतन्य ॥

(११) "त्वं" पद औ " तत् " पदका वाच्यअर्थ औ लक्ष्यअर्थ अरु दोंनूके लक्ष्यअर्थकी एकता ॥

(१२) ज्ञानीके कर्मकी निवृति ॥

(१३) सप्तज्ञानभूमिका ॥

(१४) जीवन्मुक्ति औ विदेहमुक्ति ॥

(१५) वेदांतप्रमेय ॥

(१६) श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रहः ॥

ये तिन प्रक्रियाके[३२] नाम हैं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये उपोद्घातवर्णननामिका प्रथमकला समाप्ता ॥ १ ॥

॥३२॥-१ प्रपंचका विचार प्रथम द्वितीय षष्ठ द्वादश औ त्रयोदशवीं प्रक्रियाविषै किया है। औ

२ "प्रपंचसहित मैं कौन हूं ?" याका विचार

तृतीय चतुर्थ औ पञ्चम प्रक्रियाविषै किया है। औ

३ परमात्मा कौन है। याका विचार दशम प्रक्रियाविषै किया है। औ

४ ब्रह्म-आत्मा दोनूंके स्वरूपका विचार सप्तम अष्टम नवम एकादश औ चतुर्दशवीं प्रक्रियाविषै किया है। औ

५ प्रपंच औ ब्रह्मआत्मा के स्वरूपका विचार पंचदशवीं प्रक्रियाविषै किया है।

सर्व प्रक्रियाका "तत्" "त्वं" पदार्थका शोधन औ तिनकी एकताका निश्चय प्रयोजन है।

॥ अथ द्वितीयकलाप्रारंभः ॥ २ ॥

॥ प्रपंचारोपापवाद ॥



॥ मनहर छंद ॥

प्रपंचारोपापवाद करि निष्प्रपंच वस्तु
ब्रह्मजानिके अवस्तु--मायादिक भानिये ॥
ब्रह्म माया संबंध रु जीवईश भेद तिन ।
षट् ये अनादि तामें ब्रह्मानंत मानिये ॥
वस्तुमें अवस्तु कर कथन आरोप,बाधि[३३]-
अवस्तु वस्तुकथन अपवाद जानिये ॥
गुरुके प्रसाद यह युक्ति जानि पीतांबर ।
तजि[३४] तमका रज आरज निज जानिये ॥ २ ॥

।।३३।।अन्वयः- अवस्तु बाधि वस्तुकथन अपवाद जानिये ।

।।३४।।अन्वयः-हे आरज कहिये विवेकी तमका रज तज । निज (स्वरूप) जानिये ।।

* ३३ प्रश्न:– शुद्ध ब्रह्मविषै प्रपंचका आरोप[३५] कैसे हुवा है।

उत्तर: -अनादिशुद्धब्रह्मकेविषै अनादिक[३६]ल्पितप्रकृति[३७] है। तिस प्रकृतिका ब्रह्मके साथि अनादिकल्पिततादात्म्यसंबंध है कहिये कल्पितभेद सहित वास्तवअभेदरूप संबंध है॥

सो प्रकृति १ माया औ २ अविद्या औ ३ तमः-

॥३५॥ब्रह्मरूप वस्तुविषै अज्ञानतत्कार्यरूप अवस्तुका कथन आरोप है। याही कूं अध्यारोप बी कहै हैं।

॥३६॥उत्पत्तिरहित वस्तु। स्वरूपसैं अनादि है॥ ऐसै शुद्धब्रह्म। प्रकृति। तिनका संबंध। ईश्वर। जीव औ तिनका भेद। ये षट् हैं। अरु प्रवाह रूपसे प्रपंच बी अनादि है।

॥३७॥जो होवै नहीं औ स्वप्नपदार्थकी न्यांई भ्रांतिसैं भासे सो कल्पित है॥

प्रधानप्रकृतिरूपकरि विभागकूं पावति है । तिनमैं

१ जो [३८]शुद्धसत्त्वगुणयुक्त सो माया है । औ
२ जो मलिन[३९]सत्त्वगुणयुक्त सो अविद्या है । औ
३ जो तमोगुणकी मुख्यताकरि युक्त है । सो तमःप्रधानप्रकृति है ॥

१ मायाविषै जो ब्रह्मका प्रतिबिंब है । सौ अधिष्ठान (ब्रह्म) औ [४०]मायासहित जगत्कर्त्ता सर्वज्ञईश्वर कहिये है ॥ औ

२ अविद्याविषै जो ब्रह्मका प्रतिबिंब है । सो अधिष्ठान (कूटस्थ) औ अविद्यासहित भोक्ता अल्पज्ञजीव कहिये है ॥

१ सो ईश्वर औ जीव बी अनादिकल्पित हैं ॥ तिनमैं ईश्वरकी उपाधि माया एक है औ [४१]आपेक्षिकव्यापक है । तिससैं ईश्वर बी एक है औ व्यापक है । औ

॥३८॥क्षत्रिय औ शूद्ररूप मंत्रीनसैं ब्राह्मण राजाकी न्यांई जो रजतमसैं दबै नहीं । किंतु रजतमकूं आप दबावै । ऐसा सत्त्वगुण । शुद्धसत्त्वगुण है ॥

॥३९॥जो रजतमकूं दबावै नहीं । किंतु शुद्ररूप दोनूंराजकुमारनसैं ब्राह्मणरूप एकमंत्री की न्यांई रजतमसैं आप दबै । ऐसा सत्वगुण । मलिनसत्त्व गुण है ॥

॥४०॥इहां मायाशब्दकरि माया औ तम प्रधान प्रकृति । इन दोनूं ईश्वरकी उपाधिनका ग्रहण है तिनमैं

१ मायाउपाधिकूं लेके ईश्वर । कुलालकी न्यांई जगत्का निमित्तकारण है । औ

२ तमः प्रधानप्रकृतिकूं लेके ईश्वर । मृतिकाकी न्यांई जगत्का उपादानकारण है ॥

॥४१॥जो किसी का अपेक्षासैं व्यापक होवै औ किसीकी अपेक्षासैं परिच्छिन्न होवै । सो आपेक्षिक-व्यापक कहिये है ॥ जैसे गृह जो है । सो घटादिककी अपेक्षासैं व्यापक है औ ग्रामकी अपेक्षासैं परि-

२ जीवकी उपाधि अविद्या नाना हैं और परिच्छिन्न हैं। तिसतैं जीव बी नाना हैं औ परिच्छिन्न हैं ॥

तिन जीवईश्वरका अनादिकल्पितभेद है ॥

१ सृष्टिसैं पूर्व सो जीवनकी उपाधि अविद्या। जीवनके कर्मसहितही मायाविषै लीन होयके रहती है। सो माया सुषुप्तिविषै अविद्याकी न्यांई ब्रह्मसैं भिन्न प्रतीत नाम सिद्ध होवै नहीं। यातैं सृष्टिसैं पहिले सजातीय विजातीय स्वगत भेदरहित एकहीं अद्वितीय सच्चिदानन्दरूप ब्रह्म था ॥

च्छिन्न है यातैं आपेक्षिकव्यापक है। तैसैं माया बी पृथ्वीआदिककी अपेक्षासैं व्यापक कहिये अधिक देशवर्ती है औ ब्रह्मकी अपेक्षासे परिच्छिन्न है। यातैं आपेक्षिकव्यापक है।

२ तिस ब्रह्मकूं सृष्टिके आरंभविषै जीवनके परिपक्व भये कर्मरूप निमित्तसैं " मैं एक हूं सो बहुरूप होऊं " ऐसी इच्छा भयी ॥

३ तिस इच्छासैं ब्रह्मकी उपाधि मायाविषै क्षोभ होयके क्रमतैं आकाश वायु तेज जल औ पृथ्वी। ये पंचमहाभूत उत्पन्न भये ॥

४ तिनका पंचीकरण नहीं भयाथा। तब अपंचीकृत थे । तिनतैं समष्टिव्यष्टिरूप सूक्ष्मसृष्टि होयके। पीछे ईश्वरकी इच्छासैं जब तिनका पंचीकरण भया । तब सो भूत पंचीकृत भये । तिनतैं समष्टिव्यष्टिरूप स्थूलसृष्टिभयी ॥

५ तिनमैं समष्टिस्थूलसूक्ष्मकारणप्रपंचका अभिमानी जीवकी दृष्टिसैं ईश्वर है औ व्यष्टिस्थूलसूक्ष्मकारणप्रपंचका अभिमानी जीव है।

तिनमैं ईश्वर सर्वज्ञ होनेतैं नित्यमुक्त है औ जीव अल्पज्ञ होनेतैं बद्ध है ॥

इसरीतसैं शुद्धब्रह्मविषै प्रपंचका आरोप हुआ है ॥

* ३४ प्रश्न– यह आरोप सत्य है वा मिथ्या है ?

उत्तरः--यह आरोप जेवरोविषै सर्पकी न्यांई औ साक्षीविषै स्वप्नकी न्यांई औ दर्पणविषै नगरके प्रतिबिंबकी न्यांई मिथ्या है ।

* ३५ प्रश्न– यह आरोप किससैं होवै है ?

उत्तरः–यह आरोप अज्ञानसैं होवै है ॥

* ३६ प्रश्न– यह आरोप कबका औ काहेकूं हुआ होवैगा । यह विचार कैसे होवै ।

उत्तरः–जैसैं कोई पुरुषके वस्त्र ऊपर तैलका दाग लग्याहोवै ! तिसकूं जानिके ताकूं मिटावनै का उपाय कियाचाहिये औ " यह दाग कबका

काहेकूं लग्याहोवैगा ? " इस विचारका कछु प्रयोजन नहीं है ॥ तैसैं " यह प्रपंचका आरोप कबका औ काहेकूं हुआ होवैगा ? " इस विचारका बी कछु प्रयोजन नहीं है। परंतु इसकी निवृत्तिका उपाय करना योग्य है ॥

* ३७ प्रश्न–इस सर्व आरोपकी निवृत्ति किस रीतिसे होवै है ?

उत्तरः-- ब्रह्मज्ञानसैं १ माया औ अविद्याकी निवृत्ति होवै है।

२ तिसतैं कार्यसहित प्रकृतिकी निवृत्ति होवै है।

३ तिसतैं प्रकृति औ ब्रह्मके सम्बन्धकी निवृत्ति होवै हैं

४ तिसतैं जीवभाव औ ईश्वरभावकी निवृत्ति होवै है।

९ तिसतैं जीवईश्वरके भेदकी निवृत्ति होवैहै ॥
६ तिसतैं बंधको निवृत्ति होयके मोक्ष सिद्ध होवै है ॥

इसरीतिसैं एककालविषै सर्व आरोपकी निवृत्तिरूप [४२] अपवाद होवै है ॥

३८ प्रश्न—यह ब्रह्मज्ञान किससैं होवै है ?

उत्तरः--यह ब्रह्मज्ञान आगे कहियेगा जो विचार तिससैं होवै है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये प्रपंचारोपापवाद-वर्णनानामिका द्वितीयकला समाप्ता ॥ २ ॥

॥४२॥ सर्पका औ ताके ज्ञानका बाधकरिके रज्जुरूप अधिष्ठानके अवशेषकी न्यांई । प्रपंच औ ताके ज्ञानका बाधकरिके अधिष्ठानरूप शुद्धब्रह्मका जो अवशेष सो अपवाद है ॥

॥ अथ तृतीयकलाप्रारंभः ॥ ३ ॥

॥ देह तीनका मैं द्रष्टा हूं ॥



॥ मनहर छन्द ॥

द्रष्टा तीनदेहकको मैं स्थूल सूक्ष्म कारण ये
तीनदेह दृश्य अरु अनातमा मानियो ॥
पंचकृतपंचभूतके पचीसतत्त्वनको
स्थूलदेह एक भोग आयतन गानियो ॥
अपंचीकृतभूतके सप्तदशतत्त्वको
सूक्ष्मदेह होई भोगसाधन प्रमानियो ॥
अज्ञान कारणदेह घटवत दृश्य एह।
पीतांबर द्रष्टा आप जानि दृश्य भानियो॥२

* ३९ प्रश्न–पहिली प्रक्रिया । "देह तीनका मैं द्रष्टा हूं ।" सो देह तीन कौनसे हैं ?

उत्तरः--स्थूल देह, सूक्ष्मदेह औ कारणदेह। ये देह तीन हैं ॥

॥ १ ॥ स्थूलदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥

* ४० प्रश्न—स्थूल देह सो क्या है ?

उत्तरः--पंचीकृतपंचमहाभूतके पचीसतत्त्वनका स्थूल देह है ॥

* ४१ प्रन—पञ्चमहाभूत कौनसे है ?

उत्तरः--आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी। ये पंचमहाभूत हैं ॥

* ४२ प्रश्न—पंचमहाभूतके पचीसतत्त्व नाम पदार्थ कौनसे है ?

उत्तरः--१-५ आकाशकेः-पांचतत्त्व काम[४३], क्रोध, शोक मोह[४४] औ भय ॥

॥४३॥ कोई बी भोगकी इच्छा। काम कहये हैं ॥

॥४४॥ अहंताममतारूप बुद्धि। सो मोह है ॥

६--१० वायुके पांचतत्त्वः--चलन वलन धावन, प्रसारण औ आकुंचन ॥

११--१५ तेजके पाचतत्त्वः--क्षुधा, तृषा, आलस्य, निद्रा औ कांति ॥

१६--२० जलके पांचतत्त्वः--शुक्र कहिये वीर्य । शोणित नाम रुधिर । लाल । मूत्र औ स्वेद कहिये पसीना ॥

२१--२५ पृथ्वीके पांचतत्त्वः--अस्थि नाम हाड, मांस, नाडी, त्वचा औ रोम ॥

ये पंचमहाभूतके पचीसतत्त्वनके नाम हैं ॥

• ४३ प्रश्नः—पंचीकृतपंचमहाभूत कौनकूं कहिये ?

उत्तरः--जिन भूतनका पंचीकरण[४५] भया है तिन भूतनकूं पंचीकृतपंचमहाभूत कहिये हैं ॥

।।४५।। प्रथम अपंचीकृतपंचमहाभूत थे । तिनका ईश्वरकी इच्छासें स्थूलसृष्टिद्वारा जीवनके भोग अर्थ परस्परमिलापरूप पंचीकरण भया है ।।

* ४४ प्रश्नः–पंचीकरण सो क्या है ?

उत्तरः- पंचीभूतनमैंसैं एक एककेदोदोभाग किये । सो भये दश ॥ तिनमैंसैं पहिले पांचभाग रहनेदिये औ दूसरेपांचभागनमैंसैं एकएकभागके च्यारीच्यारीभाग किये ॥ सो च्यारीच्यारी-भाग । आकाशादिकभूतनका आपआपका जो अर्धअर्धमुख्यभाग रहनेदिया है । तिसविषै न मिलायके आपआपसैं भिन्न च्यारीभूतनके अर्धअर्धभागनविषै मिले । सो पंचीकरण कहिये है ॥

* प्रश्नः–पांचभूतनका परस्परमिलाप किस रीति सै है ?

उत्तरः--दृष्टांतः-जैसैं कोईक पांचमित्र । आंबकेलाआदिक एकएक फलकूं इकट्ठे खानैलागे ॥ तब सर्व आपआपके फलके दोदोभाग करिके अर्धअर्धभाग आपके वास्ते रखे औ अवशेष

अर्धअर्धभागमैंसैं च्यारीच्यारीभाग करीके च्यारी-
मित्रनकूं विभाग करी देवैं। तब पांचफलनका
परस्परमिलाप होवै है। तैसैं

सिद्धांतः--

१ आकाशके दो भाग किये। तिनसैं
(१) एकभाग रहनैदिया। औ
(२) दूसरेभागके च्यारीभाग किये।
तिनमैंसैं आकाशविषै न मिले। औ
[१] एक वायुविषै मिले।
[२] एक तेजविषै मिले।
[३] एक जलविषै मिले। अरु
[४] एक पृथ्वीविषै मिले॥
२ ऐसैंहीं वायुके दोभाग किये। तिनमैंसैं
(१) एक भाग रहनेदिया। औ

(२) दूसरेभागके च्यारीभाग किये।
तिनमैंमैं वायुविषै न मिलै औ

[१] एक आकाशविषै मिले।
[२] एक तेजविषै मिले।
[३] एक जलविषै मिले।
[४] एक पृथ्वीविषै मिले॥

३ ऐसेहीं तेजके दोभाग किये। तिनमैंसै
(१) एकभाग रहनेदिया। औ
(२) दूसरेभागके च्यारीभाग किये।
तिनमैंसैं तेजविषै न मिले। औ

[१] एक आकाशविषै मिले।
[२] एक वायुविषै मिले।
[३] एक जलविषै मिले। अरु
[४] एक पृथ्वीविषै मिले॥

४ ऐसैंही जलके दोभाग किये । तिनमैंसैं
(१) एक भाग रहनैदिया । औ
(२) दूसरेभागके च्यारीभाग किये ।
तिनमैंसैं जलविषै न मिले । और
[१] एक आकाशविषै मिले।
[२] एक वायुविषै मिले ।
[३] एक तेजविषै मिले । अरु
] ४] एक पृथ्वीविषै मिले ॥

५ ऐसैहीं पृथ्वीके दोभाग किये । तिनमैंसैं
(१) एकभाग रहनैदिया । औ
(२) दूसरेभागके च्यारोभाग किये ।
तिनमैंसैं पृथ्वीविषैं न मिले औ
[१] एक आकाशविषै मिले ।
[२] एक वायुविषै मिले ।
[३] एक तेजविषै मिले । अरु
[४] एक जलविषै मिले ॥

इसरीतिसैं पचीसतत्व होयके पंचमहाभूतनका परस्पर मिलाप है ॥

* ४६ प्रश्न–पंचमहाभूतके पचीसतत्त्व कैसे भये ?

उत्तरः–सर्वभूतनका आपका एकाएक मुख्य भाग है औ अमुख्यच्यारीभाग अन्यभूतनके मिले है ॥ तिसतैं एकाएकभूतके पांचपांचतत्व भये । सो सर्वमिलिके पचीसतत्त्व भये ॥

* ४७ प्रश्न–स्थूलदेहविषै ये पचीसतत्त्व कैसे रहते हैं ?

उत्तरः--१-- ९ आकाशके[४६] पांचतत्व-(१) शोक (२) काम (३) क्रोध (४) मोह औ (५) भय । तिनमैंसैं

।।४६।। कोई ग्रंथविषै शिर कंठ हृदय उदर कटि-देशगत आकाश । ये आकाशके पांचतत्त्व हैं । तिनमैं

१ शिरोदिशगत आकाश आकाशका मुख्य भाग हैं अनाहतशब्दका आश्रय होनैतैं ।।

२ कंठदेशगत आकाश वायुका भाग है । श्वास-प्रश्वासका आश्रय होनैतैं ।।

३ हृदयदेशगतआकाश तेजका भाग है । पित्तका आश्रय होने तैं ।।

४ उदरदेशगतआकाश जलका भाग है । पान किये जलका आश्रय होने तैं ।।

५ कटिदेशगतआकाश पृथ्वीका भाग है । गंधका आश्रय होनैतैं ।।

इसीरीतिसैं कामक्रोधादिक स्थूलदेहके तत्त्व नहीं । किंतु लिंगदेहके धर्म हैं औ अन्यग्रन्थनकी रीतिसैं तौ कामादिक लिंगदेहके मुख्यधर्म हैं और स्थूलदेहविषै घटमैं जलकी शीतलताके आवेशकी न्यांई इनका आवेश होवै है । यातैं स्थूलदेहके बी गौणधर्म कहिये हैं ।

(१) शोकँ:--आकाशका मुख्यभाग है। काहेतैं शोक उत्पन्न होवै तब शरीर-शून्य जैसा होवै है औ आकाश बी शून्य जैसा है। यातैं यह आकाशका मुख्य भाग है ॥

(२) कामँ:-- आकाशविषै वायुका भाग।

॥४७॥ यद्यपि वायुआदिकभूतनके भागनविषैं बी आकाशके अन्यच्यारीभागनमैंसैं एकएकभाग मिल्या है। सो आकाशका मुख्यभाग नहीं कहिये है। तथापि शोक और आकाशकी अतिशयतुल्यता है। यातैं शोक आकाशका मुख्यभाग है।

काहेक लोभ भी आकाशकी न्यांई पदार्थकी प्राप्ति-करि अपूर्ण होनैंतैं आकाशका मुख्यभाग कहा है।

इसरीतिसैं अन्यभूतनविषै बी जानि लेना ॥

॥४८॥ पिताके तुल्य पुत्रकी न्यांई । काम। वायुके तुल्य है। यातैं वायुका भाग है। ऐसैं अन्यतत्त्वन विषैं बी जानि लेना ॥

मिल्या है । काहेतैं कामनारूप वृत्ति चंचल है औ वायु बी चंचल है। यातैं यह वायुका भाग है ॥

(३) क्रोधः--आकाविषै तेजका भाग मिल्या है । काहेतैं क्रोध आवता है तब शरीर तपायमान होता है और तेज बी तपायमान है यातैं यह तेजका भाग है ॥

(४) मोहः- आकाशविषै जलका भाग मिल्या है । काहेतैं मोह पुत्रादिकविषै प्रसरता है औ जलका बिंदु बी प्रसरता है। यातैं यह जलका भाग है ॥

(५)भयः--आकाशविषै पृथ्वीकाभाग मिल्या है। काहेतैं भय होवै तब शरीर जड कहिये अक्रिय होयके रहता है औ पृथ्वी बी जडतास्वभाववाली है यातैं यह पृथ्वीका भाग है ॥

६-१० वायुके पांचतत्त्वः-[६] प्रसारण [७] धावन [८] वलन [९] चलन औ [१०] आकुंचन । तिनमैंसैं

(६) प्रसारणः--वायुविषै आकाशका भाग मिल्या है । काहेतैं प्रसारण नाम प्रसरनैका है औ आकाश बी प्रसऱ्या हुआ है । यातैं यह आकाशका भाग है ॥

(७) धावनः--वायुका मुख्यभाग है । काहेतैं धावन नाम दौडनैका है औ वायु बी दौडताहै । यातैं यह वायुका मुख्यभाग है ॥

(८)वलनः--वायुविषै तेजका भाग मिल्या-है । काहेतैं वलन नाम अंगके वालनैका है । औ तेजका प्रकाश बी वलता है । यातैं यह तेजका भाग है ॥

(९) चलनः- वायुविषै जलका भाग मिल्याहै। काहेतैं चलन नाम चलनैका है औ जल बी चलता है। यातैं यह जलका भाग है॥

(१०) अकुंचनः-वायुविषै पृथ्वीका भाग मिल्याहै। काहेतैं आकुंचन नाम संकोच करनैका है औ पृथ्वी वी संकोचकूं पायी हुयी है। यातैं वह पृथ्वीका भाग है॥

११-१५ तेजके पांचतत्त्व-[११] निद्रा [१२] तृषा [१३] क्षुधा [१४] कांति औ [१५] आलस्य। तिनमैंसैं

(११) निद्रा-तेजविषै आकाशका भाग मिल्याहै। काहेतैं निद्रा आवे तब शरीर शून्य होवैहै ओ आकाश बी शून्यतावालाहै। यातैं यह आकाशका भाग है॥

(१२) तृषा–तेजविषै वायुका भाग मिल्याहै। काहेतैं तृषा कंठकूं शोषण करैहै औ वायु बी गीलेवस्त्रादिककूं सुकावैहै। यातैं यह वायुका भाग है॥

(१३) क्षुधा-तेजका मुख्यभाग है। काहेतैं क्षुधा लगे तब जो खावै सो भस्म होवैहै औ अग्निविषै बी जो डारैं सो भस्म होवैहैं। यातैं यह तेजका मुख्यभागहै।

(१४) कांतिः- तेजविषै जलका भाग मिल्याहै। काहेतैं कांतिधूपसैं घटैहै और जल बी धूपसैं घटैहै। यातैं यह जलका भाग है॥

(१५) आलस्यः–तेजविषै पृथ्वीका भाग मिल्याहै। काहेतैं आलस्य आवै तब शरीर जड होय जावैहै औ पृथ्वी बी जडस्वभावाली है यातैं यह पृथ्वीका भाग है॥

१६- २० जलके पांचतत्त्वः -[१६] लाळ [१७] स्वेद [१८] मूत्र [१९] शुक्र [२०] शोणित । तिनमैंसैं ।

(१६) लाळः--जलविषै आकाशका भाग मिल्याहै । काहेतैं लाल ऊंचा नीचा होवैहै औ आकाशका बी ऊंचा नीचा है। यातैं यह आकाशका भाग है ॥

(१७) स्वेदः--जलविषै वायुका भाग मिल्या है। काहेतैं पसीना श्रम करनैसैं होवैहै औ वायु बी पंखाआदिकसैं श्रम करनैसैं होवैहै । यातैं यह वायुका भाग है ॥

(१८) मूत्रः--जलविषै तेजका भाग मिल्या है। काहेतैं गर्म है औ तेज बी गर्म है। यातैं यह तेजका भाग है ॥

(१९) शुक्रः--जलका मुख्यभाग है । काहेतैं शुक्र श्वेतवर्ण है औ गर्भका हेतु है अरु

जल बी श्वेतवर्ण है औ वृक्षका हेतु है। यातैं यह जलका मुख्य भाग है।

(२०) शोणित --जलविषै पृथ्वीका भाग मिल्या है। काहेतैं शोणित रक्तवर्ण है औ पृथ्वी बी कहिंक रक्त है। यातैं यह पृथ्वीका भाग है॥

२१---२५ पृथ्वीका पांचतत्वः [२१] रोम [२२] त्वचा [२३] नाडी [२४] मांस। औ [२५] अस्थि। तिनमैंसैं

(२१) रोम[४९] :--पृथ्वीविषै आकाशका भाग मिल्या है। काहेतैं रोम शून्य है। काटनैसैं पीडा होवै नहीं औ आकाश बी शून्य हैं। यातैं यह आकाशका भागहै।

॥४९॥ केश जो मस्तकके बाल। ताका रोम नाम शरीरके बालविषै अंतर्भाव है॥

(२२) त्वचाः--पृथ्वीविषै वायुका भाग मिल्या है। काहेतैं त्वचासैं शीत उष्ण कठिन कोमल स्पर्शकी मालुम होवैहै औ वायुबी स्पर्शगुणवाला है। यातैं यह वायुका भाग है ॥

(२३) नाडीः--पृथ्वीविषै तेजका भाग मिल्या है। काहेतैं नाडीसैं तापकी परीक्षा होवैहै। औ तेज बी तापरूप है। यातैं यह तेजका भाग है ॥

(२४) मांसः-- पृथ्वीविषै जलका भाग मिल्या है। काहेसैं मांस गीला है औ जल बी गीला है। यातैं यह जलका भाग है ॥

(२५) अस्थिंः--पृथ्वीका मुख्य भाग है।

॥५०॥ नख औ दंतनका हड्डीमैं अंतर्भाव है ॥

काहेतैं कठिन है औ पीतवर्ण है औ पृथ्वी बी कठिन है अरु कहींक पीत-रंगवाली है। यातैं यह पृथ्वीका मुख्य-भाग है ॥

इसरीतिसैं स्थूलदेहविषै पचीसतत्त्व रहते हैं ॥

● ४७ प्रश्न—पचीसतत्त्व जाननैका क्या प्रयोजन है ?

उत्तरः—१ पचीसतत्त्व मैं नहीं। औ

२ ये पचीसतत्त्व मेरे नहीं।

३ ये पचीसतत्त्व पंचीकृतपंचमहाभूतके हैं॥

४ इन पचीसतत्त्वनका जाननैहारा मैं द्रष्टाघटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्याराहूं।

ऐसा निश्चय करना। यह पचीसतत्त्व जान-नैका प्रयोजन है ॥

● ४८ प्रश्न—"पचीसतत्त्व मैं नहीं औ ये मेरे नहीं" सो किस रीतिसे जानना ?

उत्तरः--१--५आकाशके पांचतत्त्वविषेः--

१ [१]शोक होवै तब बी मैं जनताहूं ? औ
[२] शोक न होवै तब तिसके अभावकूं
बी मैं जानताहूं ।

यातैं

[१] यह शोक मैं नहीं । औ

[२] यह शोक मेरा नहीं ।

[३] यह शोक आकाशका है ।

[४] मैं इस शोकका जाननेवाला द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ।

ऐसैं शोकमैं नहीं औ मेरा नहीं । यह जानना ॥

२ [१] काम होवै तब बीमैं जानता हूं । औ
[२] काम न होवै तब तिसके अभावकूं[1]
बी मैं जानता हूं ।

॥५१॥

१. कार्यकी उत्पत्तिसें पूर्व जो अभाव । सो प्रागभाव है

यातैं

[१ [यह काम मैं नहीं औ

[२] यह काम मेरा नहीं ।

[३] यह काम आकाशका है ।

[४] मैं इस कामका जाननेवाला द्रष्टा घट द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं काम मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना ॥

३ [१] क्रोध होवै तब बी मैं जानता हूं। औ क्रोध न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं

---

२ नाशके अनंतर जो अभाव सो प्रध्वंसाभाव है ।

३ तीनकालमें जो अभाव सो अत्यन्ताभाव है ॥

४ अन्यवस्तुसें जो अन्यवस्तुका भेद । सो अन्योन्याभाव है ॥

इसरीतिसें अभाव च्यारीप्रकारका है ॥

[१] यह क्रोध मैं नहीं। औ
[२] यह क्रोध मेरा नहीं।
[३] यह क्रोध आकाशका है।
[४] मैं इस क्रोधका जाननेवाला द्रष्टा घटद्र-
ष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

ऐसैं क्रोध मैं नहीं औ मेरा नहीं यह जानना॥

४ [१] मोह होवै तब बी जानता हूं। औ
[२] मोह न होवै तब तिसके अभाव कूंबी
मैं जानता हूं

यातैं
[१] यह मोह मैं नहीं। औ
[२] यह मोह मेरा नहीं।
[३] यह मोह आकाश का है।
[४] मैं इस मोहका जाननेवाला द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं॥

ऐसैं मोह मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना

५ [१] भय होवै तब बी मैं जानता हूं। औ
[२] भय न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातें

[१] यह भय मैं नहीं। औ
[२] यह भय मेरा नहीं।
[३] यह भय आकाशका है।
[४] मैं इस भयका जाननेवाला द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

ऐसैं भय मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना॥

६—१०वायुके पांचतत्त्वविषैः—

६ [१] प्रसारणः-शरीर प्रसरै तब बी मैं जानता हूं। औ
[२] शरीर न प्रसरै तब तिस प्रसरणेके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातें

[१] यह प्रसारण मैं नहीं । औ
[२] यह प्रसारण मेरा नहीं ।
[३ [यह प्रसारण वायुका है ।
[४] मैं इस प्रसारणका जाननैवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं प्रसारण मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना॥

७[१] धावनः--शरीर दौडै तब बी मैं जानता हूं । औ
[२] शरीर न दौडै तब तिस दोडनैकै अभावकूं बी मैं जानताहूं । यातैं
[१] यह धावन मैं नहीं । औ
[२] यह धावन मेरा नहीं ।
[३] यह धावन वायुका है ।
[४] मैं इस धावनका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाको न्यांई इसतैं न्यारा हूं ।

ऐसैं धावन मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह जानना ॥

८[१] वलन:--शरीर वालै तब बी मैं जानताहूं । औ

[२] शरीर न वलै तव तिस वलनैके अभावकूं बी मैं जानताहूं ।

यातैं

[१] यह वलन मैं नहीं । औ

[२] यह वलन मेरा नहीं ।

[३] यह वलन वायुका है ।

[४] मैं इस वलनका जाननैवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं वलन मैं नहीं औ मेरा नहीं । यही जानना॥

९[१] चलन:-शरीर चलै तब बी मैं जानता हूं । औ

[२] शरीर न चलै तब तिस चलनैके आभावकूं बी मैं जानता ।

यातैं

[१] यह चलन मैं नहीं । औ
[२] यह चलन मेरा नहीं ।
[३] यह चलन वायुका है ।
[४] मैं इस चलनका जाननैहारा द्रष्ट घट-द्रष्टकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं चलन मैं नहीं औ मेरा नहीं । यहजानना॥

१०[१] आकुंचन :-शरीर संकोचकूं पावै तब बी मैं जानताहूं । औ
[२] शरीर संकोचकूं न पावै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानताहूं । यातैं
[१] यह आकुंचन मैं नहीं । औ
[२] यह आकुंचन मेरा नहीं ।
[३] यह आकुंचन वायुका है ।
[४] मैं इस आकुंचनका जाननैवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

स आकुंचन मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह जाना ॥

११–१५ तेजकेपांचतत्त्वविषेः—

११[१] निद्रा होवै तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ
[२] निद्रा न होवै तब तिसके अभावकूं बी
मैं जानता हूं।

यातें

[१] यह निद्रा मैं नहीं। औ
[२] यह निद्रा मेरी नहीं।
[३] यह निद्रा तेजकी है।
[४] मैं इस निद्राका जाननैवाला द्रष्ट घट-
द्रष्टाकी न्यांई इतसैं न्यारा हूं।

ऐसैं निद्रा मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह जानना॥

१२[१] तृषा लगे तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ
[२] तृषा न होवै तब तिसके अभा-
वकूं मैं जानताहूं।

यातें

[१] यह तृषा मैं नहीं। औ
[२] यह तृषा मेरी नहीं।
[३] यह तृषा तेजकी है।
[४] मैं इस तृषाका जाननैवाला द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतै न्यारा हूं ॥

ऐसैं तृषामैं नहीं औ मेरी नहीं। यह जानना ॥

१३[१] क्षुधा लगै तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ
[२] क्षुधा न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं

[१] यह क्षुधा मैं नहीं। औ
[२] यह क्षुधा मेरी नहीं।
[३] यह क्षुधा तेजकी है।
[४] मैं इस क्षुधाका जाननैवाला द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं।

ऐसैं क्षुधा मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह जानना॥

१४[१] कांति होवै तिसकूं बी मैं जानता-
हूं औ
[२] कांति न होवै तब तिसके अभावकूं बी
मैं जानता हूं ।

यातैं
[१] यह कांति मैं नहीं । औ
[२] यह कांति मेरी नहीं ।
[३] यह कांति तेजकी है ।
[४] मैं इस कांतिका जाननेवाला द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं कांति मैं नहीं औ मेरी नहीं यह जानना॥

१५[१] आलस्य होवै तिसकूं बी मैं
जानता हूं । औ
[२] आलस्य न हो तब तिसके अभावकूं
भी मैं जानता हूं ।

यातैं

[१] यह आलस्य मैं नहीं। औ
[२] यह आलस्य मेरा नहीं ।
[३] यह आलस्य तेजका है ।
[४] मैं इस आलस्यका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं आलस्यमैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना ॥

१६--२० जलके पांच तत्त्वविषैः—

१६ [१] लाल गिरे तब तिसकूं बी मैं जानता हूं! औ
[२] लाळ न गिरे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं । यातैं
[१] यह लाळ मैं नहीं । औ
[२] यह लाळ मेरा नहीं ।
[३] यह लाळ जलका है ।
[४] मैं इस लाळका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं लाळमैं नहीं ओ मेरा नहीं यह । जानना॥

१७[१] स्वेद नाम पसीना होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं । औ
[२] पसीना न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं ।

यातैं
] १] यह पसीना मैं नहीं । औ
[२] यह पसीना मेरा नहीं ।
[३] पसीना जलका है ।
[४] मैं इस पसीनेका जाननेवाला द्रष्टा घटाद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ।

ऐसैं स्वेद मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह जानना॥

१८[१] मूत्र आवै तिसकूं मैं जानता हूं । औ
[२] मूत्र न आवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं ।

यातैं

[१] यह मूत्र मैं नहीं । औ
[२] यह मूत्र मेरा नहीं ।
[३] यह मूत्र जलका है ।
[४] मैं इस मूत्रका जाननेवाला द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं मूत्र मैं नहीं और मेरा नहीं । यह जानना॥

१९ [१]शुक्र कहिये वीर्य शरीरविषै बडे तिसकूं
बी मैं जानता हूं औ
[२] वीर्य घटै तब तिसके अभावकूं बी मैं
जानता हूं याते
[१] यह वीर्य मैं नहीं औ
[२] यह वीर्य मेरा नहीं ।
[३] यह वीर्य जलका है ।
[४] मैंइस वीर्यका जाननेवाला द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ।

ऐसैं शुक्र मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह जानना॥

२० [१] शोणित नाम रुधिर शरीरविषै बढै
तिसकूं बी मैं जानता हूं। औ
[१] रुधिर घटै तब तिसके अभावकूं बी मैं
जानता हूं।
यातैं [१ [यह रुधिर मैं नहीं। औ
[२] यह रुधिर मेरा नहीं।
[३] यह रुधिर जलका है।
[४] मैं इस रुधिरका जाननेवाला द्रष्टा
घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥
ऐसैं शोणितमैं नहीं औ मेरा नहीं।यहजानना ॥

२१--२५पृथ्वीके पांचतत्वविषैः--

२१ [१] रोम बहुत होवै तिनकूं बी मैं जानता
हूं औ
[२] रोम कमती होवै तब तिनके कमतीप
नैंकू बी मैं जानता हूं। यातैं

[१] ये रोम मैं नहीं। औ
[२] ये रोम मेरे नहीं।
[३] ये रोम पृथ्वीके हैं।
[४] मैं इन रोमनका जाननेवाला द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं रोम मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह जानना॥

२ [१] त्वचा स्पर्शकूं ग्रहण करे तिसकूं बी मैं
जानता हूं। औ

[२] स्पर्शकूं ग्रहण न करे तब तिसके अभा
वकूं बी मैं जानता हूं   यातें

[१] यह त्वचा मैं नहीं। औ
[२] यह त्वचा मेरी नहीं।
[३] यह त्वचा पृथ्वीको है।
[४] मैं इस त्वचाका जाननेवाला द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं त्वचामैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जनाना॥

२३ [१] नाडी चलैं तिसकूं बी मैं जानताहूं औ
[२] नाडी न चलैं तब तिनके अभवाकूं बी मैं जानता हूं ।

यातैं[१] ये नाडी मैं नहीं । औ
[२] ये नाडी मेरी नहीं ।
[३] ये नाडी पृथ्वीकी है ।
[४] मैं इन नाडीनका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टा न्यांई इनतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं नाडीमैं नहीं औ मेरा नहीं । यह जानना॥

४[१] मांस बढै तिसकूं बी मैं जानता हूं । औ
[२ [मांस घटे तब तिसके अभावकूं बी मैं मैं जानता हू ।

यातैं[१] यह मांस मैं नहीं औ
[२] यह मांस मेरा नहीं ।
[३] यह मांस पृथ्वीका है ।

[४] मैं इस मांसका जाननेवाला द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूँ ॥

ऐसैं मांस मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह जानना॥

२५[१] अस्थि नाम हाड सूधेहोवैं तिसकूं
बो मैं जानता हूं। औ

[२] हाड सूधे न होवै तब तिनके अभा-
वकूं बो मैं जानता हूं।

यातैं

[१] ये हाड मैं नहीं। औ

[२] ये हाड मेरे नहीं।

[३] ये हाड पृथ्वीके हैं।

[४] मैं इन हाडनका जाननेवाला द्रष्टा घट-
द्रष्टाको न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं हाड मैं नहीं औ मेरे नहीं यह जानना॥

इसरीतिसैं पचीसतत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं।
यह जानना ॥

४९ प्रश्न–" पचीसतत्त्व मैंनहीं औ मेरा नहीं" इस इस जाननैसैं क्या निश्चय भया ?

उत्तरः–स्थूलदेह औ तिसके धर्म १ नाम ॥ २ जाति । ३ आश्रम । ४ वर्ण । ५ संबंध । ६ परिमाण । ७ जन्ममरण । इत्यादिक बी मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह निश्चय भया ॥

५० प्रश्नः–१ नाम मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह कैसैं जानना ?

उत्तरः–१ जन्मसैं प्रथम नाम नहीं था । औ
२ जन्मके अनंतर नाम कल्पित है । औ
३ शरीरके भिन्नभिन्न अंगनविषै विचार कियेते नाम मिलता नहीं ।

यातैं
१ यह नाम मैं नहीं । औ
२ यह नाम मेरा नहीं ।

३ यह नाम स्थूलदेहविषै कल्पित है ।
४ मैं इस नामका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं नाम मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह जानना॥

* ५१ प्रश्नः–२ जाति जो वर्ण सो मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह कैसे जानना ?

उत्तरः–

१ ब्राह्मणादिकजाति स्थूलदेहका धर्म है । सूक्ष्म-देह औ आत्माका धर्म नहीं । काहेतैं लिंगदेह औ आत्मा तो जो पूर्वदेहविषै होवै सोई इस वर्त्तमानदेहविषै औ भावीदेहविषै रहता है औ जाति तौ जो पूर्वदेहविषै थी सो इस देहविषै नहीं है औ जो इस देहविषै है सो आगलेदेहविषै रहेगी नहीं । यातैं जाति स्थूलदेहकाही धर्म हैं । लिंगदेहका औ आत्माका धर्म नहीं है औ

२ शरीरके अंगनविषै विचारिके देखिये तौ स्थूल-देहविषै जाति मिलै नहीं ।

यातें

१ यह जाति मैं नहीं । औ

२ यह जाति मेरी नहीं ।

३ यह जाति स्थूलदेहविषै आरोपित है ।

४ मैं इस जातिका जाननेवाला द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

ऐसे जाति मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह जानना॥

॰ २२:– ३ आश्रम मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह कैसे जानना ?

उत्तर:–

१ ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ औ संन्यासी । ये च्यारीआश्रम भिन्नभिन्नकर्म करावनैके लिये आरोपकरिके स्थूलदेहविषै मानेहैं ॥

२ सो बी मनुष्यमात्रविषै संभवतै नहीं । यातैं

१ ये आश्रम मैं नहीं । औ
२ ये आश्रम मेरे नहीं ।
३ ये आश्रम स्थूलदेहविषै आरोपित हैं ।
४ मैं इन आश्रमनका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं ॥

ऐसैं आश्रम मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह जनना ॥

* ५३ प्रश्नः—४ वर्ण नाम रङ्ग मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह कैसें जानना ?

उत्तरः १ गौर श्याम रक्त पीत इत्यादि जो रङ्ग हैं । सो स्थूलदेहविषैं प्रत्यक्ष देखिये हैं।औ
२ सो स्थूलदेह मैं नहीं। यातैं
१ ये रङ्ग मैं नहीं। औ
२ ये रङ्ग मेरे नहीं ।
३ ये रङ्ग स्थूलदेहके हैं ।
४ मैं इन रंगोंका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनते न्यारा हूं ॥

ऐसैं वर्ण मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना ॥

* ५४ प्रश्न—५ संबंध मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह कैसें जानना ?

उ०—१ पितापुत्र गुरुशिष्य स्त्रीपुरुष स्वामिसेवक इत्यादिसम्बन्ध स्थूलदेहके परस्पर प्रसिद्ध मिथ्या माने हैं ।

२ विचार कियेसैं मिलते नहीं । औ

३ मैं स्थूलदेहसैं न्यारा असंग हूं ।

यातैं १ ये सम्बन्ध मैं नहीं । औ

२ ये सम्बन्ध मेरे नहीं ।

३ ये सम्बन्ध स्थूलदेहविषैं आरोपित हैं ।

४ मैं इन सम्बन्धोंका जानेवाला द्रष्टा घट द्रष्टाकी न्यांई इनते न्यारा हूं ॥

ऐसैं संबंध मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह जानना

* ५५ प्रश्न—६ परिमाण जो आकार सो मैं नहीं औ मेरे नहीं यह कैसे जानना ?

उत्तरः—

१ लंबाटूंका जाडापतला टेढासूधा। इत्यादि आकार बी प्रसिद्ध स्थूलदेहविषैं देखियेहैं औ

२ मैं स्थूलदेहतैं न्यारा निराकार हूं।

यातैं १ ये आकार मैं नहीं औ

२ ये आकार मेरे नहीं।

३ ये आकार स्थूलदेहके हैं।

४ मैं इन आकारोंका जाननेवाला द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इनते न्यारा हूं॥

ऐसे परिमाण मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह जनना

* ५६ प्रश्न—७ मैं जन्ममरणवान् नहीं औ मेरे कूंजन्म-मरण होवै नहीं। वह कैसैं जानना ?

उत्तरः-आत्माका जन्म मानियेतौ आत्मा अनित्य? होवैगा। सो वार्ता मीमांसकसैं आदिलेके परलोकवादी जे आस्तिक हैं। तिनकूं इष्ट नहीं। काहेतैं जो आत्मा उत्पत्तिवान् होवै तो नाशवान् बी होवैगा। तातैं

(१) पूर्वजन्मविषै नहीं किये कर्मसैं सुख दुःखका भोग। औ

(२) इस जन्मविषैं किये कर्मका भोगसैं विना नाश

२ ये दो दूषण होवैंगे। कर्मवादीके मतसैं आत्माकूं जो कर्त्ताभोक्ता मानिये। तौ बी जन्ममरणरहितहीं मानना होवैगा। औ

आत्माके जन्मका कोई कारण बी सम्भवै नहीं। काहेतैं आत्माका जो कारण होवै सो आत्मातैं भिन्नहीं चाहिये औ

(१) आत्मातैं भिन्न तौ अनात्मा नामरूप है। सो तौ आत्माविषै रज्जुसर्पकी न्यांई कल्पित हैं। यातैं कारण बनै नहीं। औ

(२) ब्रह्म तौ घटाकाशके स्वरूप महाकाश-की न्यांई आत्माका स्वरूपही है ॥ तिसतैं भिन्न नहीं । यातैं सो कारण बनै नहीं।

तातैं आत्माका जन्म नहीं ॥ औ

३ जातैं जन्म नहीं तातैं आत्माका मरण बी नहीं। औ

४ जातैं आत्माविषै जन्ममरणका अभाव है। तातैं जायते [जन्म]। अस्ति [प्रगटता] वर्धते [वृद्धि]। विपरिणमते [विपरिणाम] अपेक्षीयते [अपक्षय]। नश्यति [मरण]। इन षड्विकारनतैं बी आत्मा रहित है ॥

यातैं १ मैं जन्म मरणवान् नहीं । औ
२ मेरेकूं जन्ममरण होवै नहीं ।
३ ये जन्ममरण स्थूलदेहकूं कर्मसैं होवैहैं ।
४ मैं इन जन्ममरणोंका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हू ॥

ऐसैं मैं जन्ममरणवान् नहीं औ मेरेकूं जन्ममरण होवै नहीं । यह ॥ जानना ॥

* ५७ प्रश्नः–पंचमहाभूतनकी निवृत्तिविषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः–दृष्टांतः–जैसे कोईकूं भूत लग्या होवै । सो धानककूं नाम पारधीकूं बुलायके । डमरु बजायके । लवणादि पांचवस्तु मिलायके। तिसका बलिदान देके । भूतकी निवृत्ति करै है ।

सिद्धांतः– तैसे आकाशादिकपंचमहाभूत शरीररूप होयके जीवकूं लगेहैं । तिनकी निवृत्ति

वास्ते ब्रह्मनिष्ठगुरुरूप धानकके विधिपूर्वक[५२] शरण जायके । वेदशास्त्ररूप डमरु कहिये डाक बजायके ऊपर कहे जो पचीसतत्त्व तिनमैंसैं पांचपांचतत्त्वरूप बलिदान एकएकभूतकूं आपआपका भाम अर्पण करिके । मैं इन पचीसतत्त्वनका

।।५२।। विवेकादिशुभगुणसहित मोक्षकी इच्छावाला अधिकारी

१ हाथमैं भेटा लेके गुरुके शरण होयके ।

२ साष्टांग नमस्कार करिये ।

३ "हे भगवन् ! मेरेकूं ब्रह्मविद्याका उपदेश करो।" ऐसे कहिके बंध किसकूं कहिये ? मोक्ष किसकूं कहिये ? अविद्या किसकूं कहिये ? औ विद्या किसकूं किये ?" इत्यादिप्रश्न करै । औ

४ गुरुकी प्रसन्नता वास्ते तन मन धन वाणी अर्पण करिके सेवा करे ।।

यह ब्रह्मविद्याके ग्रहणकी विधि है ।।

द्रष्टा हूं। इसरीतिसैं निश्चय करनैसैं इन पंच-महाभूतनको [53]अत्यंतनिवृत्ति होवैहै ॥

इसरीतिसैं स्थूलदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥

॥ २ ॥ सूक्ष्मदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥

* ५८ प्रश्न—सूक्ष्मदेह सो क्या है ?

उत्तरः—अपंचीकृतपंचमहाभूतकेसतरातत्त्वनका सूक्ष्मदेह है।

* प्रश्नः—सूक्ष्मदेहके सतरातत्त्व कौनसें हैं ?

उत्तरः—१—५ पांचज्ञानइंद्रिय। ६—१० पांचकर्मइंद्रिय । ११—१५ पांचप्राण। १६ मन औ १७ बुद्धि। ये सतरातत्त्व हैं ॥

* ६० प्रश्नः—पांचज्ञानइंद्रिय कौनसें हैं ॥

उत्तरः—१—५ श्रोत्र त्वचा चक्षु जिह्वा औ घ्राण। ये पंच[54]ज्ञानइंद्रिय हैं ॥

॥५३॥ पीछे लगैं नहीं । यह अत्यंतनिवृत्ति है ।

॥५४॥ ज्ञानके साधन इन्द्रिय ज्ञानइंद्रिय हैं ।

* ६१ प्रश्नः–पांचकर्म[५५] इंद्रिय कौनसें हैं ?

उत्तरः–६–१० वाक् पाणि पाद उपस्थ औ गुद । ये पंचकर्मइन्द्रिय हैं ॥

* ६२ प्रश्नः–पांचप्राण कौनसें हैं ?

उत्तरः–११–१५ प्राण अपान समान उदान औ व्यान । ये पांच प्राण हैं ॥

* ६३ प्रश्नः–मन कौनकूं कहिये ?

उत्तरः–१६ संकल्पविकल्प रूप जो वृत्ति । ताकूं मन कहिये ॥

* ६४ प्रश्नः–बुद्धि किसकूं कहिये ?

उत्तरः–१७ निश्चयरूप जो जो वृत्ति । ताकूं बुद्धि कहिये ॥

* ६५ प्रश्नः–अपंचीकृतपंचमहाभूत कौनकूं कहिये ?

उत्तर–जिन भूतनका पूर्व कही रीतिसें पंचीकरण न भयाहोवै ।

५५॥ कर्मके साधन इंद्रिय कर्मइंद्रिय हैं ॥

१ तिन भूतनकूं अपंची कृतपंचमहाभूत कहेहैं।
२ तिनहीकूं सूक्ष्मभूत कहेहैं । औ
३ तिनहीकूं तन्मात्रा बी कहेहैं ॥

* ६६ प्रश्नः—अपंचीकृतपंचमहाभूतनके सतरा तत्त्व कैसे जाननैं ?

उत्तरः—

पांचज्ञानइंद्रिय और पांचकर्मइंद्रियविषैः—
१ आकाशके सत्त्वगुणका[५६] भाग श्रोत्र है ,
२ आकाशके रजोगुणका भाग वाक् है ।
[१] श्रोत्रइंद्रिय शब्दकूं सुनताहै । औ
[२] वाक्इंद्रिय शब्दकूं बोलता है ॥
[१] श्रोत्र ज्ञानइंद्रिय है । औ

॥५६॥ सर्वपदार्थनमैं सत्त्व रज तम ए। ये तीनगुण वर्त्तते हैं ॥

[२] वाक् कर्मइन्द्रिय है।

इन दोनूंकी मित्रता है

३ वायुके सत्त्वगुणका भाग त्वचा है। औ

४ वायुके रजोगुणका भाग पाणि है।

[१] त्वचाइन्द्रिय स्पर्शकूं ग्रहण करैहै। औ

[२] दस्तइंद्रिय तिसका निर्वाह करैहै ॥

[१] त्वचा ज्ञानेंद्रिय है। औ

[२] दस्त कर्मेंद्रिय है।

इन दोनूंकी मित्रता है ॥

५ तेजके सत्त्वगुणका भाग चक्षु है।

६ तेजके रजोगुणका भाग पाद है :

[१] चक्षुइंद्रिय रूपका ग्रहण करैहै। औ

[२] पादइंद्रिय तहां गमन करैहै ॥

[१] चक्षु ज्ञानेंद्रिय है। औ

[२] पाद कर्मेंद्रिय है ॥

इन दोनूंकी मित्रता है ॥

७ जलके सत्त्वगुणका भाग जिन्हा है ।

८ जलके रजोगुणका भाग उपस्थ है ॥

[१] जिन्हाइंद्रिय रसका ग्रहण करैहै । औ

[२] उपस्थइंद्रिय रसका त्याग करै है ॥

[१] जिन्हा (रसना) ज्ञानेंद्रिय है । औ

[२] उपस्थ कर्मेंद्रिय है ॥

इन दोनूंकी मित्रता है

९ पृथिवीके सत्त्वगुणका भाग घ्राण है ।

१० पृथिवीके रजोगुणका भाग गुद है

(१] घ्राणइंद्रिय गधका ग्रहण करै है । औ

[२] गुदइंद्रिय गंधका त्याग करैहै ।

[१] घ्राण ज्ञानेंद्रिय है औ

[२] गुद (पायु) कर्मेंद्रियु है ॥

इन दोनूंकी मित्रता है ॥

पांचप्राण औ मनुबुद्धिविषैः

११–१५ इन पांचभूतनके रजोगुणके भाग मिलिके पांचप्राण भये हैं औ

१६–१७ इन पांचभूतनके सत्त्वगुणके भाग मिलिके अंतः कारण भयाहै ॥ यहहीं अंत-करण मन औ बुद्धिरूप है ॥ इहां चित्त औ अहंकारका मन औ बुद्धिविषै अन्त-र्भाव है।

ऐसैं अपंचीकृतपंचमहाभूतनके कार्य। सतरा तत्त्व जाननैं।

६७ प्रश्नः–सतरातत्त्वके समजनेका क्या फल है ?

उत्तरः–ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं ये अपंचीकृतपंचमहाभूतनके हैं। यह सतरा-तत्वके समजनेका फल है ॥

* ६८ प्रश्नः—ये सतरातत्व मैं नहीं औ मेरे नहीं यह किस कारण सैं जानना ?

उत्तरः— मैं इन सतरातत्त्वनका जाननेवाला हूं। जो जिसकूं जानै सो तिसतैं न्यारा होवै है। यह नियम है। इस काणसे ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह जानना ॥

६९ प्रश्नः—इसविषै दृष्टांत क्या समजना ?

उत्तरः—

दृष्टान्तः—जैसैं [१] नृत्यशालाविषै स्थित। [२] दीपक। [३] राजा। [४]। प्रधान। [५] अनुचर। [६] नायिका। [७] बाजंत्री औ [८] अन्य सभाके लोक [०] वे बैठेहोवैं तब बी प्रकाशैहै औ [१०] सर्व उठि जावैं तब शून्यगृहकूं बी प्रकाशै ॥

सिद्धांत–तैसैं [१] स्थूलदेहरूप नृत्यशाला विषै [२] साक्षीरूप जो मैं दीपक हूं। [३] सो चिदाभासरूप राजा औ [४] मनरूप प्रधान औ [५] पांचप्राणरूप अनुचर औ [६] बुद्धिरूप नायिका औ [७] दशइंद्रियरूप वाजंत्री औ [८] शब्दादिपंचविषयरूप सभाके लोक [९] ये जाग्रत्स्वप्नसमयविषै होवैं तब इनकूं प्रकाशताहूं औ [१०] सुषुप्तिसमयविषै ये न होवैं तब तिनके अभावकूं बी मैं प्रकाशता हूं।

इसविषै यह उक्त दृष्टांत समजना ॥

* ७० प्रश्नः– सौ कैसे समजना ?

उत्तरः

जाग्रत्अवस्थाविषै इंद्रिय औ अन्तःकरण दोनूंकी सहायतासैं मैं प्रकाशताहूं कहिये जानतहूं। औ

२ स्वप्नअवस्थाविषे इंद्रियनसैं विना केवल अंतः करणकी सहायतासैं मैं प्रकाशताहूं । औ ३ सुषुप्तिअवस्थाविषै इंद्रिय औ अंतःकरण दोनूकी सहायता विना केवल मैंही प्रकाशता हूं। ऐसैं समजना ।

* ७१ प्रनः—इसविषे और दृष्टांत क्या है ?

उत्तर—दृष्टांत— जैसैं [१] पांचछिद्रवाले घटके भीतर पात्र तैल औ बत्तीसहित दीपक जलता है। [२] दीपक । पात्र तैल बत्ती घटके भीतरके अवयव औ छिद्रनकूं प्रकाशता हुआ घटके बाहिर छिद्रनके सन्मुख क्रमतैं धरे जो वीणा पुष्पनका गुच्छ । मणि। रसपात्र औ अत्तरकी सीसी । तिन सबकूं छिद्रद्वारा प्रकाशता है औ [३] सूर्यरूपसैं सारै ब्रह्मांडकूं प्रकाशता है। औ [४] महातेजमय सामान्यरूपसैं सर्वव्यापी है ॥

सिद्धांतः—तैसें [१] पांचज्ञानेंद्रियरूप छिद्रवाले स्थूलदेहरूप घटके भीतर हृदयकमल-रूप पात्र है । तामैं मनरूप तैल है औ बुद्धिरूप बत्ती है। तापर आरूढ आत्मारूप दीपक है । [२] सो हृदयरूप पात्रकूं औ मनरूप तैलकूं औ बुद्धिरूप बत्तीकूं औ देहके भीतरके अवय-वनकूं औ इंद्रियरूप छिद्रनकूं प्रकाशता (जानता) हुआ । इंद्रियनसैं संबंधवाले शब्दादिकविषयन-कूं वी इंद्रियद्वारा प्रकाशताहै औ [३] ईश्वर रूपसैं ब्रह्मांडादिसर्वबाह्यप्रपंचकूं प्रकाशता है औ [४] सामान्य चैतन्य ब्रह्मणरूपसैं सर्वव्यापी है ॥ यह इसविषै और दृष्टांत है ॥

॥५७॥ इहां और यज्ञशाल दृष्टांत है । सो आगे ७ वी कलाविषै उपदष्टारूप आत्माके विशेषणके प्रसंगसैं कहियेगा ॥

* ७२ प्रश्नः—ऐसें कहनेसें क्या निर्णय भया ?

उत्तरः—ये कहे जे सतरातत्त्व वे मैं नहीं औ ये मेरे नहीं। ये पंचमहाभूतनके हैं ॥ मैं इनका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इससैं न्यारा हूं। यह निर्णय भया।

* ७३ प्रश्नः—सतरातत्त्व मै नहीं औ मेरे नहीं। सो किसरीतिसें समझना।

उत्तरः— ॥ १-५ ॥ पांचज्ञानइंद्रियविषैः

१ श्रोत्रः—

[१] शब्दकूं सुनै तिसकूं बी मैं जानता हूं ॥

[२] न सुनै तब तिस सुननैके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं वह श्रोत्र मै नहीं औ मेरा नहीं। यह आकाशका है। मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाको न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

२ त्वचाः–[१] स्पर्शकूं ग्रहण करै तिसकूं बी जानताहूं । औ

[२] ग्रहण न करै तब तिस ग्रहण करनैके अभावकूं मैं जानताहूं ।

यातैं यह त्वचा मैं नहीं औ मेरी नहीं यह वायुकी है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

३ चक्षुः--

[१ रूपकूं देखै तिसकूं बी मैं जानताहूँ । औ

[२] न देखै तब तिस देखनैके अभावकूं बी मैं जानताहूं ।

यातैं यह चक्षु मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह तेजका है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

४ जिव्हाः----

[१] रसका स्वाद लेवै तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ

[२] स्वाद न लेवे तब तिस स्वाद लेनेके अभावकूं बी मैं जानताहूं।

यातें यह जिव्हा में नहीं औ मेरी नहीं। यह जलकी है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतें न्यारा हूं ॥

५ घ्राणः--

[१] गन्धका ग्रहण करै तिसकूं बी मैं जानताहूं । औ

[२] न ग्रहण करै तब तिस ग्रहण करनैके अभावकूं बी मैं जानताहूँ ।

यातै यह घ्राण मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह पृथ्वीका है मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्याई इसतै न्यारा हूं ॥

॥ ६–१० ॥ पांचकर्मइंद्रियविषै–

६ वाक्–(वाचा]

[१] बोलै तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ
[२] न बोलै तब तिसके आभावकूं बी मैं जानताहूं।

यातैं यह वाक् मैं नहीं औ मेरी नहीं। यह आकाशकी है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं॥

पाणिः--(हस्त)

[१]लेना देना करैं तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ
[२] न करैं तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं ये मैं नहीं औ मेरे नहीं ये वायुके हैं। मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं।

८ पादः–

[१] चलैं तिसकूं बी मैं जानताहूं । औ

[२] न चलैं तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं ।

यातैं ये पाद मैं नहीं औ मेरे नहीं । ये तेजके हैं । मैं इनके जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्याई इनतैं न्यारा हूं ॥

९ उपस्थः----

[१] रस (मूत्र और वीर्य) का त्याग करै तिसकूं बी मैं जानताहूं । औ

[२] त्याग न करै तब तिसके अभावकूं बी मै जानताहूं ।

यातैं यह उपस्थ मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह जलका है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

१०गुदः–

[१] मलका त्याग करे तब तिसकूं बी मैं जानता हूं।

[२] त्याग न करे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं यह गुद मैं और मेरा नहीं। यह पृथ्वीका है। मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं।

॥ ११--१७ ॥ प्राण औ अन्तःकरणविषै

११--१५ पांचप्राणः--

[१] क्रिया करैं तिसकूं बी मैं जानता हूं।औ

[२] क्रिया न करैं तब क्रियाके अभावकूं बी मैं जानता हूं!

यातैं ये प्राण मैं नहीं और मेरा नहीं। ये मिले हुए पंचमहाभूतनके हैं। मैं इनका जाननै-हारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं।

१६ मनः– [१] संकल्पविकल्प करे तिसकूं मैं जानता हूं । [२] संकल्पविकल्प न करे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं ।

यातैं यह मन मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह मिलेहुये पंचमहाभूतनका है । मैं इसका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

१७बुद्धिः—

[१] निश्चय करे तिसकूं बी मैं जानता हूं । औ [२] निश्चय न करे तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं ।

यातैं यह बुद्धि मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह मिलेहुए पंचमहाभूतनकी है । इसका मैं जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

इसरीतिसैं ये सतरातत्त्व मैं नहीं औ मेरे नहीं । यह समजना ॥

* ७४ प्रश्नः—ऐसैं कहनैं सैं क्या भया ?

उत्तरः—

लिंगदेह औ तिसके धर्म १ पुण्यपापका कर्त्ता पना। तिनके फल सुखदुःखका भोक्तापना। औ २ इसलोक परलोकविषै गमनआगमन। औ ३ वैराग्यशमदमादिसात्त्विकीवृत्तियां औ रागद्वेषहर्षादिराजसीवृत्तियां। औ निद्राआलस्यप्रमादादितामसीवृत्तियां।

४ तैसैं क्षुधातृषा अन्धपनाआदि अरु मन्दपना औ पटुपना

इत्यादिक मैं नहीं ओ मेरे नहीं यह निश्चय भया ॥

* ७५ प्रनः—पुण्यपापका कर्त्ता औ तिनके फल सुखदुःखका भोक्तामैं कैसे नहीं औ कर्त्तापन भोक्तापना मेरा धर्म नहीं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः--१ जो वस्तु विकारी होवै सो क्रियावान् होनेतैं कर्त्ता कहिये है ॥ मैं निर्विकार कूटस्थ होनैतैं क्रियाका आश्रय नहीं। यातैं पुण्यपापरूप क्रियाका कर्त्ता मैं नहीं । औ जो कर्त्ता नहीं सो भोक्ता बी होवै नहीं । यातैं ये अन्तःकरणके धर्म हैं। मेरे नहीं । मैं इनका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं। ऐसैंजानना ॥

* ७६ प्रश्नः—इसलोक परलोकविषै गमनआगमन मेरे धर्म नहीं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः—अन्तःकरण (लिंगदेह) परिच्छिन्न है। तिसका प्रारब्धकर्मके बलसैं गमनआगमन संभवै है औ मैं आकाशकी न्यांई व्यापक हूं। यातैं मेरे धर्म गमनआगमन नहीं। ऐसैं जानना।

* ७७ प्रश्नः—सात्विकी राजसी औ तामसी वृत्तियां मैं औ मेरा धर्म नहीं। यह कैसे जानना ?

उत्तरः-३ दृष्टांत जैसे [१] किसी महलमें बैठे [२] राजाके विनोदअर्थ [३] कोई कारीगर [४] कारंजा बनावैहै [९] तिस कारंजेकी कलके खोलनैसैं जलकी तीन-धारा निकसतीयां है। [६] तिन तीनधाराके भीतर प्रवाहरूपसैं अनंतधारा निकसतीयां हैं। [७] जब सो कल बंध करिये तब तीन धारा बंध होयके अकेला राजाहीं बाकी रहता है।

सिद्धांत—तहाँ [१] स्थूलशरीररूप महलमैं [२] अधिष्ठान कूटस्थरूपकरि स्थित परमात्मारूप राज़ा है। तिसके विनोदअर्थ

[३] माया (अज्ञान) रूप कारीगरनै [४] अन्तःकरणरूप कारंजा किया है। [५] जाग्रत स्वप्नविषै तिसकी प्रारब्धरूप कलके खोलनैसैं तीनगुणके प्रवाहरूप तीनधारा निकसतीयां हैं। [६] तिन तिनधाराके भीतरसैं अगणित वृत्तियां उठतीयां हैं [७] आ सुषुप्तिविषै प्रारधकर्मरूप कलके बंध हुयेतैं तिन वृत्तियांके भावअभावका प्रकाशक आनंदस्वरूप केवल परमात्मारूप राजा बाकी रहता है ॥ सोई मैं हूं। यातैं ये सात्विकी राजसी वृत्तियां मैं नहीं औ मेरी नहीं। ये अन्तःकरणकी हैं मैं इनका जाननैहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतैं न्यारा हूं। ऐसैं जानना ॥

• ७८ प्रश्नः—अन्धपनाआदि अरु मंदपना औ पटुपना मैं नहीं औ मेरे नहीं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः--

(१) नेत्रादिकइंद्रिय आप आपके विषयकूं कछू बी ग्रहण न करे सो तिनका अन्धपनाआदि है। तिसकूं बी मैं जानता हूं औ

(२) विषयकूं स्वल्प ग्रहण करैं सो तिनका मंदपना है। तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ

(३) विषयकूं स्पष्ट ग्रहण करैं सो तिनका पटुपना है तिसकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं ये मैं नहीं औ मेरे नहीं। ये इंद्रियनके धर्म हैं। मैं इनका जाननेवाला द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनते न्यारा हूं॥

इसरीतिसैं सूक्ष्मदेहका मैं द्रष्टा हूं॥ २॥

॥ ३ ॥ कारणशरीरका मैं द्रष्टा हूं ॥

* ७९ प्रश्नः—कारण देह सो क्या है ?

उत्तरः—

१ पुरुष जब सुषुप्तितैं ऊठे तब कहता है कि " आज मैं कछू बी न जानताभया " ईसतैं । सुषुप्तिविषै अज्ञान है । ऐसा सिद्ध होवै है । औ

२ जाग्रत्विषै बी " मैं ब्रह्मकूं जानता नहीं " औ " मेरी मुजकूं खबर नहीं है । " मैं यह नहीं जानता हूं । ' मैं वह नहीं जानता हूं ' इस अनुभवका विषय अज्ञान है । औ

।।५८।। सुषुप्तिसैं उठ्या जो पुरुष । तिसकूं "मैं कछुबी न जानताभया" ऐसा ज्ञान होवै है । सो ज्ञान अनुभवरूप नहीं है । किन्तु सुषुप्तिकालविषै अनुभव किये अज्ञानकी स्मृति है ।।तिस स्मृतिका विषय सुषुप्तिकालका अज्ञान है

३ स्वप्नका कारण बी निद्रारूप अज्ञान है। ऐसा जो अज्ञान सो कारणदेह है ॥

* ८० प्रश्नः—कारण देह मैं नहीं औ मेरा नहीं यह कैसे जानना ?

उत्तरः--"मैं जानताहूं" औ "मैं न जानताहूं" एसी जे अंतःकरणकी वृत्तियां हैं । तिनकूं

॥५९॥

१ अज्ञान है । स्थूलसूक्ष्मदेहका हेतु है । यातैं इसकूं कारण कहते हैं ॥

२ तत्त्वज्ञानसैं इस अज्ञानका दाह होवै हैं। यातैं इसकूं देह कहते हैं ॥

यह अज्ञान गर्भमंदिरके अंधकारकी न्यांई ब्रह्मके आश्रित होयके ब्रह्मकूंहीं आवरण करता है ॥

ज्ञात अज्ञातवस्तुरूप विषयसहित मैं जानताहूं । यातैं यह कारणदेह मैं नहीं औ मेरा नहीं । यह अज्ञानका[६०] है । मैं इसका जाननैहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं । यह ऐसैं जानना ॥

इसरीतिसैं कारणदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥ ३ ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये देहत्रयद्रष्टृवर्णन-नामिका तृतीयकला समाप्ता ॥ ३ ॥

॥६०॥ कारणदेह आप अज्ञान है ॥ तिसकूं "अज्ञानका है" ऐसैं जो कह्या । सो जैसैं राहुकूंहीं राहुका मस्तक कहते हैं ॥ तैसैं है ॥

अथ चतुर्थकलाप्रारंभः ४

मैं पंचकोशातीत हूं



मनहर छन्द ३

पंचकोशातीत मैं हूं अन्न प्राण मनोमय
विज्ञान आनंदमय पंचकोश नैं[६१] ातमा ॥
स्थूलदेह अन्नमय--कोश लिंग[६२]देह प्राणमन
रु विज्ञान तीनकोश कहें मातमा ॥
कारण आनंदमय--कोश ये कांरज[६३] जड ।
विकारी विनाशी व्यभिचारीहीं अनातमा ।
अज चित्त अविकारी नित्य व्यभिचारहीन।
पीतांबर अनुभव करता मैं आतमा ॥४॥

* ८१ प्रश्नः–पंचकोशातीत कहिये क्या ?

उत्तरः–पंचकोशातीत कहिये पांचकोशनतैं मैं अतीत नाम न्यारा हूं ॥

* ८२ प्रश्नः–कोश कहिये क्या है ?

उत्तरः–

१ कोश नाम तलवारके म्यानका । औ

२ धनके भंडारका । औ

३ कोशकार नामक कीडेके गृहका है ॥

तिनकी न्यांई पंचकोश आत्माकूं ढापैं हैं । यातैं अन्नमयादिक बी कोश कहावै हैं ॥

* ८३ प्रश्नः–पांचकोशके नाम क्या हैं ?

॥६१॥ आत्मा नहीं । अर्थ यह जो अनात्मा है ॥

॥६२॥ महात्मा लिंग देहकूं प्राण मन अरु तीनकोशरूप कहै हैं ॥

॥६३॥ पंचकोश ॥

उत्तरः–१ अन्नमयकोश। २ प्राणमयकोश। ३ मनोमयकोश। ४ विज्ञानमयकोश। औ ५ आनंदमयकोश। ये पांचकोशके नाम हैं।

* ८४ प्रश्नः– १ अन्नमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः--

१ मातापितानै खाया जो अन्न। तिसतैं भया जो रजवीर्य। तिसकरि जो माताके उदरविषै उत्पन्न होता है।

२ फेर जन्मके अनंतर क्षीरादिक अन्नकरिके जो वृद्धिकूं पावता है।

३ फेर मरणके अनंतर अन्नमयपृथिवीविषै लीन होता है।

ऐसा जो स्थूलदेह। सो अन्नमयकोश है॥

* ८५ प्रश्नः–अन्नमयकोश कैसा है ?

उत्तरः--सुखदुःखके अनुभवरूप भोगका स्थान है

* ८६ प्रश्नः–अन्नमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः–

१ जन्मतैं प्रथम औ मरणतैंपीछे अन्नमयकोश (स्थूलशरीर का अभाव है। यातैं यह उत्पत्तिनाशवान् होनैतैं घटकी न्यांई कार्य है। औ

२ मैं एदा भावरूप हूं। तातैं उत्पत्तिनाशरहित होनैतैं इसतैं विलक्षण हूं।

यातैं यह अन्नमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह स्थूलदेहरूप है। मैं इसका जाननैहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूं ॥ इस रीतिसैं अन्नमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना ॥

* ८७ प्रश्न –२ प्राणमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः–पांचकर्मइंद्रियसहित पांच प्राण। सो प्राणमयकोश है ॥

* ८८ प्रश्नः—पांचकर्मइंद्रिय औ पांचप्राण कौनसे हैं ?

उत्तर :—पांचकर्मइंद्रिय औ पांचप्राण पूर्व सूक्ष्मदेहकी प्रक्रियाविषै कहेहैं ॥

• ८९ प्रश्नः—पांचप्राणके स्थान औ क्रिया कौन हैं ?

उत्तर :—

१ प्राणवायु :—

[१] हृदयस्थानविषै रहताहै । औ

[२] प्रत्येकदिनरात्रिविषै २१६०० श्वास-उच्छ्वास लेनैरूप क्रियाकूं करता है ॥

२ अपानवायु :—

[१] गुदस्थानविषै रहताहै । औ

[२] मलमूत्रके उत्सर्ग (त्याग) रूप क्रियाकूं करता है ।

३ समानवायु :—

[१] नाभिस्थानविषै रहता है । औ

[२] कूपजलकूं बगीचेविषै मालीकी न्यांई भोजन किये अन्नके रसकूं निकासिके नाडीद्वारा सर्वशरीरविषै पहुंचावनैंरूप क्रियाकूं करता है ॥

४ उदानवायुः----

[१] कण्ठस्थानविषैं रहताहै औ

[२] खाएपिए अन्नजलके विभागकूं करता-है। तथा स्वप्न हींचकी आदिकके दिखावनैंरूप क्रियाकूं करता है।

५ व्यानवायु :----

[१] सर्वांगस्थानविषै रहताहै। औ

[२] सर्वअङ्गनकी संधिनके फेरनैंरूप क्रियाकूं करता है ॥

इसरीतिसैं पांचप्राणके मुख्यस्थान औ क्रिया हैं ॥

* ९० प्रश्नः—प्राणादिवायु शरीरविषै क्या करते हैं ?

उत्तर :---- प्राणादिवायु

१ सारेशरीरविषै पूर्ण होयके शरीरकूं बल देतेहैं। औ।

२ इंद्रियनकूं आपआपके कार्यविषै प्रवृत्तिरूप क्रियाके साधन होतेहैं॥

* ९१ प्रश्नः—प्राणमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह कैसे जानना ?

उत्तर :----

निद्राविषै पुरुष सोयाहोवै। तब प्राण जागता है। तौ बी कोई स्नेही आवै तिसका सन्मान करता नहीं। औ

२ चोर भूषण लेजावै तिसकूं निषेध करता नहीं।

तातैं यह प्राणवायु घटकी न्यांई जड है। औ

मैं चैतन्यरूप इसतैं विलक्षण हूं। यातै यह प्राणमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह सूक्ष्म देहरूप है ॥ मैं इसका जाननैहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूं ॥ इसीरीतिसैं प्राणमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना ॥

* ९२ प्रश्नः—मनोमयकोश सो क्या है ?

उत्तर :----पांचज्ञानइंद्रिसहित मन। सो मनोमयकोश हैं ॥

* ९३ प्रश्नः—पांचज्ञानेंद्रिय औ मन कौन है ?

उत्तर :---ये पूर्व सूक्ष्मदेहकी प्रक्रियाविषै कहे हैं ॥

* ९४ प्रश्नः—मन कैसा है ?

उत्तर :---देहविषै अहंता औ गृहादिकविषै ममतारूप अभिमानकूं करताहुवा इंद्रियद्वारा बाहीर गमन करताहुआ कारणरूप है ॥

* ९५ प्रश्नः—मनोमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह किस-रीतिसैं जानना ?

उत्तरः—

१ कामक्रोधादिवृत्तियुक्त होनैतैं मन नियमरहित-स्वभाववाला है तातैं विकारी है। औ
२ मैं सर्ववृत्तिनका साक्षी निर्विकार हूं। यातैं यह मनोमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह सूक्ष्मदेहरूप है। मैं इसका जाननैहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूं॥ इसरीतिसैं मनोमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना॥

* ९६ प्रश्न— ४ विज्ञानमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः- पांचज्ञानइन्द्रियसहित बुद्धि। सो विज्ञानमयकोश है॥

* ९७ प्रश्नः— ज्ञानइंद्रिय औ बुद्धि कौन है ?

उत्तरः--ये पूर्व लिंगदेहकी प्रक्रियाविषै कहे हैं॥

* ९८ प्रश्नः—बुद्धि कैसी है ?

उत्तरः -

१ सुषुप्तिविषै चिदाभासयुक्त[६४] बुद्धि विलीन होवै है। औ

२ जाग्रतविषै नखके अग्रभागसैं लेके शिखा पर्यंत शरीरविषै व्यापिके वर्त्तती हुयी कर्त्तारूप है ॥

* ९९ प्रश्नः—विज्ञानमय कोशतैं मैं न्यारा हूं। यह कैसैं जानना ?

उत्तरः--

१ बुद्धि। घटादिककी न्यांई विलयआदि अवस्थावाली होनैतैं विनाशी है। औ

२ मैं विलयआदि अवस्थारहित होनैतैं इसतैं विलक्षण अवनाशी हूं।

यातैं यह विज्ञानमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह सूक्ष्मदेहरूप है। मैं उसका जाननै-

हारा आत्मा इसतैं न्यारा हूं॥ इसरीतिसैं विज्ञानमयकोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना॥

१०० प्रश्नः–आनंदमय कोश सो क्या है?

उत्तरः--

१ पुण्यकर्मफलके अनुभवकालविषैं कदाचित् बुद्धिकी वृत्ति अंतर्मुख हुयी आत्मस्वरूपभूत आनंदके प्रतिबिंबकूं भजती है। औ

॥६४॥

१ जैसैं दीपकका प्रकाश औ आकाश अभिन्न प्रतीत होवै हैं। तौ बी भिन्न है। औ

२ जैसैं तप्तलोहविषै अग्नि औ लोह अभिन्न प्रतीत होवै है। तौ बी भिन्न है।

तैसैं अन्तकरण औ आत्मा अभिन्न प्रतीत होवै है तौ बी भिन्न हैं। काहे तैं सुषुप्तिविषै अन्तःकरणके लय हुवे आत्माकूं अज्ञानका साक्षी होनैंकरि प्रतीयमान होनैंतैं॥

२ जो प्रिय मोद प्रमोदरूप कहिये है।
३ सोई वृत्ति पुण्यकर्मफलके भोगकी निवृत्तिके हुये निद्रारूपसैं विलीन होवै हैं।

सो वृत्ति आनंदमयकोश है॥

* १०१ प्रश्न—आनंदमयकोश कैसा है?

उत्तरः--

१ इष्टवस्तुके दर्शनसैं उत्पन्न प्रियवृत्ति जिसका शिर है। औ
२ इष्टवस्तुके लाभतैं उत्पन्न मोदवृत्ति जिसका एक (दक्षिण) पक्ष है। औ
३ इष्टवस्तुके भोगसैं उत्पन्न प्रमोदवृत्ति जिसका द्वितीय (वाम) पक्ष है। औ
४ बुद्धि वा अज्ञानकी वृत्तिविषै आत्मस्वरूपभूत आनंदका प्रतिबिंब जिसका स्वरूप है। औ

५ बिंबरूप आत्माका स्वरूपभूत आनंद जिसका पुच्छे[६५] (आधार) है।

ऐसा पक्षीरूप भोक्ता [६६]आनंदमयकोश है

* १०२ प्रश्नः—आनंदमयकोशतें मैं न्यारा हूं। यह किसरीतिसें जानना ?

उत्तर :----

१ आनंदमयकोश बादलआदिकपदार्थनकी न्यांई कदाचित् होनैवाला है। यातैं क्षणिक है। औ

२ मैं सर्वदा स्थित होनैतैं नित्य हूं।

॥६५॥ ब्रह्मरूप आनंद आधार होनैतैं तैत्तिरीय-श्रुतिविषै पुच्छशब्दकरि कहा है ॥

॥६६॥ ऐसें अन्यच्यारीकोशनकी पक्षीरूपता अस्म-त्कृत तैत्तिरीयउपनिषद्की भाषाटीकाविषै सविस्तर लिखी है। जाकूं इच्छा होवै सो तहां देख लेवै ॥

यातैं यह आनंदमयकोश मैं नहीं औ मेरा नहीं। यह कारणदेहरूप है। मैं इसका जाननैहारा आत्मा इसतैं न्यारा हूं। इसरीतिसैं आनंदमय-कोशतैं मैं न्यारा हूं। यह जानना॥

* १०३ प्रश्नः—विद्यमान अन्नमयादिकोश जब आत्मा नहीं। तब कौन आत्मा है ?

उत्तर : - -

१ बुद्धिआदिकविषै प्रतिबिंबरूपकरि स्थित। औ
२ प्रियआदिकशब्दसैं कहिये है।

ऐसा जो आनंदमयकोश है। तिसका बिंबरूप कारण जो आनंद है। सो नित्य होनैतैं आत्मा है॥

* १०४ प्रश्न :—पांचकोश जे है वेहीं अनुभवविषै आवते हैं। तिनतैं न्यारा कोई आत्मा अनुभवविषै आवता नहीं। यातैं पांचकोशतैं न्यारा आत्मा है। यह निश्चय कैसैं होवै ?—

उत्तर:---- यद्यपि पांचकोशहीं अनुभवविषै आवतेहैं। इनतैं न्यारा कोई आत्मा अनुभवविषै आवता नहीं। यह वार्त्ता सत्य है। तथापि जिस अनुभवतैं ये पांचकोश जानियेहैं। तिस अनुभवकूं कौन निवारण करैगा? कोई बी निवारण करि; शके नहीं। यातैं पांचकोशनका अनुभवरूप जो चैतन्य है। सो पांचकोशनतैं न्यारा आत्मा है॥

* १०५ प्रश्नः– आत्मा कैसे है।

उत्तर:--सत् चित् आनंद आदि स्वरूप है॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये पंचकोशातीत-वर्णननामिका चतुर्थकला समाप्ताः ॥ ४ ॥

अथ पंचमकला प्रारंभ ५

तीन अवस्थाका मैं साक्षी हूं

मनहर छन्द

अवस्था तीनको साक्षी आतमा [६७]अन्वय याको
व्यभिचारीअवस्थाको [६८]व्यतिरेक पाईयो ॥
त्रिपुटी चतुरदश करि व्यवहार जहां ।
स्पष्ट सो जाग्रत जूठ ताकूं दृश्य ध्याईयो ॥
देखे सुने वस्तुनके संस्कारसैं सृष्टि जहां ।
अस्पष्टप्रतीति स्वप्न मृषा लोक गाईयो ॥
सकलकरण लय होय [६९]जहां सुषुप्ति सो ।
पीतांबर तुरीयहीं [७०]प्रत्यक [७१]प्रत्याईयो ॥ ५ ॥

* १०६ प्रश्न :—तीन अवस्था कौनसी हैं ?

उत्तर :—१ [७२]जाग्रत् । २ [७३]स्वप्न औ ३ [७४]सुषुप्ति । ये तीन अवस्था हैं ॥

॥६७॥ या (आत्मा) को अन्वय कहिये पुष्पमाला मैं सूत्रकी न्यांई तीन अवस्था मैं अनुस्यूतपना है । यह अर्थ है ॥

॥६८॥ पुष्पनकी न्यांई तीनअवस्थाका परस्पर औ अधिष्ठानतें भेद ॥

॥६९॥ पदयोजनाः– जहां सकलकरण लय होय । सो सुषुप्ति है ॥

॥७०॥ अंतरात्मा ॥७१॥ निश्चय कीयो ॥

॥७२॥ स्वप्न औ सुषुप्तितैं भिन्न इंद्रियजन्य ज्ञानका औ इंद्रियजन्यज्ञानके संस्कारका आधारकाल सो जाग्रत् अवस्था कहिये है ।

॥७३॥ इंद्रियसैं अजन्य । विषयगोचर अंतः करणकी अपरोक्षवृत्तिका काल स्वप्नअवस्था कहिये है ॥

॥७४॥ सुखगोचर और अविद्यागोचर अविद्या की वृत्तिका काल ।सुषुप्तिअवस्था कहिये है ।

॥१॥ जाग्रत्‌अवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

१०७ प्रश्नः—जाग्रत्‌अवस्था सो क्या है ?

उत्तरः--

१ चौदाइंद्रिय अध्यात्म[७५] हैं ॥

२ तिनके चौदादेवता अधिदेव[७६] हैं ॥

३ तिनके चौदाविषय अधिभूत[७७] हैं ॥

इन बेचालीसतत्त्वनसैं जिसविषै व्यवहार होवै । सो जाग्रत्‌अवस्था[७८] है ॥

।।७५।। आत्माकूं आश्रयकरिके वर्त्तमान जे इंद्रियादिक । वे अध्यात्म कहिये हैं ।।

।।७६।। स्वसंघातसैं भिन्न होवै औ चक्षुइंद्रियका अविषय होवै । सो अधिदैव कहिये हैं ।।

।।७७।। स्वसंघातासैं भिन्न होवै औ चक्षुआदि इंद्रियका विषय होवै । सो अधिभूत कहिये हैं ।।

।।७८।। यह स्थूलदृष्टिवाले पुरुषनकूं जाननै योग्य जाग्रत्‌का लक्षण है । तैसैंही स्वप्नसुषुप्तिविषैं बी जानना ।

* १०८ प्रश्नः—चौदाइंद्रिय कौनसी है ?

उत्तरः--

१--५ ज्ञानइंद्रिय पांचः—१ श्रोत । २ त्वचा ३ चक्षु । ४ जिव्हा । औ ५ घ्राण ॥

६--१० कर्मइंद्रिय पांचः--६ वाक् । ७ पाणि । ८ पाद । ९ उपस्थ । औ १० गुद ॥

११--१४ अंतःकरण च्यारीः--११ मन । १२ बुद्धि । १३ चित्त । औ १४ अहंकार ॥

ये चौदाइंद्रिय अध्यात्म हैं ।

* १०९ प्रश्नः—चौदाइंद्रियनके चौदादेवता कौनसे हैं?

उत्तरः--

१--५ ज्ञानइंद्रिय पांचके देवताः--

(१) श्रोत्रइंद्रियका देवता । दिशा * ॥

(२) त्वचाइंद्रियका देवता । वायु ॥

(३) चक्षुइंद्रियका देवता । सूर्य ॥

---

* दिक्पाल ॥

(४) जिव्हाइंद्रियका देवता। वरुण ॥
(५) घ्राणइंद्रियका देवता। अश्विनीकुमार ॥

६--१० कर्मइंद्रिय पांचके देवताः--

(६) वाक्इंद्रियका देवता। अग्नि ॥
(७ हस्तइंद्रियका देवता। इन्द्र ॥
(८) पादइंद्रियका देवता। वामनजी ॥
(९) उपस्थइंद्रियका। देवता। प्रजापति ॥
(१०) गुदइंद्रियका देवता। यम ॥

११-१४ अंतःकरण चारीके देवताः--

(११) मनइंद्रियका देवता। चन्द्रमा ॥
(१२) बुद्धिइंद्रियका देवता। ब्रह्मा ॥
(१३) चित्तइंद्रियका देवता। वासुदेव ॥
(१४) अहंकारइंद्रियका देवता। रुद्र ॥

ये चौदादेवता अधिदेव हैं ॥

॥७९॥ अन्तरिंद्रियरूप अन्तकरण ॥

* ११० प्रश्नः–चौदाइंद्रियनके चौदाविषय कौनसें हैं,

उत्तरः–

१–५ ज्ञानइंद्रिय पांचके विषयः–

१ शब्द । २ स्पर्श । ३ रूप । ४ रस । ५ गंध ॥

६–१० कर्मइंद्रिय पांचके विषयः–

६ वचन । ७ आदान । ८ गमन । ९ रति-भोग । १० मलत्याग ॥

११–१४ अंतःकरण च्यारीके विषयः–

११ संकल्प विकल्प । १२ निश्चय । १३ चिंतन । १४ अहंपना ॥

ये चौदाविषय अधिभूत हैं ॥

॥८०॥ मनका संकल्पविकल्प विषय नहीं । किंतु जिस वस्तुका संकल्प होवै । सौ वस्तु विषय है । तैसेंही बुद्धि चित्त अहंकार औ कर्मइन्द्रियविषै बी जानना ॥

* १११ प्रश्नः—अध्यात्म अधिदैव अधिभूत । ये तीन-तीन मिलिके क्या कहिये हैं ?

उत्तरः—अध्यात्मादितीन—पुट (आकार) मिलिके त्रिपुटी कहिये हैं ॥

* ११२ प्रश्नः—चौदात्रिपुटी किसरीतिसें जाननी ?

उत्तरः—

१—५ ज्ञानइंद्रियनकी त्रिपुटी

इंद्रिय — अध्यात्म ॥	देवता — अधिदैव ॥	विषय — अधिभूत ॥
[१] श्रोत्र ।	दिशा ।	शब्द ॥
[२] त्वचा ।	वायु ।	स्पर्श ॥
[३] चक्षु ।	सूर्य ।	रूप ॥
[४] जिन्हा ।	वरुण ।	रस ॥
[५] घ्राण ।	अश्विनीकुमार ।	गंध ॥

६–१० ॥ कर्मइंद्रियनकी त्रिपुटी

इंद्रिय –	देवता ---	विषय ---
अध्यात्म ।	अधिदैव ॥	अधिभूत ॥
[६] वाक् ।	अग्नि ।	वचन [क्रिया]॥
[७] हस्त ।	इंद्र ।	लेना देना ॥
[८] पाद ।	वामनजी ।	गमन ॥
[९] उपस्थ ।	प्रजापति ।	रतिभोग ॥
[१०] गुद ।	यम ।	मलत्याग ॥

११–१४ ॥ अन्तःकरण ४ की त्रिपुटी ॥

[११] मन ।	चंद्रमा ।	संकल्पविकल्प ॥
[१२] बुद्धि ।	ब्रह्मा ।	निश्चय ॥
[१३] चित्त ।	वासुदेव ।	चिंतन ॥
[१४] अहंकार ।	रुद्र ।	अहंपना ॥

इसरीतिसैं चौदात्रिपुटी जाननी ॥

* ११३ प्रश्नः—इन त्रिपुटीनका क्या स्वभाव है ?

उत्तरः—तीनतीनपदार्थनकी जे त्रिपुटी है ? तिनमैंसैं एक न होवै तो तिसतिसका व्यवहार न चले । जैसैं

१ इंद्रिय औ देवता होवै अरु तिसका विषय न होवै तौ बी व्यवहार न चले ।

२ विषय औ इंद्रिय होवै अरु देवता न होवै तौ बी व्यवहार न चले ।

ऐसैं सर्व त्रिपुटीनविषैं जानना ॥

* ११४ प्रश्नः—मेरा क्या स्वभाव है । यह कैसैं जानना ।

उत्तरः—

१ त्रिपुटी पूर्ण होवे तिसकूं बी मैं जानताहूं । औ

२ त्रिपुटी अपूर्ण होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं ।

३ तैसैं त्रिपुटीसैं व्यवहार चले तिसकूं बी मैं जानताहूं । औ

४ व्यवहार न चलै तिसकूं बी मैं जानताहूं। ऐसा मेरा स्वभाव है। यह जानना ॥

* ११५ प्रश्नः—इस कथनसें क्या सिद्ध भया ?

उत्तरः—त्रिपुटीसैं जिसविषै व्यवहार चलता है ऐसी जाग्रत्अवस्था है। यह सिद्ध भया ॥

*११६ प्रश्नः—जाग्रत्अवस्थाविषै जीवका स्थान,वाचा, भोग,शक्ति,गुण औ जाग्रत्के अभिमानसे तिस (जीव) का नाम क्या है ?

उत्तरः—जाग्रत्अवस्थाविषै जीवका

१ नेत्र स्थान[८१] है।

२ वैखरी वाचा है

॥८१॥ यद्यपि जाग्रत्विषै इस चिदाभासरूप जीवकी नखसैं लेके शिखापर्यंत सारेदेहविषै व्याप्ति है। तथापि मुख्यताकरिके सो नेत्रविषै रहता है। यातैं ताका नेत्र स्थान कहिये हैं।

३ स्थूल भोग है ।

४ क्रिया शक्ति है ।

५ रजो गुण है औ

६ जाग्रत्‌के अभिमानसैं विश्व नाम है ॥

*११७ प्रश्नः–जाग्रत्‌अवस्था के कहनेसैं क्या सिद्ध भया?

उत्तरः–

१ यह जाग्रत्‌अवस्था होवै तिसकूं बी मैं जानता हूं । औ

२ स्वप्नसुषुप्तिविषै न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं ।

यातैं जाग्रत्‌अवस्था मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह स्थूलदेहकी है । मैं इसका जाननैहारा साक्षी घटसाक्षीकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ।

इसरीतिसैं जाग्रतअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

॥२॥ स्वप्नअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

* ११८ प्रश्नः—स्वप्नअवस्था सो क्या है ?

उत्तरः—जाग्रत् अवस्थाविषै जो पदार्थ देखे-होवैं। सुनेहोवैं। भोगेहोवैं। तिनका संस्कार बालके हजारवें भाग जैसी बारीक हितानामक नाडी जो कंठविषै है तिसविषै रहता है। तिससैं निद्राकालमैं पांचविषयआदिकपदार्थ औ तिनका ज्ञान उपजता है। तिनसैं जिसविषै व्यवहार होवै। सो स्वप्नअवस्था है।

* ११९ प्रश्नः—स्वप्नअवस्थाविषै जीवका स्थान वाचा भोग शक्ति गुण और स्वप्न के अभिमानसैं तिस (जीव) का नाम क्या है ?

उत्तरः—स्वप्नअवस्थाविषै जीवका

१ कंठ स्थान है।

२ मध्यमा वाचा है!

३ सूक्ष्म (वासनामय) भोग है ।

४ ज्ञान शक्ति है ।

५ सत्त्व गुण है । औ

६ स्वप्नके अभिमानसैं तैजस नाम है ॥

*१२० प्रश्नः—स्वप्नअवस्थाके कहनैसैं क्या सिद्ध भया

उत्तरः—

१ स्वप्नअवस्था होवै तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ

२ जाग्रत्सुषुप्तिविषै न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं ।

यातैं यह स्वप्नअवस्था मैं नहीं औ मेरी नहीं । यह सूक्ष्मदेहकी है । मैं इसका जाननैहारा साक्षी घटसाक्षीकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं । यह स्वप्नके कहनेसैं सिद्ध भया ॥

इसरीतिसैं स्वप्नअवस्थाका मैं साक्षी हूं ।

॥८२॥ कितनेक रजोगुण बी कहते हैं ॥

॥ ३ ॥ सुषुप्तिअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

* १२१ प्रश्नः—सुषुप्तिअवस्था सो क्या है ?

उत्तरः—पुरुष जब निद्रासैं जागिकै उठे तब सुषुप्तिविषै अनुभव किये सुख औ अज्ञानका स्मरणकरिके कहता है। जो " आज मैं सुखमैं सोयाथा औ कछु बी न जानताभया " यह सुख औ अज्ञानका प्रकाश साक्षीचेतनरूप अनुभवसैं जिसविषै होवै है। ऐसी जो बुद्धिकी विलयअवस्था सो सुषुप्तिअवस्था है।

* १२२ प्रश्नः—सुषुप्तिअवस्थाविषैं जीवका स्थान वाचा भोग शक्ति गुण औ सुषुप्तिके अभिमानसे तिस (जीव) का नाम क्या है ?

उत्तरः—सुषुप्तिअवस्थाविषै जीवका

१ हृदय स्थान है।

२ पश्यंती वाचा है।

३ आनन्द भोग है।

४ द्रव्यशक्ति है ।
५ तमो गुण है । औ
६ सुषुप्तिके अभिमानसैं प्राज्ञ नाम है ।

* १२३ प्रश्नः—सुषुप्ति अवस्थाविषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः—प्रथमदृष्टांत (१) जैसैं कोईका-भूषण कूपविषै गिर्‌याहोवै तिसके निकासनैंकूं कोई तारूपुरुष कूपविषै गिरे । सो पुरुष भूषण मिले तिसकूं बी जानता है औ भूषण न मिले तिसकूं बी जानता है । (२) परन्तु कहनेका साधन जो वाक्‌इंद्रिय है तिसके देवता अग्निका जलके साथि विरोध होनैतैं तिरोधान होवै है । यातैं कहता नहीं । औ (३) जब पुरुष जलसैं बाहीर निकसैं तब कहनेका साधन देव-तासहित वाक्‌इंद्रिय है । यातैं भूषण मिल्या अथवा न मिल्या सो कहता है ।

सिद्धांतः—तैसैं (१) सुषुप्तिअवस्थाविषै सुख औ अज्ञानका साक्षीचेतनरूप सामान्यज्ञान है। (२) परंतु विशेषज्ञानके साधन जे इंद्रिय औ अंतःकरण तिनका तब अभाव है। यातैं सुख औ अज्ञानका विशेषज्ञान होता नहीं। (३) जब पुरुष जागता है तब विशेषज्ञानके साधन इंद्रिय औ अंतःकरण होवैहैं। यातैं सुषुप्तिविषै अनुभवकिये सुख औ अज्ञानका स्मृतिरूप विशेषज्ञान होवैहै ॥

द्वितीयदृष्टांतः—जैसैं (१) आतपविषै पिगल्या घृत होवै। (२) सो छायाविषै स्थित होवै तौ गट्ठारूप होवैहै। (३) फेर आतपविषै स्थित होवै तौ पिगलताहै ॥

सिद्धांतः—तैसैं (१) सुषुप्तिषै कारणशरीररूप अज्ञान है। (२) सो जाग्रत्स्वप्नविषै बुद्धिरूप होवैहै। (३) फेर सुषुप्तिविषै अज्ञानरूप होवैहै॥

तृतीयदृष्टांतः—जैसें (१) कोई बालक लडकनके साथि खेल करनैकूं जावै। (२) सो जब श्रमकूं पावै तब माताके गोदमैं सोयके गृहके सुखका अनुभव करताहै। (३) फेर जब लडके बुलावैं तब बाहिर जायके खेलकूं करताहै॥

सिद्धांतः—तैसें (१) कारणशरीर जो अज्ञान तिसरूप माता है। तिसका बुद्धिरूप बालक कर्म-रूप लडकनके साथि जाग्रत्स्वप्नरूप बहिर्भूमि विषै व्यवहाररूप खेलकूं करता है। (२) जब विक्षेपरूप श्रमकूं पावै। सुषुप्तिअवस्था रूप गृहविषै अज्ञानरूप मातामैं लीन होयके ब्रह्मा-नंदका अनुभव करताहै। (३) फेर जब कर्म-रूप लडके बुलावैं तब जाग्रत्स्वप्नरूप बहिर्भूमि-विषै व्यवहाररूप खेलकूं करता है॥

चतुर्थदृष्टांतः—जैसें (१) समुद्रजलकरि पूर्ण घटकूं (२) गलेमें रस्सी बांधिके समुद्रविषै

लीन करैं (३) तब घटविषै स्थित जल समुद्रके जलसैं एकताकूं पावता है। (४) तौ बी घट-रूप उपाधिकरि भिन्नकी न्यांई है (५) फेर जब रस्सीकूं खीचियें तब भेदकूं पावता है। (६) परन्तु जलसहित घट औ समुद्रका आधार जो आकाश सो भिन्न होता नहीं। (७) किंतु तीनकालविषै एकरस है॥

सिद्धांतः—तैसैं (१) अज्ञानरूप समुद्र जलकरि पूर्न जो लिङ्गदेहरूप घट है। (२) सो अदृष्टरूप रस्सीसैं बांध्या हुआ सुषुप्तिकालविषै औ तिसके अवांतरभेदरूप मरण मूर्छा अरु प्रलय-कालविषै समष्टिअज्ञानरूप ईश्वरकी उपाधि माया-विषै लीन होवै है। (३) तब सो व्यष्टिअज्ञान-रूप जीवकी उपाधि अविद्या। समष्टिअज्ञानसैं एकताकूं पावै है। (४) तौ बी लिंगशरीरके संस्काररूप उपाधिकरि भिन्नकी न्यांई है।

(५) फेर जब अदृष्टरूप रस्सीकूं अंतर्यामी प्रेरता-है। तब भेदकूं पावैहै। (६) परंतु व्यष्टिअज्ञानरूप जलसहित लिंगदेहरूप घट औ समष्टिअज्ञानरूप समुद्रका आधार जो चिदाकाश सो भिन्न होता नहीं। (७) किंतु तीनकालविषै एकरस है ॥

* १२४ प्रश्नः— सुषुप्तिके कहनैसे क्या सिद्ध भया ?

उत्तरः—

१ सुषुप्तिअवस्था होवै तिसकूं बी मैं जानताहूं। औ
२ जाग्रत्स्वप्नविषै यह न होवै तब तिसके अभावकूं बी मैं जानता हूं।

यातैं यह सुषुप्तिअवस्था मैं नहीं औ मेरी नहीं यह कारणदेहकी है। मैं इसका जाननैहारा साक्षी घटसाक्षीकी न्यांई इसतैं न्यारा हूं ॥

इसरीतिसैंसुषुप्तिअवस्थाका मैं साक्षी हूं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये अवस्थात्रयसाक्षी-वर्णननामिका पंचमकला समाप्ता ॥५॥

अथ षष्ठकलाप्रारंभः ६

प्रपंचमिथ्यात्ववर्णन

[३]ललित छंदः

सकलदृश्य सो- ऽध्यास छोडना।
जगअधारमैं चित्त जोडना ॥
[४]त्रयदशाहि जो जाग्रदादि हैं।
सबप्रपंच सो भिन्न नाहिं हैं ॥६॥
रजत आदि हैं सीपिमैं यथा।
त्रयदशा सु हैं ब्रह्ममैं तथा ॥
रजतआदिवत् दृश्य ये मृषा।
शुगतिकादिवत् ब्रह्म अमृषा[५] ॥७॥
व्यभिचरैं मिथो[६] रजत[७] आदि ज्यों।
इनहिकि मिथो [८]व्यावृती जु त्यों।
शुगति [९]सूत्रवत् अनुग एक जो।
अनुवृती[१०]युं तो ब्रह्म आप सो ॥८॥

शुगतिकामहीं [९१]तीनअंश ज्यू ।
अजडब्रह्ममैं तीनअंश त्यूं ॥
[९२]उभयअंशकूं सत्य जानिले ।
[९३]त्रितिय त्यागदैं मोक्ष तौ मिलै ॥९॥
[९४]भिदभ्रमादि जों [९५]पंचधाएवं ।
त्रिविधतापता तप्त सो [९६]देवं ।
[९७]परशु पंचधा--युक्तियों करी ।
करि विचार तूं छेद ना डरी ॥१०॥
नाहि जु जाहिमैं तीनकालमैं ।
तहँहि भान है मध्यकालमैं ॥
शुगति रौप्यवत् ध्यास सो भ्रमं ।
[९८]अरथ ज्ञान दो–भांतिका क्रमं ॥११॥
[९९]द्विविधेवेम है ज्ञान अर्थको ।
[१००]अरंथभ्रांति वा षड्विधा बको ॥
सकलध्यास जे जगतमैं [१०१]द्वैसे ।
सबसु याहिके बीचमें [१०२]धँसे ॥१२॥

निज चिदात्माकूं ब्रह्म जानिके ।
सकलवेमको मूंऌ[103] भानिके ॥
परमसोदकूं[104] आप बूजिले ।
इहहि मुक्ति पीतांबरो मिले ॥ १३ ॥

॥८३॥ श्रीमद्भागवतके दशमस्कंधके एकतीसवें-अध्यायगत गोपिकागीतकी न्यांई यह छन्द है ॥

॥८४॥ तीनअवस्था ॥

॥८५॥ सत्य ॥ ॥८६॥ परस्पर ॥

॥८७॥ इहां आदिशब्दकरि भोडल (अवरख) औ कागजका ग्रहण है ॥

॥८८॥ भेद कहिये अन्योन्याभाव ॥

॥८९॥ पुष्पमालामैं सूत्रकी न्यांई ॥

॥९०॥ अनुस्यूततार्कार युक्त ॥

९१॥ सामान्य । विशेष । कल्पितविशेष । ये तीन अंश हैं ॥

॥९२॥ सामान्य औ विशेष । इन दो अंशनकूं ॥

॥९३॥ तृतीय कल्पितअंशकूं ॥

॥९४॥ भेदभ्रांतिसैं आदिलेके । इहां आदिशब्दकरि कर्ताभोक्तापनैंकी भ्रांति । संगभ्रांति । विकारभ्रांति । ब्रह्मतैं भिन्न जगत्के सत्यताकी भ्रांति । इन च्यारीभ्रांतिनका ग्रहण हैं ॥

॥९५॥ पांचप्रकारका संसार है ॥९६॥ वन हैं ।

॥९७॥ अन्वय:– पंचधा कहिये पांचप्रकारकी युक्तियों कहिये दृष्टांतरूप परशु कहिये कुठारकरी ॥

॥९८॥ अन्वय:– सो भ्रम कहिये अध्यास । अरथ कहिये अर्थाध्यास औ ज्ञान कहिये ज्ञानाध्यास । या क्रमसैं दोभांतिका है ॥

॥९९॥ अन्वय:– ज्ञान कहिये ज्ञानाध्यास औ अरथ कहिये अर्थाध्यास । तिनको वेम कहिये अध्यास । प्रत्येक कहिये एक एक द्विविध है ॥

॥१००॥ वा अरथभ्रांति कहिये अर्थाध्यास । षड्विधा कहिये षट्प्रकारको । बको नाम कहो ॥

॥१०१॥ दिखाये ॥

॥१०२॥ प्रवेशकूं पाये हैं ॥ ॥१०३॥ अज्ञान ॥

॥ १०४ ॥ परमानंदरूप ब्रह्मकूं आत्मा जानीले ॥

* १२५ प्रश्नः—आत्मविषे तीन अवस्था किसकी न्यांई भासती है ?

उत्तरः—दृष्टांतः—जैसें सीपीविषे रूपा अथवा भोडल (अभ्रक) अथवा कागज। ये तीन सीपीके अज्ञानसैं कल्पित भासते हैं। तिन तीनवस्तुका

१ परस्पर वा सीपीके साथि व्यतिरेक है। औ

२ सीपीका तीनवस्तुनविषे अन्वय है॥

जैसें किः—

१ [१] सीपीविषे जब रूपा भासै तब भोडल औ कागज भासता नहीं। औ

[२] जब भोडल भासै तब रूप औ कागज भासता नहीं। औ

[३] जब कागज भासै तब रूपा औ भोडल भासता नहीं । यह तीनवस्तुनका परस्पर व्यक्तिरेक है ॥ सीपीविषै आदिमध्यअन्तमैं इन तीनवस्तुनका व्यावहारिक औ पारमार्थिक अत्यन्त अभाव है । यह सीपीविषै बी तिन तीनवस्तुनका व्यतिरेक है । औ

२ भ्रांतिकालविषै

(१) " यह रूपा हैं "

(२) " यह भोडल है "

(३) " यह कागज है "

इसरीतिसैं सीपीका इदं अंश तिस तीनवस्तुनविषै अनुस्यूत भासता है । यह तिन तीनवस्तुनविषै सीपीका अन्वय है ॥

इहां सीपीके तीनअंश हैं-१ सामान्यअंश। २ विशेषअंश। ३ कल्पितविशेषअंश॥

१ इदंपना सामान्यअंश है। काहेसैं जो अधिक कालविषै प्रतीत होवै सो सामान्यअंश है॥ इदंपना जातैं

(१) भ्रांतिकालविषै प्रतीत होवै है। औ
(२) भ्रांतिके अभावकाल विषै बी "यह सीपी हैं" ऐसैं प्रतीत होवै है।

यातैं यह इदंपना सामान्यअंश है औ आधार बी कहियेहै॥

२ नीलपृष्ठतीनकोणयुक्त सीपी विशेषअंश है। काहेतैं जो न्यूनकालविषै प्रतीत होवै सो विशेषअंश है॥

(१) भ्रांतिकालविषै इन नीलपृष्ठआदिककी प्रतीती होवै नहीं ।

(२) किंतु इनकी प्रतीतिसैं भ्रांतिकी निवृत्ति होवै ।

यातैं यह विशेषअंश है औ । अधिष्ठान बी कहियेहै ॥

३ रूपाआदिक कल्पितविशेषअंश है । काहेतैं जो अधिष्ठानके ज्ञातकालमैं प्रतीत होवै नहीं । सो **कल्पितविशेषअंश** है ॥ जैसैं

(१) रूपाआदिक । सीपीके अज्ञानकालविषै प्रतीत होवैहैं । औ

(२) सीपीके ज्ञानकालविषै इनकी प्रतीति होवै नहीं ।

(३) वा सीपीसैं व्यभिचारी हैं ।

यातैं यह कल्पितविशेषअंश है । औ भ्रांति बी कहियेहै ॥

सिद्धांतः—तैसैं अधिष्ठानआत्माविषै जाग्रत् अथवा स्वप्न अथवा सुषुप्ति । ये तीनभ्रांति आत्माके अज्ञानसैं होवैहैं । तिनका

१ परस्पर औ अधिष्ठानआत्माके साथि व्यतिरेक[१०५] है औ

२ आत्माका तिनविषै अन्वय[१०६] है ॥

जैसैं किः—

१ (१) जाग्रत् भासैहै तब स्वप्न औ सुषुप्ति भासै नहीं । औ

(२) स्वप्न भासैहै तब जाग्रत् औ सुषुप्ति भासै नहीं औ

(३) सुषुप्ति भासैहै तब जाग्रत् औ स्वप्न भासै नहीं ।

यह तीनअवस्थाका परस्परव्यतिरेक है । औ

॥१०५॥ अभाव वा व्यावृत्ति । सो व्यतिरेक है ॥

॥१०६॥ भाव वा अनुवृत्ति । सो अन्वय है ॥

अधिष्ठानविषै इन तीनअवस्थाका पारमार्थिक अत्यंतअभाव (नित्यनिवृत्ति) है ॥ यह तीन-अवस्थाका अधिष्ठानविषै व्यतिरेक है । औ

२ आत्मा इन तीनअवस्था विषै अनुस्यूत होयके प्रकाशता है । यह आत्माका तीनअवस्थाविषै अन्वय है ।

इहां आत्माके अविद्याउपाधिसैं आरोपित तीनअंश हैं:—१ सामान्यअंश । २ विशेषअंश । ३ कल्पितविशेषअंश ॥

१ सत् ("है"पनै) रूप सामान्यअंश है । काहेतैं

(१) "जाग्रत् है" "स्वप्न है" "सुषुप्ति है" । इसरीतिसैं आत्माका सत्पना भ्रांतिकालविषै बी प्रतीत होवैहै । औ

(२) भ्रांतिकी निवृत्तिकालविषै "मैं सत् हूं। मैं चित् हूं। मैं आनंदहूं। मैं परिपूर्ण हूं। मैं असंग हूं। मैं नित्य मुक्त हूं। मैं ब्रह्म हूं"। इसरीतिसैं आत्माके सत्पनैकी प्रतीति होवैहै

यातैं यह सत्रूप सामान्यअंश है और आधार बी कहियेहै।

२ चेतन आनंद असंग अद्वितीयपनैसैं आदिलेके जे आत्माके विशेषण हैं। सो विशेषअंश है। काहेतैं

(१) भ्रांतिकालविषै इनकी प्रतीति होवै नहीं। किन्तु

(२) इनकी प्रतीतिसैं भ्रांतिकी निवृत्ति-होवैहै।

यातैं यह विशेषअंश है औ अधिष्ठान बी कहिये॥

३ तीनअवस्थारूप प्रपंच कल्पितविशेषअंश है। काहेतै

(१) ब्रह्मसैं अभिन्न आत्माके अज्ञानकालविषै प्रतीत होवैहै। औ

(२) "मैं ब्रह्म हूं" ऐसैं आत्माके ज्ञानकालमैं आत्मासैं भिन्न सत् प्रतीत होवै नहीं।

यातैं यह तीनअवस्थाका प्रपंच कल्पित विशेषअंश है औ भ्रांति बी कहियेहैं॥

इसरीतिसैं ये तीनअवस्था आत्माविषै मिथ्या प्रतीत होवैहैं ॥

* १२६ प्रश्नः–आत्मविषैं मिथ्याप्रपंचकी प्रतीतिमें अन्यदृष्टांत कौनसे हैं ?

उत्तरः–जैसें

१ स्थाणुविषै पुरुष प्रतीत होवैहैं। औ

२ साक्षीविषै स्वप्न प्रतीत होवैहै। औ
३ मरुभूमिविषै जल प्रतीत होवैहै। औ
४ आकाशविषै नीलता प्रतीत होवैहै। औ
५ रज्जुविषै सर्प प्रतीत होवैहै। औ
६ जलविषै अधोमुखपुरुष वा वृक्ष प्रतीत होवैहै। औ
७ दर्पणविषै नगरी प्रतीत होवैहै॥

सो मिथ्या है॥

तैसैं आत्माविषै अपने अज्ञानतैं प्रपंच प्रतीत होवैहै। सो मिथ्या है।

इस रीतिसैं प्रपंचके मिथ्यापनैका निश्चय करना। सोई प्रपंचका बाध[१०७] है

॥१०७॥ मिथ्यापनैके निश्चयका नाम बाध है। सो शास्त्रीय यौक्तिक औ अपरोक्ष भेदतैं तीन भांतिका है॥

* प्रश्नः--भ्रांतिरूप संसार कितनै प्रकारका है ?

उत्तरः–

१ भेद[108]भ्रांति ।

२ कर्त्ता[109]भोक्तापनैकी भ्रांति ।

३ संग[110]की भ्रांति ।

४ विकार[111]की भ्रांति [

५ ब्रह्मसैं भिन्न जगत्के सत्यताकी भ्रांति ।

यह पांचप्रकारका भ्रांतिरूप संसार है ॥

* १२८ प्रश्नः–पांचप्रकारके भ्रमकी निवृत्ति किन दृष्टांतनसैं होवै है ?

उत्तरः––

१ बिंब[112]प्रतिबिंबके दृष्टांतसैं भेदभ्रमकी निवृत्ति होवैहै ॥

॥१०८॥ जीवईश्वरका भेद । जीवनका परस्पर-भेद । जड़नका परस्परभेद । जीवजड़का भेद । औ जड़ई-श्वरका भेद । यह पांचप्रकारकी भेदभ्रांति है ॥

॥१०९॥ अन्तःकरणके धर्म कर्तापनैंभोक्तापनैंकी आत्माविषैं प्रतीति होवैं है। यह कर्त्ताभोक्तापनैंकी भ्रांति है ॥

॥११०॥ आत्माका देहादिकविषैं अहंतारूप औ गृहादिकविषैं ममतारूप संबंध है। वा सजातीय विजातीय स्वगत वस्तुके साथि संबंधकी प्रतीति। सो संगभ्रांति है।

॥१११॥ दुग्धके विकार दधिकी न्यांई। ब्रह्मका विकार जीव तथा जगत् है। ऐसी जो प्रतीति। सो विकारभ्रांति है ॥

॥११२॥ सूत्रभाष्यके उपरि पंचपादिकानामक टीका पद्मपादाचार्यनें करी है। तिस पंचपादिकाका व्याख्यानरूप विवरणनामग्रंथ है। तिसके कर्त्ता श्रीप्रकाशात्मचरण नामआचार्य है। तिसकी रीतिके अनुसार यह उपरि लिख्या बिंबप्रतिबिंबकी दृष्टांत है ॥

२ स्फटिकविषै लालवस्त्रके लालरंगकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं कर्त्ताभोक्तापनैकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

३ घटाकाशके दृष्टांतसैं संगभ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

४ रज्जुविषै कल्पितसर्पके दृष्टांतसैं बिकार भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

५ कनकविषै कुंडलकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं ब्रह्मसैं भिन्न जगत्‌के सत्यपनैकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवैहै ॥

*१२९ प्रश्नः- बिंबप्रतिबिंबके दृष्टांतसैं भेदभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवै है ।

उत्तरः--जैसे (१) दर्पणविषै मुखका प्रतिबिंब भासताहै सो प्रतिबिंब दर्पणविषै नहीं हैं। किंतु दर्पणकूं देखनैवास्ते निकसी जो नेत्रकी

वृत्ति सो दर्पणकूं स्पर्शकरिके पीछे लौटिके मुखकूं हीं देखतीहैं। यातैं बिंब जो मुख तिसके साथि प्रतिबिंब अभिन्न हैं। तातैं प्रतिबिंब मिथ्या नहीं। किंतु सत्य है। औ (२) प्रतिबिंबके धर्म जे बिंबसैं भिन्नपणा औ दर्पणविषैं स्थित-पना औ बिंबसैं उलटेपना। ये तीन औ तिनकी प्रतीतिरूप ज्ञान सो भ्रांति है॥ (३) यातैं इन धर्मनको मिथ्यापनैका निश्चयरूप बाध करिके बिंब औ प्रतिबिंबका सदाअभेद निश्चय होवैहै॥

सिद्धांत—तैसैं (१) शुद्धब्रह्मरूप बिंब है। तिसका अज्ञानरूप दर्पणविषै जीवरूप प्रतिबिंब भासताहै। तिनमैं स्वप्नकी न्यांई एक जीव मुख्य है औ दूसरे स्थावरजंगमरूप नाना जीव भासतेहैं। ये जीवाभास हैं॥ सो

जीवरूप प्रतिबिंब ईश्वररूप बिंबके साथि सदा अभिन्न हैं ॥ परंतु (२) मायाके बलसैं तिस-जीवके धर्म । बिंबरूप ईश्वरसैं भेद । जीवपना। अल्पज्ञपना । अल्प ।क्तिपना ! परिच्छिन्नपना । नानापना इत्यादि औ तिनकी प्रतीतिरूप ज्ञान। सो भ्रांति हैं (३ यातैं तिनका मिथ्यापनैका निश्चयरूप वाधकरिके । जीवरूप प्रतिबिंब औ ईश्वररूप बिंबका सदा अभेद निश्चय होवैहै ॥

इसरीतिसैं बिंबप्रतिबिंबके दृष्टांततैं भेद [113] भ्रांति की निवृत्ति होवैहै

॥११३॥ मुख्य जीवईश्वरके भेदके निषेधसे तिसके अंतर्गत च्यारीभेदनका निषेध सहज सिद्ध होवे हैं । सर्व भेद उपाधिके किये हैं । उपाधि सर्व मिथ्या है । तातैं तिनके किये भेद बी सर्व मिथ्या हैं । यातैं वास्तवअद्वैतब्रह्महीं अव-शेष रहता है ॥

॥ १३० प्रश्नः- २ स्फटिकविषै लालवस्त्रके लालरंग-की प्रतीतिके दृष्टांतसैं कर्त्ताभोक्तापनैकी भ्रांति किसरीतिसैं निवृत्ति होवे है ?

उत्तरः-जैसैं (१) लालवस्त्रके उपरि धरे स्फाटिकमणिविषै वस्त्रका लालरंग संयोगसंबंधसैं भासता है (२) परंतु सो वस्त्रका धर्म है। (३) वस्त्र औ स्फाटिकके वियोगके भये स्फाटिकविषै भासता नहीं । (४) यातैं स्फाटिकका धर्म नहीं है। (५) किंतु स्फाटिकविषै भ्रांतिसैं भासता है ॥

सिद्धांतः-तैसैं (१) अंतःकरणका धर्म जो कर्त्ताभोक्तापना सो आत्माविषै तादात्म्य-संबंधसैं भासता है। (२) परंतु सो अंतःकरणका धर्म है॥ (३) सुषुप्तिविषै अंतःकरण औ

आत्माके वियोगके भये आत्माविषै भासता नहीं। (४) यातैं आत्माका धर्म नहीं है ॥ (५) किंतु आत्माविषै भ्रांतिसैं भासता है ॥

इसरीतिसैं स्फटिकविषै लालरंगकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं कर्ताभोक्तापनेकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवै है ॥

* १३१ प्रश्न— ३ घटाकाशके दृष्टांतसैं संगभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवै है ?

उत्तरः—जैसैं (१) घटउपाधिवाला आकाश घटाकाश कहिये है। (२) सो आकाश घटके संग भासता है। (३) तौ बी घटके धर्म उत्पत्तिनाश गमनआगनमआदिक हैं। वे आकाशकूं स्पर्श करते नहीं (४) यातै आकाश असंग है। औ (५) आकाशका संबंध घटके साथि भासता है। सो भ्रांति है ॥

सिद्धांतः—तैसैं (१) देहआदिकसंघात-रूपउपाधिवाला आत्मा जीव कहिये है। (२) सो आत्मा संघातके संग भासता है। (३) तौ बी संघातके धर्म जन्ममरणादिक हैं। वे आत्माकूं स्पर्श करते नहीं। काहेतैं संघात दृश्य हैं औ आत्मा द्रष्टा है। (४) तातैं आत्मा संघातसैं न्यारा असंग है ॥ (५) जातैं आत्मा संघातरूप नहीं। तातैं आत्माका संघातके साथि अहंतारूप संबंध बी नहीं औ जातैं आत्माका संघात नहीं। किंतु संघात पंचमहाभूतका है। तातैं आत्माका संघातके साथि ममतारूप संबंध बी नहीं॥जातैं आत्मा संघातसैं न्यारा है। तातैं आत्माका संघातके संबंधी स्त्रीपुत्रगृहादिकनके साथि बी ममतारूप संबंध नहीं। ऐसैं आत्मा असंग है । इसका संघातके साथि

अहंताममतारूप संबंध भ्रांति है ॥

इसरीतिसैं घटकाशके दृष्टांतसैं संगभ्रांतिकी निवृत्ति होवै हैं ॥

* १३२ प्रश्न—४ रज्जुविषै कल्पितसर्पके दृष्टांतसैं विकारभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवै है ?

उत्तरः—जैसैं (१) मंदअंधकारविषै रज्जुस्थित होवै । तिसके देखनै वास्ते नेत्ररूप द्वारसैं अंतःकरणकी वृत्ति निकसै है । सो वृत्ति अंधकारादि दोषसैं रज्जुके आकारकूं पावती नहीं । यातैं तिस वृत्तिसैं रज्जुके आवरणका भंग होवै नहीं । तब रज्जुउपाधिवाले चैतन्यके आश्रित रही जो तूला[११४]-अविद्या । सो क्षोभकूं पायके सर्परूप विकारकूं धारती है (२) सो सर्प । दुग्धके परिणाम दधिकी न्यांई अविद्याका परिणाम है ।

॥११४॥ घटादिरूप उपाधिवाले चैतन्यकूं आवरण करनेवाली जो अविद्या । सो तूलाअविद्या है ॥

औ (१) रज्जुउपाधिवाले चैतन्यका विवर्त है। परिणाम (विकार) नहीं ॥

सिद्धांतः—तैसैं (१) ब्रह्मचैतन्यके आश्रित रही जो मूलाअविद्या[115] । सो प्रारब्धादिकनिमित्तसैं क्षोभकूं[116] पायके जड,चैतन्य (चिदाभास),प्रपंच - रूप विकारकूं धारतीहैं ॥ (२) सो प्रपंच अविद्याका परिणाम[117] है औ (३) अधिष्ठान[118] ब्रह्मचैतन्यका विवर्त[119] है । परिणाम नहीं ॥

इसरीतिसैं रज्जुविषै कल्पितसर्पके दृष्टांतसैं विकारभ्रांतिकी निवृत्ति होवै है ॥

॥११५॥ शुद्धब्रह्म औ आत्माकूं आवरण करनैवाली जो अविद्या । सो मूलाअविद्या है ॥

॥११६॥ कार्य करनैके सनमुख होनेकूं क्षोभ कहै हैं ॥

॥११७॥
१ पूर्वरूपकूं त्यागिके अन्यरूपकी प्राप्ति परिणाम है ॥

२ वा उपादानके समानसत्तावाला जो अन्यथारूप कहिये उपादानके और प्रकारका आकार सो परिणाम है ।।

जैसे दुग्धका परिणाम दधि है । याही कूं विकार बी कहैं हैं ।।

।।११८।। जो आप निर्विकाररूपसैं स्थित होवै औ अविद्याकृत कल्पितकार्यका आश्रय होवे । सो अधिष्ठान है ।। जैसैं कल्पितसर्पका अधिष्ठान रज्जु है । याही कूं परिणामीउपादानसैं विलक्षण दूसरा विवर्त उपादान बी कहते हैं ।।

।।११९।। अधिष्ठानतैं विषमसत्तावाला कहिये अल्प अरु भिन्नसत्तावाला जो अधिष्ठानसैं अन्यथारूप नाम और प्रकारका आकार सो विवर्त है ।। जैसैं रज्जुका विवर्त सर्प है । याही कूं कल्पितकार्य औ कल्पितविशेष बी कहते हैं ।।

* ११३ प्रश्न—५ कनकविषै कुंडलकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं ब्रह्मसैं भिन्न जगत्के सत्यताकी भ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसैं होवे है

उत्तरः—जैसैं (१) कनक औ कुण्डलका कार्यकारणभावकरि भेद भासताहै सो कल्पित है। औ (२) कनकसैं कुण्डलका भिन्नस्वरूप देखीता नहीं। (३) यातैं वास्तवअभेद है। (४) तातैं कनकसैं भिन्न कुण्डलकी सत्ता नहीं है ॥

सिद्धांतः—तैसैं (१) ब्रह्म औ जगत्का कार्यकारणभावकरि अरुविशेषणकरि भेदभासता है सो कल्पित है। औ (२) विचारकरि देखिये तौ अस्तिभातिप्रियसैं भिन्न नामरूपजगत् सत्य

सिद्ध होवै नहीं। किंतु मिथ्या सिद्ध होवैहै औ जो वस्तु जिसविषै कल्पित होवै सो वस्तु तिसतैं भिन्न सिद्ध होवै नहीं। (३) यातैं ब्रह्मसैं जगत् का वास्तवअभेद है। (४) तातैं ब्रह्मसैं जगत्की भिन्नसत्ता नहीं है ॥

इसरीतिसैं कनकविषै कुण्डलकी प्रतीतिके दृष्टांतसैं ब्रह्मसैं भिन्न जगत्के सत्यताकी भ्रांति निवृत्ति होवै है ॥

* १३४ प्रश्न-- भ्रांति सो क्या है ?

उत्तरः-भ्रांति सो अध्यास है ।

* १३५ प्रश्न- अध्यास सो क्या है ?

उत्तरः-भ्रांतिज्ञानका विषय जो मिथ्यावस्तु औ भ्रांतिज्ञान । तिसका नाम अध्यास है ॥

* १३६ प्रश्न—यह अध्यास कितनै प्रकारका है ?

उत्तरः—ज्ञानाध्यास औ अर्थाध्यास । इस भेदतैं अध्यास दो भांतिका है ॥ तिनमैं अर्थाध्यास । [120]केवलसंबंधाध्यास । [121]संबंधसहित संबंधीका अध्यास । [122]केवलधर्माध्यास । [123]धर्मसहित धर्मीका अध्यास । [124]अन्योन्याध्यास । [125]अन्यतराध्यास । इस भेदतैं षट्प्रकारका है ॥

अथवा [126]स्वरूपाध्यास औ [127]संसर्गाध्यास । इस भेदतैं अर्थाध्यास दो प्रकारका है ।

१ ताके [128]अन्तर्गत उक्त षड्भेद हैं । औ

२ उपरि लिखे भेदभ्रांतिआदिकपांचप्रकारके भ्रम बी याहीके [12]अन्तर्गत हैं । औ

१ आगे नेडेहीं कहियेगा जो आत्माअनात्माके विशेषणोंका अन्योन्याध्यास सो बी याहीके अन्तर्गत है । सो ताके टिप्पणविषै दिखाया जावेगा ॥

॥१२०॥ जब अनात्माविषै आत्माका अध्यास होवै है । तहां आत्माका अनात्माके साथि तादात्म्यसंबंध अध्यस्त हैं । आत्माका स्वरूप नहीं । यातैं अनात्माविषै आत्माका केवलसंबंधाध्यास है ॥

॥१२१॥ आत्माविषै अनात्माका संबंध औ स्वरूप दोनूं अध्यस्त है । यातैं आत्माविषै अनात्माका संबंधसहित संबंधीका अध्यास है ।

॥१२२॥ स्थूल देहके गौरताआदिक औ इंद्रियनके दर्शनआदिकधर्मकाहीं आत्माविषै अध्यास होवै है तीनके स्वरूपका नहीं । यातैं आत्माविषै देह औ इंद्रियनके केवल धर्मका अध्यास है ।

॥१२३॥ अन्तकरणके कर्त्तापनाआदिक धर्म औ स्वरूप दोनूं आत्माविषै अध्यस्त हैं । यातैं अन्तः करणका आत्माविषै धर्म सहित धर्मीका अध्यास है ।

॥१२४॥ लोह औ अग्निकी न्यांई आत्माविषै अनात्माका औ अनात्माविषै आत्माका जो अध्यास सो अन्योन्याध्यास है ॥

॥१२५॥ अनात्माविषै आत्माका स्वरूप अध्यस्त नहीं । किंतु आत्माविषै अनात्मा स्वरूप अध्यस्त है । यहहीं अन्यतराध्यास है । दोनूंमैंसैं एकका अध्यास अन्यतराध्यास कहिये हैं ॥

॥१२६॥ ज्ञानसैं बाध होनैंयोग्यवस्तु । अधिष्ठानविषै स्वरूपसैं अध्यस्त होवे है । देहादिअनात्माक अधिष्ठानके ज्ञानसैं बाध होवै है । यातैं ताका आत्माविषै स्वरूपाध्यास है ॥

॥१२७॥ बाधके अयोग्य वस्तुका स्वरूपा अध्यास होवै नहीं । किन्तु ताका संबंध अभ्यस्त होवै है । यातैं अनात्माविषै आत्मा का संसर्गाध्यास है । याही कूं संबंधाध्यास बी कहै हैं !

॥१२८॥ केवलधर्माध्यास । धर्मसहित धर्मीका अध्यास औ अन्यतराध्यास । ये तीन स्वरूपाध्यासके अंतर्गत हैं ।

केवलसंबंधाध्यास । संसर्गाध्यासही है ।।

संबंधसहित संबंधीका अध्यास । संसर्गाध्याससहित स्वरूपाध्यास है।

अन्योन्याध्यासमें संसर्गाध्या ओ स्वरूपाध्यास दोनूं है । काहे तें ।।

१ आत्माका स्वरूप तौ सत्य है । यातैं अध्यस्त नहीं किंतु ताकासंसर्गकहिये तादात्म्यसंबंधअनात्माविषै अध्यस्त है। यातैं ताका संसर्गाध्यास हैं । औ

२ अनात्माका स्वरूपही आत्माविषै अध्यस्त है । यातैं ताका स्वरूपाध्यास है ।।

तातैं अन्योन्याध्यास दोनूंके अन्तर्गत है ।।

।।१२९।। भेदभ्रांति आदिकपांचप्रकारका भ्रम पूर्व लिख्या है । तिनमैं

संगभ्रांतिकूं छोडिकेच्यारी प्रकारका भ्रम । स्वरूपाध्यासके अंतर्गत है । औ

पांचवी संगभ्रांति । संसर्गाध्यासके भीतर है ।।

* १३७ प्रश्न—अहंकारादिक अनात्माका और आत्माका अध्यास जाननैमें विशेषउपयोगी अर्थात् सर्व-अध्यासोंमें अनुस्यूत कौन अध्यास है ?

उत्तरः—अन्योन्याध्यास ॥

* १३८ प्रश्न—अन्योन्याध्यास सो क्या है ?

उत्तरः—परस्परविषै परस्परके अध्यासका नाम [१३०] अन्योन्याध्यास है ॥

* १३९ प्रश्न— आत्मा औ अनात्माका परस्पर अध्यास किसरीतिसैं है ।

उत्तरः—

१—४ सत् चित् आनंद औ अद्वैतपना । ये च्यारीविशेषण आत्माके हैं ॥

१—४ असत् जड दुःख औ द्वैतसहितपना । ये च्यारीविशेषण अनात्माके हैं ।

तिनमैं

॥१३०॥ इहां सर्वअध्यासनके स्वरूप औ उदाहरण विस्तारके भयसे विशेष लिखे नहीं । किंतु संक्षेपसैं लिखूं हैं । परंतु अन्योन्याध्यासका स्वरूप तौ विशेषउपयोगी जानिके स्पष्ट दिखाया है ॥ तामैं

१ अनात्माके धर्म दुःख औ द्वैतसहितपना । आत्माके आनंद औ अद्वैतपनैविषै स्वरूपसैं अध्यस्त होयके तिनकूं ढांपे हैं औ

२ आत्माके धर्म सत् अरु चित् । अनात्माके असत्ता औ जडताविषै संसर्ग (संबंध) द्वारा अध्यस्त होयके तिनकूं ढांपे है ॥

कार्यसहित अज्ञानसैं जो आवृत्त (ढांप्या) होवै । सो अधिष्ठान कहिये हैं ॥

इस रीतिसैं आत्माका औ अनात्माका यह अन्योन्या ध्यास बी संसर्गाध्यास औ स्वरूपाध्यासके अंतर्गत है ।-

१—२ अनात्माके दुःख औ द्वैतसहितपना । इन
इन दोविशेषणोंनै आत्माके आनंद औ
अद्वैतपनैकूं ढांपेहै । तातैं आत्माविषै
(१) "मैं आनंदरूप औ अद्वैतरूप
हूं" ऐसी प्रतीति होवै नहीं ।
(२) किंतु "मैं दुःखी औ ईश्वरादि-
कसैं भिन्न हूं"ऐसी प्रतीति होवैहै ॥

३—४ आत्माके सत् औ चित् । इन दोविशेष-
णोंनैं अनात्माके असत् औ जडपनैकूं
ढांपेहैं तातैं अनात्मा जो अहंकारादिक ।
तिसविषै
(१) "असत् है । अभान (जड) रूप
है" ऐसी प्रतीति होवै नहीं ।
(२) किंतु "विद्यमान है औ भासता
(चेतन) है" ऐसी प्रतीति होवैहै ॥

इसरीतिसैं आत्मा औ अनात्माका परस्पर[१३१] अध्यास है

इति श्रीविचारचंद्रोदये प्रपंचमिथ्यात्व-वर्णननामिका षष्ठकला समाप्ता ॥ ६ ॥

अथ सप्तमकलाप्रारंभः ७

॥ आत्माके विशेषण ॥

★

॥ इंद्रविजय[१३२] छन्द ॥

अ. विशेषण हैं जु दुभांति।
विधेय निषेध्य कहों निरधार ॥
वे[१३३] सब जानि भले गुरु शास्त्र सु।
सो अपनो निजरूप निहारे ॥

॥१३१॥ ब्रह्म औ ईश्वरका अरु कूटस्थ औ जीवका जो परस्पर अध्यास है सो। आगे ग्यारवीं कलाविषै कहेंगे-

सच्चिदानंद रु ब्रह्म स्वयंपर-
काश कुटस्थ रु साक्षि विचारे ॥
द्रष्टृ अरु उपद्रष्टृ रु एकहि।
आदि विधेय विशेषण धारे ॥१४॥
[१३४]अंत विहीन अखंड असंग रु ।
अद्वय [१३५]जन्मविना अविकारे ॥
चारि [१३६]अकारविना अरु व्यक्त ।
न [१३७]माननको विषयो जु निकारे ॥
कर्म करीहि चढै न घटै इस ।
हेतुहि अव्यय वेद पुकारे ॥
अक्षर नाशविना कहिये इस ।
आदि निषेध्य पीतांबर सारे ॥१५॥

॥१३२॥ इंद्रविजयछंद ठुमरी ओ लावनीमैं गाया जावै है ॥ ॥१३३॥ वे विधेय निषेध्य विशेषण ॥ ॥१३४॥ अनंत॥ ॥१३५॥ अजन्मा॥ ॥१३६॥ निराकार ॥१३७॥ अप्रमेय॥

* १४० प्रश्नः—आत्माके विशेषण कितने प्रकारके हैं

उत्तरः—आत्माके विशेषण । विधेय[१३८] कहिये साक्षात्बोधक औ निषेध्य[१३९] कहिये प्रपंचके निषेधद्वारा बोधक भेदतैं दोप्रकारके हैं ॥

॥१३८॥ जैसे " सधवा " शब्द । विधवास्त्रीका निषेध करिके सुवासिनीस्त्रीका साक्षात्बोधक हैं । तैसे "सत्" आदिकविधेयाविशेषण "असत्" आदिक प्रपंचके विशेषणोंका निषेध करिके सदादिरूप ब्रह्मके साक्षात्-बोधक हैं । यातैं "विधेय" कहिये हैं ॥

॥१३९॥ जैसे अविधवाशब्द विधवा स्त्रीका निषेध करिके । अर्थात् तातें विलक्षण सुवासिनीस्त्रीका बोधक है ? तैसें अनंतआदिक जे निषेधविशेषण हैं । वे अंतआदिक प्रपंचके धर्मोंका निषेधकरिके अर्थात् तिनतैं विलक्षण ब्रह्मके बोधक हैं । यातैं" निषेध्य" कहिये हैं ॥

* १४१ प्रश्नः–आत्माके विधेयविशेषण कौनसे है ?

उत्तरः–१ सत् २ चित् ३ आनंद ४ ब्रह्म ५ स्वयंप्रकाश ६ कूटस्थ ७ साक्षी ८ द्रष्टा ९ उपद्रष्टा १० एक इत्यादिक हैं ॥

* १४२प्रश्नः–सत् आत्मा कैसें है ?

उत्तरः–१ जिसकी ज्ञानसैं वा और किसीसैं बी निवृत्ति होवै नहीं। सो सत् है ॥

आत्माकी जातैं ज्ञानसैं वा और किसीसैं निवृत्ति होवै नहीं। यातैं आत्मा सत् है ॥

* १४३ प्रश्नः–चित् आत्मा कैसें है ?

उत्तरः–२ अलुप्तप्रकाश सो चित् है ॥

आत्मा जातैं अलुप्तप्रकाश है यातैं आत्मा चित् है ॥

* १४४ प्रश्नः—आनंद आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—३ परम कहिये सर्वसैं अधिक प्रीतिका जो विषय। सो आनन्द है ॥

आत्माविषै जातैं सर्वकी परमप्रीति है। यातैं आत्मा आनन्द है ॥

१४५ प्रश्नः—ब्रह्मरूप आत्मा कैसें है ?

उत्तरः—४

(१) आत्मा सत्‌चित्‌आनंदरूप श्रुति युक्ति औ अनुभवसैं सिद्ध है। औ

(२) ब्रह्म बी शास्त्र (उपनिषद्) विषै सत चित्‌आनंदरूप कह्या है।

तातैं आत्मा ब्रह्मरूप है ॥ किंवा

ब्रह्म नाम व्यापकका है ॥ जिसका देशतैं अन्त न होवै सो व्यापक कहिये है ॥

(१) आत्मा जो ब्रह्मसैं भिन्न होवै तौ देशतैं अन्तवाला होवैगा।

(२) जिसका देशतैं अन्त होवे तिसका कालतै बी अंत होवैहै। यह नियमहै॥

जिसका देशकालतैं अन्त होवै सो अनित्य कहियेहै। तातैं आत्मा अनित्य होवैगा। यातैं आत्मा ब्रह्मसैं भिन्न नहीं। औ

(१) आत्मासैं भिन्न जो ब्रह्म होवै तौ ब्रह्म अनात्मा होवैगा॥

(२) जो अनात्मा घटादिक हैं सो जड हैं। तातैं आत्मासैं भिन्न ब्रह्म। जड होवैगा।

सो वार्त्ता श्रुतिसैं विरुद्ध है॥

यातैं आत्मासैं भिन्न ब्रह्म नहीं। तातैं ब्रह्मरूप आत्मा है

* १४६ प्रश्न—स्वयंप्रकाश आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—९

(१) जो दीपककी न्यांई आपके प्रकाशनैविषै किसीकी वी अपेक्षाकरै नहीं । औ

(२) आप सर्वका प्रकाशक होवै ।

सो स्वयंप्रकाश कहिये है ॥

ऐसा आत्माही है । यातैं आत्मा स्वयंप्रकाश है॥।

अथवा

(१) जो सदा अपरोक्षरूप होवै । औ

(२) किसी ज्ञानका विषय न होवै ।

सो स्वयंप्रकाश कहिये है ॥

आत्मा जातैं सदाअपरोक्षरूप है औ प्रकाशरूप होनैतैं किसी वी ज्ञानका विषय (प्रकाश्य) नहीं । यातैं आत्मा स्वयंप्रकाश है ॥

* १४७ प्रश्नः– कूटस्थ आत्मा कैसें है ?

उत्तरः–६ कूट नाम लोहारके अहिरनका है। ताकी न्यांई जो निर्विकार (अचल) रूपसैं स्थित होवै । सो कूटस्थ कहिये है ॥

जैसैं लोहार अनेक घाट घडता है। तौ बी अहिरन ज्यूंका त्यूं रहता है। तैसें मनरूप लोहार व्यवहार रूप अनेकघाट घडता है। तौ बी आत्मा ज्यूंका त्यूं रहता है। यातैं आत्मा कूटस्थ है॥

कूटस्थ कहनैसैं अचल औ अक्रिय अर्थसैं सिद्ध भया ॥

* १४८ प्रश्न– साक्षी आत्मा कैसें है ?

उत्तरः–७

(१) लोकव्यवहारविषै

[१] उदासीन कहिये रागद्वेषरहित होवै।

[२] समीपवर्ती होवे। औ

[३] चेतन होवै ।

सो साक्षी कहियेहै ॥

जातैं आत्मा

[१] देहादिकसैं उदासीन है। औ

[२] समीपवर्ती है ।औ

[३] चेतन कहिये अजडप्रकाश है ।

यातैं आत्मा साक्षी है ॥

(२) वा अंन्तःकरणरूप उपाधिवाला चेतन साक्षी कहिये है ॥

(३) वा अंतःकरण औ अंतःकरणकी वृत्तिनविषैवर्तमान चेतनमात्र (केवलचेतन) साक्षी कहिये है ॥

ऐसा आत्मा है। यातैं साक्षी है ॥

१४९ प्रश्न—द्रष्टा आत्मा कैसें हैं ?

उत्तरः—८देखनेवाला जो होवै सो द्रष्टा कहिये है ॥

आत्मा जातैं सर्वदृश्यका जाननेवाला हैं। यातै आत्मा द्रष्टा है ॥

* १५० प्रश्नः—उपद्रष्टा आत्मा कैसें है ?

उत्तरः—९जैसे

(१५) यज्ञशालाविषै यज्ञकार्यके करनेवाले १५ ऋत्विज होवै है। औ

(१६) सोलवां यजमान होवै हैं। औ

(१७) सतरावीं यजमानकी स्त्री होवै हैं औ

(१८) अठारवां उपद्रष्टा कहिये पास बैठके देखनेवाला होवै है। सो कछु बी कार्य करता नहीं ॥

तैसैं

(१—१५) स्थूलदेहरूप यज्ञशालाविषै पांच ज्ञानइंद्रिय पांचकर्मइंद्रिय औ पांच प्राण । ये १५ ऋत्विज हैं ।

(१६) सोलवां मनरूप यजमान है औ

(१७) सतरावीं बुद्धिरूप यजमानकी स्त्री है ।

(१८) ये सर्व आपआपके विषयके ग्रहण करनैरूप भोगमय यज्ञका कार्य करते हैं औ इन सर्वका समीपवर्ती जाननैरूप आत्मा अठारवां उप द्रष्टा है ॥

* १५१ प्रश्नः—एक आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—१०— आत्माका सजाती कहिये जातिवाला और आत्मा नहीं है । यातैं आत्मा एक है ॥

इत्यादिक आत्माके विधेयविशेषण हैं

* १५२ प्रश्नः—आत्माके निर्वेध्य विशेषण कौनसे हैं ?

उत्तरः—१ अनंत २ अखंड ३ असंग ४ अद्वितीय ५ अजन्मा ६ निर्विकार ७ निराकार ८ अव्यक्त ९ अव्यय १० अक्षर इत्यादिक हैं ॥

* १५३ प्रश्नः—अनंत आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः—१

(१) आत्मा व्यापक है ॥ तातैं आत्माका देशतैं अंत नहीं । औ

(२) जातैं आत्मा नित्य है । तातैं आत्माका कालतैं अंत नहीं । औ

(३) जातैं आत्मा अधिष्ठान होनैसैं सर्वका स्वरूप है । तातैं आत्माका वस्तुतैं अंत नहीं । औ

जातैं आत्माका देश काल औ वस्तुतैं अंत नहीं कहिये परिच्छेद नहीं तातैं आत्मा अनंत है ॥

* १५४ प्रश्नः–अखंड आत्मा कैसे है ?

उत्तरः—२

(१)जीव ईश्वरका भेद । जीवनका परस्पर भेद । जीवजडका भेद । जडईश्वरका भेद । जडजडका भेद ये । पांच भेद हैं । तिनतैं आत्मा रहित है । अथवा

(२) सजातीय विजातीय स्वगत भेदतैं आत्मा रहित है ॥

यातैं आत्मा अखंड है ॥

१५५ प्रश्नः–असंग आत्मा कैसें है ?

उत्तरः—३ संग नाम संबंध का है ॥

सो संबंध तीन प्रकारका हैः–(१) सजातीय संबंध (२) विजातीय संबंध (३) स्वगतसंबंध ॥

(१) अपनी जातिवालेसैं जो संबंध है ॥ सो सजातीयसंबंध है । जैसैं ब्राह्मणका अन्य-ब्राह्मणसैं संबंध है ॥

(२)अन्यजातिवालेसैं जो संबंध है । सोविजातीयसंबंध है । जैसे ब्राह्मणका शूद्रसैं संबंध है ॥

(३) अपनै अवयवनसैं कहिये अंगनसैं जो जो संबंध है । स्वगतसंबंध है ॥ जैसैं ब्राह्मणका अपने हस्तपादमस्तक आदिकअंगनसैं संबंध है ॥

(१) [१] आत्मा (चेतन) एक है । तातैं ताकी जाति नहीं । औ

[२] जीव ईश्वर ब्रह्मा विष्णु शिव मैं तूं इत्यादिकभेद तो उपाधिके कियेहैं । तातैं मिथ्या हैं ।

यातैं आत्माका काहूके साथि सजातीयसंबंध बने नहीं ॥

(२) तैसैं आत्मा अद्वैत है औ सत् है । तिसतैं भिन्न माया (अज्ञान) औ मायाका

कार्यस्थूलसूक्ष्मप्रपंच प्रतीत होवै है सो असत् हैं औ असत् कछु वस्तु नहीं । यातैं आत्माका काहूके साथि विजातीयसंबंध बनै नहीं

(३) तैसैं आत्मा निरवयव है औ सच्चिदानंदादिक तौ आत्माके अवयव नहीं । किंतु एकरूप होनैतैं आत्माका काहूके साथि स्वगतसंबंध बन नहीं ॥

इसरीतिसैं आत्मा सर्वसंबंधसैं रहित हैं । यातैं असंग है ।

* १५६ प्रश्नः– अद्वैत आत्मा कैसैं है ?

उत्तरः–४ द्वैत जो प्रपंच । सो स्वप्नकी न्यांई कल्पित होनैतै वास्तव नहीं हैं । यातैं आत्मा द्वैतसै रहित होनैतैं आत्मा अद्वैत है

* १५७ प्रश्नः– अजन्मा आत्मा कैसें है ?

उत्तरः–५ स्थूलदेहका धर्म जन्म है। सूक्ष्मदेहका धर्म बी नहीं तौ आत्माका धर्म जन्म कहांसैं होवैगा ?

फेर जो आत्माका जन्म मानिये तौ आत्माका मरण बी मानना होवैगा। तातैं आत्मा अनित्य सिद्ध होवैगा। सो परलोकवादी आस्तिकनकूं अनिष्ट कहिये अवांछित है। काहेतैं

(१) जन्ममरणवाला वस्तु है ताका आदि अंतविषै अभाव है। तातैं पूर्वजन्मविषै आत्मा नहीं था औ तिसके कर्म बी नहीं थे। तब इस जन्मविषै आत्माकूं कर्मसैं बिना भोग होवैहैं। औ

(२) मरणसैं अनंतर आत्मा नहीं होवैगा ।
तासैं इसजन्मविषै किये कर्मका भोगसैं
विना नाश होवैगा ।

तातैं वेदोक्तकर्मकी व्यर्थता होवैगी । यातैं आत्माका धर्म जन्म नहीं ॥ तातैं आत्मा अजन्मा है । औ

अजन्मा कहनैसैं अजरअमर अर्थसै सिद्ध भया ।

* १५८ प्रश्नः–निर्विकार आत्मा कैसे हैं ?

उत्तरः–६ जैसै (१) घटके जन्म (२) अस्तिपना कहिये प्रकटता (३) वृद्धि (४) विपरिणाम (५) अपक्षय (६) विनाश । ये षट्धर्म हैं । परंतु घटविषै स्थित औ घटसै भिन्न जो आकाश है । तिसके धर्म नहीं ॥

तैसैं

(१) "देह जन्मता है" यह जन्म ॥

(२) " देह जन्म्याहै " यह अस्तिपना (पूर्व नहीं था । अब है) ॥

(३) "देह बालक भया " यह वृद्धि ॥

(४) "देह युवा भया" यह विपरिणाम ॥

(५) "देह वृद्ध भया " यह अपक्षय ॥

(६) देह मरणकूं पाया " यह विनाश ॥

ये षट्विकार देहके धर्म हैं ॥ देहकूं जाननैहारा अरु देहसैं न्यारा जो आत्मा है । तिसके धर्म नहीं ॥

इसरीतितैं षट्विकारनतैं रहित आत्मा निर्विकार है ॥

* १५९ प्रश्नः–निराकार आत्मा कैसें है ॥

उत्तरः—७ (१) स्थूल (२) सूक्ष्म (३) लंबा (४) टुंका कहिये छोटा । ये च्यारीप्रकारके जगद्विषै आकार हैं ॥

(१) आत्मा । इंद्रिय औ मनका अविषय होनैतैं सूक्ष्म है।तातैं स्थूल नहीं ॥

(२) आत्मा व्यापक है। तातैं सूक्ष्म नहीं॥ कहिये अणु नहीं ॥

(३–४) आत्मा सर्वठिकानै ओतप्रोत है । तातैं लंबा औ टुंका नहीं ॥

यातैं आत्मा निराकार है॥

* १६० प्रश्नः– अव्यक्त आत्मा कैसें है ?

उत्तरः—८ आत्मा । जातैं मनइंद्रिय-आदिकका अगोचर होनैतैं अस्पष्ट है । यातैं आत्मा अव्यक्त है ।

* १६१ प्रश्नः—अव्यय आत्मा कैसें है ?

उत्तरः—९ जैसें कोठेमैं धान्यके निकसनैंकरि धान्यका व्यय कहिये घटना होवैहै। तैसें आत्माका व्यय होवै नहीं। यातैं आत्मा अव्यय है ॥

१६२ प्रश्न— अक्षर आत्मा कैसें है ?

उतरः—१० आत्मा जातैं क्षर कहिये नाशतैं रहित है। यातैं आत्मा अक्षर है ॥ याहीकूं अक्षय। अमृत औ अविनाशी बी कहैहैं ॥

इसरीतिसैं आत्माके निषेध्यविशेषण हैं ॥

* १६३ प्रश्नः— ये कहे जो आत्माके विशेषण। सो परस्पर अभिन्न किस रीतिसें है ?

उतरः—सच्चिदानंदादिक जो आत्माके गुण होवैं तौ परस्परभिन्न होवैं। औ ये आत्माके गुण नहीं। किंतु स्वरूप हैं। यातैं परस्परभिन्न नहीं। किंतु अभिन्न हैं। औं

१ एकही आत्मा नाशरहित है। यातैं सत् कहिये है। औ

२ जडसैं विलक्षण प्रकाशरूप है। यातैं चित् कहिये है। औ

३ दुःखसैं विलक्षण मुख्यप्रीतिका विषय है यातैं आनंद कहिये हैं॥

ऐसैं सर्वविशेषणनविषै जानना।

दृष्टांतः—

जैसैं एकहीं पुरुष

१ पिताकी दृष्टिसैं—पुत्र कहिये है। औ

२ पितामहकी दृष्टिसैं पौत्र कहिये है। औ

३ पितृभ्राताकी दृष्टिसैं भ्रातृज कहिये है। औ

४ मातुलकी दृष्टिसैं भेणीज कहिये है।

किंवा जैसैं एकहीं संन्यासी ।

१ पशु स्त्री गृहस्थ अदंडी आदिकनकी दृष्टिसैं मनुष्य पुरुष त्यागी दंडी इत्यादि विधेय-विशेषणोंकरिके कहिये है औ । ॥

२ घट पाषण वृक्ष आदिककी दृष्टिसैं अघट अपाषाण अवृक्ष आदिक निषेध्यविशेषणोंकरिके कहिये है ॥

तैसैं एकही आत्मा प्रपंचके विशेषण असत् जड दुःख औ अंत खंड संग आदिककी दृष्टिसे सत् चित् आनंदादिक औ अनंतआदिक कहिये है।

इसरीतिसैं कहे जो आत्माके विशेषण सो परस्पर भिन्न नहीं। किन्तु अभिन्न हैं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये आत्मविशेषण-वर्णननामिका सप्तमकला समाप्ता ॥ ७ ॥

अथ अष्टमकलाप्रारंभ ८

सतचित् आनंदका विशेषवर्णन



इंद्रविजय छंद ॥

सच्चिदनंदसरूपहि मैं यह ।
सद्गुरुके मुखसैं पहिचान्यो ॥
जागृत स्वप्न सुषुप्ति जु आदिक
तीनहुँ कालहिमै परमान्यो ॥
जागृत आदि लयावधि, तीनहुं
कालहि हों इसतैं सत मान्यो ॥
तीनहुँ कालविषै सब जानहुं ।
या हित मैं चिदरूपहि जान्यो ॥१६॥

मैं प्रिय हुं धन पुत्र रु पुद्गल[140]–
आदि कतैं त्रयकाल अगान्यो[141] ॥
आतमअर्थ सबे प्रिय आतम ।
आपहित है प्रिय दुःख नसान्यो ॥
या हित मैं सबतैं प्रियतम्म रु ।
हो परमानंद दुःखहि भान्यो ॥
देह दशादि[142] अतीत सु आतम ।
पूरणब्रह्म पीतांबर गान्यो ॥ १७ ॥

* १६४ प्रश्नः–सत् सो क्या है ?

उत्तरः–१ तीनकालमैं जो अबाधित होवे । सो सत् है ॥

* १६५ प्रनः– चित् सो क्या है ?

उत्तरः–२ तीनकालमैं जो सबकूं जानै सो चित् है ॥

॥१४०॥ स्थूलशरीर ॥ ॥१४१ ॥ तृप्त ॥
॥१४२॥ अवस्थाआदिकतैं ॥

* १६६ प्रश्नः– आनंद सो क्या है ?

उत्तरः–३ तीनकालमैं जो परमप्रेमका विषय होवै । सो आनन्द है ।

* १६७ प्रश्नः– मैं सत् हूं । यह कैसें जानना ?

उत्तरः–१ तीनकालविषै मैं हूँ । यातैं मैं सत् हूं । यह ऐसैं जानना ॥

* १६८ प्रनः– तीन कालविषै मैं हूं । यातैं सत् हूं यह कैसें जानना ?

उत्तरः––

१ (१) जागृतविषै मैं हूं ।
(२) स्वप्नविषैं मैं हूं ।
(३) सुषुप्तिविषै मैं हूं ॥

२ (१) तैसैं प्रातःकालविषै मैं हूं ।
(२) मध्याह्नकालविषै मैं हूं ।
(३) सायांकालविषै मैं हूं ॥

३ (१) तैसैं दिवसविषै मैं हूं ।
(२) रात्रिविषै मैं हूं।
(३) पक्षविषै मैं हूं ॥
४ (१) तैसै मासविषै मैं हूं।
(२) ऋतु विषै मैं हूं।
(३) वर्षविषै मैं हूं।
५ (१) तैसैं बाल्यअवस्थाविषैं मैं हूं ।
(२) यौवनअवस्थाविषै मैं हूं।
(३) वृद्धअवस्थाविषै मैं हूं।
६ (१) तैसैं पूर्वदेहविषै मैं हूं ❀।
(२) इसदेहविषै मैं हूं।
(३) भावीदेहविषै मैं हूं।

❀ यह प्रकरणविषै "था" अरु "होऊंगा" ऐसैं उच्चारण करनेके योग्य भूत औ भविष्यत्कालका बी "हूं" ऐसैं वर्त्तमानकी न्यांई उच्चारण किया है। सो भूतादिकालकी

७ (१) तैसैं युगविषे मैं हूं ।

(२) मनुविषै मैं हूं ।

(३) कल्पविषे मैं हूं ।

८ (१) तैसैं भूतकालविषै मैं हूं ।

(२) वर्तमानकालविषै मैं हूं ॥

(३) भविष्यत्कालविषै मैं हूं ॥

इसरीतिसैं तीनकालविषै मैं हूं । यातैं सत् हूं । यह जानना ॥

कल्पनामात्रता (मिथ्यात्व) के सूचना करने अर्थ है ॥ औ आत्माकी सदादिरूपत विषै श्रुतिआदिक अनेक प्रमाणोंका सद्भाव है अरु ताकी किसी कालमैं असत्तादिकविषै प्रमाण का अभाव है यातैं सर्व कालोंविषै आत्मा सच्चिदानंदरूप सिद्ध हैं । यह जानना ॥

* १६९ प्रश्न:—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहिततीनकाल क्या जाननै ?

उत्तर:—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित-तीनकाल असत् हैं। ऐसैं जाननै ॥

* १७० प्रश्न—सत् और असत्‌का निर्णय किससैं होवै है?

उत्तर:—सत् औ असत्‌का निर्णय अन्वयव्यतिरेकरूप युक्तिसैं होवैहै ॥

* १७१ प्रश्न:—सत्‌असत्‌के निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति कैसैं जाननी ?

१ (अ) जो मैं जाग्रत्‌विषै हूं ।
सोई मैं स्वप्नविषै हूं ।
यातैं मैं सत हूं ॥
(व्य) जाग्रत् मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह जाग्रत् असत् है ॥
(अ) जो मैं स्वप्नविषै हूं ॥
सोई मैं सुषुप्तिविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं
(व्य) स्वप्न मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह स्वप्न असत् है ॥
(अ) जो मैं सुषुप्तिविषै हूं ।
सोई मैं प्रातःकालविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ॥
(व्य) सुषुप्ति मेरे विषै नहीं ।
यातैं यह सुषुप्ति असत् है ॥

२ (अ) जो मैं प्रातःकालविषै हूं ।
सोई मैं मध्याह्नकालविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ॥

(व्य) प्रातःकाल मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह प्रातःकाल असत् है ॥

(अ) जो मैं मध्याह्नकालविषै हूं ।
सोई मैं सायंकालविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ॥

(व्य) मध्याह्नकाल मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह मध्याह्नकाल असत् है ॥

(अ) जो मैं सायंकालविषै हू ।
सोई मैं दिवसविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूँ ॥

(व्य) सायंकाल मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह सायंकाल असत् है ॥

३ (अ) जो मैं दिवसविषै हूं।
सोई मैं रात्रिविषै हूं।
यातैं मैं सत् हूं॥
(व्य) दिवस मेरेविषै नहीं।
यातैं यह दिवस असत् है॥
(अ) जो मैं रात्रिविषै हूं।
सोई मैं पक्षविषै हूं।
यातैं मैं सत् हूं
(व्य) रात्रि मेरेविषै नहीं।
यातैं यह रात्रि असत् है॥
(अ) जो मैं पक्षविषै हूं।
सोई मैं मासविषे हूं।
यातैं मैं सत हूं॥
(व्य) पक्ष मेरेविषै नहीं।
यातैं यह पक्ष असत् है॥

४ (अ) जो मैं मासविषै हूं ।
सोई मैं ऋतुविषै हूं ।
यातैं मैं सत्‌ हूं ॥
(व्य   मास मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह मास असत्‌ है ॥
(अ) जो मैं ऋतुविषै हूं ।
सोई मैं वर्षविषै हूं ।
यातैं मैं सत्‌ हूं ।
(व्य) ऋतु मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह ऋतु असत्‌ है ॥
(अ) जो मैं वर्षविषै हूं ।
सोई मैं बाल्यअवस्थाविषै हूं ।
यातैं मैं सत्‌ हूं ॥
(व्य) वर्ष मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह वर्ष असत्‌ है ॥

५ (अ) जो मैं बाल्यअवस्थाविषै हूं।
सोई मैं यौवनअवस्थाविषै हू ।
यातैं मैं सत् हूं ॥
(व्य) बाल्यअवस्था मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह बाल्यअवस्था असत् है ॥
(अ) जो मैं यौवनअवस्थाविषै हूं ॥
सोई मैं वृद्धअवस्थाविषै हूं।
यानैं मैं सत् हू ॥
(व्य) यौवनअवस्था मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह यौवनअवस्था असत् है ॥
(अ) जो मैं वृद्धअवस्थाविषै हूं ।
सोई मैं पूर्वदेहविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हू ॥
(व्य) वृद्धअवस्था मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह वृद्धअवस्था असत् ॥

६ (अ) जो मैं पूर्वदेहविषै हूं ।
सोई मैं इसदेहविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ॥
(व्य) पूर्वदेह मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह पूर्वदेह असत् है ॥
(अ) जो मैं इसदेहविषै हूं ।
सोई मै भावीदेहविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ॥
(व्य) यह देह मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह देह असत् है ॥
(अ) जो मैं भावीदेहविषै हूं ।
सोई मैं युगविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ॥
(व्य) भावीदेह मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह भावीदेह असत् है ॥

७ (अ) जो मैं युगविषै हूं ।
सोई मैं मनुविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ॥
(व्य) युग मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह युग असत् है ॥
(अ) जो मैं मनुविषै हूं ।
सोई मैं कल्पविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ।
(व्य) मनु मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह मनु असत् है ॥
(अ) जो मैं कल्पविषै हूं
सोई मैं भूतकलाविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ॥
(व्य) कल्प मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह कल्प असत् है ॥

८ (अ) जो मैं भूतकालविषै हूं । सोई मैं
भविष्यत्‌कालविषैहूं। यातैं मैंसत्‌हूं ॥
(व्य) भूतकाल मेरेविषै नहीं
यातैं यह भूतकाल असत् है ॥
(अ) जो मैं भविष्यत्‌कालविषै हूं ।
सोई मैं वर्तमानकालविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हू ॥
(व्य) भविष्यत्‌काल मेरेविषै नहीं ।
यातैं यह भविष्यत्काल असत् है ।
(अ) जो मैं वर्त्तमानकालविषै हूं ।
सोई मैं सर्वकालविषै हूं ।
यातैं मैं सत् हूं ॥
(व्य) वर्त्तमानकाल मेरेविषै नहीं ।
यातै यह वर्त्तमानकाल असत् है ॥

इसरीतिसैं सत् असत्‌के निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी ॥

* १७२ प्रश्न:–चित् कैसैं हूं ?

उत्तर:—२ तीनकालविषै मैं जानता हू। यातैं मैं चित् हू ॥

* १७३ प्रश्न:– तीनकालविषै मैं जानता हूं यातैं चित् हूं। यह कैसैं जानना ?

उत्तर:—

१ [१] जाग्रतकूं मैं जानताहूं।
[२] स्वप्नकूं मैं जानताहूं।
[३] सुषुप्तिकूं मैंजानताहूं।

२ [१] तैसैं प्रातकालकूं मैं जानता हू।
[२] मध्याह्नकालकूं मैं जानताहूं।
[३] सायंकालकूं मैं जालताहूं ॥

३ [१ तैसैं दिवसकूं मैं जानताहूं।
[२] रात्रिकूं मैं जानताहूं।
[३] पक्षकूं मैं जानताहू ॥

४ [१ तैसैं मासकूं जानताहूं।

[२] ऋतुकूं मैं जानता हूं ।
[३] वर्षकूं मैं जानता हूं ॥
५[१] तैसैं बाल्यअवस्थाकूं मैं जानता हूं ।
[२] यौवनअवस्थाकूं मैं जानता हूं ।
[३] वृद्धअवस्थाकूं मैं जानता हूं ॥
६[१] तैसैं पूर्वदेहकूं मैं जानना हूं ।
[२] इस देहकूं मैं जानता हूं ।
[३] भावीदेहकूं मैं जानता हूं ॥
७[१] तैसैं युगकूं मैं जानता हूं ।
[२] मनुकूं मैं जानता हूं ।
[३] कल्पकूं मैं जानता हूं ॥
८[१] तैसैं भूतकालकूं मैं जानता हूं ।
[२] भविष्यत्‌कालकूं मैं जानता हूं ।
[३] वर्तमानकालकूं मैं जानता हूं ॥

इसरीतिसैं सर्वकालविषे मैं जानता हूं । यातैं चित् हूं । यह जानना ॥

* १७४ प्रश्नः—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीन-काल क्या जाननै ?

उत्तरः—मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीन-काल जड हैं । ऐसैं जाननै ॥

* १७५ प्रश्नः—चित् और जड़का निर्णय किससें होवैहै ?

उत्तरः—चित् औ जडका निर्णय अन्वय-व्यतिरेकरूप युक्तिसैं होवै है ॥

* १७६ प्रश्नः—चित् औ जड़के निर्णयविषै अन्वय व्यतिरेकरूप युक्ति कैसैं जाननी ?

उत्तरः—

१ (अ) जो मैं जाग्रतकूं जानता हूं ।
सोई मैं स्वप्नकूं जानता हूं ।
यातैं मैं चित् हूं ॥
(व्य) जाग्रत मेरेकूं जानै नहीं ।
यातैं यह जाग्रत जड है ॥

(अ) जो मैं स्वप्नजानता हूं ।
सोई मैं सुषुप्तिकूं जानता हूं ।
यातैं मैं चित् हूं ॥

(व्य) स्वप्न मेरेकूं जानै नहीं ।
यातैं यह स्वप्न जड है ।

इत्यादि इसरीतिसैं चित् औ जडके निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी ॥

* १७७ प्रश्न: – आनंद मैं कैसें हूं ?

उत्तरः––३तीनकालविषै मैं परमप्रिय हूं । यातैं मैं आनंद हूं ॥

* १७८ प्रश्न:–तीन कालविषै मैं प्रिय हूँ यातैं आनंद हूं । यह कैसें जानना ?

उत्तरः—

१(१) जाग्रतविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) स्वप्नविषै मैं प्रिय हूं ।
(३) सुषुप्तिविषै मैं प्रिय हूं ॥

२(१) तैसैं प्रातःकालविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) मध्याह्नकालविषै मैं प्रिय हूं ।
(३ (सायंकालविषै मैं प्रिय हूं ॥

३(१) तैसैं दिवसविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) रात्रिविषै मैं प्रिय हूं ।
(३) पक्षविषै मैं प्रिय हूं ।

४(१) तैसैं मासविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) ऋतुविषै मैं प्रिय हूं ।
(३) वर्षविष मैं प्रिय हूँ ।

५(१) तैसैं बाल्यअवस्थाविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) यौवनअवस्थाविषै मैं प्रिय हूं ।
(३) वृद्धअवस्थाविषै मैं प्रिय हूं ॥

६ (१) तैसें पूर्वदेहविषे मैं प्रिय हूं।
(२) इसदेहविषे मैं प्रिय हूं ।
(३) भावीदेहविषे मैं प्रिय हूं ॥

७ (१) तैसें युगविषै मैं प्रिय हूं ।
(२) मनुविषे मैं प्रिय हूं।
(३) कल्पिविषें मैं प्रिय हूं ।

८ (१)तैं सै भूतकालविषै मैं प्रिय हूं।
(२) भविष्यत्कालविषे मैं प्रिय हूं।
(३) वर्त्तमानविषे मैं प्रिय हूं॥

इसरीतिसैं तीनकालविषै परमप्रिय हूं। यातै मैं आनंद हूं। यह जानना ॥

• १७९ प्रश्न:–मेरेसें भिन्ननामरूपवस्तुसहित तीनकाल क्या जाननै ?

उत्तर:––मेरेसैं भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल दु:ख हैं ऐसैं जानना ॥

* १८० प्रश्नः— आनंद औ दुःखक निर्णय किसतें होवै है ?

उत्तरः—आनंद औ दुःखका निर्णय अन्यवव्यतिरेकरूप युक्तिसैं होवै है ॥

* १८१ प्रश्न—आनंद औ दुःखके निर्णयविषै अन्वय व्यतिरेकरूप युक्ति कैसैं जाननी ?

उत्तरः—

(अ) जो मैं जाग्रत्विषै [परम] प्रिय हूं
सोई मैं स्वप्नविषै प्रिय हूं ।
यातैं मैं आनन्द हूं ।[143]

(व्य) जाग्रत् मेरेकूं प्रिय नहीं ।
यातै यह जाग्रत् दुःख है ॥

इसरीतिसैं आनन्द औ दुःखके निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्त जाननी ॥

॥१४३॥ जो जो जाग्रत्आदिककाल आत्माविषै

* १८२ प्रश्न:– मैं परमप्रिय हूं। यह कैसें जानना ?

उत्तर:––दृष्टांत:–

१ जैसें पुत्रके मित्रविषै प्रीति है। सो पुत्रवास्ते है। औ।

२ पुत्रविषै जो प्रीति है। सो तिसके मित्रवास्ते नहीं।

यातैं पुत्र अधिकप्रिय है ॥

भासता है। सो सो काल यद्यपि दु:खरूप है। तथापि

१ अध्यासकरिके आत्माकूं चिदाभासद्वारा प्रिय भासता है।। तब अन्यकाल प्रिय भासते नहीं। यातैं सर्वकालमैं व्यभिचारीप्रिति है। तातैं ये वास्तव दु:खरूपहीं है। औ

२ आत्मामैं कहिये आपमैं अव्यभिचारी (सर्वदा) प्रीति है। यातैं आत्मा आनंदरूप है।

१ तैसैं धनपुत्रादिकविषै जो प्रीति है। सो आत्माके वास्ते है। औ

२ आत्माविषै जो प्रीति है। सो धनपुत्रादिकके वास्ते नहीं।

यातैं आत्मा अधिकप्रिय है ॥

इसरीतिसैं मैं परमप्रिय हूं। यह जानना ॥

• १८३ प्रश्नः—प्रीतिका न्यूनअधिकभाव कैसैं जानना?

उत्तरः—

१ जाग्रत्‌विषै सर्वसैं प्रिय द्रव्य है। काहेतैं धनवास्ते पुरुष देश छोडिके परदेश जाता है औ अनेकनीचकर्म करता है। यातैं द्रव्य प्रिय है ॥

२ द्रव्यतैं पुत्र प्रिय है। काहतैं पुत्र दुष्टकर्मकरिके राजगृहविषै बंधनकूं पायाहोवै ब तिसकूं धन देके छूडावताहै। यातैं धनतैं पुत्र प्रिय है ॥

३ पुत्रतैं शरीर प्रिय है । काहेतैं जब दुर्भिक्ष कहिये दुष्काल होवै । तब पुत्रकूं बेचके शरीरका निर्वाह करै है । यातैं पुत्रतैं शरीर प्रिय है ।

४ शरीरतैं इंद्रिय प्रिय है । काहेतैं कोई मारनै आवै तब इंद्रियनकूं छुपायके "मेरे शरीर विषै मार । परन्तु आंख कान नाक मुखविषै मारना नहीं" ऐसैं कहता है । यातैं शरीरतैं इंद्रिय प्रिय है ॥

५ इंद्रियतैं प्राण (मन) प्रिय है । काहेतैं किसीकूं दुष्टकर्म करनैसैं राजाका हुकूम भयाहोवै कि "इसके प्राण लेने" तब कहता है कि मेरे धन पुत्र स्त्री गृह लूट ल्यो ।

परंतु प्राण मत लेना। तौ बी राजाकी आज्ञा तौ प्राणके लेनेविषै है। तब कहता है कि " मेरा कान काटो। नाक काटो। हाथ काटो। पांउ काटो। परंतु मेरे प्राण मत लेना " यातैं इंद्रियतैं प्राण प्रिय है।

६ प्राणतैं आत्मा प्रिय है। काहेतैं किसीकूं अतिशयव्याधिसैं पीड़ा होती होवै। तब कहता है कि " मेरे प्राण जावै तब मैं सुखी होऊं " यातैं प्राणतैं आत्मा प्रिय है॥

इसरीतिसैं प्रीतिका न्यून अधिक भाव जानना॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये सच्चिदानंदविशेष-वर्णननाम्निका अष्टमकला समाप्ता॥ ८ ॥

अथ नवमकलाप्रारंभः ९

अवाच्यसिद्धांतवर्णन



॥ इंद्रविजयछंदः ॥

ब्रह्म अहै मनबानि-अगोचर ।
शास्त्र रु संत कहैं अरु ध्यावैं ॥
वेद बदें लछनादिकरीति रु ।
वृत्ति विआप्ति जनो मन लावैं ॥
हैं जु सदादिविधेयविशेषण ।
वे असदादिक भिन्न कहावैं ॥
सत्य अपेक्षिक आदि[144] विरोधि जु ।
अंस, तजी परमार्थ[145] लखावैं ॥ १८ ॥

॥१४४॥ आपेक्षिकसत्य । वृत्तिज्ञान औ विषया-नन्दआदिक विरोधी जो अंश है । ताकूं त्यागिके ॥

॥१४५॥ वास्तवरूप जो निरपेक्षसत्य चेतनरूपज्ञान औ स्वरूपानंद आदिक । ताकूं लक्षणासें बोधन करे है ॥

हैं जु अनंत अखंड असंग रु ।
अद्वयआदिनिषध्य रहावैं ॥
वे परपंच निषेध करी अव ।
शेषितवस्तु गिराबिन गावैं ॥
यूं परमातम आतम देवही ।
वेद रु शास्त्र सबे सुरटावैं ॥
पंडित[१४६] त्यागि अभास पीतांबर ।
वृत्ति अहं अपरोक्षहि पावैं ॥ १९ ॥

॥१४६॥ पंडितपीतांबर कहै हैं कि—आभास (फलव्याप्तिकूं) त्यागिके अहंवृत्ति (वृत्तिव्याप्तिकरि) अपरोक्षजानै ॥ यह अर्थ है ॥

• १८४ प्रश्नः– ब्रह्मात्मा जब वाणीका विषय नहीं तब सत्‌चित्‌आनंद आदिकविशेषणनसैं कैसैं कहियेहै ?

उत्तरः––ब्रह्मात्माके कितनैक विधेयविशेषण[147] हैं औ कितनैक निषेध्यविशेषणं[148] हैं । तिनमैं

१ विधेयविशेषण जो सदादिक हैं । सो प्रपंच का निषेधकरिके अवशेष (बाकी रहे) ब्रह्मकूं लक्षणा[149]सैं साक्षात्‌बोधन करैहैं । औ

२ निषेध्यविशेषण जो अनंतादिक हैं । सो तौ साक्षात्‌प्रपंचकाही निषेध करैहैं । औ तिसतैं विलक्षण ब्रह्मात्मा अर्थतैं सिद्ध होवैहै ।

तातैं ब्रह्मात्मा अवाच्य होनैतैं किसी विशेषणसैं नहीं कहियेहै ॥

।।१४७।। "सत् है" । "चित् है" ।। इस प्रकार विधि मुखसैं ब्रह्मके बोधकपद विधेयविशेषण हैं ।।

।।१४८।। "अनंत (अंतवाला नहीं) ।" "अखंड खंड-

वाला नहीं)" इस प्रकार निषेधमुखसे ब्रह्मके बोधक-पद निषेध्यविशेषण हैं ।

॥१४९॥

१ (वा) माया औ प्रपंचविषै आपेक्षिकसत्यता है औ ब्रह्मविषै निरपेक्षसत्यता है । दोनूं मिलिके 'सत्' पदका वाच्य है । औ

(ल) मायाकी सत्यताकूं त्यागिके केवलब्रह्मकी सत्यता लक्ष्य है ॥

२ (वा) अंतःकरणकी वृत्तिरूप ज्ञान औ चेतनरूप ज्ञान । दोनूं मिलिके 'चित्' पदका वाच्य है ॥

(ल) वृत्तिज्ञानकूं छोडिके केवल चेतनरूप ज्ञान लक्ष्य है ॥

३ (वा) विषयानंद । वासनानंद औ ब्रह्मानंद । ती मिलिके 'आनंद' पदका वाच्य है ॥

(ल) दोनूंकूं छोडिके केवल ब्रह्मानंद आनंदपदका-लक्ष्य है ॥

---

४ (वा) माया औ ताके कार्य आकाशादिकविषै आपे-
क्षिकव्यापकता है अरु ब्रह्म (आत्मा) विषै
निरपेक्षव्यापकता है । दोनूं मिलिके ' ब्रह्म'
(विभु) पदका वाच्य है ?

(ल) केवलब्रह्म 'ब्रह्म' पदका लक्ष्य है ।।

५ (वा) साभासबुद्धिविषै आपेक्षिकस्वप्रकाशता है औ
चेतनविषै निरपेक्षस्वप्रकाशता है। दोनूं मिलि-
के 'स्वयंप्रकाश' पदका वाच्य है ।।

(ल) केवलचेतन ' स्वयंप्रकाश लक्ष्य ' है ।।

६ (वा) रज्जुआदिकविषै आपेक्षिकअविकारिता है ।
औ चेतनविषै निरपेक्षअविकारिता है । ये
दोनूं मिलिके 'कूटस्थ' पदका वाच्य है । औ

(ल) केवलचेतन ' कूटस्थ' पदका लक्ष्य है ।

७ (वा) लौकिकसाक्षी औ माय अविद्याउपहितचेतन

(ब्रह्म औ आत्मा) दोनूं मिलिकं 'साक्षी' पदका
वाच्य है । औ ।

(ल) केवलमायाअविद्याउपहितचेतन ‘ साक्षी ’ पदका लक्ष्य है ॥

(वा) साभासअंतःकरणकी वृत्तिरूप दृष्टिकरिके विशिष्ट (सहित) और चेतन । ‘द्रष्टा’ पदका वाच्य है । और

(ल) केवलचेतनभाग ‘द्रष्टा पदका लक्ष्य है ॥

९ (वा) यज्ञका उपद्रष्टा औ प्रत्यगात्मा दोनूं मिलिके ‘उपद्रष्टा’ पदका वाच्य है ॥

(ल) केवलप्रत्यगात्मा‘ उपद्रष्टा’पदका लक्ष्य है ॥

१०(वा) लोकगत एकाकीपुरुष औ सजातीयभेदरहित ब्रह्म ‘एक’ पादका वाच्य है ॥

(ल) केवलब्रह्म ‘एक’ पदका लक्ष है ॥

ऐसैं अनुक्तअन्यविधेयविशेषणोंविषैं बी जानी लेना ।

इसरीतिसैं प्रपंचके ‘असत्’ आदिकविशेषणोंके निषेधक सदादिपदों के अर्थविषै बी भागत्यागलक्षणाकी प्रवृत्ति ॥

•१८५ प्रश्नः—सदादिकविधेयविशेषण। प्रपंचका निषेध करिके अवशेषब्रह्मकूं कैसें बोधन करैं हैं ?

उत्तरः—

१ सत् कहनैसैं असत्का निषेध भया। बाकी रह्या सद्रूप। सो लक्षणासैं सिद्ध है॥

२ चित् कहनसैं जडका निषेध भया। बाकी रह्या चिद्रूप। सो लक्षणासैं सिद्ध है॥

३ आनंद कहनेसैं दुःखका निषेध भया। बाकी रह्या आनंद (सुख) रूप। सो लक्षणासैंसिद्धहै।

४ ब्रह्म कहनेसैं परिच्छिन्नका निषेध भया। बाकी रह्या व्यापक। सो लक्षणासैं सिद्ध है॥

५. स्वयंप्रकाश कहनैसैं परप्रकाशका निषेध भया। बाकी रह्या स्वयंप्रकाश। सो लक्षणासैं सिद्ध है॥

६ कूटस्थ (अविकारी) कहनैसैं विकारका निषेध भया । बाकी रह्या निर्विकारी । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

७ साक्षी कहनैसैं साक्ष्यका निषेध भया । बाकी रह्या साक्षी । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

८ द्रष्टा कहनैसैं दृश्यका निषेध भया । बाकी रह्या द्रष्टा । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

९ उपद्रष्टा कहनैसैं उपदृश्यका कहिये समीप-वस्तुका निषेध भया । बाकी रह्या उपद्रष्टा । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

१० एक कहनैसैं नानाका निषेध भया । बाकी रह्या एक । सो लक्षणासैं सिद्ध है ॥

इसरीतिसैं अन्यविधेयविशेषणनविषै बी जानना॥

* १८६ प्रश्नः—अनंतादिकनिषेध्यविशेषण । प्रपंचका निषेध कैसें करै हैं ?

उत्तरः—

अनंत कहनैसैं देशकालवस्तुकृतपरिच्छेदका निषेध भया । बाकी रह्या अनंत । सो अर्थसैं सिद्ध है ॥

इसरीतिसैं अन्यनिषेध्यविशेषणनविषैं बी जानना ॥

* १८७ प्रश्नः—इन विशेषणनका ऐसें अर्थ करनैका क्या प्रयोजन है ?

उत्तरः—इन विशेषणनका ऐसें अर्थ करनैका प्रयोजन यह है कि । चेतनकूं मनवाणीका अविषय कहनैहारी श्रुतिके अर्थका अविरोध

होवैहै ॥ जातैं गुण क्रिया जाति औ संबंधादिक जो शब्दकी अरु मनकी प्रवृत्तिके निमित्तरूप धर्म है । सो ब्रह्ममैं नहीं है किंतु निर्धर्मक होनेतैं ब्रह्म निर्विशेष है । यातैं श्रुति बी ताकूं मनवाणी का अविषय कहती है ।

किंवा जो कछु बोलना है सो द्वैतसैं हौवैहै । अद्वैतसैं नहीं । यातैं इन विशेषणनका ऐसैं अर्थ करनैसैं श्रुतिविरुद्ध द्वैतकी सिद्धि होवै नहीं औ अद्वैत सुखसैं समजनैकूं शक्य होवै है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये अवाच्यसिद्धांत-वर्णननामिका नवमकला समाप्ता ॥ ९ ॥

अथ दशमकलाप्रारंभः १०

सामान्यविशेषचैतन्यवर्णन



इंद्रविजय छंद ॥

चेतन हैं जु समान विशेष सु ।
दोविधसत्य सुजान समानै ॥
भ्रांति सरूप विशेष जु कल्पित ।
संसृति आश्रय सो तिहि भानै ॥
ज्या रविको प्रतिबिंब जलादिक ।
सो रविरूप विशेष पिछानै ॥
त्यों मतिमें प्रतिबिंबँ परातम ।
सौ कलपीत विशेषहिं जानै ॥ २० ॥

॥१५०॥ परमात्माका प्रतिबिंब ॥

आवत जावत लोक प्रलोक हिं ।
भोगत भोग जु [१५१]कर्म निपानै ॥
सो सब चित[१५२]-अभास करे अरु ।
शुद्ध समान मही नहिं आनै ॥
अस्ति रु भाति प्रियं सब पूरन-
ब्रह्म समान सु चेतन मानै ॥
नाम रु रूप तजी सत् चेतन ।
मोद पीतांबर आप पिछानै ॥ २१ ॥

॥१५१॥ जो कर्मरचित भोग है । ताकूं भोगता है ॥

॥१५२॥ चेतनका प्रतिबिंब ।

१८८ प्रश्नः—विशेषचैतन्य सो क्या है ?

उत्तरः—अंतःकरण औ अंतःकरणकी वृत्तिनविषै जो सामान्यचैतन्यब्रह्मका प्रतिबिंबरूप चिदाभास । सो विशेषचैतन्य[१५३] है ॥

१८९ प्रश्न— चिदाभासका लक्षण क्या है ?

उत्तरः—

१ चैतन्य (ब्रह्म) के लक्षणसैं रहित होवै । औ

२ चैतन्यकी न्यांई भासै ।

सो चिदाभास कहिये है ॥

॥१५३॥ इहां चिदाभासरूप जो विशेषचैतन्य कहा है । सो षष्ठकलाविषै उक्त कल्पतविशेषअंशके अंतगत है ॥

* १९० प्रश्नः– यह चिदाभास विशेष चैतन्य काहे तैं कहिये है ?

उत्तरः—अल्पदेश औ कालविषै जो वस्तु होवै । सो विशेष[१५४] कहियेहै ॥ जातैं चिदाभास अंतःकरणदेश औ जाग्रत्स्वप्नकाल वा अज्ञान कालविषै है यातैं विशेषचैतन्य कहियेहै ॥

॥१५४॥ अधिष्ठान औ अध्यस्त । इसभेदतैं विशेष दो प्रकारका है ॥ तिनमैं

१ भ्रांतिकालविषै जाकी प्रतीति होवै नहीं किंतु जाकी प्रतीतिसैं भ्रांतिकी निवृत्ति होवै । सो अधिष्ठानरूप विशेष है ! औ

भ्रांतिकालविषै जाकी प्रतीति होवै औ अधिष्ठानके ज्ञानकालविषै जाकी प्रतीति होवै नहीं सो अध्यस्त-रूप विशेष है ॥ याही कूं कल्पितविशेष बी कहै हैं ।

* १९१ प्रश्न :—विशेषचैतन्यविषैं दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः—

दृष्टांतः—

१ जैसैं सूर्यका प्रकाश सर्वत्र समान है ! परंतु सर्वठिकानै प्रतिबिंब होता नहीं औ जहां जल वा दर्पणरूप उपाधि होवै तहां प्रतिबिंबरूप करि विशेष भासता है ॥

२ किंवा जैसैं सूर्यका प्रकाश सर्वत्र समान है । परंतु सो वस्त्रकपासआदिककूं जलावता नहीं औ जहां आगिआ (सूर्यकांतमणि) रूप उपाधि होवै । तहां अग्निरूपसैं विशेष होयके वस्त्रकपासआदिककूं जलावता है ॥

तिनमैं

१ सामान्यरूप है सो सर्वदा ज्यूं का त्यूं होनैतैं यथार्थ (बहुकालस्थायि) है । औ

२ उपाधिकरि भासता है जो विशेषरूप । सो व्यभिचारी होनैतैं अयथार्थ (अल्पकाल स्थायि) है ॥

१ तैसैं सामान्यचैतन्य जो अस्ति भाति प्रिय । सो सर्वत्र समान है । परन्तु तिससैं बोलना चलना इत्यादिकविशेषव्यवहार होता नहीं। औ

२ जहां अंतःकरणरूप उपाधि होवे तहां चिदाभासरूपसैं विशेषचैतन्य होयके बोलना-चलना । कर्त्तापनाभोक्तापना । परलोकइस-लोकविषै गमनआगमन । इत्यादिकविशेष-व्यवहार होवैहै ॥

तिनमैं

१ सामान्यचैतन्य जो ब्रह्म सो सत्य है । औ

२ उपाधिकरि भासता है जो विशेषचैतन्य चिदा-भास । सो मिथ्या है ॥ तैसैं

(१) पुण्यपापका कर्त्तापना ।

(२) सुखदुःखका भोक्तापना ।

(३) परलोकइसलोकविषै गमनागमन ।

(४) जन्ममरण ।

(५ चौरासीलक्षयोनिकी प्राप्ति ।

इत्यादिकसंसाररूप धर्म बी चिदाभासके हैं। यातैं मिथ्या हैं ॥

* १९२ प्रश्नः—विशेषचैतन्यके जाननेसैं क्या निश्चय करना ?

उत्तरः—

१ विशेषचैतन्य जो चिदाभास । औ

२ तिसके धर्म ।

सो मैं नहीं औ मेरे नहीं। किन्तु ये मेरेविषै कल्पित हैं ॥ मैं इनका अधिष्ठान सामान्यचैतन्य इनतैं न्यारा हूं। यह निश्चय करना ॥

* १९३ प्रश्नः– सामान्य चैतन्य सो क्या है ?

उत्तरः—

१ जो आकाशकी न्यांई सर्वत्र परिपूर्ण है ।

२ जो सर्वनामरूपका अधिष्ठान है ।

३ जो अस्तिभातिप्रियरूप है ।

४ जो निर्विकारब्रह्म है ।

सो सामान्य चैतन्य है ॥

*१९४ प्रश्नः– ब्रह्म । सामान्य चैतन्य काहे तें कहिये है ?

उत्तरः-अधिकदेश और अधिक कालविषै जो वस्तु होवै । सो सामान्य कहिये है ॥

जातैं ब्रह्म । बुद्धिकल्पित सर्वदेश औ सब-कालविषै व्यापक है । तातैं ब्रह्म सामान्य चैतन्य कहिये है ॥

* १९५ प्रश्न:–सामान्य चैतन्य जाननैंविषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तर:--

दृष्टांत:--जैसैं एकरज्जुकेविषै नानापुरुषनकूं किसीकूं दंडकी । किसकूं सर्पकी । किसीकूं पृथ्वीके रेषाकी । किसीकूं जलधाराकी भ्रांति होवैहै । तिस भ्रांतिविषै दोअंश हैं ।

१ एक सामान्यइदंअंश है । औ

२ दूसरा सर्पादिकविशेषअंश है ॥ तिनमैं

१ (१) 'यह' दंड है ॥

(२) 'यह' सर्प है ॥

(३) 'यह' पृथिवीकी रेषा है ॥

(४) 'यह' जलधारा है ॥

इसरीतिसैं सर्पादिकविशेषअंशनविषै सामान्य "इदं" अंश कहिये "यह" अंश सर्वत्रव्यापक है औ सो रज्जुका स्वरूप है । सो सामान्य-

इदंअंश जातें

[१] भ्रांतिकालविषै बी भासता है। औ

[२] भ्रांतिकी निवृत्तिकालविषै बी "यह" रज्जु है" इसरीतिसैं भासताहै।

यातैं सामान्यइदंअंश अव्यभिचारी होनेतें सत्य है। औ

२ परस्परव्यभिचारी जो सर्पादिकविशेषअंश सो कल्पित है ॥

सिद्धांतः--तैसैं सर्वपदार्थनविषै पांचअंश हैं--

१ अस्ति २ भाति ३ प्रिय ४ नाम ५ रूप ॥

१ 'घट है" यह अस्ति [सत्]।

२ "घट भासताहै" यह भाति [चित्]।

३ "घट प्यारा है"। काहेतें घट जल भरनेकूं उपयोगी है। यातैं वह प्रिय (आनंद)॥ सर्प-सिंहआदिक बी सर्पिणी औसिंहिणीकूं प्रियहैं।

४ "घट" यह दोअक्षर नाम है।

५ स्थूलगोलउदरवान् घटका रूप (आकार) है। ऐसैं घटआदिकसर्वभूत औ भूतनके कार्यनविषै बी जानना ॥

यह बाहीरके पदार्थनविषै पांचअंश दिखाये ॥ तैसैं

१ भीतरदेहआदिकविषै-,

[१] "मैं हूं" यह अस्ति है।

[२] "मैं भासता (जानता) हूं" यह भाति है।

[३] "मैं आप आपकूं प्यारा हूं" यह प्रिय है। औ

[४] देह। इंद्रिय। प्राण। मन। बुद्धि। चित्त। अहंकार। अज्ञान औ इनके धर्म। ये नाम हैं।

[५] इनके यथायोग्य आकार। सो रूप है।

ये अंतरके पदार्थनविषै पांचअंश दिखाये ॥

१ इन सर्वके नामरूपके त्याग कियेसैं--

[१] "पृथिवी है" ।

[२] "पृथिवी भासती है"

[३] पृथिवी प्रिय है" । काहेतें पृथिवी रहनेकूं स्थान देती है ।

[४] "पृथिवी" ऐसा नाम है । औ

[५] "गंधगुणयुक्त" रूप है ॥

२ पृथिवीके नामरूपके त्याग कियेसैं--

[१] "जल है" ।

[२] "जल भासताहै" ।

[३] "जल प्रिय है" । काहेतें जल तृषाकूं दूरी करताहै ।

[४] "जल" ऐसा नाम है । औ शीतस्पर्शगुणयुक्त" रूप है ॥

४ जलके नामरूपके त्याग कियेसैं–

[१] " तेज है "।

[२] " तेज भासता है "।

[३] " तेज प्रिय है " काहेतैं । तेज शीत औ अंधकारकूं दूरी करता है ।

[४] " तेज " ऐसा नाम है। औ

[५] " उष्णस्पर्शगुणयुक्त " रूप है ॥

५ तेजके नामरूपके त्याग कियेसें–

[१] " वायु है "।

[२] " वायु भासता है "।

[३] " वायु प्रिय है " काहेतैं वायु पसीनाकूं दूरी करता है।

[४] " वायु " ऐसा नाम है। औ

[५] " रूपरहित अरु स्पर्शगुणयुक्त " रूप है ॥

६ वायुके नामरूपके त्याग कियेसैं–

[१] " आकाश है " ।

[२] " आकाश भासता है " ।

[३] " आकाश प्रिय है " । काहेतैं आकाश रहनैफिरनैकूं अवकाश देता है ।

[४] " आकाश " ऐसा नाम है । औ

[५] " शब्दगुणयुक्त " रूप है ॥

७ आकाशके नामरूपके त्याग कियेसैं–

[१] " पीछे क्या है सो मैं जानता नहीं" । ऐसा अज्ञान है । सो

[२] " अज्ञान भासता है " ।

[३] " अज्ञान प्रिय है " काहेतैं अज्ञानी जीवनकूं प्रिय है । औ अज्ञान प्रपंचका कारण होनैसैं जीवनका निर्वाह करता है ।

[४] " अज्ञान " ऐसा नाम है । औ

[५] " आवरणविक्षेपशक्तिवाला अनादि अनिर्वचनीय भावरूप " यह रूप है ॥

८ अज्ञानके नामरूपके त्याग कियेसैं–

[१] " कछु बी नहीं है " ऐसैं प्रतीयमान सर्ववस्तुनका अभाव रहता है ।

[२] " अभाव भासता है " ।

[३] " अभाव शून्यध्यानीनकूं प्रिय है" । याका

[४] " अभाव " ऐसा नाम है । औ

[५] " सर्ववस्तुनका अभाव (निषेधमुख प्रतीतिका विषय) " रूप है ॥

९ अभावके नामरूपके त्याग कियेसैं–

[१] अभावत्वका स्वरूपभूत अधिष्ठान। सत्वस्तुहीं अवशेष रहता है। सो

[२] अभावके अभावपनेकूं प्रकाशताहै। यातैं चित् है। औ

[३] दुःखसैं भिन्न. है। यातैं आनंद है॥

इसरीतिसैं

१ सर्वनामरूपविषै अनुगत अव्यभिचारी नामरूपका अधिष्ठानब्रह्म सामान्यचैतन्य[१] है। सो सत्य है। औ

॥१५५॥

१ सुषुप्ति मूर्छा औ समाधिका प्रकाशक सामान्य चैतन्य है ॥

२ "घटकूं मैं जानता हूं" इसरीतिसैं प्रमाता । प्रमाण औ प्रमेयरूप त्रिपुटीका प्रकाशक साक्षी सामान्यचैतन्य है ।

३ जाग्रदादिअवस्था की संधिनका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ।।

४ तैसैंहीं वृत्तिनकी संधिनका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ।।

५ अंगुष्ठके अग्रभागका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ।।

६ देशांतरविषै वृत्ति गई होवै । तब तिसके मध्य भागका प्रकाशक सामान्य चैतन्य है ।।

७ सूर्यचंद्राकार वृत्ति हुयी होवै तिसके मध्यभागका प्रकाशक सामान्य चैतन्य है ।।

८ "मेरेकूं मैं नहीं जानता हूं" ऐसे अज्ञानविशिष्टमेरुका प्रकाशक सामान्य चैतन्य है ।।

२ घटके नामरूप पटविषे नहीं औ पटके नामरूप घटविषै नहीं । तातैं परस्पर[१५६]व्यभिचारी ये नामरूप मिथ्या हैं ॥

यह सामान्यचैतन्यके जाननेविषै दृष्टांत है ॥

* १९६ प्रश्नः—उक्त सामान्य चैतन्यरूप ब्रह्मकी सर्वतैं अधिक सूक्ष्मता औ व्यापकता कैसैं हैं ?

उत्तरः—

१ जो जो कार्य है । सो स्थूल औ परिच्छिन्न होवैहै । औ

२ जो जो कारण है । सो सूक्ष्म औ व्यापक (अधिकदेशवर्ति) होवैह । यह नियम है ।

जातैं ब्रह्म सर्वका कारण है यातैं सर्वसैं अधिक सूक्ष्म औ व्यापक है । सो अत्र दिखावैहैं--

---

।।१५६।। जो वस्तु कहीं क होवै औ कहीक न होवै । सो वस्तु व्यभिचारी है ।।

१ [१] जातैं समुद्रजलसैं कठिन फेन औ लवण होवेहैं। यातैं जान्याजावैहे कि पृथिवी जलका कार्य है। तातैं पृथिवीतैं जल सूक्ष्म औ व्यापक है॥

किंवा

[२] पृथिवीके पाषाणआदिकअवयव वस्त्रविषे डालेहुये निकसते नहीं। औ

[३] जल वस्त्रविषे ठहरता नहीं। औ

[४] पृथिवीमैं जहां जहां खोदके देखो तहां तहां जल निकसता है। औ

[५] पुराणोंविषै पृथिवीतैं दशगुण अधिकदेशवर्ति जल कहा है।

यातैं बी पृथिवीतैं जल सूक्ष्म औ व्यापक है।

२ [१] तैसैं अग्निआदिकके तापसैं शरीरविषै प्रस्वेद (पसीना) छूटता है औ वर्षा होवैहै। यातैं जान्याजावैहै कि जल अग्निका कार्य है। तातैं जलतैं अग्नि (तेज) सूक्ष्म है औ व्यापक है॥ किंवा

[२] जल वस्त्रविषै ठहरता नहीं परंतु घटविषै ठहरता है । औ

[३] सूर्यादिकका प्रकाश घटविषै बी ठहरता नहीं । औ

[४] पुराणोंविषै जलतैं दशगुणअधिकदेशवर्ति तेज कहा है ।

यातैं बी जलतैं तेज सूक्ष्म है औ व्यापक है॥

३ [१] तैसैं अग्निका जन्म औ नाश पवनके
आधीन है। यातैं जान्याजावै है कि
तेज वायुका कार्य है। तातैं तेजतैं
वायु सूक्ष्म है औ व्यापक है।

किंवा

[२] सूर्यादिकका प्रकाश घटादिपात्रविषै
ठहरता नहीं परंतु नेत्रसैं दीखता है
औ वायु तौ नेत्रसैं बीं दीखता
नहीं। अरु

[३] पुराणोंविषैं तेजतैं दशगुणअधिक वायु
कहा है।

यातैं तेजतैं वायु सूक्ष्म है औ व्यापक है॥

४ [१] तैसैं वायुकी उत्पत्ति स्थिति अरु लय आकाश(पुलार)विषैंहीं होवैहै । यातैं जान्याजावै है कि वायु आकाशका कार्य है । तातैं वायुतैं आकाश सूक्ष्म है औ व्यापक है ॥

किंवा

[२] वायु नेत्रसैं दीखता नहीं परन्तु त्वचासैं स्पर्शगुणद्वारा ग्रहण होता है औ आकाश तौ त्वचासैं बी ग्रहण होता नहीं। औ

[३] पुराणोंविषैं वायुतैं दशगुणअधिकदेश-वर्ति आकाश कहा है ॥

यातैं बी सो आकाश वायुतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥

५ [१] तैसैं " आकाशसैं आगे क्या होवैगा" ऐसा विचार किये हुये " मैं नहीं जानताहूं " ऐसैं बुद्धिके कुण्ठीभावका आश्रय (विषय) अज्ञान प्रतीत होता है। यातैं जान्याजावेहै कि आकाश अज्ञानका कार्य है। तातैं सो अज्ञान आकाशतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥ किंवा

[२] आकाश त्वचासैं ग्रहण होता नहीं। परंतु मनसैं ग्रहण होताहै। औ अज्ञान मनसैं बी ग्रहण होता नहीं। औ

[३] आकाशतैं अनंतगुणअधिक अज्ञान शास्त्रविषैं कहा है।

यातैं बी सो अज्ञान आकाशतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥

६ [१] तैसैं 'मैं नहीं जानताहूं" इस अनुभव-
का विषय जो अज्ञान । ताका प्रकाश
जाननैवाले चेतनसैं होवै है । औ
(१) " अज्ञान है ।
(२) अज्ञान भासता है ।
(३) अज्ञान अज्ञपुरुषकूं प्रिय है ॥"

इसरीतिसैं अज्ञानविषे अनुस्यूत अस्तिभाति-प्रियरूप ब्रह्मचेतन भासता है । यातैं अज्ञान ब्रह्मचेतनके आश्रित है । तातैं ब्रह्मचेतन अज्ञानतैं सूक्ष्म औ व्यापक है ॥ किंवा

[२] अज्ञान मनकरि ग्रहण होता नहीं
परन्तु " मैं नहीं जानताहूं " इस
अनुभवरूप लिंगकरि ताका अनुमान
होवैहै । औ ब्रह्मचेतन स्वयंप्रकाशरूप
होनैंतैं किसी बी प्रमाणका विषय
नहीं । औ

[३] शरीरविषैं तिलकी न्यांई ब्रह्म के एकदेशविषै अज्ञान स्थित है। औ अवशेष रहा ब्रह्म शुद्धस्वप्रकाश है। ऐसैं श्रुतिविषै कहाहै।

यातैं भी सी ब्रह्मचेतन अज्ञानसे सूक्ष्म औ व्यापक है ॥

इसरीतिसैं सामान्यचैतन्यरूप ब्रह्मकी सर्वप्रपंचसैं अधिकसूक्ष्मता औ व्यापकता है ॥

* १९७ प्रश्नः—सामान्य चैतन्यके जाननैसैं क्या निश्चय करना ?

उत्तरः—

१ [१] अस्तिभातिप्रियरूप सामान्यचैतन्य जो ब्रह्म सो मैं हूं। औ

[२] मैं सो अस्तिभातिप्रियरूप सामान्य-चैतन्यब्रह्म हूं। औ

२ नामरूपजगत् मेरेविषै कल्पित है ।

यह निश्चय करना ॥

• १९८ प्रश्नः—इसरीतिसैं निश्चय कियेसे क्या होवै है?

उत्तरः—इसरीतिसे निश्चय कियेसैं सर्वअनर्थकी निवृत्ति औ परमानंदकी प्राप्तिरूप मोक्ष होवैहै ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये सामान्यविशेषचैतन्यवर्णननामिका दशमकला समाप्ता ॥ १० ॥

" तत्त्वं " पदार्थैक्यनिरूपण



इंद्रविजय छंदः

वाच्य रु लक्ष्य लखी तत्-त्वंपद ।
लक्ष्य दहूंकर एक दृढावै ॥
भिन्न जु देशहि काल सु वस्तु रु ।
धर्मसमेत उपाधि उडावै ॥
जन्म थिती लय कारक मौंयिक ।
जाननहार सबी जग भावै ॥
ईश्वर वाच्य सु है ततपादहि ।
ब्रह्म सु लक्ष्य उपाधि अभावै ॥ २२ ॥

॥१५७॥ मायाउपाधिवान ॥

संसृति मानत आपहिमैं, पर-
तंत्र अविद्यके[१९८] अल्प जनावै ॥
त्वंपद वाच्य सु जीव विवेचित ।
लक्ष्य सु साक्षि उपाधि ढहावै ॥
वाच्य दुअर्थ हि भेद वि है पुनि ।
लक्ष्य विभेद न रंचक गावै ॥
ब्रह्म अहं इस भांति जु जानत ।
सोई पीतांबर ब्रह्महि पावै ॥ २३ ॥

* १९९ प्रश्नः– "तत्" पद सो क्या है ?

उत्तरः–सामवेदकीछांदोग्यउपनिषद्के षष्ठ-प्रपाठक (अध्याय) विषै श्वेतकेतु नाम पुत्रके प्रति तिसके पिता उद्दालकमुनिने उपदेश किये " तत्त्वमसि[१९९] " महावाक्यका जो प्रथमपद । सो " तत् " पद है ॥

॥१५८॥ अविद्याउपाधिवान् ॥

॥१५९॥

१ इस "तत्त्वमसि" की न्यांई

२ "प्रज्ञानं ब्रह्म" यह ऋग्वेदका महावाक्य है ।

३ "अहं ब्रह्मास्मि" यह यजुर्वेदका महावाक्य है । औ

४ "अयमात्मा ब्रह्म" यह अथर्वणवेदका महावाक्य है ॥

१ जो तत्पदका वाच्यअर्थ ईश्वर है औ लक्ष्यअर्थ शुद्ध-ब्रह्म है । सोई ऊपरलिखे तीन महावाक्यगत "ब्रह्म" शब्दका वाच्यअर्थ अरु लक्ष्यअर्थ है । औ

२ जो त्वंपदका वाच्यअर्थ जीव है अरु लक्ष्यअर्थ कूटस्थ साक्षी है । सोई उक्ततीनमहावाच्यगत "प्रज्ञानं-" "अहं" "अयं" "पदसहित "आत्मा" इन तीनपदका वाच्यअर्थ औ लक्ष्यअर्थ है । औ सारे "तत्त्वमसि" वाक्यका जो जीवब्रह्मकी एकतारूप अर्थ है । सोई उक्त तीन महा वाक्यनका अर्थ है ॥

* २०० प्रश्नः–"त्वं" पद सो क्या है ?

उत्तरः––इसीहीं "तत्त्वमसि" महावाक्यका दूसरापद । सो " त्वं " पद है ॥

* २०१ प्रश्नः–वाच्यार्थ औ लक्ष्यार्थ सो क्या है ?

उत्तरः––शब्दका अर्थके साथि जो संबंधसो शब्दकी वृत्ति कहिये है ॥ सो वृत्ति दो प्रकारकी है । १ एक शक्तिवृत्ति है औ २ दूसरी लक्षणावृत्ति है ॥

१ शब्दविषै अर्थके ज्ञान करनैका सामर्थ्यरूप जो शब्दका अर्थके साथि साक्षात् संबंध । सो शब्दकी शक्तिवृत्ति है ॥ औ

२ शक्तिवृत्तिसैं जानेहुये अर्थद्वारा जो शब्दका अर्थके साथि परम्परारूप संबंध है । सो शब्दकी लक्षणावृत्ति है ॥

तिनमैं

१ शक्तिवृत्तिकरि जो अर्थ जानियेहै सो शब्दका वाच्यअर्थ कहिये है। ताहीकूं शक्यअर्थ औ मुख्यअर्थ बी कहैहैं ॥ औ

२ लक्षणावृत्तिकरि जो अर्थ जानिये है। सो शब्दका लक्ष्यअर्थ कहिये है ॥

* २०२ प्रश्नः—लक्षणावृत्ति कितनै प्रकारकी है ?

उत्तर—१ जहत् अजहत् औ ३ भाग-त्यागके भेदतैं लक्षणावृत्ति तीनप्रकारकी है ॥

* २०३ प्रश्नः – तीन प्रकारकी लक्षणाके लक्षण औ उदाहरण कौनसें है ?

उत्तरः—

१ जहां संपूर्णवाच्यअर्थका त्यागकरिके वाच्य-अर्थके संबंधीका ग्रहण होवै। सो जहत्‌लक्षणाहै ॥

जैसैं कोईक पुरुषनै काहूकूं पूछ्या किः—"गाईका वाडा कहां है?" तब तिंसनैं कह्या कि "गंगाविषै गाईका वाडा है" इहां गंगापदका वाच्यअर्थ देवनदीका प्रवाह है। तिसविषै गाईका वाडा संभवै नहीं। यातैं संपूर्णवाच्यअर्थ जो देवनदीका प्रवाह। ताका त्यागकरिके। तिसके सम्बन्धी तीरका ग्रहण है

२ जहां वाच्यअर्थका त्याग न करिके तिसके सम्बन्धीका ग्रहण होवै। सो अजहत्‌लक्षणा है॥

जैसैं किसीनैं कह्या किः—"शोण दौडता है"॥ तहां शोणपदका वाच्यअर्थ जो लालरङ्ग है। तिसविषै दौडना संभवै नहीं। यातैं लाल-रङ्गवाला घोडा दौडता है। ऐसैं वाच्यअर्थका त्याग न करिके तिसके सम्बन्धी घोडेरूप अधिक अर्थका ग्रहण होवै है॥

३ जहां विरोधी कछुकवाच्यभागका त्याग-करिके तिसके संबंधी अविरोधीकछुकवाच्यभाग का ग्रहण होवै। सो भागत्यागलक्षणा है ॥

जैसैं पूर्व किसी देशकालविषै देख्या पुरुष अन्यदेशकालविषै देखनैमैं आवै। तब देखनै-हारा पुरुष कहता है किः–"तिस (दूर) देश औ तिस (भूत) कालविषै जो पुरुष देख्याथा सो पुरुष इस (समीप) देश औ इस (वर्तमान) कालविषै आया है" ॥ इहां तिस देशकाल औ इस देशकालरूप वाच्यभागकी एकताका विरोध है। यातैं तिनकी दृष्टि त्यागकरिके। "पुरुष यहहीं है" ऐसैं अविरोधीवाच्यभागका ग्रहण होवैहै ॥

❁ २०४ प्रश्नः–तीन प्रकार की लक्षणामैंसं महावाक्य-विषै कौनसी लक्षणा संभवै है ?

उत्तरः—

१ जहां जहत्लक्षणा होहै । तहां संपूर्ण वाच्य अर्थका त्याग होवैहै ॥ जो महावाक्यविषैं जहत्लक्षणा मानिये । तौ

[१] "तत्" "त्वं" पदके वाच्यअर्थविषै प्रवेश भये ब्रह्मचैतन्य औ साक्षी चैतन्यका त्याग होवैगा । औ

[२] तिनतैं भिन्न असत्जडदुःखरूप प्रपंचका ग्रहण करना होवैगा । अथवा समष्टिव्यष्टि प्रपंचमय उपाधि (विशेषणरूप वाच्यभाग) का बी चेतनके साथि त्याग कियेसैं अवशेष रहे शून्यका ग्रहण करना होवैगा ॥

यातैं महाअनर्थकी प्राप्ति होवैगी । तिसतैं पुरुषार्थ सिद्ध होवै नहीं । यातैं महावाक्यविषै जहत्लक्षणा संभवै नहीं ॥

२ जहां अजहत्लक्षणा होवै तहां वाच्यअर्थका कछु बी त्याग होवै नहीं। औ अधिकअर्थका ग्रहण होवे है॥ जो महावाक्यविषे अजहत्) लक्षणा मानिये तौ "तत्" "त्वं पदका वाच्यअर्थ ज्यूंका त्यूं बन्यारहैगा औ ताके साथि शून्यरूप अधिकअर्थका ग्रहण करना होवेगा। यातै एकताका विरोध दूरी होवेनहीं। तातैं लक्षणा करनेका कछु प्रयोजन सिद्ध होवै नहीं। यातैं महावाक्यविषै अजहत्लक्षणा संभवे नहीं ॥

३ जहां भागत्यागलक्षणा होवै तहां विरोधीभागका त्याग करीके अविरोधीभागका ग्रहण होवेहै ॥ जो महावाक्यविष भागत्यालक्षणा मानिये तौ

[१] "तत्" "त्वं" पदके वाच्यअर्थमैंसैं धर्मसहित मायाअविद्यारूप विरोधीभागका त्याग होवैहै। औ

[२] अविरोधीअसंगशुद्धचेतनभागका ग्रहण होवैहै ।

तातैं

[१] तिनकी एकता बी बनैहै । औ

[२] तिसतैं परमपुरुषार्थकी प्राप्ति होवैहै ।

यातैं महावाक्यविषै भागत्यागलक्षणा संभवैहै ॥

* २०५ प्रश्न– "तत्" पदका वाच्यअर्थ औ लक्ष्य अर्थ क्या है ।

उत्तरः–

१ अव्याकृत जो माया सो ईश्वरका देश हैं ॥

२ उत्पत्ति स्थिति औ प्रलय । ये तीन ईश्वरके काल हैं ॥

३ सत्त्वगुण रजोगुण औ तमोगुण । ये तीन ईश्वरके वस्तु[१६०] हैं । कहिये सृष्टिकी सामग्री हैं ।।

४ विराट् हिरण्यगर्भ औ अव्याकृत । ये तीन ईश्वरके शरीर हैं ॥

५ वैश्वानर सूत्रात्मा औ अंतर्यामी । ये तीन ईशपनैके अभिमानी हैं ॥

।।१६०।। यद्यपि माया औ तीनगुण एकहीं पदार्थ हैं । यातैं ईश्वरके देश वस्तु औ शरीरकी एकता होवै है । तथापि जैसैं कुलालकूं घट करनैके लिये

१ मृत्तिकारूप पृथ्वी देश है । औ
२ मृत्तिकाका पिंड वस्तु है । औ
३ अस्थिआदिकरूप पृथ्वीका भाग शरीर है ।

तिनकी एकताका असंभव नहीं । तैसैं ईश्वरके बी देश-आदिककी एकताका असंभव नहीं है ।।

६ "मैं एक हूं। सो बहुरूप होऊं" ऐसी जो ईक्षणा तिसकूं आदिलेके "जीवरूपकरि प्रवेश भया" इहांपर्यंत जो सृष्टि। सो ईश्वरका कार्य है॥

७ (१) सर्वशक्तिपना (२) सर्वज्ञपना (३) व्यापकपना (४) एकपना (५) स्वाधीनपना (६) समर्थपना (७) परोक्षपना (८) मायाउपाधिवानपना। ये आठ ईश्वरके धर्म हैं।

१ (१) इन सर्वसहित माया। औ
(२) तिनविषे प्रतिबिंबरूप चिदाभास। औ
(३) तिनका अधिष्ठान ब्रह्म।
ये सर्व मिलिके ईश्वर कहियेहैं। सो "तत्" पदका वाच्यअर्थ है।

२ इन सर्वसहित माया औ चिदाभासभागका त्यागकरिके अवशेष रह्या जो विराट्हिरण्यगर्भ

औ अव्याकृतका अधिष्ठान ईश्वरसाक्षी शुद्धब्रह्म सो "तत्" पदका लक्ष्यअर्थ है ॥

* २०६ प्रश्नः—ब्रह्मका औ मायामैं प्रतिबिंबरूप ईश्वरका परस्पर अध्यास (अन्योन्याध्यास) कैसैं है ?

उत्तरः—अविचारदृष्टिसैं

१ ब्रह्मकी सत्यताका ईश्वरविषै संसर्ग (तादात्म्यसंबंध) अध्यस्त है। यातैं ईश्वर सत्य होवैहै। औ

२ ईश्वर अरु ताकी कारणताका स्वरूप ब्रह्ममैं अध्यस्त है। यातैं ब्रह्म जगत्का कारण प्रतीत होवै है ॥ याहीका अनुवाद तटस्थलक्षणके बोधक श्रुति पुराण औ आचार्योंके वचन करैहैं ॥

इसरीतिसैं ब्रह्म औ ईश्वरका परस्पर अध्यास है ॥

* २०७ प्रश्न:–उक्तअध्यासकी निवृत्ति किससें होवै है?

उत्तरः--उक्तअध्यासकी निवृत्ति विवेकज्ञानसैं होवैहै ॥

* २०८ प्रश्न:–"त्वं" पदका वाच्यअर्थ औ लक्ष्य अर्थ क्या है ?

उत्तरः––

१ चक्षु,कंठ औ हृदय। ये तीन जीवके देश हैं॥
२ जाग्रत्स्वप्न औ सुषुप्तिये तीन जीवके कालहैं।
३ स्थूल सूक्ष्म औ कारण। ये तीन जीवके वस्तु (भोगसामग्री) हैं ॥ औ
४ यहहीं शरीर है ॥
५ विश्व तैजस औ प्राज्ञ। ये तीन जीवपनेके अभिमानी हैं ॥
६ जाग्रत्सैं आदिलेके मोक्षपर्यंत जो भोगरूप संसार। सो जीवका कार्य है ॥

७ [१] अल्पशक्तिपना [२] अल्पज्ञपना [३] परिच्छिन्नपना [४] नानापना [५] पराधीनपना [६] असमर्थपना [७ ॥ अपरोक्षपना औ [८] अविद्याउपाधिवान्पना। ये आठ जीवके धर्म हैं ॥

१ [१] इन सर्वसहित जोअविद्या। औ [२] तिसविषै प्रतिबिंबरूप चिदाभास। औ [३] तिनका अधिष्ठान कूटस्थ।

ये सर्व मिलिके जीव कहियेहै ॥ सो जीव "त्वं पदका वाच्यअर्थ है ॥

२ इन सर्वसहित चिदाभासभागका त्याग करिके अवशेष रह्या जो स्थूलसूक्ष्मकारणशरीरका अधिष्ठान जीवसाक्षी कूटस्थ। आत्मा सो "त्वं" पदका लक्ष्यअर्थ है ॥

* २०९ प्रश्नः– कूटस्थका औ बुद्धि मैं प्रतिबिंबरूप जीवका परस्पर अध्यास कैसें हैं ?

उत्तरः–अविचारदृष्टिसैं

१ कूटस्थकी सत्यताका संसर्ग (तादात्म्यसंबंध) जीवमैं अध्यस्त है। यातैं जीव मिथ्या प्रतीत होवै नहीं। किंतु सत्य प्रतीत होवैहै । औ

२ जीव अरु ताके कर्त्तापनेआदिक धर्मका स्वरूप। कूटस्थमैं अध्यस्त है। यातैं कूटस्थ अकर्त्ता अभोक्ता असंसारी नित्यमुक्त असंग ब्रह्मरूप प्रतीत होवै नहीं। किंतु तातैं विपरीत प्रतीत होवैहै ॥

इसरीतिसैं कूटस्थका औ जीवका परस्पर अध्यास है ॥

* २१० प्रश्नः–उक्त अध्यासकी निवृत्ति किससैं होवै है ?

उत्तरः—उक्तअध्यासकी निवृत्ति विवेकज्ञानसैं होवैहै ॥

* २११ प्रश्नः—"तत्" पद औ "त्वं" पदके अर्थकी महावाक्यविषैं कथन करी एकता कैसैं संभवै ?

उत्तरः

१ यद्यपि "तत्" पद औ "त्वं" पदके वाच्य-अर्थ जो उपाधिसहित चैतन्य (ईश्वर औ जीव) हैं। तिनकी एकताका विरोध है।

२ तथापि "तत्" पदका लक्ष्यार्थ ब्रह्म औ "त्वं" पदका लक्ष्यार्थ आत्मा। तिनकी एकताका कछु बी विरोध नहीं।

ऐसैं "तत्" पद औ "त्वं" पदके अर्थकी महावाक्यविषै कथन करी एकता संभवैहै ॥

२१२ प्रश्नः—"मैं ब्रह्म हूं" ऐसा ब्रह्मआत्माकी एकताका ज्ञान किसकूं होवै है ?

उत्तरः—यह ज्ञान चिदाभासकूं होवैहै ॥

* २१३ प्रश्नः–ब्रह्मतैं भिन्न जो चिदाभास । सो आपकूं ब्रह्मरूप करीके कैसैं जानै हैं ?

उत्तरः—

१ जीवभावके अधिष्ठान कूटस्थका ब्रह्मके साथि मुख्यअभेद है । औ

२ बुद्धिसहित चिदाभासका ब्रह्मके साथि अपने स्वरूपकूं बाध करीके अभेद होवैहै ।

यातें

१ चिदाभास अपनैं स्वरूपका बाध करीके आपकूं अहंशब्दके लक्ष्यअर्थ कूटस्थरूप जानैहै । औ

२ अपनै निजरूप कूटस्थका "मैं कूटस्थ हूं" ऐसैं अभिमान करिके "मैं ब्रह्म हूं" । ऐसैंजानैहैं ॥

इसरीतिसैं चिदाभास आपकूं ब्रह्मरूप करिके जानैहैं ॥

२१४ प्रश्न.– इन "तत्" औ "त्वं" पदके लक्ष्यार्थ की एकताविषैं दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः–दृष्टांतः–

१ जैसैं

[१] घटमठउपाधि सहित घटाकाश औ मठाकाशकी एकताका विरोध है ।

[२] तथापि घटमठरूप उपाधिकी दृष्टिकूं छोडिके केवलआकाशकी एकताका विरोध नहीं ॥

२ जैंसै

[१] काचकी हंडी औ मृत्तिकाकी हंडीविषै दीपक जलताहोवै । तिनकी उपाधि दोहंडीकी एकताका विरोध है ॥

[२] तथापि अग्निपनैंकरि दीपककी एकताका विरोध नहीं ॥

३ जैसै

[१] राजा औ रबारी (भेड) होवै।
तिनकी उपाधि सेना औ अजावर्गकी
एकताका विरोध है ॥

[२] तथापि मनुष्यपनैकी एकता विरोध
नहीं ॥

४ जैसैं

[१] गंगाजल औ गंगाजलका कलश होवै।
तिनकी उपाधि नदी औ कलशकी
एकताका विरोध है।

[२] तथापि केवल गंगाजलकी एकताका
विरोध नहीं ॥

५ जैसैं

[१] सागर औ जलका बिंदु होवै। तिनकी उपाधि सागर औ बिंदुकी एकताका विरोध है ॥

[२] केवलजलकी एकताका विरोध नहीं ॥

६ जैसैं

[१] कोईएकपुरुषकूं पिताकी अपेक्षासैं पुत्र कहते हैं औ पितामहकी अपेक्षासैं पौत्र कहते हैं। तिनकी उपाधि पित औ पितामहकी एकताका विरोध है।

[२] केवल पुरुषकी एकताका विरोध नहीं ॥

७ जैसैं कोई काशीका राजा था। सो हस्ती-पर बैठिके स्वारीमैं निकस्याथा। ताकूं कोई यात्रावासी पुरुषनै अच्छी तरहसैं देख्याथा॥ पीछे सो स्वदेशकूं गया औ काशीके राजाकूं कोई अन्यराजानै राज्य छीनके निकास दिया। तब सो लंगोटी पहरके अंगमैं विभूति लगायके हाथमें तुंबी औ दंड लेके नग्नपादसैं तीर्थयात्राकूं गया। फिरते फिरते तिस यात्रावासीपुरुषके ग्राममें गया॥ तब तिसकूं देखिके सो यात्रावासी पुरुष अन्य यात्रावासी पुरुषनकूं कहता भया किः—अपननै काशीविषै जो राजा देख्याथा। "सो यह है"॥

तब अन्ययात्रावासीपुरुष कहतेभये किः—

[१] सो देश अन्य । यह देश अन्य ॥

[२] ताका काल (अवस्था) अन्य । याका काल अन्य ॥

[३] तिसकी वस्तु (सामग्री) अन्य । याकी वस्तु अन्य ।

[४] तिसका अभिमान अन्य इसका । अभिमान अन्य ॥

[५] तिसका कार्य अन्य । इसका कार्य अन्य ॥

[६] तिसके धर्म अन्य । इसके धर्म अन्य ॥

यातैं तिस काशीके राजाकी औ इस भिक्षुककी एकता कैसैं बनै ? "

तब सो प्रथमयात्रावासीपुरुष कहताभया कि—" तिसके औ इसके (१) देश

(२) काल (३) वस्तु (४) अभिमान (५) कार्य औ (६) धर्मका त्याग करीके दोनूंविषै अनुगत (अनुस्यूत) जो पुरुषभाव सो एकहीं है " ॥

सिद्धांतः—तैसें जीवइश्वरके बी देशकालआदिकका त्याग करीके। दोनूंविषै अनुगत जो चेतनमात्रब्रह्म औ आत्मा सो एकहीं है॥ यातै "ब्रह्म सो मैं हूं" औ "मैं सो ब्रह्म हूं" ऐसा दृढ निश्चय करना। सोई तत्त्वज्ञान है ॥

याहीतैं सर्वदुःखकी निवृत्ति औ परमानंदकी प्राप्तिरूप मोक्ष होवै है ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये " तत्त्वमसि" महावाक्यगत " तत्त्वं " पदार्थैक्यनिरूपणनामिका एकादशकला समाप्ता ॥ ११ ॥

अथ द्वादशकलाप्रारंभः १२

ज्ञानीके कर्मनिवृत्तिका प्रकारवर्णन।



॥ तोटक[१६१]छंद ॥

जिन आतमरूप पर्यो[१६२] जु भले ।
तिस त्रैविधकर्म मिटें सकले ॥
तम[१६३] आवृति आश्रित संचित ले ।
निज बोध सु पावक सर्व जले ॥ २४ ॥
जड चेतन गांठ विभेद बले।
दृढराग द्वेष कषाय गले ॥
जलमैं जिम लिप्त न कंजदले[१६४] ।
परसे न अगामि जु कर्म मले ॥ २५ ॥

॥१६१॥ ठुमरीमैं गाया आवे है ॥

॥ १६२ ॥ देख्यो ॥

॥१६३॥ अज्ञानकी आवरण शक्ति के आश्रित संचितकर्मोंकूं लेके ॥ ॥ १६४ ॥ कमलका पत्र ॥

इस जन्म अरंभक कर्म फले ।
सुखदुःखहि भोगत होत प्रले ॥
इस भांति जु होवत जन्म विले ।
पिखं[१६५] रूप पीतांबर स्वं विमले ॥ २६ ॥

* २१५ प्रश्नः—कर्म सो क्या है ?

उत्तरः——शरीर, वाणी औ मनकी जो क्रिया सो कर्म है ॥

२१६ प्रश्नः—कर्म कितनं प्रकारका है ?

उत्तरः——१ संचित २ प्रारब्ध औ ३ क्रियमाण (आगामि) भेदतैं कर्म तीन प्रकारका है ॥

* २१७ प्रश्नः— संचितकर्म सो क्या है ?

उत्तरः——१ अनेकअतीतजन्मोंविषै संचय-किया जो कर्म। सो संचितकर्म है ॥

॥१६५॥ देखिके ॥

* २१८ प्रश्नः— प्रारब्ध कर्म सो क्या है ?

उत्तरः—२ अनेक संचितकर्मनके मध्यसैं परिपक्व भया औ ईश्वरकी इच्छासैं इन वर्त्तमानदेहका आरंभक जो कोईएक संचितकर्म सो प्रारब्धकर्म है ॥

* २१९ प्रश्नः—क्रियमाणकर्म सो क्या है ?

उत्तरः—३ ज्ञानतैं पूर्व वा पीछे इस वर्त्तमानदेहविषै मरणपर्यंत करियेहै जो कर्म । सो क्रियमाणकर्म है ॥

* २२० प्रश्नः—ज्ञानीके कर्मकी निवृत्ति किस रीतिसे होवै है ?

उत्तरः—१ ज्ञानसैं अज्ञानके आवरणअंशकी निवृत्ति होवैहै ॥ आवरणकी निवृत्तिके भये आवरणकूं आश्रयकरिके स्थित संचित कहिये पूर्वके अनेकजन्मविषै किये कर्मकी निवृत्ति (नाश) होवैहै । औ

२ ज्ञानके आगेपीछे इस जन्मविषै किये क्रियमाणकर्मका "मैं अकर्ता अभोक्ता असंग ब्रह्म हूं ॥" इस निश्चयके बलसैं अपनै आश्रय भ्रमजतादात्म्यके नाशकरिके औ रागद्वेषके अभावतैं जलविषै स्थित कमलपत्रकी न्यांई ज्ञानीकूं स्पर्शहोवै नहीं। किंतु ज्ञानीके क्रियमाण जो इस जन्मविषै किये शुभ औ अशुभकर्मका क्रमतैं सुहृद कहिये सकामीभक्त औ द्वेषी कहिये निंदकजन ग्रहणकरैहैं।

३ औ अज्ञानीकी विक्षेपशक्तिके आश्रित ज्ञानीके प्रारब्ध कहिये पूर्वके किसी एकजन्मविषै किये इसजन्मके आरंभ कर्मकी भोगसैं निवृत्ति होवेहै।

तातैं ज्ञानी सर्वकर्मसैं मुक्त है ॥ याहीसैं कर्मरचितजन्मादिकसंसारसैं भी मुक्त है ॥

इसरीतिसैं ज्ञानीके कर्मकी निवृत्ति होवै ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये ज्ञानीकर्मनिवृत्तिप्रकारवर्णननामिका द्वादशकला समाप्ता ॥

सप्तज्ञानभूमिकावर्णन



तोटकछंद

निज बोधकि भूमि सु सप्त अहैं ।
इस भांति वसिष्ठ[१६६] मुनीश कहैं ॥
शुभसाधन संपति आदि लहै ।
श्रवणादिविचार द्वितीय बहै ॥ २७ ॥
निदिध्यासन तीसरभूमि गहै ।
अपरोक्ष निजातम चौथि चहै ॥
हमता ममता बिन पंचम है ।
छटवी सब वस्तु अकार दहै ॥ २८ ॥

॥१६६॥ योगवासिष्ठविषे ॥

सतमी तुरिया जु वरिष्ठिन है ।
सबवृत्ति विलीन चिदात्म रहै ॥
१६७ इव गाढसुषुप्ति न जागत है ।
परमानंद मत्त पीतांबर है ॥ २९ ॥

* २२१ प्रश्न:– सर्वज्ञानिनका निश्चय तौ एकहीं हैं । परंतु स्थितिका भेद काहे तें है ?

उत्तर:–सर्वज्ञानिनकी स्थितिका भेद ज्ञानभूमिकाके भेदतैं है ॥

* २२२ प्रश्न:–सो ज्ञानभूमिका कितनी हैं ?

उत्तर:--१ शुभेच्छा २ सुविचारणा ३ तनुमानसा ४ सत्त्वापत्ति ५ असंसक्ति ६ पदार्थाभाविनी ७ तुरीयगा । ये सात ज्ञानभूमिका हैं॥

॥१६७॥ गाढसुषुप्ति (वत्) ॥

* २२३ प्रश्न:– शुभेच्छा सो क्या है ?

उत्तर:–१ पूर्वजन्मविषै अथवा इसजन्मविषै किये निष्कामकर्म औ उपासनासैं शुद्धऔ एकाग्र-चित्तवाले पुरुषकूं विवेकवैराग्यषट्संपत्ति औ मोक्षइच्छा। ये च्यारी साधन होयके जो आत्माके जाननैकी तीव्रइच्छा होवैहै। सो शुभेच्छा नाम **ज्ञानकी प्रथमभूमिका है ॥**

* २२४ प्रश्न:–सुविचारणा सो क्या है ?

उत्तर:—२ आत्माके जाननैकी तीव्रइच्छासैं ब्रह्मनिष्ठगुरुके विधिपूर्वक शरण जायके। गुरुके मुखसैं जीवब्रह्मकी एकताके बोधक वेदांत-वाक्यकूं श्रवण करिके। तिस श्रवण किये अर्थकूं आपके मनविषैं घटावनैवास्ते अनेकयुक्तियोंसैं मनन (विचार) करना। सो **सुविचारणा** नाम **ज्ञानकी दूसरीभूमिका है ॥**

* २२५ प्रश्नः– तनुमानसा सो क्या है ?

उत्तरः—३ स्वरूपके साक्षात्कार कहिये अपरोक्षअनुभवअर्थ श्रवणमननद्वारा निर्णय किये ब्रह्मात्माकी एकतारूप अर्थके निरन्तर चिंतनरूप निदिध्यासनसैं जो स्थूलमनकी कहिये बहिर्मुखनकी सूक्ष्मता नाम अंतर्मुखता होवैहै। सो तनुमानसा नाम ज्ञानकी तीसरी भूमिका है ॥

* २२६ प्रश्नः– सत्वापत्ति सो क्या है ?

उत्तरः—४ श्रवणमननिदिध्यासनसैं संशय औ विपर्ययसैं रहित स्वरूपसाक्षात्काररूप निर्विकल्पस्थितिके भयेतैं। तत्त्वज्ञानयुक्तमनरूप सत्त्व (शुद्धअंतःकरण) की जो प्राप्ति होवैहै। सो सत्त्वापत्ति नाम ज्ञानकी चतुर्थभूमिका है ॥

* २२७ प्रश्नः—असंसक्ति सो क्या है ?

उत्तरः—५ निर्विकल्पसमाधिके अभ्यासकी परिपक्वतासैं देहविषै सर्वथा अहंताममता गलित होयके। देहादिकविषैं जो सर्वथा आसक्तिका नाम प्रीतिका अभाव होवैहै। सो असंसक्ति नाम ज्ञानकी पंचमभूमिका है ॥

* २२८ प्रश्नः— पदार्थाभाविनी सो क्या है ?

उत्तरः—६ अतिशय निर्विकल्प समाधिके अभ्याससैं देहादिकसर्वपदार्थनका अधिष्ठानब्रह्मरूपसैं प्रतीति होनेकरि जोअभाव कहिये अप्रतीति होवैहै। सो पदार्थाभाविनी नाम ज्ञानकी षष्ठभूमिका है।

* २२९ प्रश्नः— तुरीया सो क्या है ?

उत्तरः—७ज्ञाता ज्ञान औ ज्ञेयरूप त्रिपुटीकी चतुर्थपंचमभूमिकाकी न्यांई भावरूपकरि औ षष्ठभूमिकाकी न्यांई अभावरूपकरि प्रतीति बी

जहां होवै नहीं। ऐसी जो स्वपरसैं उत्थानरहित तुरीयपदविषै मनकी स्थिति तुरीयगा नाम ज्ञानकी सप्तमभूमिका है ॥

* २३० प्रश्नः— ये सप्तमभूमिका किसके साधन हैं ?

उत्तरः—

१—३ प्रथम द्वितीय औ तृतीयभूमिका। तत्त्वज्ञानके साधन हैं। औ

४ [१९८] चतुर्थभूमिका तौ तत्त्वज्ञानरूप होनैतैं जीवन्मुक्ति औ विदेहमुक्तिकै साधन हैं। औ

५-७ पंचमषष्ठ औ सप्तमभूमिका जीवन्मुक्तिके विलक्षणआनंदके साधन हैं ॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदये सप्तज्ञानभूमिकावर्णननामिका त्रयोदशकला समाप्ता ॥ १३ ॥

॥१६८॥

१ कृतोपासन कहिये ज्ञानतैं पूर्व करीह पूर्ण उपासना जिसनैं सो औ

२ अकृतोपासन कहिये ज्ञानतैं पूर्व नहीं करी हैं उपासना जिसनैं । सो

इस भेदतैं चतुर्थभूमिकारूप ज्ञानका अधिकारी दो प्रकारका है ॥ तिनमैं

१ कृतोपासन जो है सो तौ सम्यक्वैराग्यादिसाधनकरि संपन्न होवै हैं औ ज्ञानके अनन्तर अल्पाभ्यास सैं झटिति पंचम आदिकभूमिकाविषै आरूढ होवै है ॥

२ औ अकृतोपासन जो है तामैं सर्वसाधन स्पष्ट प्रतीत होते नहीं किंतु एकदो साधन प्रकट होवे हैं औ अन्यसाधन गोप्य रहते हैं । यातैं सो बुद्धिमान् होवै तौ चतुर्थभूमिकारूप तत्त्वज्ञानकूं पावता हैं । परन्तु बहुकालके अभ्याससैं कदाचित् कोईक पंचमआदिकभूमिकाविषै आरूढ होवै हैं । झटिति नहीं ॥

अथ चतुर्दशकलाप्रारंभः १४

जीवन्मुक्ति विदेहमुक्तिवर्णन



तोटकछंद

जब जानत है निजरूपहिकूं ।
तब जीवन्मुक्ति समीपहिकूं ॥
भ्रमबंध निवृत्ति सदेहहिंकूं[१६९]
सुखसंपति होवत गेहहिंकूं ॥ ३० ॥
विदवान तजे इस देहहिंकूं ।
तब पावत मुक्ति विदेहहिकूं ॥
तम लेश भजे सद नाशहिकूं ।
तज देत प्रपंच अभासहिकूं ॥ ३१ ॥

॥१६९॥ तब शरीरसहित पुरुषकूं भ्रमरूप बंधकी निवृत्तिस्वरूप जीवन्मुक्ति समीपहीकूं कहिये तत्काल होवै है। यह अर्थ है ॥

सरिताँ इव सागर देशहिकूं।
चिनमात्र मिलाय विशेषहिकूं॥
चिद होय भजे अवशेषहिकूं।
नहि जन्म पीतांबर शेशहिकूं॥ ३२॥

* २३१ प्रश्नः—जीवन्मुक्ति सो क्या है?

उत्तरः—देहादिकप्रपंचकी प्रतीतिके होते जो ब्रह्मरूपसैं स्थिति। सो जीवन्मुक्ति है॥

* २३२ प्रश्नः—जीवन्मुक्तिविषैं प्रपंचकी प्रतीति काहतैं होवै है?

उत्तर--आवरण औ विक्षेप। ये दो

॥१७०॥ सागरदेशहिकूं सरिता इव (नदीकी न्यांई)
॥१७१॥ स्थूलसूक्ष्मप्रपंचसहित चिदाभासरूप विक्षेपकूं॥

अविद्याकी शक्तियां हैं । तिनमैं

१ आवरणशक्तिका ज्ञानसैं नाश होवैहै । तातैं ज्ञानीकूं अन्यजन्म होवै नहीं ।

२ परंतु प्रारब्धके बलसैं दग्धधान्यकणकी न्यांई विक्षेपशक्ति (अविद्यालेश) रहैहै ।

तातैं जीवन्मुक्तिविषै प्रपंचकी प्रतीति होवैहै ॥

* २३३ प्रश्न:– जीवन्मुक्तिविषै प्रपंचकी प्रतीति कैसें होवै हैं ?

उत्तर:–

१ जैसैं रज्जुके ज्ञानसैं सर्पभ्रांतिके निवृत्त भये पीछे कंपादिक भासतैं हैं । औ

२ जैसैं दर्पणके ज्ञानीकूं प्रतिबिंब भासताहै । औ

३ जैसैं मरुस्थलके ज्ञानीकूं मृगजल भासताहै । तैसैंतत्त्वज्ञानीकूंजीवन्मुक्तिदशाविषैबाधितभये प्रपंचकी प्रतीति होवैहै ॥

* २३४ प्रश्न:—बाधित भये प्रपंचकी प्रतीतिविषै अन्यदृष्टांत क्या है ?

उत्तरः—दृष्टांतः—जैसैं महाभारतके युद्धमें द्रोणाचार्यके मरण भये पीछे अश्वत्थामाआदिकके साथि युद्ध भयाहै ॥ तब सत्यसंकल्पश्रीकृष्ण-परमात्मानै यह संकल्प किया कि:— " इस युद्धकी समाप्तिपर्यंत यह रथ औ घोडे ज्यूंकेत्यूंही बनै रहैं "। यह चिंतनकरिके युद्धभूमिमैं आये॥ तहां अश्वत्थामाआदिकोंनै ब्रह्मास्त्र (अग्निअस्त्र) आदिकका समूह डाऱ्या। तिसकरि तिसी क्षणविषै अर्जुनके रथ औ घोडे भस्मीभूत भये। तौ बी श्रीकृष्णपरमात्मारूप सारथिके संकल्पके बलसैं ज्यूंकेत्यूं बनेरहै। जब युद्ध समाप्त भया तब भस्मीका ढेर होगया ॥

सिद्धांतः—तैसैं
१ स्थूलदेहरूप रथ है ।
२ ताके पुण्यपापरूप दोचक्र हैं । औ
३ तीनगुणरूप ध्वज है । औ
४ पांचप्राणरूप बंधन है । औ
५ दशइंद्रिय घोडे हैं । औ
६ शुभअशुभशब्दादिपांचविषयरूपमार्गहै।औ
७ मनरूप लगाम है । औ
८ बुद्धिरूप सारथि (श्रीकृष्ण) है । औ
९ प्रारब्धकर्मरूप ताका संकल्प है । औ
१० अहंकाररूप बैठनैका स्थान है । औ
११ आत्मारूप रथी (अर्जुन) है ।
१२ ताके वैराग्यादिसाधनरूप शस्त्र हैं ।
सो रथपर आरूढ होयके सत्संगरूप रणभूमि-मैं गया । ताकूं गुरुरूप अश्वत्थामाआदिकनै

महावाक्यका उपदेशरूप ब्रह्मास्त्रआदिक मारचा। तिसकरि ज्ञानरूप अग्नि उदय होयके तिसी क्षणविषे देहादिप्रपचरूप रथादिकसर्वका बाध भया। तौ बी श्रीकृष्णरूप सारथिस्थानी बुद्धिके प्रारब्धकर्मरूप संकल्पके बलसैं देहादिकका नाश होता नहीं[१७२]। किंतु पीछे बी देहादिककी प्रतीति होवैहै ॥ याहीकूं[१७३] बाधितानुवृत्ति कहैहैं ॥

रसरीतिसैं यह बाधित भये प्रपंचकी प्रतीतिविषे दृष्टांत हैं ॥

● २३५ प्रश्नः– विदेहमुक्ति सो क्या है ?

उत्तरः—

१ प्रपंचकी प्रतीतिरहित ब्रह्मस्वरूपसैं स्थिति। वा

२ प्रारब्धकर्मके भोगसैं नाश भये पीछे स्थूलसूक्ष्म

शरीरकेआकारसैं परिणामकूं प्राप्त भयेअज्ञानका
चेतनविषै विलय ।
सो विदेहमुक्ति है ॥

।।१७२।। जिसका नाश होवै है सो नाशका प्रति योगी है ।।

१ ता प्रतियोगी की नाशविषै प्रतीति होवै है । औ

२ बाधविषै प्रतियोगीकी प्रतीति होवै नहीं । किंतु तीन कालअभाव प्रतीति होवै है ।

यह नाश और बाधका भेद है ।

।।१७३।। जैसें कुलालका चक्र । दंडसें फेरनैका प्रयत्न छोडेहुये पीछे बी वेगके बलसैं फिरता है । तैसें बाध हुये पीछे बी प्रारब्धकर्मसैं देहादिप्रपंचकी जो प्रतीति होवै । सो बाधितानुवृत्ति है ।।

* २३६ प्रश्न:–प्रारब्धके अन्त भये कार्यसहित अज्ञान लेशका विलय किस साधन सैं होवै हैं ?

उत्तरः––प्रारब्धके अंत भये अधिक वा न्यून मूर्छाकालमैं यद्यपि ब्रह्माकारवृत्तिका असंभव है औ विद्वानकूं विधि बी नहीं हैं। तथापि सुषुप्तिकी न्यांई। ता मूर्छाकालमें बी ब्रह्मविद्याकासंस्कार है तामैं आरूढ चेतनसैंकार्यसहित अज्ञानलेशका विलय (नाश) होवैहै॥ औ काष्ठआरूढअग्निसैं तृणादिकका दाह होयके आपके बी दाहकी न्यांई। ता संस्कारआरूढचेतनसैं प्रपंचका विनाश होयके आप (ज्ञानके संस्कार) का बी विनाश होवै हैं। पीछे असंगशुद्धसच्चिदानन्द स्वप्रकाश अपना आप ब्रह्म अवशेष रहता है॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये जीवन्मुक्तिविदेह-मुक्तिवर्णन० चतुर्दशकला समाप्ता ॥ १४ ॥

अथ पंचदशकलाप्रारंभः १५

वेदांतप्रमेय[१७४] (पदार्थ) वर्णन



ललितछंद ॥ (गोपिकागीतवत्)

जन तु जानिले[१७५] ज्ञेय अर्थकूं ।
सकल छेद सं-दे अनर्थकूं ॥
सुगति कौन है हेतु ताहिको ।
[१७६]जनक बीचको कौन वाहिको ॥ ३३ ॥
विषय बोधको कौन जानिले ।
प्रतक ईशको तत्त्व मानिले ॥
[१७७]अहमअर्थकूं खूब सोजिले ।
"तत्" पदार्थकूं शुद्ध खोजिले ॥ ३४ ॥

॥१७४॥

१ वेदांतशास्त्ररूप प्रमाणसें जन्य जो यथार्थज्ञान । सो प्रमा है ॥

२ ता प्रमासैं जाननै योग्य जो पदार्थ । सो प्रमेय है ॥ तिनका इहां कथन है ॥ यातैं इस (पञ्चदशम) कलाके विचारतैं प्रमेयगतसंशयकी निवृत्ति होवै है ॥

प्रमेयगतसंशयका कथन हमारे किये बालबोधिनीटीकासहित बालबोधनामकग्रन्थके नवमउपदेशविषैं किया है । तहां देखलेना ॥

॥१७५॥ वेदांतके प्रमेयरूप पदार्थनकूं जामिले ॥

॥१७६॥ वाहिको (मोक्षके हेतु ज्ञानको) बीचको जनक (अवांतरसाधन) कौन है ?

॥१७७॥ अहं (त्वं) पदके अर्थकूं ॥

परमआँतमा[१७८] एक मानिले ।
तहँ सदादि ऐश्वर्य आनिले ॥
सत चिदात्म सो सर्वदा[१७९] अहै ।
इस पीतांबरो ज्ञानकूं गहै ॥ ३५ ॥

* ३३७ प्रश्न:—मोक्षका स्वरूप क्या है ?

उत्तरः—

१ कार्यसहित अज्ञानरूप अनर्थकी कहिये बंधनकी निवृत्ति । औ

२ परमानन्दरूप ब्रह्मकी प्राप्ति ।

यह मोक्षका स्वरूप है

॥ १७८ ॥ ब्रह्म ॥

॥ १७९ ॥ सच्चिदानन्दस्वरूप सो (ब्रह्मआत्माकी एकता) सर्वदा (तीनोंकालमें) है ॥

* २३८ प्रश्नः–तिस मोक्षका साक्षात्साधन क्या है ?

उत्तरः––ब्रह्मका औ आत्माकी एकताका अपरोक्षज्ञान । मोक्षका साक्षात्साधन है ॥

* २३९ प्रश्नः––मोक्षका अवांतर (ज्ञानद्वारा) साधन क्या है ?

उत्तरः––निष्कामकर्म औ उपासनादिक अनेक मोक्षके अवांतरसाधन हैं ॥

* २४० प्रश्नः––तिसज्ञानका विषय क्या है ?

उत्तरः––आत्मा औ ब्रह्मकी एकता ज्ञानका विषय है ॥

* २४१ प्रश्नः–आत्माका स्वरूप क्या है ?

उत्तरः--१ देह–इंद्रिय–प्राण–मन–बुद्धि-- अज्ञान औ शून्यसैं भिन्न । २ अकर्ता । ३ अभोक्ता । ४ असंग । ५ व्यापक । औ ६ चेतन आत्माका स्वरूप है ॥

* २४२ प्रश्नः—ब्रह्मका स्वरूप क्या है ?

उत्तरः—१ निष्प्रपंच । २ असंग । ३ परिपूर्ण । औ ४ चेतन । ब्रह्मका स्वरूप है ।

* २४३ प्रश्नः—ब्रह्मआत्माकी एकता कैसी है ?

उत्तरः—१ सच्चिदानन्द । २ ऐश्वर्यस्वरूप। ३ सदाविद्यमान । ब्रह्म आत्माकी एकता है ॥

* २४४ प्रश्नः—ज्ञानका स्वरूप क्या है ?

उत्तरः—जीवब्रह्मके अभेदका निश्चय ज्ञानका स्वरूप है ॥

* २४५ प्रश्नः—ज्ञानका साक्षात् अन्तरङ्ग (समीपका) साधन क्या है ?

उत्तरः—ब्रह्मनिष्ठगुरुके मुखसैं महावाक्यके अर्थका श्रवण । ज्ञानका साक्षात्अंतरंग साधन है ॥

* २४६ प्रश्नः–ज्ञानके परंपराअंतरंगसाधन कौनसें है?

उत्तरः--१ विवेक। २ वैराग्य। ३ षट्संपत्ति (शम। दम। उपरति। तितिक्षा। श्रद्धा। समाधान)। ४ मुमुक्षुता। ५ "तत्" पद औ "त्वं" पदके अर्थका शोधन। ६। श्रवण। ७ मनन औ ८ निदिध्यासन। ये आठ ज्ञानके परंपरासैं अंतरंगसाधन हैं ॥

* २४७ प्रश्नः–ज्ञानके बहिरंग(दूरके)साधन कौन हैं?

उत्तरः–निष्कामकर्म औ निष्कामउपासना आदिक। ज्ञानके बहिरंगसाधन हैं ॥

* २४८ प्रश्नः– ज्ञानके सर्व मिलिकैं कितनें साधन है?

उत्तरः–ज्ञानके सर्वमिलके एकादश (११ वा कछु अधिक) साधन हैं ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये वेदांतप्रमेयनिरूपणनामिका पंचदशकला समाप्ता ॥ १५ ॥

मंगलाचरणम्

चैतन्यं शाश्वतं शांतं व्योमातीतं निरंजनम् ॥
नादबिंदुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥
सर्वश्रुतिशिरोरत्नविराजितपदांबुजम् ॥
वेदांतांबुजमार्तंडं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ २ ॥
अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया ॥
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥३॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ॥
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ४ ॥
अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ॥
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥५॥
अखंडानंदबोधाय शिष्यसंतापहारिणे ॥
सच्चिदानंदरूपाय रामाय गुरवे नमः ॥ ६ ॥

इति मंगलाचरणम्

अथ श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रहः



उपोद्घातकीर्त्तनम्

स्मृत्वाऽद्वैतपरात्मानं शंकरं परमं गुरुम् ।
तात्पर्यसंविदे वक्ष्ये श्रुतिषड्लिंगसंग्रहः ॥ १ ॥

टीकाः—अद्वैतपरमात्मारूप जो परमगुरु शङ्कर हैं । तिनकूं स्मरण करिके । श्रुतिनके तात्पर्यके ज्ञानअर्थ । मैं श्रुतिषड्लिंगसंग्रह नामक लघुग्रंथकूं कहताहूं ॥ १ ॥

विषयासक्ति-मानस्थ मेयस्थ-संशय-भ्रमाः ।
चत्वारः प्रतिबंधाः स्युर्ज्ञानादार्ढ्यस्य हेतवः॥

टीकाः—१ विषयासक्ति २ प्रमाणगतसंशय ३ प्रमेयगतसंशय औ ४ भ्रम कहिये विपर्यय ।

ये च्यारी ज्ञानकी अदृढताके हेतु प्रतिबंध होवैहैं ॥ २ ॥

आद्यस्य विनिवृत्तिःस्याद्वैराग्यादिचतुष्टयात्
श्रवणेन द्वितीयस्य मननात्तार्त्तीयस्य च ॥३॥

टीका:--प्रथमकी निवृत्ति । वैराग्य है आदि जिसके ऐसे साधनोंके चतुष्टयतैं होवै है औ द्वितीयकी निवृत्ति श्रवणसैं होवै है औ तृतीयकी निवृत्ति मननतैं होवै है ॥ ३ ॥

ध्यानेन तु चतुर्थस्य विनिवृत्तिर्भवेद्ध्रुवम् ।
पूर्वपूर्वानिवृत्त्या नैवोत्तरोत्तरनाशनम् ॥ ४ ॥

टीका:-- औ चतुर्थप्रतिबंधकी निवृत्ति । निदिध्यासनसैं निश्चित होवै है ॥ पूर्वपूर्वकी अनिवृत्तिकरि उत्तरउत्तरका नाश कहिये निवृत्ति नहीं होवै है ४ ॥

विषयासक्तिनाशेन विना नो श्रवणं भवेत् ।
ताभ्यामृते न मननं न ध्यानं तैर्विना भवेत् ५

टीकाः—विषयासक्तिके नाशसैं विना श्रवण होवै नहीं और तिन दोनूं विना मनन नहीं होवै है औ इन तीनूंसैं विना निदिध्यासन होवै नहीं ॥ ५ ॥

स्ववर्णाश्रमधर्मेण तपसा हरितोषणात् ।
साधनं प्रभवेत्पुंसां वैराग्यादिचतुष्टयम् ॥६॥

टीकाः—स्व कहिये मिथ्यात्मा शरीर । ताके वर्ण अरु आश्रमसंबंधी धर्मकरि औ कृच्छ्रचांद्रायणादितपकरि औ हरिभजन किंवा सर्वभूतन पर दयादिरूप हरिके संतोषकारक कर्मतैं पुरुषनकूं वैराग्यादिकका चतुष्टयरूप साधन प्रकर्षकरि होवै है ॥ ६ ॥

तत्सिद्धावुपसन्नः सन् गुरुं ब्रह्मविदुत्तमम् ।
ज्ञानोत्पत्त्यमहावाक्यमनार्तंकुर्याद्धितन्मुखात्७

टीका:—तिन च्यारी साधनोंकीसिद्धिके हुये ब्रह्मवेत्ताओंविषैं उत्तम कहिये निर्दोषगुरुके प्रति उपपत्तियुक्त कहिये शरणागत हुआ । ज्ञानकी उत्पत्ति अर्थ तिस गुरुके मुखतैं वेदविषैं प्रसिद्ध अर्थसहित महावाक्यके श्रवणकूं करै ॥ ७ ॥

तत्सिद्धौ द्वापरभ्रांतिप्रहाणाय मुमुक्षुभिः ।
श्रवणं मननं ध्यानमनुष्ठेयं फलावधि ॥ ८ ॥

टीका:—ता ज्ञानकी, सिद्धि कहिये उत्पत्तिके हुये । मुमुक्षुनकरि द्वापर जो द्विविधसंशय औ भ्रांति जो विपरीतभावना । तिनके नाशअर्थ प्रमाणसंशयादित्रिविध प्रतिबंधके नाशरूप फल पर्यंत जैसैं होवै तैसै श्रवण मनन औ निदिध्यासन करनेकूं योग्य है ॥ ८ ॥

श्रवणस्य प्रसिद्ध्यैव भवतोऽन्ये तथा सति ।
द्वयोर्मूलं तु श्रवणं कर्त्तव्यं तद्वि धीधनैः ॥९॥

टीकाः---श्रवणकी प्रकर्षकरि सिद्धिसैंही अंतके दो जे मनन अरु ध्यान वे होवैहैं । तैसैं हुये तिन दोनूंका प्रसिद्धमूल जो श्रवण । सो तो बुद्धिरूप धनवानोंकरि प्रथमकर्तव्य है ॥ ९ ॥

वेदांतानामशेषाणामादिमध्यावसानतः ।ब्रह्मा
त्मन्येव तात्पर्यमिति धीः श्रवणं भवेत्॥१०॥

टीकाः---तात्पर्यके निर्णायक षट्लिंगरूप युक्तिनकरि " सर्ववेदांत जे उपनिषद् तिनका आदि मध्य औ अंततैं ब्रह्मरूप आत्मविषैहीं तात्पर्य है ' " ऐसी जो बुद्धि कहिये निश्चय । सो श्रवण होवै है ॥ यह श्रवणका शास्त्रउक्त लक्षण है ॥ १० ॥

उपक्रमोपसंहारावभ्यासोऽपूर्वता फलम् ।
अर्थवादोपपत्ती च लिंगं तात्पर्यनिर्णये॥११॥

टीका:-तिन षट्‌लिंगनकूं अब नामकरि निर्देश करतेहैं:-१ उपक्रम अरु उपसंहार इन दोनूंकी एकरूपता । २ अभ्यास । ३ अपूर्वता । ४ फल । ५ अर्थमाद । ६ औ उपपत्ति । यह प्रत्येक तात्पर्यके निर्णयविषै लिंग हैं ॥ ११ ॥

उपक्रम औ उपसंहार ॥

वस्तुनः प्रतिपाद्यस्यादावंते प्रतिपादनम् ।
उपक्रमोपसंहारौ तदैक्यं कथितं बुधैः॥१२॥

टीका:—अब षट्श्लोकनकरि प्रत्येक लिंगके लक्षणकूं कहेहैं:-प्रकरणकरिके प्रतिपादन करनेकूं योग्य जो ब्रह्मरूप अद्वितीयवस्तु है । ताका प्रकरणके आदिविषै तथा अंतविषै जो

प्रतिपादन । सो उपक्रम अरु उपसंहार है ॥ तिनमैंआदिविषै जो प्रतिपादन । सो उपक्रम है । औ अंतविषै जो प्रतिपादन । सो उपसंहार है । तिन दोनूकी एकलिंगरूपता पंडितोंने कही है ॥ १२ ॥

२ अभ्यास

वस्तुनः प्रतिपाद्यस्य पठनं च पुनः पुनः ।
अभ्यासः प्रोच्यते प्राज्ञैः स एवावृत्तिशब्द-भाक् ॥ १३ ॥

टीकाः--प्रकरणकरि प्रतिपादन करनेयोग्य अद्वितीयवस्तुका तिसप्रकरणके मध्यविषै जो पुनः पुनः पठन । सो पंडितनकरि अभ्यास कहिये है । सोई अभ्यास आवृत्ति शब्दका वाच्य है ॥ १३ ॥

३ अपूर्वता

श्रुतिभिन्नप्रमाणेनाविषयत्वपूर्वता।
कुत्रचित्स्वप्रकाशत्वमप्यमेयतयोच्यते ॥१४॥

टीकाः—प्रकरणकरि प्रतिपाद्य अद्वितीयवस्तुकी जो श्रुतिसैं भिन्न कहिये प्रत्यक्षादिलौकिकप्रमाणकरि अविषयता है । सो अपूर्वता है । औ कहींक ता अद्वितीयवस्तु स्वप्रकाशता बी अमेयता कहिये सर्वप्रमाणकी अविषयतारूप हेतुकरि अपूर्वता कहिये है ॥ १४ ॥

४ फल

श्रूयमाण तु तज्ज्ञानात्तत्प्राप्त्यादिप्रयोजनम्।
फलंप्रकीर्तितंप्राज्ञैर्मुख्यंमोक्षेकलक्षणम्॥१५॥

टीकाः—औ प्रकरणकरि प्रतिपाद्य अद्वितीयवस्तुके ज्ञानतैं प्रकरणविषै श्रूयमाण कहिये सुन्या जो तिसकी प्राप्ति आदिक प्रयोजन । सो पंडितोंनै मोक्षरूप एकलक्षणवाला मुख्य फल कहाहै॥१५॥

५ अर्थवाद

वस्तुनः प्रतिपाद्यस्य प्रशंसनमथापि वा ॥
निंदा तद्विपरीतस्य ह्यर्थवादःस्मृतोबुधैः॥१६॥

टीकाः—प्रकरणकरि प्रतिपाद्य अद्वितीय वस्तुका जो प्रशंसन कहिये स्तुति अथवा तिसतैं- विपरीत कहिये द्वैतकी निंदा बी पंडितोंनैं अर्थवाद कहा है ॥ १६ ॥

६ उपपत्ति

वस्तुनः प्रतिपाद्यस्य युक्तिभिः प्रतिपादनम् ।
उपपत्तिः प्रविज्ञेया दृष्टांताद्या ह्यनेकधा॥१७॥

टीकाः--प्रकरणकरि प्रतिपाद्य अद्वितीयवस्तु- का युक्तिसें जो प्रतिपादन । सो दृष्टांतआदिक अनेकप्रकारकी युक्तिरूप उपपत्ति जाननेकूं योग्य है ॥ १७ ॥

एतार्ल्लिंगविचारेण भवेत्तात्पर्यनिर्णयः ॥
तात्पर्यं यस्य शब्दस्य यत्र सः स्यात्तदर्थकः॥
टीकाः—उक्तप्रकारके षट्लिंगनके उपनिषदनविषै विचारसै उपनिषदनका अद्वैत कहिये प्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मविषैं जो तात्पर्य है। ताका निश्चय होवै है ॥ औ जिस शब्दका जिस अर्थविषै तात्पर्य होवै । सो ता शब्दका अर्थ होवै है। अन्य कहिये केवल वाच्यअर्थ नहीं ॥ १८ ॥
मंदानां श्रुतिसंसिद्धया मानसंशयनुत्तये।
करोम्यवनिनिक्षिप्तनिधिवल्लिंगकीर्त्तनम्॥१९॥
टीकाःमंद कहिये अपंडितजनोंके वेदांतनके अद्वितीयब्रह्मविषै तात्पर्यके निश्चयरूप।" श्रवणकी सिद्धिकरि " वेदांत अद्वैतब्रह्मके प्रतिपादक है वा अन्यअर्थके प्रतिपादक है ?" इस ज्ञानरूप प्रमाणसंशयके नाशअर्थ।

भूमिविषै गाडेहुये निधिके सिद्धिकरि कीर्त्तनकी न्यांई । मैं लिंगनके कीर्तनकूं करूं हूं ॥ १९ ॥

तत्त्वालोके विशेषोऽपि विचारस्तददर्शनात् ।
मयात्वेषां समासेन क्रियतेदिक्प्रदर्शनम् ॥२०॥

टीकाः—यद्यपि आनंदगिरिस्वामीकृत तत्त्वालोकनामकग्रंथविषै इन लिंगनका विशेष विचार किया है । यातैं इस लघुग्रंथका प्रयोजन नहीं है। तथापि ता तत्त्वालोकके अदर्शनतैं । मुजकरि तो संक्षेपसैं इन लिंगनकी दिशामात्रका प्रदर्शन करिये है ॥ २० ॥

सर्वेषूपनिषद्ग्रंथेषूपासनमनेकधा ।
ज्ञानशेषं तु तज्ज्ञेयं चित्तशुद्धिकरं यतः॥२१॥

टीकाः—सर्वउपनिषद्रूप ग्रन्थनविषै अनेक प्रकारका उपासन कहिये ध्यान कहा है। सो तो ज्ञानका शेष कहिये उपकारक जाननेकूं

योग्य है । जातैं चित्तकी शुद्धिका करनेवाला है । यातैं उपनिषद्‌विषै जो उपासनाभाग है । ताके पृथक् लिंगनके विचारका उपयोग नहीं है । यातैं सो इहां नहीं किया ॥ २१ ॥

इति श्रीश्रुतिषड्‌लिंगसंग्रहे उपोद्‌घातकीर्तनं
नाम प्रथमं प्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथेशावास्योपनिषल्लिंगकीर्त्तनम् २

ईशावास्यमुपक्रम्योपसंहारः स पर्यगात् ।
अनेजदेकमित्याद्योऽभ्यासस्तस्याद्वयस्य च॥

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "ईशावास्यमिद ँ सर्व"। कहिये "यह सर्वजगत् । ईश्वरकरि आवास्य कहिये आच्छादन करनेकूं योग्य है"। ऐसैं प्रथममन्त्रसैं उपक्रम करिके । [२] "स पर्यगाच्छुक्रे। कहिये" सो च्यारीओरतैं जाता भया औ शुद्ध है । इस मंत्रनकरि उपसंहार है ॥

२ अभ्यासः—औ "अनेजदेकं मनसो जवीयो"। कहिये "अचंचल एक मनसैं वेगवान् है"। इस आदि अर्थरूप तिस अद्वैतका अभ्यास है। इहां आदिशब्दकरि "तदंतरस्य सर्वस्य" कहिये "सो इस सर्वके अंतर है"। इस मंत्रका ग्रहण है ॥ १ ॥

नैनद्देवा अपूर्वत्वं फलं मोहाद्यभावकम् ।
कुर्वन्नित्यनुवाद्यै वासूय्या भेदविनिंदनम् ॥२॥

२ अपूर्वताः—नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्शत्"। कहिये इसकूं देव जे इंद्रिय वे न प्राप्त होते भये। सो पूर्व गया है"। इस ४ मंत्रकरि उपनिषदूनतैं अन्य प्रत्यक्षादिप्रमाणनकी अविषयतारूप अपूर्वता कही है ॥

४ फलः—औ " तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः " । कहिये " तहां एकताके देखनेहारेकूं कौन मोह है । कौन शोक है " । इस ७ मंत्रसैं मोहआदिकका अभावरूप फल कहा है ॥

५ अर्थवादः—कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः " कहिये " इहां कर्मनकूं करता हुया शतवर्ष जीवनेकूं इच्छे " । इस २ मंत्रसैं जीवनेकी इच्छावाले भेददर्शीकूं कर्म करनेका अनुवाद करिकेहीं । पीछे असूर्य्या-नाम ते लोकाः " । कहिये " वे असुरनके लोक प्रसिद्ध हैं " । इन ३ मंत्रसैं भेदज्ञानकी निंदा अरु अर्थात् अभेदज्ञानकी स्तुतिरूप अर्थवाद कहा है ॥ २ ॥

तस्मिन्नपो मातरिश्वेत्युपपत्तिः प्रदर्शिता ।
एतैरीशोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते ॥ ३ ॥

६ उत्पत्तिः—औ "तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति" कहिये "ताके होते वायु जलकूं धारता है"। ऐसैं इस ४ मंत्रसैं उपपत्ति कहिये अभेदबोधनकी युक्ति दिखाई ॥ इन लिंगोंकरि ईशोपनिषद्का अद्वैतब्रह्मविषै तात्पर्य अङ्गीकार कहिये है ॥ ३ ॥

इति श्री० ईशोपनिषल्लिंगकी० द्वितीय प्रकरणं० २

अथ केनोपनिषल्लिंगकीर्तनम् ॥३॥

श्रोत्रस्येत्याद्युपक्रम्य प्रतिबोधादिवाक्यतः ।
उपसंहार एवोक्तस्तदैक्यं ज्ञायते बुधैः ॥ १ ॥

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] "श्रोत्रस्य

श्रोत्रं "। कहिये " श्रोत्रका श्रोत्र है " इत्यादि १ खण्डके २ वाक्यसैं उपक्रमकरिके ॥ [२] " प्रतिबोधविदितं "। कहिये " बोधबोधके प्रति विदित हैं "। इत्यादि १।१२ वाक्यतैं उपसंहार ही कहा है। इन दोनूंकी एकता पंडितनकरि जानिये है ॥ १ ॥

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धित्याद्यभ्यास उदीरितः।
न तत्रेत्याद्यपूर्वत्वं प्रेत्यास्मादिति वै फलम्।

२ अभ्यासः—तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि "। कहिये " ताहीकूं तू ब्रह्म जान " इत्यादि १।४-८ अभ्यास कहा है ॥

३ अपूर्वता:—औ "न तत्र चक्षुर्गच्छति "। कहिये " तिसविषै चक्षु गमन करता नहीं " इत्यादि १। ३ उपनिषदनतैं भिन्न प्रमाणकी अविषयतारूप अपूर्वता है ॥

४ फलः—" भूतेषु भूतेषु विचिंत्य धीराः " कहिये " धीर। सर्वभूतनविषै जानिके "। ऐसैं आत्मज्ञानकूं अनुवाद करिके " प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवंति " कहिये " इस लोकतैं देह अरु प्राणके वियोगकूं पायके अमृतरूप होवे है "। ऐसैं ३-९ प्रसिद्धफल कहा है ॥ २ ॥

ब्रह्महेत्याद्यर्थवादोऽविज्ञातमिति चांतिमम् ।
एतैः केनोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते॥ ३ ॥

५ अर्थवादः—औ " ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये " कहिये " ब्रह्म देवनके अर्थ विजय देताभया "। इत्यादि इन ३। १ वाक्यनसैं आख्यायिकारूप अर्थवाद कहा है ॥

६ उपपत्तिः—औ " यस्यामतं तस्य मतं " कहिये " जिसकूं अज्ञात है तिसकूं ज्ञात है "। इत्यादिरूप इस २। ३ स्वयंप्रकाश अद्वैत वस्तुके साधक वाक्यकरि अंतिम कहिये " उपपत्ति

कहिये तर्कमययुक्तिरूप षष्ठलिंग कहा है ॥ इन लिंगोंकरि केनउपनिषदका अद्वैतब्रह्मविषै तात्पर्य अंगीकार करिये है ॥ ३ ॥

इति श्री० केनोपनिषल्लिंगकीर्तन नाम तृ० प्र० समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ कठोपनिषल्लिंगकीर्तनम् ॥४॥

यथं प्रेते मनुष्ये त्वित्यादिः सामान्यतस्तथा ।
अन्यत्र धर्मतस्त्वित्यादिवाक्याच्च विशेषतः ॥

१ उपक्रमः उपसंहारः- [१] " येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये " । कहिये " मेरे मनुष्यविषै जो यह संशय हैं" इत्यादि ।१।१ १०।सामान्यतैं उपक्रम है । तथा " अन्यत्र धर्मादन्यत्रा-धर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात् " कहिये " धर्मतैं भिन्न अरु अधर्मतैं भिन्न औ इस कार्यकारणतैं भिन्न है ' इत्यादि १।२।४४ वाक्यतैं विशेषकरि उपक्रम है ॥ १ ॥

उपक्रमोऽङ्गुष्ठमात्र इत्यारभ्योपसंहृतिः ।
न जायतेऽशरीरं च नित्यानां नित्य एव सः २
चेतनोऽचेतनानां च बहूनामेक एव च ।
अस्तीत्येवोपलब्धव्य इत्याद्यभ्यास ईरितः ३

(२) औ " अंगुष्ठमात्रः पुरुषोऽतरात्मा " कहिये " अंगुष्ठमात्र पुरुष अंतरात्मा है" । ऐसैं आरंभ करिके इस २।६।१७ वाक्यसैं उपसंहार कहा है ॥

२ **अभ्यासः**—औ. " न जायते म्रियते वा " । कहिये "जन्मता नहीं वा मरता नहीं" । १।२।१८ औ " अशरीरꣳ शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम् । " कहिये अस्थिर शरीरनविषैं स्थित अशरीरकूं " २ । २ । २१ औ नित्यो नित्यानां " । कहिये " सो नित्योंका नित्य है ।" २ । ५ । १३ । ॥ २ ॥

औ "चेतनश्चेतनानामेको बहुनां विदधाति कामान्"। कहिये "चेतनोंका चेतन है। बहुतनके मध्य एक हुया कामोंकूं करता है"। २। ५। २३। औ "अस्तीत्येवोपलब्धव्यः"। "है" ऐसैंहीं जाननेकूं योग्य है। २। १३ इत्यादि बहुकरिके अभ्यास कहा है ॥ ३ ॥

नैव वाचा न मनसेत्याद्यपूर्वत्वमिंगितम् । मृत्युप्रोक्तां त्वेवमाद्यात्फलं श्रुत्या समीरितम् ४

३ अपूर्वताः—नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा" कहिये "नहीं वाणीकरि न मनकरि न चक्षुकरि जाननेकूं शक्य है"। १। ६। १६ इत्यादि अपूर्वता अभिप्रेत है ॥

४ फलः—औ "मृत्युप्रोक्तां नचिकेतोऽथ लब्ध्वा विद्यामेतां योगविधिं च कृत्स्नम्। ब्रह्म प्राप्तो विरजोऽभूद्विमृत्युरन्योऽप्येवं यो विदध्यात्ममेव" कहिये "अनंतर नचिकेता। यमकरि कही इस विद्याकूं औ संपूर्ण योगविधिकूं पायके ब्रह्मकूं प्राप्त निर्मल मृत्युरहित होताभया। अन्य बी जो अध्यात्मकूंहीं जानैगा सो ऐसे होवैगा,'। इत्यादि १ अध्यायकी ६ षष्ठवल्लीके १८ वाक्यतैं। श्रुतिमें फल सम्यक् कहा है ॥ ४ ॥

स लब्ध्वामोदनीयं वै फलं प्रोक्तं स्फुटं तथा।
ब्रह्म क्षत्रं च युगलमोदनं त्वेवमादितः ॥५॥

तैसैं "स मोदते मोदनीयं हि लब्ध्वा"। कहिये "सो मोदरूपसैं अनुभव करने योग्यकूं पायके मोदकूं पावता है"। १। २। १३इस वाक्यकरि ऐसैं यह बी स्पष्ट फल कहा है॥

अर्थवादः—औ "यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनः" । कहिये "जाका ब्राह्मण औ क्षत्रिय दोनूं ओदन होवै है" । १ । २ । २४ इत्यादि वाक्यतैं ॥ ५ ॥

अर्थवादश्च युक्तिर्वै त्वग्निरित्यादिवाक्यतः ।
एभिः कठोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते ॥६॥

अद्वैतब्रह्मकी स्तुतिरूप अर्थवाद कहा है । तैसैं "मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति" कहिये "इहां नानाकी न्यांई देखता है सो मृत्युतैं मृत्युकूं पावता है" इस १ । ४ । १० आदिक १ । ४ । ११ वाक्य-नसैं भेदज्ञानकी निंदारूप जो अर्थवाद कहा है सो बी "च" शब्दकरि सूचन किया ॥ औ

६ उपपत्तिः--"अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव "। कहिये " जैसैं एक अग्नि भुवनके प्रति प्रविष्ट हुया रूप----रूपके तांई प्रतिरूप होता भया ,"। २ । ५ । १--११ इत्यादि तीनमन्त्ररूप वाक्यनकरि औ चकारसैं " येन रूपं रसं गंधं " कहिये " जिस करि रूपकूं रसकूं गंधकूं जानता है। इस २ । ४ । ३ आदिक अनेकवाक्यनसैं बी युक्तिशब्दकी वाच्य उपपत्ति कही है ॥ इन लिंगोंकरि कठवल्लीउपनिषद्का अद्वैतब्रह्मविषै तात्पर्य अङ्गीकार करिये है ॥ ६ ॥

इति श्री० कठोपनिषल्लिंगकी च०

प्र० समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ प्रश्नोपनिषल्लिंगकीर्तनम् ॥८॥

ब्रह्मपरा हि वै ब्रह्मनिष्ठा इत्युपक्रम्य तत् ।
तान्होवाचैतावदेवोपसंहारस्तदेकता ॥ १ ॥

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] "ब्रह्मपरा ब्रह्मनिष्ठा परं ब्रह्मान्वेषमाणाः" । कहिये "ब्रह्मविषे तत्पर ब्रह्मनिष्ठ परब्रह्म खोजते हुये"। १ । १ ऐसें तिस परब्रह्मकूं ही उपक्रम करिके । [२] " तान्होवाचैतावदेवाहमेतत्परं ब्रह्म वेद नातः परमस्ति " । कहिये तिनकूं कहता भयाः—इतनाही मैं इस परब्रह्मकूं जानता हूं । इसतैं पर नहीं है । ६ प्रश्नके ७ वाक्यसैं ऐसैं उससंहार है इन दोनूंकी एकलिंगरूपता है ॥ १ ॥

एतद्वै सत्यकामेति यत्तदभ्यास उच्यते ।
इहैवांतः शरीरे तु सोम्य! चेत्याद्यपूर्वता॥२॥

३ अभ्यासः–औ " एतद्वै सत्यकाम ! परं चापरं च यदोंकारः " । कहिये " हे सत्यकाम ! यह निश्चयकरि परब्रह्म औ अपरब्रह्म है । जो ओंकार है " । ५ । २ ऐसैं औ " यत्तच्छांतमजरममृतमभयं परं च " । कहिये " जो सो शांत--अजर--अमृत--अभय अरु परब्रह्म है " । ५ । ७ ऐसैं अभ्यास कहिये है॥औ

३ अपूर्वताः––इहैवांतःशरीरे सोम्य ! स पुरुषो यस्मिन्नताः षोडशकलाः प्रभवंति " कहिये " हे सोम्य ! इसीहीं शरीरके भीतर सो पुरुष है । जिसविषे ये षोडशकला ऊपजतीया हैं " । इस ६ । २ वाक्यसैं शरीरविषैं स्थित काहीं उपदेशविना अनुपलंभ कहिये अप्रतीतिरूप अपूर्वता सूचन करी ॥ २ ॥

तं वेद्यं पुरुषं वेदेत्यादितः फलमुच्यते ।
तदच्छायमदेहं चेत्यादिभिः कथिता स्तुतिः ३

४ फलः—औ " तं वेद्यं पुरुषं वेद यथा । मा वो मृत्युपरि व्यथा इति " । कहिये " तिस वेद्यपुरुषकूं जैसा है तैसा जानना । तुमकूं मृत्युकी पीडा मति होहूं " ऐसैं ६ । ६ इत्यादि वाक्यतैं फल कहिये है । औ

९ अर्थवादः-- तदच्छायमशरीरमलोहितं शुभ्रमक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य । स सर्वज्ञः सर्वो भवति " । कहिये " हे सोम्य ! जों कोईक तिस ज्ञानरहित अशरीर--अलोहित-- अक्षरकूं जानता है । सो सर्वज्ञ अरु सर्व होवै है" । इत्यादि ४ । १० वाक्यनकरि अर्थवादरूप स्तुति कही है ॥ ३ ॥

नदीसमुद्र दृष्टांतादुपपत्तिः प्रदर्शिता ।
एतैः प्रश्नोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते॥४॥

६ उपपत्तिः—औ "स यथेमा नद्यः" कहिये "सो जैसैं ये नदीयां" इस । ६ । ५ आदिक ६ । ६ । वाक्यगत दृष्टांततैं परमात्मातैं षोडशकलाओंकी उत्पत्ति अरु विनाशके उपन्यासतैं उपपत्ति दिखाई ॥ इन लिंगोंकरि प्रश्नोपनिषद्का अद्वैतब्रह्मविषै तात्पर्य अंगीकार करिये है ॥ ४ ॥

इतिश्री० प्रश्नोपनिषल्लिंग० पंचमं प्र० समाप्तम् ॥ ५ ॥

अथमुंडकोपनिषल्लिंगकीर्त्तनम्॥६॥

अथ परेत्युपक्रम्य यो ह वै परमं च तत् ।
ब्रह्म वेदेत्यादिवाक्यदुपसंहार ईरितः ॥ १ ॥

१ उपक्रमउपसंहारः--(१) " अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते यत्तदद्रश्यं " । कहिये " अब पराविद्या कहिये हैः–जिसकरि सो अक्षर जानिये है जो सो अदृश्य है । " इत्यादि १ । १ । ५-६ वाक्यकरि उपक्रमकरिके । (२) " स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म वेद " । कहिये " सो जोई तिस परम ब्रह्मकूं जानता है " कहिये ३ । २ । ९ वाक्यतैं उपसंहार कहा है ॥ ९ ॥

आविः सन्निहितं चेति तदेतदक्षर त्विति ।
अभ्यासो गृहते नैव चक्षुषेत्याद्यपूर्वता ॥ ३ ॥

२ अभ्यासः--औ " आविः सन्निहितं " कहिये " प्रत्यक्ष है अरु समीपमैं है " २ । २ । १ औ " तदेतदक्षरं ब्रह्म " कहिये " सो यह अक्ष-

रूप ब्रह्म है" । २ । २ । २ ऐसैं तो अभ्यास कहा है ॥ औ

३ अपूर्वताः—"न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा ।" कहिये "न चक्षुकरि ग्रहण करिये हैं अरु वाककरि बी नहीं ।" इत्यादिरूप ३ मुण्डकके १ खण्डके ८ वाक्यकी अर्थरूप अपूर्वता कहिये प्रमाणांतरकी अविषयता है ।

भिद्यते हृदयग्रंथिरित्याद्यात्फलमीरितम् ।
यं यं लोकं च हेत्याद्यैरर्थवादः प्रघोषितः ॥३॥

४ फलः—"भिद्यते हृदयग्रंथिः ।" कहिये तिस परावरके देखे हुये । "हृदयग्रंथि भेदकूं पावता है ।" इस २ । २ । ८ आदिक ३ । २ । ८-९ वाक्यतैं फल कहा है ॥

अर्थवादः--औ " यं यं लोकं मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः कामयते यांश्च कामान्। तं तं लोकं जायते तांश्च कामां स्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः।" कहिये " निर्मल मनवाला जिसजिस लोककूं मनसैं चितवता है औ जिन भोगनकूंइच्छता है। तिस तिस लोककूं औ तिन भोगनकूं पावता है। तातैं विभूतिकी इच्छावाला आत्मज्ञानीकूं पूजन करै। " इस ३। १। १० आदिक वाक्यनसैं अर्थवाद कहा है ॥ ३ ॥

सुदीप्ताग्नेर्यथैत्यादिनोपपत्तिः प्रकाशिता।
एतैर्मुंडकतात्पर्यमद्वैतेऽगीकृतं बुधैः ॥ ४ ॥

६ उपपत्तिः--औ " यथा सुदीप्तात्पाव-

काद्विस्फुलिंगाः सहशस्रः प्रभवंते सरूपाः । तथाऽक्षराद्विविधा सोम्य ! भावाः प्रजायंते तत्र चैवापियंति " कहिये " जैसैं प्रज्वलित अग्नितैं हजारों हजार सरूप विस्फुलिंग उपजते हैं । तैसैं हे सौम्य ! अक्षरतैं विविध पदार्थ उपजते हैं औ तहांहीं लीन होते हैं । " इस २ । १ । १ आदिक वाक्यतैं उपपत्ति प्रकाश करी है । इन लिंगोकरि मुंडकोपनिषद्का अद्वैतविषै तात्पर्य पंडितोंनै अङ्गीकार किया है ॥ ४ ॥

इति श्री० मुण्डकोपनिषल्लिग० षष्ठं प्र० समाप्तम् ॥६॥

अथमांडूक्योपनिषल्लिंगकीर्त्तनम् ७।

ॐमित्येतदुपक्रम्यामात्र इत्युपसंहृतिः ।
प्रपंचोपशमं शांतमित्याद्यभ्यास ईरितः ॥१॥

१ उपक्रमउपसंहारः-(१) ॐ मित्येतदक्षरमिद ँ सर्व " कहिये "यह सर्व 'ओं३म्' ऐसा यह अक्षर है । " इस १ वाक्यसैं उपक्रम करिके। (२) "अमात्रश्चतुर्थो" । कहिये "अमात्ररूप चतुर्थपाद है।" इत्यादिरूप १२ वाक्यसैं उपसंहार है ॥ औ

२ अभ्यासः--" प्रपंचोपशमं शांतं " कहिये "निष्प्रपंच अरु शांत है" । १२ इत्यादि अभ्यास कहा है ॥ १ ॥

अदृष्टमाद्यपूर्वत्वं संविशत्यात्मना फलम् ।
अवांतरफलोक्तिस्तु ह्यर्थवादो विदां मते ॥२॥

३ अपूर्वताः-औ " अदृष्टमव्यवहार्यं "

कहिये " अदृष्ट है अरु अव्यवहार्य है "। ७ इत्यादि प्रमाणांतरकी अविषयतारूप अपूर्वता है ॥ औ

४ फलः—" संविशत्यात्मनात्मानं य एवं वेद "। कहिये " आत्माकूं जो ऐसैं जानता है सो आत्माके साथि प्रवेश करता है "। इस १२ वाक्यकरि फल कहा है ॥ औ

५ अर्थवादः—" आप्नोति ह वै सर्वान् कामान् "। कहिये " सर्व कामोंकूं पावता है "। इस ९ आदिक १० वाक्यनसैं जो अवांतर-फलकी उक्ति है। सो तो विद्वानोंके मतविषै प्रसिद्ध अर्थवाद है ॥ २ ॥

अद्वैते च प्रवेशायोपपत्तिः पादकल्पना ।
मांडूक्योपनिषद्भाव एवेमैरिष्यतेऽद्वये ॥ ३ ॥

६ उपपत्तिः—औ अद्वैत ब्रह्मविषै प्रवेश अर्थ १–१२ वें वाक्यपर्यंत जो ४ पादनकी

कल्पना है । सो उपपत्ति कहिये युक्ति है ॥ इन लिंगोंकरिहीं मांडूक्योपनिषद्का भाव कहिये तात्पर्य अद्वैतब्रह्मविषै अंगीकार करिये है ॥ ३ ॥

इति श्री० मांडूक्योपनिषल्लिंग० सप्तमं०
प्र० समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथतैत्तिरीयोपनिषल्लिंगकीर्त्तनम् ८

ब्रह्मविदित्युपक्रम्य यश्चायं तूपसंहृतिः ।
तस्माद्वा इत्यथोवाक्यं यदा ह्येवेति चापरम् १
भीषाऽस्मादित्यथोऽभ्यासोयतोवाचोत्वपूर्वता।
सोऽश्नुतेब्रह्मणाकामान्सहेत्यादिफलंश्रुतम् २

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) " ब्रह्मविदाप्नोति परं " कहिये ब्रह्मवित् परब्रह्मकूं पावता है " । २ । १ ऐसैं उपक्रम करिके ।

(२)"स यश्चायं पुरुषे। यश्चासावादित्ये। स एकः"। कहिये "सो जो यह पुरुषविषै है औ जो यह आदित्यविषै है। सो एक है"। इत्यादि रूप इस २। ८ वाक्यकरि उपसंहार है। औ

२ आभ्यसः–"तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः संभूतः"। कहिये "तिस इस आत्मातैं आकाश उपज्या"। २। १ ऐसैं औ "यदा ह्येवैष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयने" कहिये "जबहीं यह इस अदृश्य-अशरीर-अवाच्य-अनाधारविषै"। यह २। ७ अपर वाक्य है ॥ १ ॥

औ "भीषास्माद्वातः पवते"। कहिये इस परमात्मातैं भयकरि वायु वहता है"। २। ८ ऐसैं अभ्यास है ॥ औ

३ अपूर्वताः—“यतो वाचो निवर्त्तंते अप्राप्य मनसा सह”। कहिये “मनसहित वाणीयां अप्राप्त होयके जिसतैं निवर्त्त होवे हैं”। इस २। ४ वाक्यसैं मनवाणीकरि उपलक्षित सकल प्रमाणोंकी अगोचरतारूप अपूर्वता कही ॥

४ फलः—औ “सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता”। कहिये “सो ज्ञानी ज्ञानरूप ब्रह्मके साथि एक हुया सर्व कामोंकूं भोगता है। २। १ इत्यादि २ वल्लीके ७ वें अनुवाकसैं फल कहा है ॥ २ ॥

अर्थवादोऽतरं कुर्यादुदरं भेदनिंदनम् ।
गायन्नास्ते हि सामैतदित्यादिर्विदुषः स्तुतिः३

९ अर्थवादः—“यदुदरमंतरं कुरुते। अथ तस्य भयं भवति।” कहिये “जो यत् किंचित् भेदकूं करता है। अनंतर ताकूं भय होवै है”।

२ । ७ ऐसैं भेदज्ञानकी निंदा है औ " गाय न्नास्ते हि तत्साम० अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् । अहमन्नादोऽहमन्नादोषहमन्नादः " । कहिये " विद्वान् इस सामकूं गायन करता हुया स्थित होवै हैः—मैं [सर्व] भोग्य हूं । मैं भोग्य हूं । मैं भोग्य हूं । मैं [सर्व] भोक्ता हूं । मैं भोक्ता हूं । मैं भोक्ता हूं " इत्यादि ३ । १० विद्वान्की स्तुति है । सो अर्थवाद है ॥ ३ ॥

यतो भूतानि जायंते तत्सृष्ट्वेत्यादितोऽतिमम् । तैत्तिरीयश्रुतेर्भाव एवैमैरिष्यतेऽद्वये ॥ ४ ॥

६ उपपत्तिः--औ " यतो वा इमानि भूतानि जायंते " । कहिये " जिसतैं ये भूत उपजते हैं । ३ । १ औ " तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत् " । कहिये " ताकूं सृजिके ताहीके प्रतिप्रवेश करता भया " । २ । ६ इत्यादिकार्य-

कारणके अभेदके बोधक सृष्टिः वाक्यतैं औ। प्रवेष्टा प्रविष्ट अरु प्रवेशके अभेदके बोधक प्रवेशवाक्यतैं अंतका उपपत्तिरूप लिंग कहा है ॥ इन लिंगोंकरिहीं तैत्तिरीयोपनिषद्का भावकहिये तात्पर्य अद्वैतविषै अंगीकार करिये है ॥ ४ ॥

इति श्री० तैत्तिरीयोपनिषल्लिंग० नामाष्टमं प्रकरणं समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथैतरेयोपनिषल्लिंगकीर्त्तनम् ॥ ९ ॥

आत्मा वा इत्युपक्रम्योपसंहारस्तु चांतिमे।
प्रज्ञानं ब्रह्म वाक्येन महतोक्तो हि धीधनैः २

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) " आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत् " कहिये " यह आगे आत्माही होता "। १। १। १ ऐसैं उपक्रम करिके। (२) " प्रज्ञानं ब्रह्म "

कहिये " प्रज्ञान जो जीव सो ब्रह्म है " । इस अन्तके ३ अध्यायविषै स्थित ५ खण्डके ३ ऋक्गत महावाक्यकरि बुद्धिमानोंनैं प्रसिद्ध उपसंहार कहा है ॥ १ ॥

स इमानसृजल्लोकान्स ईक्षत सृजा इति ।
तस्मादिदंद्र इत्यादिवाक्यैरभ्यास ईरितः॥२॥

२ अभ्यासः—औ " स इमाँल्लोकानसृजत् " । कहिये " सो इन लोकनकूं सृजतभया " । १ । १ । २ औ " स ईक्षतेमें नु लोका लोकान्नु सृजा इति " कहिये " सो ईक्षण करता भयाः—ये लोक हैं । लोकपालोंकूं सृजों ऐसैं " । १ । १ । ३ औ । " तस्मादिदंद्रो नाम " कहिये " तातैं इदंद्र नाम है " । १ । ३ । १४ इत्यादि वाक्योंकरि अभ्यास कहा है ॥ २ ॥

स जात इत्यपूर्वत्वं प्रज्ञानेत्रं तदित्यपि ।
स एतेनेतिवाक्येन फलं स्पष्टमुदीरितम् ॥३॥

३ अपूर्वताः—औ " स जातो भूतान्यभिव्यैक्षत् " । कहिये सो प्रगटहुया भूतनकूं स्पष्ट जानता भया " इस १ । ३ । १३ वाक्यसैं सर्व भूतनका प्रकाशक होनेकरि तिनकी अविषयतारूप किंवा:--" सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रं " कहिये "सर्वजगत् स्वप्रकाश चैतन्यरूप निर्वाहकवाला है" इस ३ अध्यायके ५ खण्डके ३ वाक्यसैं ऐसैं स्वप्रकाशतारूप बी अपूर्वता कही है ॥ औ

४ फलः—स एतेन प्रज्ञेनात्मनाऽस्माल्लोकादुत्क्रम्यामुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्वान्कामानाप्त्वाऽमृतः समभवत् समभवत् इत्योम् " । कहिये " सो इस ज्ञानरूपसैं इस लोकतैं उल्लंघन करीके उस मोक्षरूप लोकविषै

सर्वकामोंकूं पायके अमृत होता भया। ऐसैं सत्य है" इस ३ अध्यायके ५ खण्डके ४ वाक्यकरि स्पष्ट फल कहा है ॥ ३ ॥

ता एता देवताः सृष्टास्तथा गर्भे नु सन्निति।
स्तुतिर्युक्तिस्तु स इमानित्यारभ्य विदार्यःसः ॥
एतं सीमानमित्यादिश्रुतिवाक्यात्प्रकीर्तिता।
इमैरुक्तैस्तु षड्लिंगैरैतरेयश्रुतौ गतम् ॥ ५ ॥
तात्पर्यं ज्ञायतेऽद्वैते तन्निष्ठैर्वेदपारगैः।
तथा मुमुक्षुभिः सर्वैरपि विज्ञेयमादरात् ॥ ६ ॥

अर्थवादः---औ " ता एता देवताः सृष्टाः " कहिये " वे ये उत्पादित देवता स्तुति करती भईं" । १ । २ । १ । औ "गर्भे नु सन्नन्वेषामवेदमहं देवानां जनिमानि विश्वा "। कहिये " माताके गर्भस्थानविषैहीं हुया मैं इन देवनके सर्वजन्मोंकूं जानता हूं" २ । ४ । ५ ऐसैं अद्वैत परमात्माकी स्तुतिरूप अर्थवाद कहा है ॥ औ

६ उपपत्तिः—"स इमाँल्लोकानसृजत" । कहिये "सो इन लोकनकूं सृजताभया" । १ । १ । २ इहांसैं आरम्भ करिके ॥ ४ ॥ स एतमेव सीमानं विदार्यैतया द्वारा प्रापद्यत" । कहिये 'सो इसीहीं मस्तकगत सीमाकूं विदारण करिके इस द्वारकरि शरीरविषै प्राप्त होता भया । इत्यादि १ । ३ । १२ वाक्यतैं श्रुतिनै युक्ति कहिये उपपत्ति कही है ॥ उक्त इन षट्लिंगोंसैं तो ऐतरेयउपनिषद्‌विषै स्थित ॥ ५ ॥

अद्वैतविषै जो तात्पर्य है । सो वेदके पारकूं प्राप्त भये कहिये श्रोत्रिय औ तिसविषै निष्ठा- वाले कहिये ब्रह्मनिष्ठनकरि जानिये है ॥ तैसैं सर्व मुमुक्षुनकरि बी आदरसैं जाननेकूं योग्य है ॥६॥

इति श्री० ऐतरेयोपनिषल्लिंग० नवमं प्रकरणं समाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ श्री छांदोग्योपनिषल्लिंग-कीर्त्तनम् ॥ १० ॥

तत्र षष्ठाध्याय-लिंगकीर्त्तनम् ॥ ६ ॥

सदेवेत्युपक्रम्यैवैतदात्म्यमिदमित्यतः ।
उपसंहृतिरभ्यासो नवकृत्व उदीरितः ॥ १ ॥
तत्त्वमसीतिवाक्यस्यावर्तनाद्बुद्धिमत्तमैः ।
अत्रैव सोम्य ! सन्नेत्यपूर्वतोक्ता हि पंडितैः २

१ उपक्रमउपसंहारः—“ सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं ” । कहिये “ हे सोम्य ! सृष्टितैं पूर्व एकहीं अद्वितीय सत् हीं होता भया ” । ६ । २१ ऐसैं उपक्रम करिके “ एतदात्म्यमिदं सर्वं ” कहिये यह सर्व इस

सत्‌रूप आत्मभाववाला है" । ऐसैं इस ६ अध्यायके १६ खण्डके ३ वाक्यतैं उपसंहार कहा है ॥

२ अभ्यासः—नववार कहा है ॥ " तत्त्व मसि " कहिये " सो तूं है " । इस ६ । । १६ वाक्यके आवर्त्तनतैं पंडितोंनैं कहा है ॥

अपूर्वताः—औ अत्र वाव किल सत्सोम्य न निभालयसेऽत्रैव किलेति " । कहिये ऐसैं हे सोम्य ! इस शरीरविषै आचार्यके उपदेशतैं विना सत्‌रूप ब्रह्म विद्यमान है ताकूं इंद्रियनसैं नहीं जानता है । इहाहीं विद्यमान सतकूं गुरुउपदेशरूप अन्य उपायसैं जान " । ६ । १३ । २ ऐसैं पंडितोंनैं गुरुउपदेशसैं विना प्रमाणांतरकी अविषयतारूप प्रसिद्ध अपूर्वता कही है ॥ १-२ ॥

तावदेव चिरं तस्येत्यादिवाक्यात्फलं स्मृतम् ।
तमादेशमुताप्रक्ष्य इत्यादेः स्तुतिरीरिता ॥३॥

४ फलः--आचार्यवान् पुरुषो वेद । तस्य तावदेव चिरं यावन्न विमोक्ष्येऽथ संपत्स्ये" कहिये "आचार्यवान् पुरुष जानता है । तिस ज्ञानकूं तहांलगिहीं विदेहमोक्षविषै विलंब है । जहांलगि प्रारब्धके क्षयकरि देहका अन्त भया नहीं । अनंतर सत्‌रूप ब्रह्मकूं पावता है" । इत्यादि ६ । १४ । २ वाक्यतैं फल कहा है ॥

५ अर्थवादः-औ "उत तमादेशमप्राक्ष्यो येनाश्रुत ँ श्रुतं भवत्यमतं मतमविज्ञातं विज्ञातं" कहिये " हे श्वेतकेतो ! तिस आदेशकूं वी आचार्यके प्रति तू पूछताभया है ।

जिसकरि नहीं सुन्या सुन्या होवै है। नहीं मनन किया मनन किया होवै है। नहीं जान्या जान्या होवैहै।" इत्यादि ६ । १ । १ वाक्यतैं अर्थ-वादरूप अद्वैतके ज्ञानकी स्तुति कही है ॥ ३ ॥

उपपत्तिर्यथा सोम्यैकेनेत्यादिनिदर्शनम् ।
एतैश्छांदोग्यतात्पर्यं षष्ठगं त्विष्यतेऽद्वये॥४॥

६ उपपत्तिः-औ "यथा सौम्यैकेन मृत्पिंडेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातᳫस्यात्" कहिये "हे सोम्य ! जैसैं एक मृत्तिकाके पिंड-करि सर्व घटादि कार्य मृत्तिकामय जान्या जावै है" । इत्यादि ६ । १ । १-३ वाक्यगत दृष्टांतरूप उपपत्ति है ॥ इन लिंगोंकरि षष्ठअध्या-यगत छांदोग्यउपनिषद्का तात्पर्य अद्वैतविषै अंगीकार कहिये है ॥ ४ ॥

अथ सप्तमाध्यायलिंगकीर्त्तनम् ॥ ७ ॥

शोकं तरति तद्वेत्ते--त्युपक्रम्योपसंहृतिः ।
तस्य ह वेति वाक्येन तदैक्यमनुभूयताम्॥९॥

१ उपक्रमउपसंहारः---- (१) " तरति शोकमात्मवित् " । कहिये " आत्मज्ञानी शोककूं तरता है " । ७ । १ । ३ ऐसैं उपक्रम करिके । (२) तस्य ह वा एतस्यैवं पश्यत एवं मन्वानस्यैवं विजानत आत्मतः प्राण आत्मत आशा " । कहिये " तिस इस ऐसैं देखनेवालेके औ ऐसैं मनन करनेवालेके औ ऐसैं जाननेवालेके आत्मातैं प्राण औ आत्मातैं आशा होवै है " । इस ७ अध्यायके २६ खंडके १ वाक्यकरि उपसंहार कहा है । तिन दोनूंकी एकता अनुभव करना ॥ ५ ॥

अधस्ताच्च स एव स्यात्तथ ऽथातस्त्वहंकृतैः ।
आदेशश्च स्मृतोऽभ्यासोऽथात आत्मोपदेश-
युक्‌ ॥ ६ ॥

२ अभ्यासः--औ "स एवाधस्तात्स उपरिष्टात्" कहिये "सोई नीचे है। सो उपरि है"। तैसैं "अथातोऽहंकारादेश एवाहमध्यस्तादहमुपरिष्टात्" कहिये। "अब अहंकारका उपदेश ही है किः--मैं नीचे हूं। मैं उपरि हूं" तैसैं "अथात आत्मादेश एवात्मैवाधस्तादात्मोपरिष्टात्" कहिये "अब आत्माका उपदेश है किः-- आत्माहीं नीचे है। आत्मा उपरि है" इस आत्माके उपदेशकरि युक्त। उक्त ७ अध्यायके २५ खंडके १--२ वाक्यनकरि अभ्यास कहा है ॥ ६ ॥

ऋगादिसर्वविद्यानामगोचरतयाऽऽत्मनः ।
अपूर्वता फलं पश्यो नैव मृत्युं हि पश्यति॥७॥

३ **अपूर्वताः**—औ "स होवाचर्ग्वेदं भगवोऽध्येमि" कहिये "नारद सनत्कुमारकूं कहै हैं:—हे भगवन् ! ऋग्वेदकूं पढ्या हूं"। इत्यादि ७ । १ । २-३ वाक्यकरि आत्माकी ऋग्वेद आदि सर्व विद्याओंकी अगोचरता करि गुरुउपदेशकरि वेद्यतारूप अपूर्वता की है ॥

४ **फलः**—औ "न पश्यो मृत्युं पश्यति" कहिये "ज्ञानी मृत्युकूं देखता नहीं"। इत्यादि ७ । २६ । २ वाक्यकरि फल कहा है ॥ ७ ॥

पश्यः पश्यति सर्वं हीत्यर्थवादःसुसूचितः ।
जाता वा आत्मतःप्राणादयो युक्तिःप्रदर्शिता८

५ **अर्थवादः**—औ "सर्वं ह पश्य पश्यति । सर्वमाप्नोति सर्वः" कहिये

" ज्ञानी सर्वकूं देखता है। सर्व तर्फसैं सर्वकूं पावता है। ७। २६। २ ऐसैं अर्थवाद सूचन किया है॥ औ

६ उपपत्तिः—" आत्मतः प्राण आत्मत आशा " कहिये " आत्मातैं प्राण । आत्मातैं आशा "। इत्यादि ७। २६। १ वाक्य करि हेतु आत्मैकताबोधक युक्ति कहिये उपपत्ति दिखाई॥ ८॥

छांदोग्यश्रुतितात्पर्यं सप्तमाध्यायगं बुधैः।
इष्यते चाद्वये भूम्नि षड्भिर्लिङ्गैरिमैःस्फुटम्९

पंडितोनैं इन षट्लिंगोंकरि सप्तमाध्यायगत छांदोग्य उपनिषद्का तात्पर्य। अद्वैत ब्रह्मविषै स्पष्ट अङ्गीकार करिये है॥ ९॥

अथाष्टमाध्यायलिंगकीर्त्तनम् ॥ ८ ॥

य आत्मेत्युपक्रम्यैव तं वा एतमुपासते ।
इत्यादिनोपसंहार एव आत्मेतिवाक्यतः॥१०॥

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) " य आत्मापहतपाप्मा " । कहिये " जो आत्मा पापरहित है " । ८ । ७ । १ ऐसैं उपक्रम करिके हीं । (२) " तं वा एतं देवा आत्मानमुपासते " कहिये तिस इस आत्माकूं देव निश्चयकरि उपासतै हैं" । इत्यादि ८।१२।६ रूप वाक्यकरि उपसंहार कहा है ॥

२ अभ्यासः—" एष आत्मेति होवाचैतदमृतमभयेतद्ब्रह्मेति " । कहिये " यह आत्मा । यह अमृत अभय । यह ब्रह्म है । ऐसैं कहताभया " इस ८ अध्यायके १० खण्डके १ वाक्यतैं अभ्यास कहा है ॥ १० ॥

अभ्यासोऽपूर्वताः ब्रह्मचर्येणेत्यादितःफलम् ।
पुनरावर्त्तते नैव स इत्यादिरवेरितम् ॥ ११ ॥

३ अपूर्वताः----" तद्य एवैतं ब्रह्मलोकं ब्रह्मचर्य्येणानुविंदंति तेषामेवैष ब्रह्मलोकः" । कहिये " तातैं जेई इस ब्रह्मरूप लोककूं ब्रह्मचर्य्य करि शास्त्र अरु आचार्यके उपदेशके पीछे प्राप्त करते हैं । तिनहींकूं यह ब्रह्मरूप लोक प्राप्त होवै है । इस ८ । ४ । ३ आदिक वाक्यनतैं अपूर्वता ध्वनित करी है ॥

४ फलः----" ब्रह्मलोकमभिसंपद्यते । न च पुनरावर्त्तते " कहिये " ब्रह्मरूप लोककूं पावता है औ पुनरावृत्तिकूं पावता नहीं" । इत्यादि ८ । १५ । १ वाक्यकरि फल कहा है ॥११॥

आख्यायिकार्थवादःस्यादिंद्रदस्यासुरस्वामिनः।
अशरीरो वायुरभ्रमित्यादिर्युक्तिरीरिता ॥१२॥

९ अर्थवादः---इन्द्र अरु विरोचनकी आख्यायिका अर्थवाद होवै है ॥

६ उपपत्तिः---"अशरीरो वायुरभ्रं विद्युत्स्तनयित्नुरशरीराण्येतानि" कहिये "वायु अशरीर है। मेघ विजली मेघगर्जन ये अशरीर हैं"। इत्यादि ८। १२। २ अभेदक युक्तिरूप उपपत्ति कही है ॥ १२ ॥

छांदोग्यश्रुतितात्पर्यमष्टमाध्यायगं त्विमैः।
इष्यतेऽद्वयएवास्मिन्ब्रह्मण्येतत्प्रदर्शितम्॥१३॥

इन लिंगोंकरि तो अष्टमाध्यायगत छांदोग्यउपनिषद्का तात्पर्य । इस अद्वैतब्रह्मविषैहीं अङ्गीकार करिये है यह दिखाया ॥ १३ ॥

इति श्री० छान्दोग्योपनिषल्लिंग० दशमं प्रकरणं समाप्तम् १०

अथ श्रीबृहदारण्यकोपनिषल्लिं-गकीर्त्तनम् ॥ ११ ॥

तत्र प्रथमाध्यायालिंगकीर्त्तनम् ॥ १ ॥

आत्मेत्येवेत्यादिवाक्यादुपक्रम्योपसंहृतिः ।
लोकमात्मानमेवोपासीतेत्यादिसमीरणात् १॥

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) " आत्मेत्येवोपासीत " । कहिये "आत्मा ऐसैंहीं जानना" । इत्यादि १ । ४ । ७ रूप वाक्यतैं उपक्रम करिके (२) "आत्मानमेव लोकमुपासीत" । कहिये "आत्मारूपहीं लोककूं जानना" । इत्यादि अध्यायके ४ ब्राह्मणके १५ वें वाक्यतैं उपसंहार कहा है ॥ १ ॥

तदेतत्पदनीयं च तदेतत्प्रेय इत्यपि । वाक्यमारभ्य संप्रोक्तोऽभ्यासस्तस्य परात्मनः ॥ १ ॥

२ अभ्यास—औ " तदेतत्पदनीयमस्य सर्वस्य यदयमात्मा " । कहिये " सो यह प्राप्त

करनेकूं योग्य है। जो यह इस सर्वका आत्मा है"।१।४।७ ऐसैं औ "तदेतत्प्रेयः पुत्रात्प्रेयो वित्तात्" कहिये "सो यह पुत्रतैं प्रिय है। वित्ततैं प्रिय है"। इसी १।४।८ बी वाक्यकूं आरंभकरिके। आगे (१।४। १० विषै) दोवार "अहं ब्रह्मास्मि" इस महावाक्यके कथनपर्यंत तिस परमात्माका अभ्यास कहा है ॥ २ ॥

तदाहुर्यदितीराया अपूर्वत्वं समिंगितम् ।
य एवं वेद वाक्येन सर्वात्मत्वं फलं स्मृतम्॥३॥

३ अपूर्वताः—"तदाहुर्यद्ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्यन्तो मनुष्या मन्यंते"। कहिये "सो कहते हैं:—जो ब्रह्मविद्याकरि सर्वरूप होनेवाले मनुष्य मानते हैं"। इस १।४।९ उक्ति कहिये वाक्यतैं प्रमाणांतरकी अविषय जीवनकी सर्वात्मतारूप अपूर्वता अभिप्रेत है ॥

४ फलंः—' य एवं वेदाहं ब्रह्मास्मीति स इदं सर्वं भवति " कहिये जो ऐसैं अहं ब्रह्मास्मि इस प्रकारसैं जानता है । सो यह सर्व हौवै है " इस १ । ४ । १० वाक्यकरि ज्ञानसैं सर्वात्मभावरूपका फल कहा है ॥३॥

तस्याभूत्यै हि देवाश्च नेशते हेतिवाक्यतः ।
अर्थवादो द्विरूपोवैप्रोक्तःश्रुत्या स्फुटोक्तितः४

५ अर्थवादः—" तस्य ह न देवाश्च नाभूत्या ईशते " कहिये " तिस ब्रह्मजिज्ञासुके ब्रह्मसर्वभावके न होने अर्थ देव बी समर्थ होते नहीं । तब अन्य न होवैं यामैं क्या कहना " इत्यादिरूप इस १ । ४ । १० वाक्यतैं अभेद-ज्ञानकी स्तुति औ भेदज्ञानकी निंदा । इन दो-रूपवाला अर्थवाद श्रुतिनैं स्पष्ट उक्तितैं कहा है ॥ ४ ॥

उपपत्तिः स एषो हीहेतिवाक्यात्स्मृता द्विजैः ।
बृहदारण्यकाद्यस्याद्वैते तात्पर्यमिष्यते ॥ ५ ॥

६ उपपत्तिः—“ स एष इह प्रविष्ट आनखाग्रेभ्यः ” । कहिये “ सो परमात्मा नखाग्रपर्यंत इस देहविषै प्रविष्ट भया है ” । इत्यादि-रूप इस १ । ४ । ७ वाक्यतैं उपपत्ति कही है ॥ इन लिंगोंसैं बृहदारण्यकउपनिषद्केप्रथमाध्यायका अद्वैतविषै तात्पर्य अंगीकार करिये है ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयाध्यायालिंगकीर्तनम् ॥२॥

ब्रह्म तेऽहं ब्रवाणीति सामान्योपक्रमःस्मृतः ।
व्येव त्वा ज्ञपयिष्यामि विशेषोपक्रमस्त्वयम् ६
य एषः पुरुषो विज्ञानमयस्तूपसंहृतिः ।
सामान्यतो विशेषेण तदेतत् ब्रह्म चेत्यपि॥७॥

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) “ ब्रह्म

तेऽहंब्रवाणीति " कहिये ".ब्रह्म तेरेताई कहता हूं " । २ । १ । १ यह सामान्यउपक्रम है और " व्येव त्वा ज्ञपयिष्यामि । " कहिये " ब्रह्म तेरेतांई जनावुंगाहीं " । २ । ३ । १५ यह तो विशेष उपक्रम हैं ॥ ६ ॥ (२) औ " य एषः पुरुषो विज्ञानमयः । कहिये " जो यह पुरुष विज्ञानमय है " । २ । १ । १६ यह तो सामान्यतैं उपसंहार है औ ' तदेतद्ब्रह्मा पूर्वमनपरं " कहिये " सो यह ब्रह्म कारणरहित अरु कार्यरहित है" । २ । ५ । १९ यह विशेष करि उपसंहार है ॥ ७ ॥

सत्यं सत्यस्य चाथात आदेशो नेति नेति च।
स योऽयमिति चाभ्यासो बहुकृत्व उदीरितः।

२ अभ्यासः—" सत्यस्य सत्यं " । कहिये सत्यका सत्य है " । २ । १ । २०×२ ।

३ । ६ औ " अथात आदेशो नेति नेति " । कहिये " यातैं अब ' नेति नेति ' ऐसा आदेश है " । २ । २ । ६ औ " स योऽयमात्मेद-मृतममिदं ब्रह्मेद ९ सर्वम् " कहिये " सो जो यह आत्मा है " यह अमृत है । यह ब्रह्म है । यह सर्व है " । २ । ५ । १–१५ ऐसैं बहुकरिके अभ्यास कहा है ॥ ८ ॥

विज्ञातारमरे ! केनेत्यादिनाऽपूर्वता मता ।
यत्र वास्य ह्यभूदात्मैव सर्वं चादितः फलम् ॥९॥

३ अपूर्वताः—' विज्ञातारमरे ! केन विजानीयात् " कहिये ' अरे ! मैत्रेयि ! विज्ञाताकूं किसकरि जानै " । इत्यादि २ । ४ । १४ वाक्यकरि प्रमाणांतरकी अविषयतारूप अपूर्वता मानी है ॥

४ फल—“यत्र वा अस्य सर्वमात्मैवा-भूत्तत्केन कं जिघ्रेत्”। कहिये “जहां (जिस मोक्षविषै) इस विद्वानकूं सर्व आत्माहीं होता भया। तहां किसकरि किसकूं सूंघे”। इत्यादि २ अध्यायके ४ ब्राह्मणके १४ वाक्यतैं निष्प्रपंचब्रह्मरूपसैं अवस्थितिरूप अद्वैतज्ञानका फल कहा है ॥ ९ ॥

परादाद्ब्रह्म ते चैवाख्यायिका बहवोऽपि।
अर्थवादस्तूपपत्तिरुर्णनाभ्याद्यनेकशः ॥१०॥

५ अर्थवादः—“ब्रह्म तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनो ब्रह्म वेद” कहिये “ब्राह्मणजाति ताकूं तिरस्कार करै है जो आत्मातैं अन्य ब्राह्मणजातिकूं जानता है”। २। ४। ६ ऐसैं भेदज्ञानकी निंदा औ बहुतआख्यायिका बी अर्थवाद है ॥ १० ॥

६ उपपत्तिः—" स यथोर्णनाभिस्तंतुनोच्चरेद्यथाऽग्नेः क्षुद्रा विस्फुलिङ्गा व्युच्चरंति " कहिये " सो जैसें ऊर्णनाभि तंतुकरि-उच्चगमन करै है औ जैसें अग्नितैं अल्पअग्निके अवयव विविध उच्चगमन करै हैं " । इस २ । १ । २० आदिक २ । ४ । ९-१२ वाक्यनविषै अनेकदृष्टांतरूप उपपत्ति है ॥ १० ॥

बृहदारण्यकस्यैव द्वितीयस्याद्वितीयके ।
तात्पर्यं त्विष्यते प्राज्ञैरेभिर्लिंगैः समिङ्गितैः ११

बृहदारण्यक उपनिषद्के द्वितीय अध्यायका पंडितोंकरि इन सूचन किये लिंगोंसैं अद्वितीय-ब्रह्मविषै तात्पर्य अङ्गीकार करिये है ॥ ११ ॥

अथ तृतीयाध्यायलिङ्गकीर्तनम् ॥ ३ ॥

यत्साक्षादित्युपक्रम्योपसंहारस्तु वाक्यतः ।
विज्ञानमित्यतःप्रोक्त आवृत्तिरेष तेरवात्॥१२॥

१ उपक्रमउपसंहारः— (१) " यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म " कहिये "जो साक्षात् अपरोक्ष ब्रह्म है" । ३ । ४ । १ ऐसैं उपक्रमकरिके । (२) "विज्ञानमानंदं ब्रह्म" । कहिये "विज्ञान आनन्दरूप ब्रह्म है" । ऐसैं इस । ३ । ९ । २८ वाक्यतैं तो उपसंहार कहा है ॥

२ अभ्यासः— "एष त आत्मांतर्याम्यमृतः" । कहिये "यह तेरा आत्मा अन्तर्यामी अमृतरूप है" । इस ३ । ७ । ३-२३ वाक्यतैं आवृत्तिका वाच्य अभ्यास कहा है ॥१२॥

तं त्वौपनिषदं चाहं पृच्छामीति त्वपूर्वता ।
फलं परायणं चैतत्तिष्ठमानस्य तद्विदः ॥१३॥

३ अपूर्वताः—"तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि"। कहिये "तिस उपनिषदनकरि गम्य पुरुषकूं [मैं याज्ञवल्क्य] तुज [शाकल्यके] तांई पूछता हूं"। ३ ९। २६ ऐसैं तो उपनिषदनकीहीं विषयतारूप अपूर्वता कही है ॥

४ फलः—'परायणं तिष्ठमानस्य तद्विदः' कहिये "यह ब्रह्म अद्वैततत्त्वविषै स्थित तत्त्ववेत्ताको परमगति है"। ३ । ९ । २८ ऐसैं फल कहा है ॥ १३ ॥

यो वै तत्काप्य सूत्रं तं विद्याञ्चेत्यादितोऽपिच ।
योवैएतच्चनज्ञात्वाऽक्षरंगार्गीति च स्तुतिः१४॥

९ अर्थवादः—" यो वै तत्काप्य ! सूत्रं विद्यात्तं चांतर्यामिणमिति स ब्रह्मवित् " । कहिये हे काप्य ! जोई तिस सूत्रकूं औ तिस अन्तर्यामीकूं जानता है । सो ब्रह्मवित् है " । बृह ३ । ७ । १ । बी । औ यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वास्मिँल्लोके जुहोति " । कहिये " हे गार्गि ! जोई इस अक्षरकूं न जानिके इस लोकविषै होमता है । इस । ३ । ८ । १० आदिक वाक्यतें अभेदज्ञानकी स्तुति औ चकारकार भेदज्ञानकी निंदारूप अर्थवाद कहा है ॥ १४ ॥

एतस्य वा अक्षरस्येत्यादितो युक्तिरीरिता ।
तटस्थलक्षणस्योपन्यासेन परमात्मनः ॥१५॥

६ उपपत्तिः--" एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि ! सूर्याचंद्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः " । कहिये " हे गार्गि ! इस अक्षरकी आज्ञाविषै सूर्यचन्द्र धारण किये हुये स्थित होवैहैं " । इत्यादि ३ । ८ । ९ रूप वाक्यतैं परमात्माके तटस्थलक्षणके उपन्यासकरि उपपत्ति कही है ॥ १५ ॥

बृहदारण्यकश्रुत्यास्तृतीयस्य समिष्यते ।
तात्पर्यमद्वये लिंगैरेभिस्तु परमात्मनि ॥१६॥

बृहदारण्यकोपनिषद्के इस तृतीयअध्यायका । इन लिंगोंकरि अद्वयपरमात्माविषै तात्पर्य । सम्यक् अङ्गीकार करिये है ॥ १६ ॥

अथ चतुर्थाध्यायलिंगकीर्त्तनम् ॥४॥

इंधश्च किमुपक्रम्याभयं स उपसंहृतिः ।
सामान्यतो विशेषेण यत्र त्वस्येति वाक्यतः १७

१ उपक्रमउपसंहारः— (१) " इंधो ह वै नाम " । कहिये " इंध ऐसा प्रसिद्ध नाम है " । ४ । २ । २ ऐसैं सामान्यतैं " किं ज्योतिरयं पुरुष इति " । कहिये " किस ज्योतिवाला यह पुरुष है " । ४ । ३ । २ ऐसैं विशेषकरि उपक्रमकरिके । (२) " अभयं वै जनक ! प्राप्तोऽसि " । कहिये " हे जनक ! तूं अभयकूं प्राप्त भया है " । ४ । २ । ४ ऐसैं । वा " स वा एष महाजन आत्मा " । कहिये

" सोई यह महान्-अज-आत्मा " । ४ । ४ । २५ ऐसैं सामान्यतैं उपसंहार है औ " यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत् " । कहिये " जहां तो सर्व आत्माहीं होताभया " इस ४ । ५ । १५ वाक्यतैं विशेषकरि उपसंहार हैं ॥ १७ ॥

तद्देवा ज्योतिषां ज्योतिरायुर्होपासतेऽमृतम् ।
इत्यादिबहुभिर्वाक्यैरभ्यासः स्पष्टमीक्ष्यते १८॥

२ अभ्यासः----" तद्देवा ज्योतिषां ज्योतिरायुर्होपासतेऽमृतम् " । कहिये " इस ब्रह्मकूं देव ज्योतिनका ज्योति आयु अरु अमृतरूप उपासते हैं" । ४ । ४ । १६ इत्यादि बहुतवाक्यनकरि अभ्यास स्पष्ट देखिये है ॥ १८ ॥

विज्ञातारमगृह्यो च न तं पश्यत्यपूर्वता ।
अथाकामयमानो य इत्यादिबहुभिः फलम् १९

३ अपूर्वता:----" विज्ञातारमरे ! केन विजानीयात् " कहिये " अरे मैत्रेयि ! विज्ञान-ताकूं किसकरि जानना " । ४ । ५ । १५ औ " अगृह्यो न हि गृह्यते " । कहिये " जातैं ग्रहण करनैकूं अयोग्य है । तातैं नहीं ग्रहण करिये है " । ४ । ४ । २२ औ " न तं पश्यति कश्चन " । कहिये " ताकूं शास्त्रगुरुके उपदेश-विना कोईबी नहीं देखता है " । ४ । ३ । १४ इत्यादि वाक्यनसैं सिद्ध प्रमाणांतरकी अविषयता-रूप अपूर्वता है ॥

४ फल:---"अथाकामयमानो यो"। कहिये "औ जो निष्काम है"। इत्यादि ४।४।६-८ बहुतवाक्यनकरि फल कहा है ॥ १९ ॥

मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति-
एत एतमुहैवेत्यादिवाक्याञ्च स्तुति स्मृता २०

५ अर्थवादः---"मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति"। कहिये "सो मृत्युतैं मृत्युकूं पावता है। जो इहां नानाकी न्यांई देखता है"। ४।४।१९ ऐसैं औ "एतमु हैवैते न तरतः"। कहिये "इस ज्ञानीकूं ये पुण्यपाप तरते नहीं"। ४।४ २२-२३ इत्यादि वाक्यतैं अर्थवादरूप निंदा अरु स्तुति कही है ॥ २० ॥

यद्वै तन्नेति प्राणस्य प्राणं चैव न वा अरे !
पत्युःकामाय नैवायं पतिर्हि भवति प्रियः॥२१॥
इत्यादिवाक्यजातेनोपपत्तिः परिकीर्तिता।
बृहदारण्यकश्रुत्याश्चतुर्थाध्यायगं बुधाः॥२२॥
तात्पर्यमद्वये षड्भिरेवेमे लिंगकैर्विदुः।
अग्नेर्धूम इवेमानि लिंगान्यस्य परात्मनः॥२३॥

६ उपपत्तिः---" यद्वै तन्न पश्यति "। कहिये " जहां सुषुप्तिविषै तिसरूपकूं नहीं देखता है "। ४। ३। २३--३० ऐसैं। औ " प्राणस्य प्राणमुत "। कहिये " प्राणके बी प्राणकूं जानते हैं " ४। ४। १८ ऐसैं। औ " न वा अरे ! पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवत्यात्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति "।

कहिये " अरे मैत्रेयि ! पतिके कामअर्थ पति प्रिय नहीं होवै है । आत्माके तो काम अर्थ पति प्रिय होवै ॥ २१ ॥ इस ४ । ५ । ६ आदिक ४ । ५ । ८-१३ वाक्यनके समूहकरि ब्रह्मरूप आत्माके बोधनकी युक्तिरूप उपपत्ति कही है ॥ पंडित इस बृहदारण्यकरूप उपनिषद्‌भागके चतुर्थाध्यायगत ॥ २२ ॥ अद्वैतविषै तात्पर्यकूं इन षट्‌लिंगों सैं जानते हैं ॥ औ अग्निके निश्चायक धूपरूप लिंगकी न्यांई इस प्रत्यक्‌-अभिन्न ब्रह्मके निश्चायक ये लिंग हैं । [ऐसैं जानना] ॥ २३ ॥

इति संक्षेपतः प्रोक्ता षड्लिंगानां विचारणा ।
दशोपनिषदां तद्वत्तामन्यास्वपि योजयेत्‌॥२४॥

इसरीतिसैं संक्षेपतैं दशउपनिषदनके षट्‌लिंगनका विचार कहा । ताकी न्यांई ता (विचारणकूं अन्यउपनिषदविषै बी जोडना ॥ २४ ॥

दोषोऽप्यत्रोपयुक्तत्वाद्गुण एवेति चिंत्यताम्।
सारग्रहणशीलैस्तु पितृभ्यां बालवाक्यवत् ॥

इसग्रंथविषैं कचित् दोष बी उपयोगी होनैतैं "गुणहीं है" ऐसैं सारग्राही स्वभाववाले कविन करि विचारनेकूं योग्य है ॥ माता पिताकरि विनोदअर्थ उपयोगी बालकके फल—वाक्यकी न्यांई ॥ २५ ॥

इति श्रीबृहदारण्यकोपनिषल्लिंगकीर्त्तन नामैकादशं प्रकरणम् समाप्तम् ॥ ११ ॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदये श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाऽऽचार्यबापुसरस्वती--पूज्यपाद-शिष्य--पीतांबरशर्मविदुषा विरचिता-सटीकाश्रुतिषड्लिंगसंग्रहनामिका-षोडशीकलायाः प्रथमविभागः समाप्तः॥

अथ षोडशकलाद्वितीयविभाग-प्रारंभः १६



वेदांतपदार्थसंज्ञावर्णन

अथवा

लघुवेदांतकोश



ललितछंदः

निष्कलं निजं वेदहीं वदे ।
षटदशं कला ब्रह्ममें नदे ।
निरवयेव जो निष्कलंक सो ।
इकरसं सदा अंगता न सो ॥ ॥ ३६ ॥

हिरण्यगर्भ औ श्रद्धया नभो ।
पवन तेज कं भूमि इंद्रिभो ।
मन अनाज औ[१८०] शंक्ति सत्तपो ।
करमलोक नामा[१८१] मंनूजपो ॥ ३७ ॥
षटदशं कला एहि जानिले ।
जडउपाधिको धर्म मानिले ।
अनुगताश्रयोपुष्पसूत्रवत् ।
निज चिदात्म पीतांबरो हि सत् ॥ ३८ ॥

॥ १८० ॥ बल ॥

॥ १८१ ॥ मंत्रका जप ॥

पदार्थ द्विविध २

अध्यात्मताप २—आत्माकूं आश्रय करके वर्तमान जो स्थूलसूक्ष्मशरीर सो अध्यात्म है। तद्गत जो ताप (दुःख) सो अध्यात्मताप है।

१ आधितापः—मानसताप ॥

२ व्याधितापः—शारीरताप ॥

अध्यास २—भ्रांतिज्ञानका विषय औ भ्रांतिज्ञान ॥

१ अर्थाध्यास—भ्रांतिज्ञानका विषय जो सर्पादि वा देहादिप्रपंच सो ॥

२ ज्ञानाध्यास—भ्रांतिज्ञान (सर्पादिकका वा देहादिप्रपंचका ज्ञान) ॥

असंभावना २—— असंभवका ज्ञान ॥

१ प्रमाणगत असंभावना----प्रमाण (वेद) गत असंभवका ज्ञान ॥

२ प्रमेयगत असंभावना——प्रमेय (प्रमाणके विषय मोक्षआदिक) गन असंभवका ज्ञान ॥

अहंकार २–

१ शुद्धअहंकार–स्वस्वरूपका अहंकार ॥

२ अशुद्धअहंकार ---देहादिअनात्माका अहंकार ॥

१ सामान्यअहंकार---देहादिधर्मके उद्देशसैं रहित । केवल " अहं (मैं) " ऐसा स्फुरण ॥

२ विशेषअहंकार--देहादिधर्म (नामजाति-आदिक) का उद्देश करिके " अहं (मैं) " ऐसा स्फुरण ॥

१ मुख्यअहंकार:—देहादियुक्त चिदाभास औ कूटस्थ (साक्षी) का एकीकरण करिके । मूढकरि सारे संघातविषै " अहं " शब्दकूं जोडिके जो "जो " अहं (मैं)" ऐसा स्फुरण होवै सो मुख्य (शक्तिवृत्तिसैं जानने योग्य अहंशब्दके अर्थकूं विषय करनेवाला) अहंकार है ॥

२ अमुख्यअहंकार:—विवेकीकरि [१] व्यवहारकालमैं केवल देहादियुक्त चिदाभासविषै औ [२] परमार्थदशामैं केवलकूटस्थविषै " अहं " शब्दकूं जोडिके जो " अहं (मैं) " ऐसा स्फुरण होवै है सो दोभांतीका अमुख्य (लक्षणावृत्तिसैं जानने योग्य अहं शब्दके अर्थकूं विषय करनेवाला) अहंकार है ॥

अज्ञान २—

१ समष्टिअज्ञान—वनकी न्यांई वा जातिकी न्यांई वा जलाशय (तडाग) की न्यांई एक बुद्धिका विषय ॥

२ व्यष्टिअज्ञान—वृक्षनकी न्यांई वा व्यक्तिनकी न्यांई वा जलबिंदुकी न्यांई अनेक बुद्धिनका विषय ॥

१ मूलाज्ञान—शुद्धचेतनका आच्छादन (ढांपनेवाला) अज्ञान ॥

२ तूलाज्ञान—घटादिअवच्छिन्नचेतनका आच्छादक अज्ञान ॥

अज्ञानकी शक्ति २—अज्ञानका सामर्थ्य ॥

१ आवरणशक्ति—अधिष्ठानके ढांपनेवाली जो अज्ञानविषै सामर्थ्य है सो ॥

२ विक्षेपशक्ति—प्रपंच औ ताके ज्ञानरूप विक्षेपकी जनक जो अज्ञानविषै सामर्थ्य है सो ॥

उपासना २--

१ सगुणउपासना--कारणब्रह्म (ईश्वर) औ कार्यब्रह्म (हिरण्यगर्भआदिक) की उपासना॥

२ निर्गुणउपासना--शुद्धब्रह्मकी उपासना ॥

गन्ध २--१ सुगन्ध ॥ २ दुर्गंध ॥

जाति २--अनेकधर्मि (आश्रय) नविषै अनुगत जो एकधर्म सो

१ परजाति--"घट है" ऐसैं सर्वत्रअनुगत जो सत्ता है। ताकूं न्यायमतमैं पर (श्रेष्ठ) जाति कहते हैं १

२ अपरजाति--सत्तासैं भिन्न घटत्वआदिक जातिकूं न्यायमतमैं अपर (अश्रेष्ठ) जाति कहते हैं ॥

१ व्याप्यजाति--व्यापकजातिके अन्तर्गत (न्यूनदेशवर्ती) जो जाति। सो व्याप्यजाति है। जैसैं मनुष्यजातिके अन्तर्गत (एकदेश

गत) ब्राह्मणत्व क्षत्रियत्व आदिक जातियां हैं। वे व्याप्यजातियां हैं ॥

२ व्यापकजाति—व्याप्यजातितैं अधिकदेशविषै स्थित जो जाति सो व्यापकजाति है। जैसैं ब्राह्मणत्वआदिकव्याप्यजातितैं अधिकदेशविषै स्थित मनुष्यत्वजाति है सो व्यापकजाति है। ये व्याप्य औ व्यापक दो भेद अपरजातिके हैं ॥

निग्रह २—

१ क्रमनिग्रह—यमनियम आदिक अष्टयोगके अङ्गोंकरि क्रमसैं जो चित्तका निरोध होवै है। सो क्रमनिग्रह है ॥

२ हठनिग्रह—प्राणनिरोधरूप हठकरिके व सांभवी आदिकमुद्रानके मध्य किसी एकमुद्राके अभ्यासकरि जो चित्तका निरोध होवै है। सो हठनिग्रह है ॥

निःश्रेयस २—मोक्ष ॥

१ अनर्थनिवृत्ति ॥ २ परमानन्दप्राप्ति ॥

परमहंससंन्यास २—

१ विविदिषासंन्यास—जिज्ञासाकरिके ज्ञान-प्राप्तिअर्थ किया जो संन्यास सो विविदिषा-संन्यास है ॥

२—विद्वत्संन्यास—ज्ञानके अनन्तर वासनाक्षय मनोनाश औ तत्त्वज्ञानाभ्यासद्वारा जीवन्मुक्ति के विलक्षण आनन्दअर्थ किया जो संन्यास सो विद्वत्संन्यास है ॥

प्रपंच २—१ बाह्यप्रपंच ॥ २ आंतरप्रपंच ॥

प्रज्ञा २—१ स्थितप्रज्ञा २ अस्थितप्रज्ञा ॥

लक्षण २—

१ स्वरूपलक्षण—सदाविद्यमान हुया व्यावर्तक लक्षण ॥

२ तटस्थलक्षण--कदाचितहुयाव्यावर्तकलक्षण ॥

वाक्य २--१ अवांतरवाक्य ॥ २ महावाक्य ॥

वाद २--१ प्रतिबिंबवाद ॥ २ अवच्छेदवाद ॥

विपरीतभावना २--१ प्रमाणगत विपरीतगत भावना ॥ २ प्रमेयगत विपरीतभावना ॥

शब्द २--१ वर्णरूपशब्द ॥ २ ध्वनिरूपशब्द ॥

शब्दसंगति २--१ शक्तिवृत्ति ॥२ लक्षणावृत्ति ॥

संपत्ति २—१ दैवीसंपत्ति ॥२ आसुरीसंपत्ति ॥

संशय २—१ प्रमाणगतसंशय॥२प्रमेयगतसंशय॥

समाधि २—१ सविकल्प ॥ २ निर्विकल्प ॥

सूक्ष्मशरीर २—१ समष्टि ॥ २ व्यष्टि ॥

स्थूलशरीर २—१ समष्टि ॥ व्यष्टि ॥

पदार्थ त्रिविध ३

अध्यात्मादि ३—१ इंद्रिय (अध्यात्म) ॥ २ देवता (अधिदैव) ॥ ३ विषय (अधि-भूत) ॥

अन्तःकरणदोष ३

१ मलदोष २--जन्मजन्मांतरोंके पाप ॥

२ विक्षेपदोष---चित्तकी चंचलता ॥

३ आवरणदोष--स्वरूपका अज्ञान ॥

अर्थवाद ३---निंदाका वा स्तुतिका बोधक वाक्य ॥

१ अनुवाद---अन्यप्रमाणकरिसिद्धअर्थकाबोधक-वाक्य । जैसैं " अग्नि हिमका भेषज है " यह वाक्य है ॥

२ गुणवाद---अन्यप्रमाण विरुद्ध विधेयअर्थका गुणद्वारा स्तावकवाक्य । जैसैं प्रकाशरूप

गुणकी समताकरि स्तावक " यूप (यज्ञका खंभ) आदित्य है " यह वाक्य है ॥

३ भूतार्थवाद- स्वार्थविषै प्रमाण हुया लक्षणासैं विधेयार्थकी श्लाघाका बोधकवाक्य । जैसैं " वज्रहस्त पुरंदर " यह वाक्य है ॥

अवधि ३---- सीमा (हद्द) ॥

१ बोधकी अवधि ॥ २ वैराग्यकी अवधि ॥

३ उपरामकी अवधि---चित्तनिरोधरूप उपरति (उपशम) की ॥

अवस्था ३--तीनदेहके व्यवहारके काल ॥

१ जाग्रत्अवस्था ॥ २ स्वप्नअवस्था ॥

३ सुषुप्तिअवस्था ॥

आत्मा ३- --

१ ज्ञानात्मा-- बुद्धि ॥

२ महानात्मा--महत्तत्त्व ॥

३ शांतात्मा--शुद्धब्रह्म ॥

आत्माके भेद ३—

१ मिथ्यात्मा-- स्थूलसूक्ष्मसंघात ॥

२ गौणात्मा--पुत्र ॥

३ मुख्यात्मा--साक्षी (कूटस्थ) ॥

आनंद—३

१ ब्रह्मानंद--समाधिविषै आविर्भूत वा सुषुप्तिगत जो बिंबभूत आनन्द है सो ॥

२ विषयानंद—जाग्रत्स्वप्नविषै विषयकी प्राप्तिरूप निमित्तसैं एकाग्र भये चित्तविषै आत्मास्वरूपभूत आनंदका जो क्षणिकप्रति बिंब होवै है सो ॥ याहीकूं लेशानंद औ मात्रानन्द बी कहते हैं ॥

३ वासनानंद--सुषुप्तितैं उत्थान आदिक उदासीनदशाविषै जो आनन्द अनुभूत होवै-है सो ॥

आन्ध्यादि ३—अंधताआदिक नेत्रके धर्म ॥

इहां आन्ध्य (अंधता) रूप नेत्रके धर्म जो है सो बधिरतामूकताआदिक अन्यइंद्रियनके धर्मका बी सूचक है। औ मांद्य अरु पटुत्व तौ सर्वइंद्रियनके तुल्य जाननै ॥

१ आन्ध्य—चक्षुकरि सर्वथा स्वविषयका अग्रहण ॥

२ मांद्य—इंद्रियकरि स्वविषयका स्वल्पग्रहण ॥

३ पटुत्व -इंद्रियकरि स्वविषयका स्पष्टग्रहण ॥

उद्देशादि ३—

१ उद्देश्य—नामका कीर्तन ॥

२ लक्षण—असाधारणधर्म। (एकविषै वर्तनैवाला धर्म) ॥

३ परीक्षा—पद्धति (अतिव्याप्तिआदिक दोषनका विचार) ॥

एषणा ३—इच्छा वा वासना ॥
१ पुत्रैषणा ॥ २ वित्तैषणा ॥
३ लोकैषणा--सर्वलोक मेरी स्तुति करें। कोइबी मेरी निंदा करे नहीं। ऐसी इच्छा वा परलोककी इच्छा ॥

कारण ३--कर्मके साधन ॥
१ मन ॥ २ वाणी ॥ ३ काय ॥

कर्तव्यादि ३----
१ कर्तव्य- करनैकूं योग्य ज्ञानके साधन ॥
२ ज्ञातव्य--जाननैकूं योग्य ज्ञानका विषय (ब्रह्म अरु आत्माका एकत्व) ॥
३ प्राप्तव्य--प्राप्त करनैकूं योग्य ज्ञानका फल मोक्ष ॥

कर्म ३-- -१ पुण्यकर्म ॥ २ पापकर्म ॥ ३ मिश्र-कर्म ॥

कर्म ३----

१ संचितकर्म--जन्मांतरोंविषै संचय किये कर्म ॥

२ आगामिकर्म-वर्तमानजन्मविषैक्रियमाणकर्म॥

३ प्रारब्धकर्म--वर्तमानजन्मका आरंभककर्म ॥

कर्मादि ३---

१ कर्म--वेदविहितकर्म ॥

२ विकर्म--वेदसैं विरुद्धकर्म ॥

३ अकर्म- वेदविहित औ वेदविरुद्ध उभयविधकर्मका अकरण ॥

कारणवाद ३----

१ आरंभवाद--जैसैं पितामहआदिकके किये पुराणे गृहका जब नाश होवै तब तिसविषै स्थित ईंटआदिकसामग्रीसैं फेर नवीनगृहका आरंभ होवै है। तैसैं कार्यरूप पृथ्वीआदिकके नाशताके कारण परमाणु ज्यूंकेत्यूं रहते हैं। तिनतैं फेर अन्यपृथ्वीआदिकका आरंभ

होवैहै ॥ऐसैं न्यायमतसैं आरंभवाद मान्या है॥ यामैं कार्य अरु कारणका भेद है ॥

२ परिणामवाद—जैसैं दुग्धका परिणाम (रूपान्तर) दधि होवै है। तैसैं सांख्यमतमैं प्रकृतिका परिणाम जगत् है। औ उपासकोंके मतमें ब्रह्मका परिणाम जगत् औ जीव है ॥ ऐसैं तिनोंनैं परिणामवाद मान्या है।यामैं कार्य अरु कारणका अभेद है ॥

३ विवर्तवाद—जैसैं निर्विकाररज्जुविषै रज्जु रूप अधिष्ठानतैं विषमसत्तावाला अन्यथास्वरूप सर्प होवै है। सो रज्जुका विवर्त (कल्पित-कार्य) है ॥ तैसैं निर्विकारब्रह्मविषै अधिष्ठान-ब्रह्मतैं विषमसत्तावाला अन्यथास्वरूप जगत् होवैहै ॥सो ब्रह्मका विवर्त (कल्पित कार्य) है॥ ऐसैं वेदांतसिद्धांतमैं विवर्तवाद मान्या है। यामैं बी कार्य अरु कारणका बाधकृत अभेद है ॥

काल ३--१ भूतकाल ॥ २ भविष्यत्काल ॥
३ वर्तमानकाल ॥

जाग्रत् ३--

१ जाग्रत्जाग्रत्—वर्तमानजाग्रत्‌विषै जो स्वरूपका सांक्षात्कार होवै सो ॥

२ जाग्रत्स्वप्न—जाग्रत्‌विषै जो भूत वा भविष्यअर्थका चिंतनरूप मनोराज्य होवै है सो ॥

३ जाग्रत्सुषुप्ति—जाग्रत्‌विषै श्रमकरि जडीभूत वृत्ति होवै सो ॥

जीव—३

१ पारमार्थिकजीव—साक्षी (कूटस्थ) चेतन ॥

२ व्यावहारिकजीव-साभासअंतःकरणरूपजीव ॥

३ प्रातिभासिकजीव-साभासअंतःकरणरूपव्यावहारिकजीवमैं स्वप्नविषै अध्यस्त जीव ॥

१ विश्व--जाग्रत्‌विषै तीनदेहका अभिमानीजीव ॥

२ तैजस—स्वप्नविषै स्थूलदेहके अभिमानकूं छोडिके सूक्ष्म औ कारण इन दो देहका अभिमानी वही जीव ॥

३ प्राज्ञ--सुषुप्तिविषै स्थूलसूक्ष्मदेहके अभिमानकूं छोडिके एक कारणदेहका अभिमानी वही जीव ॥

ताप ३—दुःख ॥

१ अध्यात्मताप-स्थूलसूक्ष्मशरीरविषै होता जो है आधि औ व्याधिरूप दुःख। सो अध्यात्मताप है ॥

२ अधिदैवताप--देवताकरि जो शीत उष्ण अतिवृष्टि अनावृष्टि विद्युत्पात भूकंपआदिक दुःख होवे है। सो अधिदैवताप है ॥

३ अधिभूतताप--स्वशरीरतैं भिन्न चक्षुगोचरप्राणि चोर व्याघ्र शत्रु आदि) नकरि होता है जो दुःख। सो अधिभूतताप है ॥

नादादि ३—

१ नाद--ॐकार वा शब्दगुण वा पराआदिक ४ वाणी ॥

२ बिंदु-ॐकारका अलक्ष्यअर्थरूप तुरीयपद ॥

३ कला-ॐकारकी अकारादि मात्रा परावाणी-रूप अंक (शब्दका अवयव) ॥

निवृत्ति ३ (तादात्म्यकी निवृत्ति):---

१ भ्रमजकी निवृत्ति--ज्ञानसैं भ्रांति (अवि-वेक)के नाशकरी भ्रमजतादात्म्यकी निवृत्ति होवै है ॥

२ सहजकी निवृत्ति--सहजतादात्म्यकाज्ञानसैं बाध औज्ञानीके देहपातके अनंतरनाश होवैहै॥

३ कर्मजकी निवृत्ति--कर्मजतादात्म्य प्रारब्ध भोगके अन्त भये ज्ञानीकी निवृत्ति होवै है ॥

पापकर्म ३----१ उत्कृष्टपापकर्म ॥ २ मध्यम-पापकर्म ॥ ३ सामान्यपापकर्म ॥

पुण्यकर्म ३—१ उत्कृष्टपुण्यकर्म ॥ २ मध्यम-पुण्यकर्म ॥ ३ सामान्यपुण्यकर्म ॥

प्रपंच ३--१ स्थूलप्रपंच ॥ २ सूक्ष्मप्रपंच ॥ ३ कारणप्रपंच ॥

प्राणायाम ३-१ पूरक ॥ २ कुम्भक ॥ ३ रेचक ॥

प्रारब्ध ३-१ इच्छाप्रारब्ध ॥ २ अनिच्छा प्रारब्ध ॥ ३ परेच्छाप्रारब्ध ॥

ब्रह्म ३-१ विराट् ॥ २ हिरण्यगर्भ ॥ ३ ईश्वर ॥

मिश्रकर्म ३-१ उत्कृष्टमिश्रकर्म ॥ २ मध्यम, मिश्रकर्म ॥ ३ सामान्यमिश्रकर्म ॥

मूर्ति ३--१ ब्रह्मा ॥ २ विष्णु ॥ ३ शिव ॥

लक्षणदोष ३---

१ अव्याप्तिदोष-लक्ष्यके एकदेशविषै लक्षणका वर्तना ॥

२ अतिव्याप्तिदोष--लक्ष्यके तांई व्यापिके अलक्ष्यविषै बी लक्षणका वर्तना ॥

३ असंभवदोष--लक्ष्यविषै लक्षणका न वर्तना ॥

३ लोक १ स्वर्ग ॥ २ मृत्यु ॥ ३ पाताल ॥

वादादि ३---

१ वाद--गुरुशिष्यका संवाद ॥

२ जल्प--युक्तिप्रमाणकुशलपंडितनका परमत, खण्डक स्वमतमंडक वाद ॥

३ वितंडा--मूर्खनका प्रमाणयुक्तिरहित वाद ॥ किंवा स्वपक्षका स्थापन करीके परपक्षकाहीं खण्डन सो ॥ जैसैं श्रीहर्षमिश्राचार्यने खण्डन ग्रन्थविषै किया है ॥

विधिवाक्य ३--

१ अपूर्वविधिवाक्य--अलौकिकक्रियाका विधायकवाक्य ॥

२ नियमविधिवाक्य—प्राप्त दोपक्षनविषै एकका विधायकवाक्य ॥

३ परिसंख्याविधिवाक्य—उभयपक्षविषै एकके निषेधका विधायक वाक्य ॥

वेदके कांड ३—१ कर्मकांड ॥ २ उपासनाकांड ॥ ३ ज्ञानकांड ॥

शरीर ३—१ स्थूलशरीर ॥ २ सूक्ष्मशरीर ॥ कारणशरीर ॥

श्रवणादि ३—१ श्रवण ॥ २ मनन ॥ निदिध्यासन ॥

श्रवणादिफल ३—' प्रमाणसंशयनाश (श्रवणफल) ॥ २ प्रमेयसंशयनाश (मननफल) ॥ ३ विपर्ययनाश (निदिध्यासनफल) ॥

संबंध ३—१ संयोगसंबंध ॥ २ समवायसंबंध ॥ ३ तादात्म्यसंबंध ॥

सुषुप्ति ३—

१ सुषुप्तिजाग्रत्—सात्त्विकवृत्तिपूर्वक सुखसुषुप्ति ॥

२ सुषुप्तिस्वप्न—राजसवृत्तिपूर्वक दुःखसुषुप्ति ॥

३ सुषुप्तिसुषुप्ति—तामसवृत्तिपूर्वक गाढसुषुप्ति ॥

सुषुप्त्यादि ३—१ सुषुप्ति २ मूर्छा ॥ ३ समाधि ॥

स्वप्न :—

१ स्वप्नजाग्रत्-सत्यअर्थका स्वप्नविषै दर्शन ॥

२स्वप्नस्वप्न-स्वप्नविषैरज्जुसर्पादिभ्रांतिकादर्शन।

३ स्वप्नसुषुप्ति-दृष्टस्वप्नका अस्मरण ॥

हेत्वादि ३—१ हेतु ॥ २ स्वरूप ॥ ३ फल ॥

ज्ञातादि ३—१ ज्ञाता ॥ २ ज्ञान ॥ ३ ज्ञेय ॥

ज्ञानप्रतिबंधक ३—१ संशय ॥ २ असंभावना ॥ ३ विपरीतभावना ॥

ज्ञानादि ३-१ ज्ञान ॥ २ वैराग्य ॥ ३ उपशम ॥

पदार्थ चतुर्विंध ४

अनुबंध ४-- अपने ज्ञानके अनंतर पुरुषकूं ग्रन्थविषै जोडनैवाला ॥

१ अधिकारी-मलविक्षेपरूप दोषरहित औ अज्ञानरूप दोषरहित हुवा विवेकादिच्यारी साधनकरि सहित पुरुष वेदांतका अधिकारी है ॥

२ विषय-ब्रह्म अरु आत्माकी एकता। वेदांतशास्त्रका विषय (प्रतिपाद्य) है ॥

३ प्रयोजन-सर्वदुःखनकी निवृत्ति औ परमानंदकी प्राप्तिमोक्ष ॥

४ संबंध-ग्रन्थका औ विषयका प्रतिपादक-प्रतिपाद्यरूप सम्बन्ध है ॥

अन्तःकरण ४–

१ मन–संकल्पविकल्परूप वृत्ति ॥

२ बुद्धि–निश्चयरूप वृत्ति ॥

३ चित्त–चिंतन (स्मरण) रूप वृत्ति ॥

४ अहंकार–अहंतारूप वृत्ति ॥

आर्तादिभक्त ४–

१ आर्त–अध्यात्मआदिकदुःखकरि व्याकुल ॥

२ जिज्ञासु–भगवत्तत्त्वके जाननैकी इच्छा-वाला ॥

३ अर्थार्थी–यालोक वा परलोकके भोगकी इच्छावाला ॥

४ ज्ञानी–जीवन्मुक्त विद्वान् ॥

आश्रम ४––१ ब्रह्मचर्य ॥ २ गृहस्थ ॥ ३ वानप्रस्थ ॥ ४ संन्यास ॥

उत्पत्त्यादिक्रिया ४—इहां क्रियाशब्दकरि क्रिया जो कर्म । ताका फल कहिये है ॥

१ उत्पत्ति—आद्यलक्षण (जन्म) । जैसें कुलाल-की क्रियाका फलरूप घटकी उत्पत्ति है ॥

२ प्राप्ति—गमनरूप क्रियाका वांछितदेशकी प्राप्तिरूप फल है

३ विकार—अन्य रूपकी प्राप्ति । जैसें पाक (रसोई) रूप क्रियाका फलरूप अन्नका विकार (पलटना) है ॥

४ संस्कार—(१) मलकी निवृत्ति औ (२) गुणकी प्राप्ति ॥ इस भेदतैं संस्कार दोप्रकार-का होवै है ॥ (१) जैसें वस्त्रके प्रक्षालन-रूप क्रियाका फलरूप मलनिवृत्ति है सो प्रथम है औ (२) कुसुंभमैं वस्त्रके मज्जन-रूप क्रियाका फलरूप रक्तगुणकी उत्पत्ति है सो द्वितीय है ॥

चित्तनिरोधयुक्ति ४–१ आध्यात्मविद्या ॥ २ साधुसंग ॥ ३ वासनात्याग ॥ ४ प्राणायाम॥

धर्मादि ४–च्यारीपुरुषार्थ ॥

१ धर्म–सकाम वा निष्काम जो पुण्य सो ॥

२ अर्थ–इसलोक औ परलोकविषै जो भोग के साधन धनादिक हैं सो ॥

३ काम–इसलोक औ परलोकका जो भोग सो ॥

४ मोक्ष–दुःखनिवृत्ति औ सुखप्राप्ति ॥

पुरुषार्थ ४–१ धर्म ॥ २ अर्थ ॥ ३ काम ॥ ४ मोक्ष ॥

पूजापात्र ४–१ ब्रह्मनिष्ठ ॥ २ मुमुक्षु ॥ ३ हरिदास ॥ ४ स्वधर्मनिष्ठ ॥

प्रमाण ४–प्रमाज्ञानका करण प्रमाण है ॥ इहां च्यारीप्रमाणोंका कथन न्यायरीतिसैं है ॥

१ प्रत्यक्षप्रमाण ॥ २ अनुमानप्रमाण ॥

३ उपमानप्रमाण ॥ ४ शब्दप्रमाण ॥

ब्रह्मविदादि ४–

१ ब्रह्मवित्–चतुर्थभूमिकाविषै आरूढ ज्ञानी ॥
२ ब्रह्मविद्वर–पंचमभूमिकाविषै आरूढ ज्ञानी ॥
३ ब्रह्मविद्वरीयान्-षष्ठभूमिकाविषैआरूढज्ञानी॥
४ ब्रह्मविद्वरिष्ठ-सप्तम भूमिकाविषैआरूढ ज्ञानी॥

भूतग्राम–४

१ जरायुज २–मनुष्यपशुआदिक ॥
२ अंडज–पक्षीसर्पआदिक ॥
३ उद्भिज्ज–वृक्षादिक ॥
४ स्वेदज–यूकामत्कुणआदिक ॥

मैत्र्यादि ४–

१ मैत्री–धनवान् वा गुणकरि समान वा ईश्वर-भक्त वा विषयी [कर्मी उपासक] पुरुष इनविषै "ये मेरे हैं" ऐसी बुद्धि ॥
२ करुणा–दुःखी वा गुणकरि निकृष्ट वा अज्ञजन वा जिज्ञासु । इन विषै दया ॥

३ मुदिता—पुण्यवान् वा गुणकरि अधिक वा ईश्वर वा मुक्त । इनविषै प्रीति ॥
४ उपेक्षा—पापिष्ठ वा अवगुणयुक्त वा द्वेषी वा पामर । इनविषै रागद्वेषकरि रहिततारूप उदासीनता ॥
मोक्षद्वारपाल ४—१ शम ॥ २ संतोष ॥ ३ विचार (विवेक) ॥ ४ सत्संग ॥
योगभूमिका ४--१ वाणीलय ॥ २ मनोलय ॥ ३ बुद्धिलय ॥ ४ अहंकारलय ॥
वर्ण ४--१ब्राह्मण॥ २क्षत्रिय॥ ३वैश्य॥ ४ शूद्र ॥
वर्तमानज्ञानप्रतिबंधनिवृत्तिहेतु ४—
१ शमादि--यह विषयाशक्तिका निवर्तक है ॥
२ श्रवण- यह बुद्धिकी मंदताका निवर्तक है ॥
३ मनन--यह कुतर्कका निवर्तक है ॥
४ निदिध्यासन--यह विपरीतभावनाविषै जो दुराग्रह होवै है ताका निवर्तक है ॥

वर्त्तमानज्ञानप्रतिबंध ४– १ विषयाशक्ति ॥ २ बुद्धिमांद्य ॥ ३ कुतर्क ॥ ४ विषयाशक्ति दुराग्रह ॥

विवेकादि ४--१ विवेक ॥ २ वैराग्य ॥ ३ षट्-संपत्ति ॥ ४ मुमुक्षुता ॥

वेद ४--१ ऋग्वेद ॥ २ यजुर्वेद ॥ ३ साम-वेद ॥ ४ अथर्वणवेद ॥

शब्दप्रवृत्तिनिमित्त ४–१ जाति ॥ २ गुण ॥ ३ क्रिया ॥ ४ सम्बन्ध ॥

संन्यास ४-१ कुटीचकसंन्यास ॥ बहुदक-संन्यास ॥ ३ हंससंन्यास ॥ ४ परमहंस-संन्यास ॥

समाधिविघ्न ४–१ लय ॥ २ विक्षेप ॥ ३ काषाय ॥ ४ रसास्वाद ॥

स्पर्श--१ शीत ॥ २ उष्ण ॥ ३ कोमल ॥ कठिन ॥

पदार्थ पंचविध ५

अभाव ५—नास्तिप्रतीतिका विषय ॥

१ प्रागभाव—कार्यकी उत्पत्तितैं पूर्व जो कार्यका अभाव है सो ॥

२ प्रध्वंसाभाव—नाशके अनंतर जो अभाव होवैहै सो ॥

३ अन्योन्याभाव—परस्परविषे जो परस्परका अभाव है सो। जैसैं रूपभेद ॥ जैसैं घटपट का भेद है सो ॥

४ अत्यंताभाव—तीनिकालविषै जो अभाव है सो जैसैं वायुविषै रूपका है ॥

५ सामयिकाभाव—किसी (उठाय लेनेके) समयविषै जो भूतलादिकमैं घटादिकका अभाव होवै है सो ॥

अज्ञानके भेद ९—अज्ञानविषै वेदांत आचार्यनके मतके भेद ॥

१ **मायाअविद्यारूपअज्ञान**—केइक (विद्यारण्यस्वामी) अज्ञानकूं माया (समष्टिअज्ञानमयईश्वरकी उपाधि) औ अविद्या (व्यष्टिअज्ञानमय जीवनकी उपाधि) रूप मानते हैं ॥

२ **ज्ञानक्रियाशक्तिरूपअज्ञान**—केइक अज्ञानकूं ज्ञानशक्ति औ क्रियाशक्ति मानते हैं ॥

३ **विक्षेपआवरणरूपअज्ञान**—केइक अज्ञानकूं आवरणरूप अरु विक्षेप (की हेतुशक्ति) रूप मानते हैं ॥

४ समष्टिव्यष्टिरूपअज्ञान—केइक अज्ञानकूं समष्टि (ईश्वरकी उपाधि) औ व्यष्टि (जीव की उपाधि) रूप मानते हैं ॥

५ कारणरूपअज्ञान—केइक अज्ञानकूं जगत्का उपादानकारण मलप्रकृतिमय ईश्वरकी उपाधि रूप मानते हैं औ तिस पक्षमैं कार्य (अन्तः-करण) उपाधिवाला जीव मान्या है ॥

उपवायु ५—

१ नाग—उद्गारका हेतु वायु ॥

२ कूर्म—निमेषउन्मेषका हेतु वायु ॥

३ कृकल—छींकका हेतु वायु ॥

४ देवदत्त--जमुहाईका हेतु वायु ॥

५ धनंजय—हेतु वायु ॥

कर्म ५—

१ **नित्यकर्म**—सदा जाका विधान होवै है ऐसा कर्म (स्नानसंध्याआदिक) ॥

२ **नैमित्तिककर्म**—किसी निमित्तकूं पायके जाका विधान होवै है ऐसा कर्म (ग्रहण श्राद्ध-आदिक) ॥

३ **काम्यकर्म**—कामनाके लिये विधान किया कर्म (यज्ञयागादिक) ॥

४ **प्रायश्चित्तकर्म**—पापकी निवृत्तिके लिये विधान किया कर्म ॥

५ **निषिद्धकर्म**—नहीं करनेके लिये कथन किया कर्म (ब्रह्महत्यादिक) ॥

५ **कर्मइंद्रिय ५**—१ वाक्॥ २ पाणि॥ ३ पाद॥ ४ उपस्थ ॥ ५ गुद ॥

कोश ५–१ अन्नमयकोश ॥ २ प्राणमयकोश ॥
३ मनोमयकोश ॥ ४ विज्ञानमयकोश ॥
५ आनंदमयकोश ॥

क्लेश–

१ अविद्या–
[१] दुःखविषै सुखबुद्धि ॥
[२] अनात्माविषै आत्मबुद्धि ॥
[३] अनित्यविषै नित्यबुद्धि ॥
[४] अशुचिविषै शुचिबुद्धि ॥
यह च्यारीप्रकारकी कार्यअविद्या ॥

२ अस्मिता–साक्षी (आत्मा) औ बुद्धिकी एकताका ज्ञान (सामान्यअहंकार) ॥

३ राग–दृढआसक्ति (आरूढप्रीति)

४ द्वेष–क्रोध ॥

५ अभिनिवेष–मरणका भय ॥

ख्याति ५–प्रतीति औ कथनरूप व्यवहार ॥

१ असत्ख्याति–शून्यवादी । असत् (निः-स्वरूप) सर्पकी रज्जुदेशविषै प्रतीति औ कथन मानते हैं । सो ॥

२ आत्मख्याति–क्षणिकविज्ञानवादी । क्षणिक-बुद्धिरूप आत्माकी सर्परूपसैं प्रतीति औ कथन मानते हैं सो ॥

३ अन्यथाख्याति–नैयायिक । बंबी (राफडा) आदिक दूरदेशविषै स्थित सर्पकी दोषके बलसैं रज्जुदेशविषै प्रतीति औ कथन मानते हैं सो ॥ अथवा रज्जुरूप ज्ञेयका सर्परूपसैं ज्ञान मानते हैं । सो ॥

४ अख्यातिख्याति—सांख्यप्रभाकर मतके अनुसारी । "यह सर्प है" "यह" अंश तो रज्जुके इदंपनैका प्रत्यक्षज्ञान है औ " सर्प " यह पूर्व देखे सर्पका स्मृतिज्ञान है । ये दो

ज्ञान हैं । तिनका दोषके बलसैं अख्याति कहिये अविवेक (भेदप्रतीतिका अभाव) होवै है । ऐसैं मानते हैं ॥

९ अनिवचनीयख्याति-वेदांतसिद्धांतमैं:-रज्जुविषै ताकी अविद्याकरि अनिर्वचनीय (सत्असत्सैं विलक्षण) सर्प औ ताका ज्ञान उपजे है । ताकी ख्याति कहिये प्रतीति औ कथन होवै है ॥ ऐसैं मानते-हैं । सो ॥

जीवन्मुक्तिके प्रयोजन ९——यद्यपि जीवन-मुक्ति तो ज्ञानीकूं सिद्ध है । तथापि इहां जीवन्मुक्ति शब्दकरि जीवन्मुक्तिके विलक्षण-आनंदकी अवस्था (पंचमआदिकभूमिका) का ग्रहण है । ताके प्रयोजन कहिये फल पांच-प्रकारके हैं ॥

१ ज्ञानरक्षा—यद्यपि एकवार उपजे दृढ-बोधका नाश नहीं होवै है । यातैं ज्ञानरक्षा आपहीं सिद्ध है । तथापि इहां निरंतर ब्रह्माकारवृत्तिकी स्थिति । ज्ञानरक्षा शब्दका अर्थ है ॥

२ तप—मन औ इंद्रियनकी एकाग्रता वा शरीर वाणी औ मनका संयम ॥

३ विसंवादाभाव—जल्प औ वितंडवादका अभाव ॥

४ दुःखनिवृत्ति—दृष्ट (प्रत्यक्ष) दुःखकी निवृत्ति ॥

५ सुखप्राप्ति—निरावरण परिपूर्ण औ सवृत्तिकरूप जीवन्मुक्तिके विलक्षण आनन्दकी प्राप्ति ॥

दृष्टांत ५—जगत्के मिथ्यापनैविषै दृष्टांत पंचविध है ॥

१ शुक्तिविषै रजतका दृष्टांत ॥

२ रज्जुविषै सर्पका दृष्टांत ॥

३ स्थाणुविषै पुरुषका दृष्टांत ॥

५ मरीचिकाविषै जलका दृष्टांत—मध्याह्नकालमैं मरुभूमि (ऊषरभूमि) विषै प्रतिबिंबित सूर्यके किरण मरीचिका कहिये हैं। तिनविषै जो जल भासता है। ताकूं मृगजल औ जांजूजल कहते हैं। सो ॥

नियम ५—

१ शौच ॥ २ सन्तोष ॥ ३ तप ॥

४ स्वाध्याय—स्वशाखाके वेदभागका वा गीता आदिकका जो नित्य पाठ करना सो ॥

५ ईश्वरप्रणिधान—ॐकारादिईश्वर उपासना ॥

प्रलय ४–

१ नित्यप्रलय–क्षणक्षणविषै सर्वकार्यनका जो दीपज्योतिकी न्यांई नाश होवै है सो । वा सुषुप्ति ॥

२ नैमित्तिकप्रलय–ब्रह्माकी रात्रिरूप निमित्त-करि होता जो है भूरआदि नीचेके तीनलोक-नका नाश सो ॥

३ दिनप्रलय–ब्रह्माके दिनमैं चतुर्दशमन्वंतर होते हैं । तिस प्रत्येकका जो नाश । सो ॥ वाही कूं अवांतरप्रलय औ मन्वंतरप्रलय बी कहते हैं ॥ कोई तो याहीकूं नैमित्तिकप्रलय कहते हैं ॥

४ महाप्रलय–ब्रह्माके शतवर्षके अनंतर जो होता है ब्रह्मदेवसहित आकाशादिसर्वभूतनका नाश सो ॥

९ आत्यंतिकप्रलय–ज्ञानकरि जो होता है कारणसहित सकलजगत्का बाध (अत्यन्त-निवृत्ति सो ॥

प्राणादि ५–१ प्राण ॥ २ अपान ॥ ३ व्यान ॥ ४ उदान ॥ ५ समान ॥

भेद ५–१ जीवईश्वरका भेद ॥ २ जीव-जीवका भेद ॥ ३ जीवजड़काभेद ॥ ४ ईश-जडका भेद ॥ ५ जडजडका भेद ॥

भ्रम ५–(देखो षष्ठकलाविषै) १ भेदभ्रम ॥ २ कर्तृत्वभ्रम ॥ ३ संगभ्रम ॥ ४ विकार-भ्रम ॥ ५ सत्यत्वभ्रम ॥

भ्रमनिवर्तकदृष्टांत ५– देखो षष्ठकलाविषै) १ बिंबप्रतिबिंब ॥ २ लोहितस्फटिक ॥ ३ घटाकाश ॥ ४ रज्जुसर्प ॥ ५ कनककुंडल ॥

महायज्ञ ५–१ देव ॥ २ ऋषि ॥ ३ पितर ॥ ४ मनुष्य ॥ ५ भूतयज्ञ ॥

यम--५

१ अहिंसा ॥ २ सत्य ॥ ३ ब्रह्मचर्य ॥

४ अपरिग्रह–निर्वाहसैं अधिकधनका असंग्रह ॥

५ अस्तेय–चोरीका अभाव ॥

योगभूमिका ५–

१ क्षेप–रागद्वेषादिकरि चित्तकी चंचलता ॥

२ विक्षेप—बहिर्मुखचित्तकी जो कदाचित ध्यानयुक्तता ॥ सो क्षेपतैं विशेष विक्षेप है ॥

३ मूढ–निद्रातंद्रादियुक्तता ॥

४ एकाग्र ॥ ५ निरोध ॥

वचनादि ५–१ वचन ॥ २ आदान ॥ ३ गमन ॥ ४ रति ॥ ५ मलत्याग ॥

शब्दादि ५–१ शब्द ॥ २ स्पर्श ॥ ३ रूप ॥ ४ रस ॥ ५ गंध ॥

स्थूलभूत ५–१ आकाश ॥ २ वायु ॥ ३ तेज ॥ ४ जल ॥ ५ पृथ्वी ॥

हेत्वाभास ५ हेतुके लक्षण (साध्यकी साधकता) सैं रहित हुया हेतुकी न्यांई भासे। ऐसा जो दुष्टहेतु सो। वा हेतुका जो आभास (दोष सो ॥

१ सव्यभिचार—साध्य (अग्नि) के आश्रय (पर्वत) औ ताके अभावके आश्रय (हृद) विषैं वर्तनेवाला हेतु। सव्यभिचार है ॥ जैसे पर्वत अग्निमान् है "प्रमेय होनैतैं" यह हेतु है। याहींकूं अनैकांतिकहेतु बी कहते हैं ॥

२ विरुद्ध—साध्यके अभावकरि व्याप्त हेतु विरुद्ध है। जैसैं "शब्द नित्य है कृतक (क्रियाजन्य) होनतैं" यह हेतु है। सो साध्य (नित्यता) अभावरूप अनित्यताकरि व्याप्त है काहेतैं जो कृतक है सो अनित्य है। घटवत् ॥ इस नियमतैं ॥

३ सत्प्रतिपक्ष—जाके साध्यके अभावका

साधक अन्यहेतु होवै सो। जैसें शब्द नित्य हो। "श्रवण होनैतें" इस हेतुके साध्य (नित्यता) के अभावका साधक। शब्द अनित्य है "कार्य होनैतें" घटकी न्यांई। यह हेतु है॥ जो कार्य होवै सो अनित्यहीं होवै है॥

४ असिद्ध—शब्द गुण है। "चाक्षुष होनैतें" रूपकी न्यांई॥ इहां चाक्षुषत्वरूप हेतुका स्वरूप शब्दरूप पक्षविषै नहीं है। काहेतें शब्दकूं श्रवणजन्य ज्ञानका विषय होनैतें॥

५ बाधित—जाके साध्यका अभाव अन्य प्रमाणकरि निश्चित होवै सो। जैसें अग्नि उष्ण नहीं है "द्रव्य (वस्तु) होनैतें"। इस हेतुके साध्य (अनुष्णता) के अभाव (उष्णता) का ग्रहणत्वक्इंद्रियकरि होवै है॥

ज्ञानइंद्रिय ५—१ श्रोत्र॥ २ त्वक्॥ ३ चक्षु॥ ४ जिह्वा॥ घ्राण॥

पदार्थ षड्विध ६

अजिह्वत्वादि ६—यति(संन्यासी) के धर्मविशेष ॥

१ अजिह्वत्व—रसविषयकी आसक्ति रहितता ॥

२ नपुंसकत्व—कुमारी । किशोरी (१६ वर्षकी) अरु वृद्धास्त्रीविषै समता (निर्विकारिता) रूप ॥

३ पंगुत्व—एकदिनमैं योजनतैं अधिक आगमन ॥

४ अन्धत्व—एकधनुषपर्यंततैं अधिक दृष्टिका अप्रसरण ॥

५ बधिरत्व—व्यर्थालापका अश्रवण ॥

६ मुग्धत्व—व्यवहारविषै शून्यता (मूढता) ॥

अनादिपदार्थ ६—उत्पत्तिरहित पदार्थ ॥

१ जीव ॥ २ ईश ॥ ३ शुद्धचेतन ॥ ४ अविद्या ॥ ५ चेतनअविद्यासंबंध ॥ ६ तिनका भेद ॥

अरिवर्ग ६--परलोकके विरोधी आंतर (भीतरस्थित) शत्रुनका समूह ॥

१ काम--प्राप्तवस्तुके भोगकी इच्छा ॥

२ क्रोध--द्वेष ॥

३ लोभ- अप्राप्त वस्तुकी प्राप्तिकी इच्छा ॥

४ मोह--आत्माअनात्माका वा कार्य (शुभ) अकार्य (अशुभ) का अविवेक ॥

५ मद--गर्व (अहंकार) ॥

६ मत्सर--परके उत्कर्षका असहन ॥

अवस्था ६--स्थूलदेहका काल ॥

१ शिशु--एक वर्षके देहका काल ॥

२ कौमार -पांचवर्षके देहका काल ॥

३ पौगंड -षट्सैं दशवर्षके देहका काल ।

४ किशोर-एकादशसैं पंचदशवर्षके देहका काल॥

५ यौवन-षोडशसैं चालीसवर्षके देहका काल ॥

६ जरा--चालीशसैं ऊपरके देहका काल ॥

ईश्वरके भग ६-- १ समग्रऐश्वर्य ॥ २ समग्रधर्म ॥ ३ समग्रयश ॥ ४ समग्रश्री ॥ ५ समग्रज्ञान ॥ ६ समग्रवैराग्य ॥

ईश्वरके ज्ञान ६--

१ उत्पत्ति ॥ प्रलय ॥ ३ गति ॥

४ आगति-- इस लोकविषैं जीवका आगमनरूप आगति है ताका ज्ञान ॥

५ विद्या ॥ ६ अविद्या ॥

ऊर्मि ६--संसाररूप सागरकी लहरीयां ॥

१ जन्म ॥ २ मरण ॥ ३ क्षुधा ॥ ४ तृषा ॥ ५ हर्ष ॥ ६ शोक ॥

कर्म ६- नित्यकर्म ॥

१ स्नान ॥ २ जप ॥ ३ होम ॥

४ अर्चन --देवपूजन ॥

५ आतिथ्य–भोजनके समय आये अभ्यागतके अर्थ अन्नदान ॥

६ वैश्वदेव– अग्निविषै हुतद्रव्यका होम ॥

कौशिक ६–अन्नमयकोश (देह) विषै होनैवाले पदार्थ ॥

१ त्वक् । २ मांस ॥ ३ रुधिर ॥ ४ मेद ॥ ५ मज्जा ॥ ६ अस्थि ॥

प्रमाण ६---

१ प्रत्यक्षप्रमाण–प्रत्यक्षप्रमाणका जो करण सो प्रत्यक्षप्रमाण है । ऐसैं श्रोत्रआदिक पांचज्ञानेंद्रिय हैं ।

२ अनुमानप्रमाण–अनुमितिप्रमाका करण जो लिंगका ज्ञान सो अनुमानप्रमाण है । जैसैं पर्वतविषैं अग्निके ज्ञानका हेतु धूमरूप लिंगका ज्ञान है ॥

३ उपमानप्रमाण—उपमितिप्रमाका करण जो सादृश्यका ज्ञान सो उपमानप्रमाण है। जैसैं गवय (रोझ) मैं गौके सादृश्यका ज्ञान है ॥

४ शब्दप्रमाण—शाब्दीप्रमाका करण जो लौकिकवैदिकशब्द । सो ॥

५ अर्थापत्तिप्रमाण--अर्थापत्तिप्रमाका करण जो उपपाद्यका ज्ञान । सो अर्थापत्तिप्रमाण है ॥ जैसैं दिनमैं अभोजी स्थूलपुरुषके रात्रिमैं भोजनके ज्ञानरूप अर्थापत्तिप्रमाका हेतु स्थूलता (उपपाद्यका) ज्ञान है ॥

६ अनुपलब्धिप्रमाण--अभावप्रमाका करण जो पदार्थकी अप्रतीति । सो अनुपलब्धि-प्रमाण है । जैसैं गृहमैं घटके अभावके ज्ञानकी हेतु घटकी अप्रतीति है ॥

भ्रम ६--१ ॥ कुल २ गोत्र ॥ ३ जाति ॥
४ वर्ण ॥ ५ आश्रय ॥ ६ नाम ॥

रस ६--१ मधुररस ॥ २ आम्लरस ॥
३ लवणरस ॥ ४ कटुकरस ॥ ५ कषायरस ॥
६ तिक्तरस ॥

लिंग ६--वेदवाक्यके तात्पर्यके निश्चायक लिंग ॥
१ उपक्रमउपसंहार--आदिअन्तकी एकरूपता॥
२ अभ्यास-- बारंबार पठन ॥
३ अपूर्वता -अलौकिकता ॥
४ फल—मोक्ष ॥
५ अर्थवाद—स्तुति ॥
६ उपपत्ति—अनुकूलदृष्टांत ॥

विकार ६—१ जन्म ॥
२ आस्तता— पूर्व अविद्यमानका होना ॥
३ बुद्धि ॥ ४ विपरिणाम ॥ ५ अपक्षय
६ विनाश ॥

वेदअंग ६–१ शिक्षा ॥ २ कल्प ॥ ३ व्याकरण ॥ ४ निरुक्त ॥ ५ छंद ॥ ६ ज्योतिष ॥

शमादि ६–१ शम ॥ २ दम ॥ ३ उपरति ॥ ४ तितिक्षा ॥ ५ श्रद्धा ॥ ६ समाधान ॥

शास्त्र ६–१ सांख्यशास्त्र ॥ २ योगशास्त्र ॥ ३ न्यायशास्त्र ॥ ४ वैशेषिकशास्त्र ॥ ५ पूर्वमीमांसाशास्त्र ॥ ६ उत्तरमीमांसाशास्त्र ॥

समाधि ६–१ बाह्यदृश्यानुविद्धसमाधि ॥ २ आंतरदृश्यानुविद्धसमाधि ॥ ३ बाह्यशब्दानुविद्धसमाधि ॥ ४ आंतरशब्दानुविद्धसमाधि ॥ ५ बाह्यनिर्विकल्पसमाधि ॥ ६ आंतरनिर्विकल्प समाधि ॥

सूत्र ६–१ जैमिनीयसूत्र ॥ २ आश्वलायनसूत्र ३ आपस्तंबसूत्र ॥ ४ बौधायनसूत्र ॥ ५ कात्यायनसूत्र ॥ ६ वैखानसीयसूत्र ॥

पदार्थ सप्तविध ७

अतलादि ७–१ अतल ॥ २ वितल ॥ ३ सुतल ॥ ४ तलातल ॥ ५ रसातल ॥ ६ महातल ॥ ७ पाताल ॥

अवस्था ७–चिदाभासकी क्रमतैं तीन बंधकी औ च्यारी मोक्षकी हेतु दशा ॥

१ अज्ञान–"नहिं जानताहूं" इस व्यवहारका हेतु जो आवरणविक्षेपहेतु शक्तिवाला अनादि अनिर्वचनीयभावरूप पदार्थ सो ॥

२ आवरण–" नहीं है । नहीं भासता है" इस व्यवहारका हेतु अज्ञानका कार्य ॥

३ विक्षेप–धर्मसहित देहादिप्रपंच औ ताका ज्ञान॥ ४ परोक्षज्ञान ॥ ५ अपरोक्षज्ञान ॥

६ शोकनाश–विक्षपनाश (भ्रांतिनाश) ॥

७ तृप्ति–ज्ञानजनित हर्ष ॥

चेतन ७—

१ ईश्वरचेतन—मायाविशिष्टचेतन ॥

२ जीवचेतन—अविद्याविशिष्ट चेतन ॥

३ शुद्धचेतन—निरुपाधिक चेतन ॥

४ प्रमाताचेतन—प्रमाता जो अन्तःकरण तिसकरि अवच्छिन्नचेतन । प्रमाताचेतन है ॥

५ प्रमाणचेतन—इंद्रियद्वारा शरीरसैं बाहिर निकसिके घटादिविषयपर्यंत पहूंची जो वृत्ति-सो प्रमाण है । तिसकरि अवच्छिन्नचेतन । प्रमाण चेतन है ॥

६ प्रमेयचेतन—प्रमेय जो घटादिविषय तिसकरि अवच्छिन्न (अन्योसैं भिन्न किया) चेतन । प्रमेयचेतन है ॥

७ प्रमाचेतन—घटादिविषयाकार भई जो वृत्ति सो प्रमा है तिसकरि अवच्छिन्न चेतन वा तिसविषै प्रतिबिंबित चेतन प्रमाचेतन है । याहीकूं प्रमितिचेतन ओ फलचेतनबी कहते हैं॥

द्रव्यादिपदार्थ ७—नैयायिकमतमैं जे द्रव्यआदि सप्तपदार्थ माने हैं। वे ॥

१ द्रव्य—न्यायमतमैं [१] पृथ्वी [२] जल [३] तेज [४] वायु [५] आकाश [६] काल [७] दिशा [८] आत्मा [९] मन। ये नव द्रव्य (गुणनके आश्रयरूप पदार्थ) माने हैं। वे ॥

२ गुण—न्यायमतमैं रूपसैं आदिलेके संस्कार-पर्यंत २४ गुण माने हैं। वे ॥

३ कर्म—न्यायमतमैं [१] उत्क्षेपण (ऊँचे फेंकना) [२] अपक्षेपण (नीचे फेंकना) [३] आकुञ्चन [४] प्रसारण औ [५] गमन। ये पंचविधकर्म माने हैं। वे ॥

४ सामान्य—न्यायमतमैं पर (सत्ता) औ अपर (घटत्वादिक) इस भेदतैं द्विविध जाति मानी है। सो ॥

५ समवाय—वेदांतमतसैं जहां जहां तादात्म्यसम्बन्ध मान्या है तहां तहां न्यायमतमैं सम्बन्धविशेष (नित्यसंबंध) मान्या है। सो ॥

६ अभाव—[१] प्रागभाव [२] प्रध्वंसाभाव [३] अन्योन्याभाव [४] अत्यंताभाव औ [५] सामयिकाभाव । यह पंचविध नास्तिप्रतीतिके विषयरूप पदार्थ ॥

७ विशेष न्यायमतमैं जे परमाणुनके मध्यगत अनंतअवकाशरूप पदार्थ माने हैं। वे ॥

धातु ७—

१ रस—सूक्ष्म (पुण्यपाप) । मध्यम (अन्नका सार) औ स्थूल (मल) भेदतैं तीन प्रकारके जो भुक्तअन्नके विभाग होवे है । तिनमैंसैं मध्यविभाग है । सो ॥

२ रुधिर ॥ ३ मांस ॥

४ मेद—श्वेतमास (चर्बी) ॥

५ मज्जा—अस्थिगत सचिक्कणपदार्थ ॥
६ अस्थि ॥ ७ रेत ॥

भूरादिलोक ७—१ भूरर्लोक ॥ २ भुवरर्लोक ॥
३ स्वरर्लोक ॥ ४ महरलोक ॥ ५ जनलोक ॥
६ तपर्लोक ॥ ७ सत्यलोक ॥

मौनादि ७—१ मौन ॥ २ योगासन ॥
३ योग ॥ ४ तितिक्षा ॥ ५ एकांतशीलता ॥
६ निःस्पृहता ॥ ७ समता ॥

रूप ७—१ शुक्ल ॥ २ कृष्ण ॥ ३ पीत ॥
४ रक्त ॥ ५ हरित ॥ ६ कपिश ॥ ७ चित्र ॥

व्यसन ७—१ तन ॥ २ मन ॥ ३ क्रोध ॥ ४ विषय ॥
५ धन ॥ ६ राज्य ॥ ७ सेवकव्यसन ॥

ज्ञानभूमिका ७—(देखो या ग्रन्थकी त्रयोदश-
कलाविषै) १ शुभेच्छा ॥ २ सुविचारणा ॥
३ तनुमानसा ॥ ४ सत्त्वापत्ति ॥ ५ असं-
सक्ति ॥ ६ पदार्थाभाविनी ॥ ७ तुरीयगा ॥

पदार्थ अष्टविध ८

पाश ८—१ दया ॥ २ शंका ॥ ३ भय ॥ ४ लज्जा ॥ ५ निंदा ॥ ६ कुल ॥ ७ शील ॥ ८ धन ॥

पुरी ८—१ ज्ञानेंद्रियपंचक ॥ २ कर्मेन्द्रियपंचक॥ ३ अंतःकरणचतुष्टय ॥ ४ प्राणादिपंचक ॥ ५ भूतपंचक ॥ ६ काम ॥ ७ त्रिविधकर्म ॥ ८ वासना ॥

प्रकृति ८—१ पृथ्वी ॥ २ जल ॥ ३ अग्नि ॥ ४ वायु ॥ ५ आकाश ॥

६ मन—इहां मनशब्दकरि समष्टिमनरूप अहंकारका ग्रहण है ॥ ॥

७ बुद्धि—इहां बुद्धिशब्दकरि समष्टिबुद्धिरूप महत्तत्त्वका ग्रहण है ॥

८ अहंकार—इहां अहंकारशब्दकरि महत्तत्त्वतैं पूर्व शुद्धअहंकारके कारणअज्ञानरूप मूल प्रकृतिका ग्रहण है ॥

ब्रह्मचर्यके अंग ८—

१ स्त्रीका दर्शन ॥ २ स्पर्शन ॥
३ केलिः—चोपडआदिक क्रीडा (खेल) ॥
४ कीर्तन ॥ ५ गुह्यभाषण ॥
६ संकल्प—चिंतन (स्मरण) ॥
७ निश्चय ॥ ८ इनका त्याग ॥

इन अष्टमैथुनसैं विपरीत ॥

मद ८—१ कुलमद ॥ २ शीलमद ॥ ३ धनमद ॥ ४ रूपमद ॥ ५ यौवनमद ॥ ६ विद्यामद ॥ ७ तपमद ॥ ८ राज्यमद ॥

मूर्तिमद ८–

१ पृथ्वीमद–अस्थिमांसादिपृथ्वीके तत्त्वनका अभिमान ॥

२ जलमद–शुक्रशोणितआदिक जलके तत्त्वनका अभिमान ॥

३ तेजमद-क्षुधाआदिकतेजतत्त्वनकी अधिकता॥

४ पवनमद- चलन (विदेशगमन) धावन आदिक आयुके तत्त्वोंकरि युक्तता ॥

५ आकाशमद–कामक्रोधादिक आकाशके तत्त्वोंकरि युक्तता ॥

६ चंद्रमद–शीतलतारूप चन्द्रके गुणकरि युक्त होना ॥

७ सूर्यमद–संताप (क्रोधादि) रूप सूर्यके गुणकरि युक्त होना ॥

८ आत्ममद–विद्याधनकुल आदिक आत्माके संबंधिनका अभिमान ॥

शब्दशक्तिग्रहणहेतु ८—१ व्याकरण ॥ २ उपमान ॥ ३ कोश ॥ ४ आप्तवाक्य ॥ ५ वृद्धव्यवहार ॥ ६ वाक्यशेष ॥ ७ विवरण सिद्धपदकी सन्निधि ॥

समाधिके अंग ८—१ यम ॥ २ नियम ॥ ३ आसन ॥ ४ प्राणायाम ॥ ५ प्रत्याहार ॥ ६ धारणा ॥ ७ ध्यान ॥ ८सविकल्पसमाधि॥

पदार्थ नवविध ९

तत्त्व ९—किसी महात्माके मतमैं लिंगदेहके नवतत्त्व माने हैं वे ॥ १ श्रोत्र ॥ २ त्वक् ॥ ३ चक्षु ॥ ४ जिह्वा ॥ ५ घ्राण ॥ ६ मन ॥ ७ बुद्धि ॥ ८ चित्त ॥ ९ अहंकार ॥

संसार ९—१ ज्ञाता ॥ २ ज्ञान ३ ज्ञेय ॥ ४ भोक्ता ॥ ५ भोग्य ॥६ भोग ॥ ७ कर्त्ता ॥ ८ करण ॥ ९ क्रिया ॥

पदार्थ दशविध १०

नाडिका औ देवता १०–

१ इडा (चन्द्र) वामनासिकागत चंद्रनाडी। हरिदेवता ॥

२ पिंगला (सूर्य) दक्षिणनासिकागत सूर्यनाडी॥ ब्रह्मा देवता ॥

३ सुषुम्णा (मध्यमा)नासिकाके मध्यगतनाडी॥ रुद्र देवता ॥

४ गांधारी (दक्षिणनेत्र) इंद्र ॥

५ हस्तिजिह्वा (वामनेत्र) वरुण ॥

६ पूषा (दक्षिणकर्ण) ईश्वर ॥

७ यशस्विनी (वामकर्ण) ब्रह्मा ॥

८ कुहू (गुदा) पृथ्वी ॥

९ अलंबुषा (मेढ्र) सूर्य ॥

१० शंखिनी (नाभि) चन्द्र ॥

श्रृंगारादिरस १०—१श्रृङ्काररस ॥ २ वीररस ॥ ३ करुणारस ॥ ४ अद्भुतरस ॥ ५ हास्यरस ॥ ६ भयानकरस ॥ ७ बीभत्सरस ॥ ८ रौद्ररस ॥ ९ शांतिरस ॥ १० प्रेमभक्ति वा ज्ञानरस ॥

पदार्थएकादशविध ११

ज्ञानसाधन ११–

१ विवेक ॥ २ वैराग्य ॥ ३ षट्संपत्ति ॥ ४ मुमुक्षुता ॥

५ गुरूपसत्ति—विधिपूर्वक गुरुके शरण जाना ॥ ६ श्रवण ॥ ७ तत्त्वज्ञानाभ्यास ॥ ८ मनन॥ ९ निदिध्यासन ॥

१० मनोनाश—इहां मनशब्दकरि रजतमसैं सत्त्वगुणका तिरस्काररूप मनका स्थूलभाव

कहिये है । ताका नाश कहिये ब्रह्माभ्यास की प्रबलतासैं रजतमके तिरस्कारकरि जो सत्त्वगुणका आविर्भाव होवै है । सो ॥
११ वासनाक्षय ॥

पदार्थद्वादशविध १२

अनात्माके धर्म १२—

१ अनित्य ॥ २ विनाशी ॥ ३ अशुद्ध ॥
४ नाना ॥ ५ क्षेत्र ॥ ६ आश्रित ॥
७ विकारि ॥ ८ परप्रकाश्य ॥ ९ हेतुमान् ॥
१० व्याप्य—परिच्छिन्न (देशकालवस्तुकृत परिच्छेदवाला)
११ संगी ॥ १२ आवृत ॥

आत्माके धर्म १२—

१ नित्यः—उत्पत्ति अरु नाशतैं रहित ॥
२ अव्ययः—घटनैंबढनैंसैं रहित ॥

३ शुद्धः—मायाअविद्यारूप मलरहित ॥
४ एकः—सजातीयभेदरहित
५ क्षेत्रज्ञः—शरीररूप क्षेत्रका ज्ञाता ॥
६ आश्रयः—अधिष्ठान ॥
७ अविक्रियः—अविकारी ॥
८ स्वप्रकाशः—अपनै प्रकाशविषे अन्य (स्वपर) प्रकाशकी अपेक्षासैं रहित हुया सर्वका प्रकाशक ॥
९ हेतुः—जालेके कारण ऊर्णनाभिकी न्यांई औ नख अरु रोम (केश) नके कारण पुरुषकी न्यांई जगत्का अभिन्ननिमित्त (विवर्त) उपादानकारण है ॥
१० व्यापकः—अपरिच्छिन्न (परिपूर्ण) ॥
११ असंगी—सजातीय विजातीय औ स्वगत-संबंधरहित ॥
१२ अनावृतः—सर्वथा आवरणतैं रहित ॥

ब्राह्मणके व्रत १२--

१ ज्ञान ॥ २ सत्य ॥ ३ शम ॥ ४ दम ॥

५ श्रुत-शास्त्राभ्यास ॥

६ अमात्सर्य-परके उत्कर्षका असहनरूप जो मत्सर तिसतैं रहितपना ॥

७ लज्जा ॥ ८ तितिक्षा ॥

९ अनसूया-गुणोंके विषै दोषका आरोपरूप असूयासैं रहितता ॥

१० यज्ञ ॥ ११ दान ॥

१२ धैर्य-काम औ क्रोधके वेगका रोकना ॥

महत्ताहेतुधर्म १२-१ धनाढ्यता ॥

२ अभिजन-कुटुंब ॥ ३ रूप ॥ ४ तप ॥

५ श्रुत-शास्त्राभ्यास ॥

६ ओज-इन्द्रियनका तेज ॥

७ तेज ॥ ८ प्रभाव ॥ ९ बल ॥

१० पौरुष ॥ ११ बुद्धि ॥ १२ योग ॥

पदार्थ त्रयोदशविध १३

भागवतधर्म–भगवत्भक्तनके धर्म ॥

१ सकामकर्मके फलका विपरीत दर्शन ॥

२ धनगृहपुत्रादिविषै दुःखबुद्धि औ चलबुद्धि ॥

३ परलोकविषै नश्वरबुद्धि ॥

४ शब्दब्रह्म औ परब्रह्मविषै कुशलगुरुप्रतिगमन ॥

५ गुरुविषै ईश्वरबुद्धि औ निष्कपटसेवा ॥

६ परमेश्वरविषै सर्वकर्मसमर्पण ॥

७ भक्तिवैराग्यसहित स्वरूपानुभव । साधुसंग ॥

८ शौच । तप । तितिक्षा । मौन ॥

९ स्वाध्याय । आर्जव (सरलस्वभाव) ब्रह्मचर्य । अहिंसा औ द्वंद्वसमत्व (शीलउष्णआदिक द्वंद्वधर्मके सहनका स्वभाव) ॥

१० सर्वत्र आत्मारूप ईश्वरका दर्शन ॥

११ कैवल्य (एकाकी रहना) । अनिकेत

(गृह न बांधना) । एकांत (विविक्त) चीरवस्त्र । संतोष ॥

१२ सर्वभूतनविषै आत्माके भगवद्भावका दर्शन । औ भगवद्रूप आत्माविषै सर्वभूतनका दर्शन॥

१३ जन्मकर्मवर्णाश्रमादिकरि देहविषै निरभिमान औ स्वपरबुद्धिका अभाव ॥

पदार्थ चतुर्दशविध १४

त्रिपुटी १४——

ज्ञानेन्द्रियनकी त्रिपुटी

	इंद्रिय अध्यात्म	देवता अधिदैव	विषय अधिभूत
१	श्रोत्र ।	दिशा ।	शब्द ॥
२	त्वचा ।	वायु ।	स्पर्श ॥
३	चक्षु ।	सूर्य ।	रूप ॥
४	जिह्वा ।	वरुण ।	रस ॥
५	घ्राण ।	अश्विनीकुमार ।	गंध ॥

कर्मेन्द्रियनकी त्रिपुटी ॥

६ वाक् ।	अग्नि ।	वचन (क्रिया)॥
७ हस्त ।	चंद्र ।	लेनादेना ॥
८ पाद ।	वामनजी ।	गमन ॥
९ उपस्थ ।	प्रजापति ।	रतिभोग ॥
१० गुद ।	यम ।	मलत्याग ॥

अंतःकरणकी त्रिपुटी ॥

११ मन ।	चन्द्रमा ।	संकल्पविकल्प॥
१२ बुद्धि ।	ब्रह्मा ।	निश्चय ॥
१३ चित्त ।	वासुदेव ।	चिंतन ॥
१४ अहंकार ।	रुद्र ।	अहंपना ॥

पदार्थ पंचदशविध १५

मायाके नाम १९-१ माया ॥ २ अविद्या ॥ ३ प्रकृति ॥ ४ शक्ति ॥ ५ सत्या ॥ ६ मूला ॥ ७ तूला ॥ ८ योनि ॥ अव्यक्त ॥

१० अव्याकृत ॥ ११ अजा ॥१२अज्ञाना ॥
१३ तमः ॥ १४ तुच्छा॥१५अनिर्वचनीयां॥

पदार्थ षोडशविध १६

कला–१ हिरण्यगर्भ॥ २ श्रद्धा॥ ३ आकाश॥ ४ वायु ॥ ५ तेज ॥ ६ जल ॥ ७ पृथ्वी॥ ८ दशेंद्रिय ॥ ९ मन ॥ १० अन्न ॥ ११ बल ॥ १२ तप ॥ १३ मंत्र ॥ १४ कर्म॥ १५ लोक ॥ १६ नाम ॥

इति श्रीविचारचंद्रोदये वेदांतपदार्थसंज्ञावर्णननामिका षोडशीकला––द्वितीयविभागः समाप्तः ॥

संस्कृत दोहा

श्रीविचारचंद्रोदयं शुद्धां धियं समाप्य।
विचार्येति परानंदं तत्त्वज्ञानमवाप्य ॥ १ ॥

षट्दर्शन	१ जगत्	२ जगत्कारण	३ ईश्वर	४ जीव
१ पूर्वमीमांसा	स्वरूपसैं अनादि अनंत प्रवाहरूप संयोगवियोगवान्	जीव अदृष्ट औ परमाणु	०	जडचेतनात्मक विभु नाना कर्त्ता भोक्ता
२ उत्तरमीमांसा (वेदांत)	नामरूप क्रियात्मक मायाका परिणाम चेतनका विवर्त्त	अभिन्ननिमित्तोपादान इश्वर	मायाविविष्ट चेतन	अविद्याविशिष्ट-चेतन
३ न्याय	परमाणु आरभित संयोगवियोगजन्य आकृतिविशेष	परमाणु ईश्वरादिनव	नित्यइच्छाज्ञानादिगुणवान् विभुकर्त्ताविशे	ज्ञानादिचतुर्दशगुणवान् कर्ता भोक्ताजड विभु नाना
४ वैशेषिक	न्याय अनुसार	न्याय अनुसार	न्याय अनुसार	न्याय अनुसार
५ सांख्य	प्रकृतिपरिणामत्रयोविंशतितत्वात्मक	त्रिगुणात्मक-प्रकृति	०	असंग चेतन विभु नाना भोक्ता
६ योग	प्रकृतिपरिणामत्रयोविंशतितत्त्वात्मक	कर्मानुसार प्रकृति औ तन्नियामक ईश्वर	क्लेशकर्मविपाकआशयअसंबद्ध पुरुषविशेष	असंग चेतन विभु नाना कर्त्ता भोक्ता

षट्दर्शन	५ बंधहेतु	६ वंध	७ मोक्ष	८ मोक्षसाधन
१ पूर्वमीमांसा	निषिद्धकर्म	नरकादिदु:खसंबंध	स्वर्गप्राप्ति	वेदविहितकर्म
२ उत्तरमीमांसा (वेदांत)	अविद्या	अविद्यातत्कार्य	अविद्यातत्कार्य निवृत्तिपूर्वक परमानंदब्रह्मप्राप्ति	ब्रह्मात्मैक्यज्ञान
३ न्याय	अज्ञान	एकविंशतिदु:ख	एकविंशतिदु:ख	इतरभिन्नात्मज्ञान
४ वैशेषिक	अज्ञान	एकविंशतिदु:ख	एकविंशतिदु:ख	इतरभिन्नात्मज्ञान
५ सांख्य	अविवेक	अध्यात्मादि-त्रिविध दु:ख	त्रिविधदु:खध्वंस	क्रुतिपुरुषविवेक
६ योग	अविवेक	प्रकृतिपुरुषसंयोग अन्य अविद्यादि-पंचक्लेश	प्रकृतिपुरुषसंयोगाभावपूर्वक अविद्यादिपंचक्लेशनिवृत्ति	निर्विकल्पसमाधि-पूर्वक विवेक

षट्दर्शन	९ अधिकारी	१० प्रवसन कर्त्ता आचार्य	११ प्रधानकांड	१२ वाद	१३ आत्म परिणाम संख्या
१ पूर्वमीमांसा	कर्मकलासक्त	जैमिनी	कर्मकांड	आरंभवाद	विभु नाना
२ उत्तरमीमांसा (वेदांत)	मलविक्षेपदोषरहित चतुष्टयसाधन संपन्न	वेदव्यास	ज्ञानकांड	विवर्त्तवाद	विभु नाना
३ न्याय	दु:खजिहासुकुतर्की	गौतम	ज्ञानकांड	आरंभवाद	विभु नाना
४ वैशेषिक	दु:खजिहासुकुतर्की	कणाद	ज्ञानकांड	आरंभवाद	विभु नाना
५ सांख्य	संदिग्ध विरक्त	कपिल	ज्ञानकांड	परिणामवाद	विभु नाना
६ योग	विक्षिप्तचित्तवान्	पतंजलि	उपासनाकांड	परिणामवाद	विभु नाना

षट्दर्शन	१४ प्रमाण	१५ ख्याति	१६ सत्ता	१७ उपयोग
१ पूर्वमीमांसा	षट् (६)	अख्याति	जीवजगत् परमार्थ सत्ता	चित्तशुद्धि
२ उत्तरमीमांसा वेदांत	षट् (६)	अनर्वचनीय	परमार्थरूपात्मकसत्ता व्यावहारिक औ प्रातिभासिकजगत् सत्ता	तत्त्वज्ञानपूर्वक मोक्ष
३ न्याय	प्रत्यक्ष अनुमान उपमानशब्द (४)	अन्यथा	जीवजगत् परमार्थ सत्ता	मनन
४ वैशेषिक	प्रत्यक्ष अनुमान (२)	अन्यथा	जीवजगत् परमार्थ सत्ता	मनन
५ सांख्य	प्रत्यक्ष अनुमान शब्द (३)	अख्याति	जीवजगत् परमार्थ सत्ता	'त्वं' पदार्थ शोधन
६ योग	प्रत्यक्ष अनुमान शब्द (३)	अख्याति	जीवजगत् परमार्थ सत्ता	चित्तकाग्र

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व
खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

